عالم اسلام پر مغرب کی فکری یلغاروں کو طشت از بام کرنے والی مفصل کتاب

# نظریاتی جنگ کے محاذ

استشراق، استعمار، تنصیر، عالمگیریت اور سیکولرازم کیا ہے؟
علاقائی، لسانی اور فرقہ ورانہ فسادات کیوں ہوتے ہیں؟
مسلمان دنیا میں زبوں حالی کا شکار کیوں؟
مسلمان حکمران متحد کیوں نہیں ہوتے؟


تالیف

**مولانا محمد اسماعیل ریحان**

استاذ تاریخ اسلام جامعۃ الرشید کراچی



المنہل
Al Manhal Publishers

# فہرستِ مضامین


| | عنوانات | صفحہ نمبر |
|---|---|---|
| | جنگ لڑنے سے پہلے | 17 |
| | ترتیب | 18 |
| | پیش لفظ | 19 |
| 1 | پہلا باب: نظریاتی جنگ کا تعارف<br>ما هو الغزو الفكرى؟<br>(Introductions of Ideological War) | 21 |
| 1.1 | الغزوالفکری کی تعریف (Definition) | 22 |
| 1.2 | نظریاتی جنگ اور اقوام عالم | 22 |
| 1.3 | ایک بڑا فرق | 24 |
| 1.4 | نظریاتی جنگ کی دوسری تعریف | 24 |
| 1.5 | تیسری تعریف | 25 |
| 1.6 | نظریاتی جنگ کا مقصد | 26 |
| 1.7 | نظریاتی جنگ سے ہمارا مقصد | 26 |
| 1.8 | علمِ نظریاتی جنگ کی تعریف | 26 |
| 1.9 | علم ''نظریاتی جنگ'' کا موضوع | 26 |
| 1.10 | علم نظریاتی جنگ کی غرض وغایت | 27 |
| 1.11 | علم نظریاتی جنگ کی اہمیت | 27 |
| 1.12 | علمِ تقابل ادیان اور علم نظریاتی جنگ میں فرق | 28 |

| | | |
|---|---|---|
| 1.13 | عسکری اور نظریاتی جنگ میں فرق | 29 |
| 1.14 | مسلمانوں اور کفار کی نظریاتی جنگ میں فرق | 30 |
| | مراجع | 32 |
| 2 | دوسرا باب: فکری ونظریاتی جنگوں کی تاریخ<br>تاریخ الغزو الفکری<br>(History of Ideological War) | 33 |
| 2.1 | نبی اکرم ﷺ کا زمانہ | 35 |
| 2.1.1 | مکی دَور میں | 36 |
| 2.1.2 | مخالفین کی مجلس مشاورت کا قیام | 37 |
| 2.1.3 | پیام حق میں وساوس وشبہات پیدا کرنا | 37 |
| 2.1.4 | تاویلات فاسدہ | 37 |
| 2.1.5 | جھوٹے پروپیگنڈے | 37 |
| 2.1.6 | طعنے، استہزاء، القابِ رذیلہ کی تشہیر | 38 |
| 2.1.7 | حوصلہ شکن بیانات | 38 |
| 2.1.8 | عجیب وغریب مطالبے کرنا | 39 |
| 2.1.9 | مسلمانوں کو ذہنی اور جسمانی اذیتیں دینا | 39 |
| 2.1.10 | خاندانی دباؤ اور دھمکیاں | 39 |
| 2.1.11 | سرداری، مال ودولت اور حسین عورتوں کا لالچ | 40 |
| 2.1.12 | سمجھوتے کا جھانسا | 40 |
| 2.1.13 | سماجی بائیکاٹ | 40 |
| 2.1.14 | پروپیگنڈا اور شور شرابا | 40 |
| 2.1.15 | جلاوطنی | 40 |

| | | |
|---|---|---|
| 2.2 | مسلمانوں کی جانب سے اس جنگ کے ہتھیار | 41 |
| 2.2.1 | خالق سے تعلق | 41 |
| 2.2.2 | مخلوق کی خیر خواہی | 41 |
| 2.2.3 | اپنی علمی و عملی تربیت | 42 |
| 2.3 | مدنی دَور میں | 42 |
| 2.3.1 | ذرائع ابلاغ (Media) | 42 |
| 2.3.2 | درس و تدریس | 43 |
| 2.3.3 | مباحثے | 43 |
| 2.3.4 | منافقت | 43 |
| 2.3.5 | جاسوسی | 44 |
| 2.4 | نظریاتی جنگ اور اسلام کا نظامِ دعوت و جہاد | 46 |
| 2.5 | دورِ خلافت راشدہ میں نظریاتی جنگ | 47 |
| 2.6 | پھوٹ ڈالنے کی کوششیں، فرقہ واریت کا بیج | 47 |
| 2.7 | بنو امیہ کے دور میں خانہ جنگی کی کوششیں | 47 |
| 2.8 | خلافتِ عباسیہ میں فلسفیانہ علوم کا حملہ..... کا پہلا نظریاتی وار | 49 |
| 2.9 | مسلم فلاسفہ کا فتنہ | 55 |
| 2.10 | مدرسہ اخوان الصفا | 56 |
| 2.11 | باطنیت کا حملہ | 57 |
| 2.12 | جوابی کوششیں | 58 |
| 2.13 | اہم نتائج | 60 |
| 2.14 | نظریاتی حملہ آوروں کی ناکامی کی وجوہ | 61 |
| | مراجع | 62 |

| | | |
|---|---|---|
| 3 | تیسرا باب: صلیبی جنگیں<br>الحروب الصليبية<br>(Crusades) | 63 |
| 3.1 | تعریف | 64 |
| 3.2 | صلیبی جنگوں کا دور | 64 |
| 3.3 | صلیبی جنگوں کے اسباب | 65 |
| 3.4 | صلیبی جنگوں کے اہداف ومقاصد | 67 |
| 3.5 | کلرماؤنٹ کانفرنس | 67 |
| 3.6 | ڈاکٹر محمد اسد کا تبصرہ | 68 |
| 3.7 | پہلی صلیبی جنگ | 68 |
| 3.8 | عمادالدین زنگی | 69 |
| 3.9 | نورالدین زنگی اور دوسری صلیبی جنگ | 69 |
| 3.10 | سلطان صلاح الدین ایوبی اور القدس کی بازیافت | 70 |
| 3.11 | تیسری صلیبی جنگ | 70 |
| 3.12 | چوتھی صلیبی جنگ | 71 |
| 3.13 | پانچویں صلیبی جنگ | 71 |
| 3.14 | چھٹی صلیبی جنگ | 72 |
| 3.15 | القدس کی دوبارہ بازیابی | 72 |
| 3.16 | سلطان بیبرس اور ساتویں صلیبی جنگ | 73 |
| 3.17 | آٹھویں صلیبی جنگ | 74 |
| 3.18 | سینٹ لوئی، یورپ میں الغزوالفکری کا بانی | 74 |
| | مراجع | 76 |

| | | |
|---|---|---|
| 4 | چوتھا باب: فکری ونظریاتی جنگ کے محاذ<br>ساحات الغزو الفکری<br>(Fields of Ideological War) | 77 |
| 4.1 | پہلا محاذ (الساحۃ الاولیٰ) الاستشراق Orintalism | 79 |
| 4.1.1 | استشراق کے لغوی معنی | 79 |
| 4.1.2 | استشراق کا اصطلاحی معنیٰ یا تعریف (Definition) | 79 |
| 4.1.3 | استشراق (Orientalism) کا مغربی مفہوم | 80 |
| 4.1.4 | مستشرقین Orientalist | 80 |
| 4.1.5 | مستشرقین کی قسمیں | 81 |
| 4.1.6 | تاریخ استشراق (History of Orientalism) | 82 |
| 4.1.7 | استشراق کے انداز (اسالیب الاستشراق) | 93 |
| 4.1.8 | استشراق کے عوامل اور محرکات | 97 |
| 4.1.9 | مستشرقین کے دو اہم ترین اہداف | 97 |
| 4.1.10 | استشراق کے ذرائع اور وسائل<br>(وسائل الاستشراق) Resources of Orientalism | 97 |
| 4.1.11 | عالم اسلام میں مستشرقین کی وقعت اور قدر و منزلت | 116 |
| 4.1.12 | مستشرقین کا طریقہ واردات اور معیارِ بحث | 116 |
| 4.1.13 | مستشرقین کی علمی قابلیت کے چند نمونے | 118 |
| 4.1.14 | مستشرقین کی کمزوریوں اور گمراہیوں کی بنیادی وجوہ | 122 |
| 4.1.15 | مستشرقین کی کامیابیوں کی وجوہ | 123 |
| 4.1.16 | استشراق کے موضوعات (موضوعات الاستشراق) | 126 |
| 4.1.17 | استشراق کا مقابلہ کیسے کیا جائے؟ | 128 |

| | | |
|---|---|---|
| 4.1.18 | چند مشہور مستشرقین کا تعارف | 131 |
| 4.1.19 | چند مستشرقین جو مشرف باسلام ہوئے | 147 |
| 4.1.20 | چند مشہور کتبِ مستشرقین جو عربی میں بھی دستیاب ہیں | 149 |
| 4.1.21 | مستشرقین کی چند انگریزی تصانیف جو بازار میں عام دستیاب ہیں | 151 |
| | مراجع | 153 |
| 4.2 | دوسرا محاذ (الساحۃ الثانیۃ) الاستعمار (سامراجیت) Colonialism, Colonizing, Imperialism | 154 |
| 4.2.1 | استعماری سوچ کی بنیادیں | 154 |
| 4.2.2 | عالم اسلام کے خلاف استعماری کوششیں، تمہیدی دور | 156 |
| 4.2.3 | ماضی میں اہل باطل کی ناکامی کی وجوہ | 158 |
| 4.2.4 | سوچ بچار اور ذہنی تبدیلیوں کا دور | 158 |
| 4.2.5 | استعماری سوچ کو مہمیز دینے والے چار واقعات | 159 |
| 4.2.6 | استعمار کا اصل دور | 160 |
| | مراجع | 200 |
| 4.3 | تیسرا محاذ (الساحۃ الثالثۃ) عالمگیریت (العولمۃ) گلوبلائزیشن Globalization | 201 |
| 4.3.1 | امریکی و یہودی استعمار و استشراق | 201 |
| 4.3.2 | عالمگیریت کا مفہوم، اہلِ مغرب کی زبان میں | 201 |
| 4.3.3 | دوسرا پہلو، منفی مفہوم | 202 |
| 4.3.4 | عالم اسلام عالمگیریت کا اصل نشانہ کیوں | 204 |
| 4.3.5 | عالمگیریت (Globalization) کے چار میدان | 205 |
| 4.3.6 | تیسرا میدان، تہذیبی و ثقافتی عالمگیریت | 232 |

| | | |
|---|---|---|
| 4.3.7 | آخری بات | 249 |
| | مراجع | 249 |
| 4.4 | چوتھا محاذ (الساحۃ الرابعۃ) التنصیر، التبشیر، الردۃ Christianity Mission | 250 |
| 4.4.1 | التنصیر کی تعریف | 250 |
| 4.4.2 | تاریخ التنصیر | 251 |
| 4.4.3 | ہندوستان میں مشنری سرگرمیوں کا تاریخی جائزہ | 253 |
| 4.4.4 | اکبر کے دربار میں | 254 |
| 4.4.5 | جہانگیر کے دور میں | 255 |
| 4.4.6 | شاہ جہاں کے دربار میں مناظرہ | 256 |
| 4.4.7 | مشنری اور شہزادہ داراشکوہ | 257 |
| 4.4.8 | مشنریوں کے خیالات وافکار کی ایک جھلک | 258 |
| 4.4.9 | ایسٹ انڈیا کمپنی کے تسلط کے بعد مشنری مہم کا فروغ | 258 |
| 4.4.10 | علمائے کرام کی دفاعی کوششیں | 260 |
| 4.4.11 | عیسائی گرجے اوران کی جاگیریں | 260 |
| 4.4.12 | چند سرگرم عیسائی مشن | 262 |
| 4.4.13 | مشنریوں کی سرگرمیوں کے نتائج | 266 |
| 4.4.14 | مسلم اسکالر جناب احمد دیدات کا بیان | 267 |
| 4.4.15 | دیگر ملکوں میں مشنری سرگرمیوں کی ایک جھلک | 268 |
| 4.4.16 | امریکا اور مشنری مہمات | 271 |
| 4.4.17 | مشنریوں کی مہم کے تین مراحل | 271 |
| 4.4.18 | مشنری مہم کے اسباب وذرائع (وسائل التنصیر) | 273 |

| | | |
|---|---|---|
| 4.4.19 | کرسچن کونسل آف پاکستان کا منشور | 280 |
| 4.4.20 | مشنری کانفرنسیں | 280 |
| 4.4.21 | مسلمانوں کی تین کمزوریاں (Three Weak Points) | 281 |
| 4.4.22 | مشنریوں کے اہم اہداف | 283 |
| 4.4.23 | مشنریوں کے لیے ہدایات اور تربیتی نصاب | 284 |
| 4.4.24 | مغربی زبانوں کی اشاعت اور مشنری اہداف | 285 |
| 4.4.25 | مشنری اداروں میں دی جانے والی تربیت کی ایک جھلک | 286 |
| 4.4.26 | مشنریوں کے لیے اہم نصیحتیں | 288 |
| 4.4.27 | مشنریوں کا سب سے بڑا ہدف | 289 |
| 4.4.28 | مشنریوں کا مقابلہ کیسے کیا جائے | 291 |
| 4.4.29 | مایوسی کی ضرورت نہیں | 293 |
| | مراجع | 294 |
| 5 | پانچواں باب: نظریاتی جنگ کے افکار<br>افکار الغزو الفکری<br>(Concept of Ideological War) | 295 |
| 5.1 | العلمانیۃ Secularism | 296 |
| 5.1.1 | سیکولرازم کی تاریخ | 297 |
| 5.1.2 | سیکولرازم کے بنیادی اہداف | 300 |
| 5.1.3 | سیکولرازم کے تین خطرناک حربے | 300 |
| 5.2 | التغریب Modernism | 301 |
| 5.2.1 | صورتِ اسلام کو مسخ کرنا، نیا اسلام تشکیل دینا | 301 |
| 5.2.2 | تاریخ اسلام میں تشکیک پیدا کر کے اپنے ماضی سے بداعتماد کرنا | 303 |

| | | |
|---|---|---|
| 5.2.3 | امت کو اپنی موجودہ حالت سے مایوس کرنا (التشکیک فی الحال) | 304 |
| 5.2.4 | مستقبل سے ناامید بنانا (التشکیک فی المستقبل) | 305 |
| 5.2.5 | امت کی شخصیت کو موم کی گڑیا بنانا (تذویب شخصیۃ الامۃ) | 306 |
| 5.2.6 | ماڈرن ثقافت کا فروغ | 307 |
| 5.2.7 | اسلامی تحریکوں اور قیادتوں کو سبوتاژ کرنا | 307 |
| | مراجع | 308 |
| 6 | چھٹا باب: نظریاتی جنگ کے وسائل و ذرائع<br>وسائل الغزو الفکری<br>(Resources of Ideological War) | 309 |
| 6.1 | تعلیم (Education) | 311 |
| 6.1.1 | اہم تبدیلیاں | 312 |
| 6.1.2 | نئے نصاب تعلیم کی خصوصیات | 314 |
| 6.1.3 | تعلیمی نظام کی باگ اپنے ہاتھ میں رکھنے کے لیے اقدامات | 316 |
| 6.1.4 | سیکولر نظام تعلیم کے اثرات | 319 |
| 6.2 | میڈیا (Media) | 319 |
| 6.2.1 | لوگوں کی دو قسمیں اور میڈیا کا شہباتی اور شہوانی جال | 321 |
| 6.2.2 | امریکی میڈیا | 323 |
| 6.2.3 | یہودی لابی اور میڈیا | 323 |
| 6.2.4 | میڈیا کا قیادت ساز کردار | 327 |
| 6.2.5 | میڈیا کا گھناؤنا استعمال، آزادیٔ اظہار رائے کے نام پر توہین رسالت | 328 |
| 6.3 | ذرائع معلومات، الاعلام (Knowledge) | 332 |
| 6.4 | میدانِ سیاست (Politics) | 333 |

| | | |
|---|---|---|
| 6.5 | قانون (Law) | 335 |
| 6.5.1 | بیوروکریسی | 336 |
| 6.6 | معیشت وتجارت | 337 |
| 6.7 | رفاہی خدمات، این جی اوز | 337 |
| 6.8 | جدت پسند اسلامی مفکرین | 338 |
| 6.9 | فنونِ لطیفہ | 338 |
| 6.10 | ادب (Literature) | 338 |
| 6.11 | تفریح، سپورٹس | 339 |
| 6.12 | ثقافتی ہیرو | 339 |
| 6.13 | علاقائی تہذیب وثقافت | 340 |
| 6.14 | جاہلی عصبیت، قومی ووطنی عصبیت کا فروغ | 341 |
| 6.15 | مسلمانوں کو صالح قیادت سے متنفر کرنا | 342 |
| 6.16 | آزادیٔ نسواں | 343 |
| 6.16.1 | اسلامی اخلاق ومعاشرت کی بربادی | 344 |
| 6.16.2 | اسلامی معاشرہ کی جاذبِ توجہ خصوصیات کا خاتمہ | 344 |
| 6.16.3 | مسلمان عورتوں کو بازاری جنس بنادینے کی قدیم خواہش | 345 |
| 6.16.4 | آزادیٔ نسواں کے لیے پروپیگنڈا اہم | 345 |
| 6.16.5 | پہلا مرحلہ مردوں کے سامنے چادر اتارنا، نقاب کھولنا (الغاء الحجاب) | 356 |
| 6.16.6 | دوسرا مرحلہ غیر محرم مردوں سے میل ملاپ (الاختلاط بالرجال) | 356 |
| 6.16.7 | تیسرا مرحلہ چہار دیواری کی قید سے آزادی (الخروج من البیت) | 357 |
| 6.16.8 | چوتھا مرحلہ مردوں کے شانہ بشانہ کام کاج (الخروج للعمل) | 357 |
| 6.16.9 | پانچواں مرحلہ فن وثقافت میں عورت کی آمد | 358 |

| | | |
|---|---|---|
| 6.16.10 | اسلام کی معاشرتی اقدار اور نظام عصمت | 358 |
| 6.16.11 | بے پردگی کے مفاسد | 362 |
| 6.16.12 | مغرب میں عورت کو کیا ملا؟ | 363 |
| | مراجع | 364 |
| 7 | ساتواں باب: ہم الغزو الفکری کا مقابلہ کیسے کریں؟<br>کیف نقاوم الغزو الفکری<br>(How do you Resist Ideological Invasion) | 365 |
| 7.1 | جنگ لڑنے سے پہلے کیا دیکھا جاتا ہے!! | 366 |
| 7.2 | ہماری کمزوریاں | 367 |
| 7.2.1 | ایمانی کمزوری | 367 |
| 7.2.2 | اعمال کی کمزوری | 367 |
| 7.2.3 | علم دین کی کمزوری | 368 |
| 7.2.4 | علم دنیا کی کمزوری | 368 |
| 7.2.5 | صحت کی کمزوری اور امراض | 369 |
| 7.2.6 | اقتصادی کمزوری اور سودی معیشت | 370 |
| 7.2.7 | میڈیا وار میں ہماری کمزوری | 370 |
| 7.2.8 | سیاسی ابتری | 371 |
| 7.2.9 | مخلص اور اہل قائدین کا انحطاط | 371 |
| 7.2.10 | مالی وسائل کی کمی، غربت | 371 |
| 7.2.11 | جمود، تعطل اور مایوسی | 373 |
| 7.2.12 | نظم وضبط کی کمی | 373 |
| 7.3 | ہماری قوتیں | 374 |

| | | |
|---|---|---|
| 7.3.1 | ہمارا برحق ہونا | 374 |
| 7.3.2 | اللہ کی معیت ونصرت | 374 |
| 7.3.3 | حوصلہ بڑھانے والے وعدے | 375 |
| 7.3.4 | فتنوں کی پیش گوئیاں اور آنے والے امتحانات کی خبریں | 375 |
| 7.3.3 | دلوں کو مسخر کرنے کی حقیقی طاقت | 375 |
| 7.3.3 | محفوظ شریعت | 376 |
| 7.3.3 | افرادی قوت | 376 |
| 7.3.3 | جغرافیائی حیثیت | 376 |
| 7.3.3 | معدنی دولت | 376 |
| 7.4 | دشمن کے کمزور پہلو (Weak Points of Enemy) | 377 |
| 7.4.1 | باطل عقیدہ ونظریہ | 377 |
| 7.4.2 | بے چین روح اور مضطرب ذہن | 378 |
| 7.4.3 | کھوکھلا معاشرہ، کمزور خاندانی نظام | 378 |
| 7.4.4 | موت کا خوف، حبِ دنیا | 378 |
| 7.4.5 | غرور ونخوت، غیظ وغضب، انتقامی جنون اور عجلت پسندی | 379 |
| 7.4.6 | تباہ ہوتی معیشت | 380 |
| 7.4.7 | افرادی قلت | 380 |
| 7.4.8 | اندورنی انتشار | 381 |
| 7.5 | کام کے طریقے | 381 |
| 7.6 | ہمارے اہداف کیا ہوں گے؟ | 381 |
| 7.7 | کام کرنے کے لیے لازمی اوصاف | 382 |
| 7.7.1 | ایمان محکم | 382 |

| | | |
|---|---|---|
| 7.7.2 | خلوصِ نیت | 382 |
| 7.7.3 | ذکر اللہ کی کثرت | 383 |
| 7.7.4 | رزقِ حلال اور صدقہ وخیرات | 383 |
| 7.7.5 | زہد وقناعت، سادہ زندگی | 383 |
| 7.7.6 | ادائیگی فرائض وواجبات اور ترکِ منکرات | 383 |
| 7.7.7 | حقوق العباد کی ادائیگی | 383 |
| 7.7.8 | ضروری علم دین | 384 |
| 7.7.9 | امت کی فکر | 384 |
| 7.7.10 | حالاتِ حاضرہ، تاریخ اور فتن سے آگاہی | 384 |
| 7.7.11 | استقامت | 384 |
| 7.8 | کن پر کام کرنا ہے؟ | 384 |
| 7.8.1 | اپنی ذات | 385 |
| 7.8.2 | گھر کے افراد | 385 |
| 7.8.3 | برادری، محلہ | 385 |
| 7.8.4 | غریب طبقات | 385 |
| 7.8.5 | اصحابِ ثروت اور ماڈرن طبقہ | 385 |
| 7.8.6 | طلبہ | 386 |
| 7.8.7 | خواتین | 386 |
| 7.8.8 | بچے | 386 |
| 7.8.9 | رول ماڈلز | 387 |
| 7.8.10 | حکام | 387 |
| 7.9 | ہمارے کام کے میدان | 388 |

| | | |
|---|---|---|
| 7.9.1 | مسلمانوں کو ایمان کامل اور اعمال صالحہ کی دعوت | 388 |
| 7.9.2 | سیاست | 388 |
| 7.9.3 | غیر مسلموں میں اسلام کی تبلیغ | 388 |
| 7.9.4 | دینی مدارس کا قیام اور ترقی، ان کے معیار کی بہتری | 388 |
| 7.9.5 | دینی ماحول کی حامل عصری علوم کی معیاری درسگاہوں کا قیام | 389 |
| 7.9.6 | عصری تعلیم گاہوں کا رخ درست کرنا اور ان کے طلبہ، اساتذہ وانتظامیہ کو دین کے قریب لانا | 389 |
| 7.9.7 | میڈیا | 390 |
| 7.9.8 | تجارت ومعیشت | 391 |
| 7.9.9 | رفاہی خدمات | 391 |
| 7.9.10 | کھیل کود، تفریح، دلچسپ معلوماتی سرگرمیاں | 391 |
| 7.10 | ہمارے ہتھیار کیا ہوں گے؟ | 391 |
| 7.10.1 | جدید ٹیکنالوجی | 392 |
| 7.10.2 | ہماری توانائی کے ذرائع (ہمارے مراکز) | 392 |
| 7.10.3 | مسجد | 392 |
| 7.10.4 | مدرسہ | 393 |
| 7.10.5 | خانقاہ | 393 |
| 7.11 | آخری بات | 393 |
| 7.12 | تمام باطل طاقتیں اسلام کے خلاف مجتمع کیوں؟ | 394 |
| 7.13 | اسلامی نظریہ کیوں غالب آئے گا؟ | 396 |
| 7.14 | کل اور آج | 399 |

# جنگ لڑنے سے پہلے

دیکھا جاتا ہے.....

- ہمارا مقابلہ کس سے ہے؟
- دشمن کا حملہ کس سمت سے ہو رہا ہے؟
- اس کے اہداف کیا ہیں؟
- مقابلے کا میدان کونسا ہے، کیسا ہے؟
- جنگ کے ہتھیار کیا کیا ہیں؟
- ہماری پوزیشن کیسی ہے؟ یعنی ہماری قوتیں کیا ہیں جن سے ہم کام لے سکتے ہیں اور کمزوریاں کونسی ہیں جن سے ہمیں بچنا ہے؟
- دشمن کی پوزیشن کیا ہے؟ یعنی اس کی قوتیں کیا ہیں؟ اور کمزور پوائنٹ کونسے ہیں جن پر ہم کارگر حملہ کر سکتے ہیں؟

ایک بھرپور جنگ جس میں کامیابی کی امید کی جا سکے، تب ہی لڑی جا سکتی ہے جب پہلے سے مذکورہ نکات کا جواب ہمارے پاس ہو۔

ان اوراق میں ان سوالات کے جوابات موجود ہیں۔

# ترتیب


1. تعارف
2. فکری ونظریاتی جنگوں کی تاریخ
3. صلیبی جنگیں
4. الاستشراق
5. الاستعمار
6. گلوبلائزیشن۔ عالمگیریت (العولمۃ)
7. مشنری ادارے۔ (التنصیر یا الردۃ)
8. سیکولرازم۔ (العلمانیۃ)
9. مغربیت۔ (التغریب)
10. نظریاتی جنگ کے ہتھیار۔ (وسائل الغزو الفکری)
11. نظریاتی دشمنوں کا مقابلہ کیسے کیا جائے؟

# پیش لفظ

''نظریاتی جنگ'' (الغزوالفکری) عرب ممالک کی درسگاہوں میں پڑھایا جانے والا ایک اہم مضمون ہے مگر پاک وہند کے اکثر دینی مدارس میں اب تک اس کی اہمیت کا احساس نہیں کیا گیا جبکہ اس مضمون کو باقاعدہ دینی مدارس کے نصاب میں شامل کیا جانا اور اس پر پُرمغز تحقیقی و تصنیفی کام کرنا وقت کی اہم ترین ضرورت ہے۔

پاکستان کی مشہور دینی درسگاہ جامعۃ الرشید احسن آباد کراچی نے اس سلسلے میں پہل کی ہے جہاں اس مضمون کو پہلے ''کلیۃ الشریعۃ'' اور پھر ''کلیۃ الدعوۃ'' کے نصاب کا لازمی حصہ بنا دیا گیا ہے۔ 1428ھ (2007ء) میں جب جامعۃ الرشید میں الغزوالفکری کا مضمون میرے سپرد کیا گیا تو مجھے توقع نہیں تھی کہ کبھی اس موضوع پر قلم بھی اٹھانا پڑے گا مگر جب لیکچرز کے سلسلے کو کچھ مدت گزر گئی تو طلبہ کی جانب سے یہ مطالبہ ہونے لگا کہ اس موضوع پر اردو زبان میں مواد کی طرف رہنمائی کی جائے۔ وجہ یہ تھی کہ اس موضوع پر عربی کتب بھی پاکستان میں عام نہیں ہیں اور خاص ذوق کے حامل افراد کو کوشش بسیار ہی سے انہیں تلاش کر پاتے ہیں۔ ایسے میں طلبہ کے لیے اس موضوع سے متعلق کسی بھی مواد تک رسائی کا خاصا دقت طلب ہونا ظاہر تھا۔

چوں کہ دورانِ اسباق میرے مطالعے کا دارومدار ''الغزوالفکری'' کی عربی کتب پر تھا اس لیے موضوع سے متعلقہ اردو کتب دیکھنے کا خیال ہی نہ آیا۔ تاہم طلبہ کی ضرورت کو ملحوظ رکھتے ہوئے جب میں نے اس موضوع پر اردو ذخائرِ کتب کی چھان بین کی تو جلد ہی اندازہ ہو گیا کہ ہماری قومی زبان میں ایسی کوئی تصنیف موجود نہیں ہے جو مستقل اس فن پر لکھی گئی ہو۔ اس میں شک نہیں کہ تاریخ، صحافت اور حالاتِ حاضرہ سے متعلقہ کتب کی ورق گردانی سے اس موضوع پر خاصا مواد مل جاتا ہے مگر وہ اس طرح بکھرا ہوا ہے کہ اسے ایک لڑی میں پرو کر الغزوالفکری کے فنی قالب میں ڈھالنا آسان نہیں، خصوصاً طلبہ جن پر پہلے ہی کئی مضامین کا بوجھ ہوتا ہے اس نئے

مضمون کے لیے اتنا وقت مشکل ہی سے نکال سکتے ہیں کہ متعلقہ کتب کی تلاش بھی انہی کے ذمہ ہو۔ یہی وجہ تھی کہ کلیۃ الشریعہ کے پرنسپل مولانا الطاف الرحمن، کلیۃ الدعوۃ کے نگران مولانا فیاض احمد اور دیگر احباب بار بار راقم کو اس ضرورت کی طرف متوجہ کرتے رہے۔ مجھے خود بھی طلبہ کی ضرورت کا احساس تھا چنانچہ میں نے اس فن کی ضخیم کتابوں کا نچوڑ نکال کر ایک مختصر کتاب مرتب کی جو ''نظریاتی جنگ کے اصول'' (اصول الغزو الفکری) کے نام سے شائع ہو چکی ہے اور جامعۃ الرشید میں الغزو الفکری کے مضمون کے لیے متن کے طور پر پڑھائی جا رہی ہے۔

بہر حال اس کے باوجود دوستوں کی طرف سے تقاضا باقی رہا کہ اس خلاصے کی تفاصیل جو میں اپنے لیکچرز میں بیان کیا کرتا ہوں، طبع ہونی چاہئیں۔ اس دوران راقم کو کراچی کے مختلف علاقوں میں الغزو الفکری کے کورسز بھی کرانے کا موقع ملا اور بعض احباب نے ان لیکچرز کو ریکارڈ اور بعض نے قلم بند بھی کیا۔

ساتھیوں کے بار بار توجہ دلانے پر آخر کار راقم نے اس کے لیے کمر باندھ لی اور کئی ماہ تک اس میں جٹا رہا۔ اگرچہ اس تالیف کی بنیاد میرا کتابچہ ''نظریاتی جنگ کے اصول'' ہے مگر از سر نو کام نے اسے ایک مستقل تصنیف کی شکل دے دی ہے۔ یہ بھی کہا جا سکتا ہے کہ ''نظریاتی جنگ کے اصول'' متن ہے، اور یہ اس کی شرح۔

اس کام کے دوران اس موضوع پر متعدد کتب و رسائل اور مضامین کے علاوہ اپنے لیکچرز کے وہ خلاصے بھی پیش نظر رہے جو کلیۃ الشریعۃ کے فضلاء مولانا یونس کاشمیری اور مولانا عزیر احمد صدیقی اور دیگر احباب نے مرتب کیے تھے۔ نیز ڈیجیٹل ذرائع اور انٹرنیٹ پر موجود کتابوں اور ویب سائٹس کے مواد سے بھی استفادہ کیا گیا ہے۔ جامعۃ الرشید کے شعبہ کلیۃ الشریعۃ کے پرنسپل مولانا الطاف الرحمن اور کلیۃ الدعوۃ کے نگران مولانا فیاض احمد کتب کی فراہمی میں معاون رہے۔ اللہ تعالیٰ ان سب حضرات کو دنیا و آخرت میں بہترین بدلے سے نوازے۔ (آمین)

محمد اسماعیل ریحان

پیر 27 محرم 1434ھ، 11 دسمبر 2012ء رات 12 بجے

پہلا باب

1

# نظریاتی جنگ کا تعارف

## ما هو الغز والفکری؟

***Introductions***

***of***

# Ideological War

# الغزوالفکری.....فکری ونظریاتی جنگ

دنیا میں جنگ کے دوطریقے مروّج رہے ہیں۔ایک قسم کی جنگ وہ ہے جوفوج، اسلحے اور خطرناک ہتھیاروں کے ساتھ لڑی جاتی ہے، جس میں انسان قتل کیے جاتے ہیں، خون بہایا جاتا ہے، آبادیاں تہس نہس کی جاتی ہیں، لوگوں کوغلام بنایا جاتا ہے، لوٹ مار ہوتی ہے۔

جنگ کی دوسری قسم وہ ہے جس میں خونریزی اور غارتگری تونہیں ہوتی لیکن عقائد ونظریات پر حملہ کیا جاتا ہے۔یہ دوسری قسم کی جنگ اپنے مقاصد واثرات کے لحاظ سے پہلی جنگ سے کم نہیں، بلکہ بعض پہلوؤں سے زیادہ خطرناک ہے۔جنگ کی اس دوسری قسم کو''فکری ونظریاتی جنگ''(الغزوالفکری) کہا جاتا ہے۔

## 1.1- الغزوالفکری کی تعریف:(Definition)

الغزوالفکری (نظریاتی جنگ) کی کئی تعریفیں مختلف انداز میں کی گئی ہے۔

مشہورتعریف یہ ہے:

''مجموعة الجهود التي تقوم بها الأمة من الأمم للاستيلاء على أمة أخرىٰ أو التاثير عليها حتّٰى تتجه وجهة معينة.''

یعنی یہ ان کوششوں کے مجموعے کا نام ہے جن کے ذریعے کوئی قوم دوسری قوم پر غالب آتی یا اِسے متاثر کرتی ہے تاکہ اسے ایک خاص شکل میں ڈھال دے۔

ایک مختصر تعریف یہ ہے:

''هو الغز و بوسائل غير عسكرية.''

یعنی یہ ایک ایسی جنگ ہے جو روایتی ہتھیاروں کو چھوڑ کر دیگر ذرائع سے لڑی جاتی ہے۔

## 1.2- نظریاتی جنگ اوراقوام عالم:

جب کوئی بھی قوم دوسری قوم کی ذہنیت، تہذیب وتمدّن، اور خیالات کو تبدیل کرنے کی

کوشش کرتی ہے تو اس کی اس کوشش اور مہم کو ''نظریاتی جنگ'' کہا جاتا ہے۔ ہر وہ قوم جو دنیا میں غالب دوسری اقوام پر غالب آنے یا ان سے اپنی جغرافیائی و نظریاتی سرحدوں کے دفاع کے لیے فکر مند ہوتی ہے وہ یہ جنگ ضرور لڑتی ہے۔ اگر کوئی قوم اپنے مخالفین کے مقابلے میں صرف ہتھیاروں سے کام لے تو اُسے کبھی پائیدار کامیابی حاصل نہیں ہو سکتی۔ یہ تو ممکن ہے کہ اسے وقتی طور پر فتح حاصل ہو جائے، لیکن وہ اپنے حریف کو حقیقی معنوں میں کبھی مُسَخّر نہیں کر سکتی۔

تاریخ میں نام پانے والی اور زندہ رہنے والی ہر قوم نے یہ جنگ لڑی ہے۔ کسی نے جنگ دوسروں کو مسخر کرنے کے لیے لڑی اور کسی نے اپنے تشخص کی بقا کے لیے۔ کبھی فکری جارحیت کا مقصد دوسروں کو برباد کرنا بھی ہوا ہے اور کبھی اس کا مقصد اپنی لوٹ کھسوٹ کی پونجی کو بچانا رہا ہے۔ مشرق اور مغرب دونوں صدیوں سے اس کشاکش میں فریق ہیں۔ نظریاتی جنگ میں مسلمانوں نے بھی حصہ لیا ہے اور غیر مسلموں نے بھی۔

دونوں کی جنگ میں بنیادی فرق ان کے نظریات اور اخلاقی پیمانوں کا ہے۔ دونوں کی جنگ کی اپنی اپنی تاریخ ہے جس کا مطالعہ کر کے ہم مسلمانوں اور کفار کی نظریاتی جنگ کے مابین کھلا اخلاقی اور نظریاتی فرق ملاحظہ کر سکتے ہیں۔

مسلمان صدیوں تک نظریاتی جنگ لڑتے رہے ہیں، ان کا انداز کبھی مدافعانہ رہا تو کبھی اقدامی (جارحانہ)۔ بسا اوقات بیک وقت دونوں طرح کی جنگ لڑی گئی۔ مدافعت کا مقصد اللہ کے آخری دین کی اصل شکل میں حفاظت تھا اور اقدامی طور پر دین حق کو دنیا کے کونے کونے تک پہنچانا پیش نظر رہا۔ اس تمام مہم جوئی میں مسلمانوں کی جانب سے نظریاتی جنگ جن اصولوں کے تحت لڑی گئی وہ اخلاق عالیہ کا نمونہ اور سراسر شریفانہ روایات کا آئینہ تھے۔ اس مہم میں مسلمان قدم قدم پر صداقت، نیک نیتی، بے غرضی، آخرت کی فکر، اخلاق کی بلندی، انسانیت کی کڑھن، مظلوموں سے ہمدردی اور باہمی ایثار کا مظاہرہ کرتے رہے ہیں کیوں کہ قرآن وسنت حالت جنگ میں بھی انہی اخلاق وآداب کو اپنائے رہنے کا حکم دیتے ہیں چاہے وہ جنگ عسکری ہو یا فکری۔

اس کے برعکس مغرب اور کفار کی تاریخ جس طرح [illegible] ظلم و بہیمیت کے مظاہر سے

خون آلود ہے اسی طرح نظریاتی جنگ میں بھی ان کا دامن جھوٹ، مکروفریب، وعدہ خلافی، حیلہ جوئی اور ملمع سازی سے سیاہ ہے۔ یہ میدان جس میں ہم اپنے اخلاقی اصولوں کی پاسداری کرتے ہوئے اغیار کو برابر کی چوٹ دیتے رہے تھے آج ہماری غفلت کے باعث دشمن کے ہاتھ آ گیا ہے۔ ہماری مسلسل کوتاہیوں نے اغیار کو فی زمانہ اس میدان میں غالب آنے کا کھلا موقع فراہم کر دیا ہے۔

## 1.3- ایک بڑا فرق:

نظریاتی جنگ کے بارے میں اس وضاحت سے یہ معلوم ہو گیا کہ وہ منکرات، فواحش، بدعات، اخلاقی کمزوریاں اور اعتقادی فتنے جو کسی بیرونی طاقت کی کوشش کے بغیر دیگر وجوہ سے مسلمانوں میں نشوونما پا رہے ہوں ہم انہیں نظریاتی جنگ کے موضوع میں شامل نہیں کر سکتے۔ اگر مسلمان دکان اور ملازمت کے خبط میں نمازیں ترک کر رہے ہیں تو ''نظریاتی جنگ'' کے علم میں اس پر بحث نہیں کی جائے گی بلکہ یہ اصلاحِ نفس اور دعوت وارشاد سے متعلق مسئلہ ہے۔

اس میں کوئی شک نہیں کہ مسلمانوں کی جانب سے لڑی جانے والی نظریاتی جنگ بھی دعوت وارشاد سے گہرا تعلق رکھتی ہے مگر دعوت وارشاد ایک عام میدان ہے، جبکہ ''نظریاتی جنگ'' کی حیثیت دین کی اشاعت وحفاظت کے ایک خاص محاذ کی ہے جس میں ان سوچی سمجھی کوششوں کو دیکھا بھالا جاتا ہے جن سے معاشرے میں نظریاتی، معاشرتی اور اخلاقی خرابیاں پیدا ہو رہی ہیں۔ غرض دعوت وارشاد ایک عام مفہوم ہے اور ''نظریاتی جنگ'' اس کا ایک جزو ہونے کی وجہ سے خاص مفہوم ہے۔

فرق کا دوسرا پہلو یہ بھی ہے کہ ہمارے ہاں دعوت وارشاد کا اطلاق مسلمانوں کی جانب سے اشاعتِ مذہب کی کاوش پر ہوتا ہے مگر نظریاتی جنگ عام ہے۔ مسلم بھی یہ جنگ لڑ رہے ہیں اور کفار بھی۔

## 1.4- نظریاتی جنگ کی دوسری تعریف:

عام معنوں میں تو کسی بھی قوم کی جانب سے فکری اور نظریاتی مہم کو نظریاتی جنگ شمار کیا جاتا ہے مگر چوں کہ اس وقت اس میدان میں اسلام دشمن طاقتیں پوری طرح غالب ہیں اور مسلسل

آگے بڑھ رہی ہیں اس لیے دورِ حاضر کے جن مسلم دانشوروں نے ''نظریاتی جنگ'' کا فن مدوّن کیا ہے، وہ اس سے مسلمانوں کے خلاف کفار کی موجودہ فکری ونظریاتی جنگ مراد لیتے ہیں

اکثر عرب دانشوروں کی تحریروں میں جہاں ''الغزوالفکری'' کا ذکر آتا ہے تو اس غیر مسلم دنیا خصوصاً اہلِ مغرب اور نصاریٰ کا مسلمانوں کے خلاف ''الغزوالفکری'' مراد ہوتا ہے یہی وجہ ہے کہ بعض عرب علماء نے نظریاتی جنگ کی تعریف یوں کی ہے:

''هو الغز والذی اتخذها الصلیبیین ضد المسلمین لا زالة المظاهر الحیاة الاسلامیة وصرف المسلمین عن التمسك بالاسلام بالوسائل غیر العسکریة.''

''نظریاتی جنگ سے مراد ہتھیاروں کے سوا دیگر وسائل سے لڑی جانے والی وہ جنگ ہے جسے صلیبیوں نے مسلمانوں کے خلاف شروع کیا ہے تاکہ اسلامی زندگی کے مظاہر کو مٹا دیا جائے اور مسلمانوں کو اسلام سے ہٹا دیا جائے۔''

تاہم اس تعریف کو صلیبیوں کے ساتھ خاص کرنا مناسب نہیں کیوں کہ نظریاتی جنگ میں صرف نصاریٰ نہیں یہود وہنود، کیمونسٹ اور دیگر قومیں بھی شریک ہیں۔

## 1.5- تیسری تعریف:

''الغزوالفکری'' کی ایک اور تعریف یوں کی گئی ہے:

''هو اسلوب جدید للغز وضدّ المسلمین بعد هزائم متکررہ.''

''مسلمانوں کے خلاف جنگ لڑنے کا جدید انداز جسے مسلسل شکستوں کے بعد اختیار کیا گیا۔''

یہ تعریف مفہوم میں وسعت اور الفاظ کے اختصار کی وجہ سے بہت عمدہ ہے۔ پھر اس میں ''بعد هزائم متکررہ'' کا لفظ بہت بامعنیٰ ہے کیوں کہ اس سے ایک خاص پس منظر کی طرف اشارہ کیا گیا ہے جسے ہم آگے نظریاتی جنگ کی تاریخ کے ضمن میں پڑھیں گے۔

چوں کہ موجودہ حالات کے پیشِ نظر ہمارے زیرِ بحث یہی ہے کہ اغیار کس طرح یہ جنگ لڑ رہے ہیں اور ہم اس سے دفاع کیسے کریں گے، اس لیے ہم ''نظریاتی جنگ'' سے وہ فکری

ونظریاتی جنگ مراد لیں گے جو اہل مغرب نے اسلام کے خلاف برپا کر رکھی ہے۔

## 1.6- نظریاتی جنگ کا مقصد:

دشمنانِ اسلام نے نظریاتی جنگ کو کیوں اختیار کیا ہے؟ ان کا مقصد صرف یہ ہے کہ دیگر قوموں کے تشخص، ان کی فکری روح اور نظریاتی حیات کی علامات کو مٹا دیا جائے۔ دوسرے لفظوں میں کسی قوم کو ذہنی وشعوری طور پر مُردہ کر کے اسے اپنے سانچے میں ڈھال لینا ان کا اصل ہدف ہے۔

## 1.7- نظریاتی جنگ سے ہمارا مقصد:

ہم اس وقت دفاعی حالت میں ہیں لہٰذا فی الحال ''نظریاتی جنگ'' کا جواب دیتے ہوئے ہمارا ہدف اوّلاً اپنا دفاع ہے۔ اپنے تحفظ کو یقینی بنانے کے بعد ہم دوسرے مرحلے میں حریف کے خلاف جوابی کارروائی بھی کر سکیں گے۔

اب تک ہم ''نظریاتی جنگ'' پر بحث کر رہے تھے جبکہ ''نظریاتی جنگ'' کا علم (علم الغزو الفکری) مفہوم کے لحاظ سے الگ چیز ہے۔ آیئے اب جائزہ لیتے ہیں کہ ''نظریاتی جنگ'' کا علم کیا ہے؟

## 1.8- علمِ نظریاتی جنگ کی تعریف:

''یہ وہ علم ہے جس میں حریف کی فکری ونظریاتی یلغار کے طریقہ کار کا گہرائی سے جائزہ لیا جاتا ہے، اس سے اپنے دفاع کی منصوبہ بندی کی جاتی ہے اور حریف کو مؤثر جواب دینے کے طریقوں پر غور کیا جاتا ہے۔''

یہ فرق ذہن نشین کر لیں کہ ''نظریاتی جنگ'' لڑنے کی چیز ہے اور ''علمِ نظریاتی جنگ'' پڑھنے اور سیکھنے کی۔ اسے سیکھ کر ہی ہم عملی میدان میں ''نظریاتی جنگ'' لڑ سکتے ہیں۔

## 1.9- علم ''نظریاتی جنگ'' کا موضوع:

''اس علم کا موضوع وہ اسباب، ذرائع اور وسائل ہیں جن سے کسی قوم کے افکار ونظریات کو تبدیل کیا جائے۔ اس علم کی ساری ابحاث کا مرکزی نقطہ وہ اسلوب اور طریقے ہیں جو سوچ کو تبدیل کر دیں، دلی میلانات اور رجحانات کو پھیر دیں اور انسان کے عمل میں تغیر پیدا کر دیں۔''

جس طرح ایک سرجن مریض کے اعضاء میں پیدا ہونے والی تبدیلیوں پر غور کرتا ہے اور شاعر شعر کی ترکیب، وزن اور معنویت پر نگاہ رکھتا ہے، اسی طرح علم نظریاتی جنگ پڑھنے والا اُن وسائل اور ذرائع کی جستجو میں لگا رہتا ہے جن کے ذریعے دوسروں کے افکار، عقائد و نظریات کو تبدیل کیا جاسکتا ہے۔

## 1.10- علم نظریاتی جنگ کی غرض وغایت:

اس علم کے حصول کا مقصد اپنے عقائد و نظریات، قومی تشخص اور تہذیب و تمدن کو محفوظ رکھتے ہوئے دیگر اقوام پر فکری و نظریاتی غلبہ حاصل کرنا ہے۔

## 1.11- علم نظریاتی جنگ کی اہمیت:

کسی علم کی اہمیت کو معاشرے میں اس کی ضرورت کے پیمانے سے ناپا جاتا ہے۔ دوسرے لفظوں میں کسی علم وفن کی اہمیت اتنی ہی ہوتی ہے جتنا وہ معاشرے کے لیے مفید ہوتا ہے،

دورِ حاضر میں تمام عالمی طاقتیں مجتمع ہو کر اپنے تمام تر وسائل کے ساتھ مسلمانوں پر عسکری و نظریاتی دونوں میدانوں میں حملہ آور ہیں لہٰذا مسلمانوں نظریاتی جنگ کے علم کی اتنی ہی ضرورت ہے جتنی اپنی حفاظت کے لیے ہتھیاروں اور فوج کی۔

ہر مسلمان قائد، سیاست دان، عالم دین، دانش ور، استاذ، طالب علم اور خطیب کے لیے اسلام دشمن طاقتوں کے مکر وفریب اور ان کے طریقۂ واردات کو گہرائی کے ساتھ سمجھنا نہایت ضروری ہے۔ یہ فہم ''علم نظریاتی جنگ'' کے بغیر حاصل نہیں ہوسکتا۔

فی زمانہ اس علم کو قرار واقعی اہمیت دینے کی سخت ضرورت ہے جب کہ صورتحال اس کے برعکس ہے۔ بعض لوگ یہ سمجھتے ہیں کہ جہاد بالسیف غلبۂ اسلام کا واحد ذریعہ ہے اور فکری و دعوتی محنت کی کوئی خاص ضرورت نہیں۔ یہ سوچ قابل اصلاح ہے۔ یقیناً جہاد کی اہمیت سے کوئی مسلمان انکار نہیں کرسکتا، بلاشبہ جہاد کے بغیر احیائے اسلام اور بقائے اسلام ممکن نہیں مگر بعض لوگ اس بارے میں مبالغہ کر کے فکری و نظریاتی جنگ کی اہمیت کو نظر انداز کر رہے ہیں جو کہ ایک غیر معقول روش ہے اور اس سے خود جہاد کے اصل مقصد یعنی ''اعلائے کلمۃ اللہ'' کو نقصان پہنچنے کا اندیشہ ہے۔

عسکری جنگ، فکری اور نظریاتی جنگ کے بغیر غیر مؤثر ثابت ہوتی ہے۔ اگر نظریاتی جنگ اور عسکری جنگ میں باہم توازن اور تعلق نہ ہو تو بڑی سے بڑی تباہ کن فوج کسی چھوٹے سے محاذ پر بھی مستقل فتح حاصل نہیں کر سکتی۔ اگر وقتی طور پر کامیابی نصیب ہو جائے تو بھی ہر وقت پانسا پلٹنے کا خطرہ برقرار رہے گا۔

مسلمان اس وقت عسکری جنگ میں برابری کی سطح پر نہیں۔ وہ جنگی وسائل کے لحاظ سے بہت پیچھے ہیں، ایسے میں دشمن سے لڑنے کے لیے نظریاتی محاذ کی پشت پناہی حاصل کرنا اور زیادہ ضروری ہے۔ بعض عسکری ماہرین کا کہنا ہے کہ اس وقت جنگیں بیس فی صد میدانوں میں اور 80 فی صد میڈیا پر لڑی جاتی ہیں۔ لہٰذا حالات کی نزاکت، زمانے کے تقاضوں اور اپنی دفاعی پوزیشن کو دیکھتے ہوئے کسی طور یہ گنجائش نہیں نکلتی کہ ہم نظریاتی جنگ سے غافل رہیں۔

علم نظریاتی جنگ کو عالمِ عرب میں گزشتہ تیس چالیس سال سے بڑا مقام حاصل ہے۔ وہاں کی جامعات میں یہ باقاعدہ نصاب میں شامل ہے، اساتذہ اس پر لیکچرز تیار کرتے ہیں اور اسے خاص اہمیت سے پڑھایا جاتا ہے۔ اس پر درجنوں تصانیف ہیں اور اس کے باقاعدہ متخصصین موجود ہیں، لیکن ہمارے ہاں اس مضمون کو اب تک وہ اہمیت نہیں دی گئی جس کا یہ مستحق ہے۔ ضرورت ہے کہ تمام دینی و عصری تعلیم گاہوں میں اسے نصاب کا لازمی حصہ بنایا جائے۔

## 1.12- علم تقابلِ ادیان اور علم نظریاتی جنگ میں فرق:

بعض لوگ علم نظریاتی جنگ اور علم تقابلِ ادیان کو ایک ہی چیز سمجھتے ہیں حالاں کہ دونوں میں خاصا فرق ہے۔ تقابلِ ادیان میں بنیادی طور پر مختلف مذاہب کا تعارف کرانا مقصود ہوتا ہے۔ اسلام، یہودیت، نصرانیت، ہندومت اور دوسرے مشہور ادیان کے بنیادی عقائد، مذہب کے مآخذ، تاریخ اور بانیانِ مذاہب کے حالات پر روشنی ڈالی جاتی ہے۔

الغزو الفکری میں مختلف اقوام کے عقائد بیان کرنا مقصود نہیں بلکہ اصل زور اس بات پر ہوتا ہے کہ ہمارے دشمن کون ہیں؟ اسلام دشمن طاقتیں کن ہتھکنڈوں سے اسلام کو ختم کرنے کی کوشش کر رہی ہیں، کون کون سے وسائل استعمال کر رہی ہیں اور کس کس طرح سازشیں کر رہی ہیں۔

تاہم حریف اقوام کا تعارف کروانے کے لیے ضمناً ان کے نظریات کا ذکر بھی ہوتا ہے۔

## 1.13- عسکری اور نظریاتی جنگ میں فرق:

عسکری اور نظریاتی جنگ میں کئی وجوہ سے بڑا فرق ہے جن پر غور کر کے ہم یہ بھی سمجھ سکتے ہیں کہ کون سی جنگ کے اثرات وخطرات زیادہ ہیں اور کون سی جنگ زیادہ مہلک اور دشوار ہے۔

عسکری جنگ ..... میں دشمن جانا پہچانا اور سامنے ہوتا ہے۔

نظریاتی جنگ ..... میں دشمن نامعلوم ہوتا ہے جو چھپ کر حملہ کرتا ہے۔

عسکری جنگ ..... میں دشمن کی تیاری اور طاقت کا اندازہ لگا لیا جاتا ہے۔

نظریاتی جنگ ..... میں دشمن کی تیاری کا پتا نہیں چلتا، حملے کی بھی عموماً خبر نہیں ہوتی۔

عسکری جنگ ..... میں دفاعی تیاری کرنا آسان ہوتا ہے۔

نظریاتی جنگ ..... میں دفاع بڑا مشکل ہوتا ہے، لوگ نشانہ بنتے چلے جاتے ہیں۔

عسکری جنگ ..... میں دشمن کے اہداف معلوم ہوتے ہیں۔

نظریاتی جنگ ..... میں عموماً اہداف نظروں سے اوجھل ہوتے ہیں۔

عسکری جنگ ..... وقتی ہوتی ہے، دو چار دن، مہینوں یا سالوں بعد بہر حال ختم ہو جاتی ہے۔

نظریاتی جنگ ..... صدیوں تک جاری رہتی ہے۔

عسکری جنگ ..... میں حملہ اجسام، عمارات اور فوجی اہداف پر ہوتا ہے، نقصان صرف مادی ہوتا ہے۔

نظریاتی جنگ ..... میں حملہ اذہان، قلوب، اور خیالات پر ہوتا ہے۔ نقصان روحانی، مذہبی اور نظریاتی ہوتا ہے جس کے بعد مادی نقصان بھی ضرور ہوتا ہے۔

عسکری جنگ ..... میں شہر اور ملک چھینے جاتے ہیں، زمین فتح کی جاتی ہے۔

نظریاتی جنگ ..... میں انسان سے اس کی سوچ چھین لی جاتی ہے۔

عسکری جنگ ..... میں جسم مرتا یا زخمی ہوتا ہے۔

نظریاتی جنگ ..... میں روح نشانہ بنتی ہے۔

عسکری جنگ ..... کے زخم اور نقصانات نظر آتے ہیں اور ان کا علاج ہوتا رہتا ہے۔

نظریاتی جنگ ..... میں زخم پوشیدہ ہوتے ہیں، ان کا علاج کرانے کا زخمیوں کو خیال آتا ہے نہ کسی اور کو.....

معلوم ہوا کہ نظریاتی جنگ، عسکری جنگ سے زیادہ مؤثر، مہلک اور کارگر ہے۔

## 1.14- مسلمانوں اور کفار کی نظریاتی جنگ میں فرق:

اگرچہ کفار بھی نظریاتی جنگ لڑ رہے ہیں اور ہم بھی لڑتے رہے ہیں مگر دونوں میں فرق واضح ہے۔

- ہماری نظریاتی جنگ ''دعوتِ دین'' کا ایک شعبہ ہے۔
- ہمارے اہداف وہی ہیں جن کے لیے انبیائے کرام علیہم السلام مبعوث ہوئے۔ ہمارے سامنے ذاتی، قبائلی، علاقائی وطبقاتی مفادات کا کوئی تصور نہیں۔ بلکہ ہمارا مقصد وہی ہے جو رستم کے دربار میں ربعی بن عامر رضی اللہ عنہ نے بیان کیا تھا:

''اَللّٰهُ اِبْتَعَثَنَا لِنُخْرِجَ الْعِبَادَ مِنْ عِبَادَةِ الْعِبَادِ اِلٰى عِبَادَةِ رَبِّ الْعِبَادِ وَمِنْ جَوْرِ الْاَدْيَانِ اِلٰى عَدْلِ الْاِسْلَامِ وَمِنْ ضَيْقِ الدُّنْيَا اِلٰى سَعَتِهَا''

''ہمیں اللہ نے بھیجا ہے اس لیے کہ ہم بندوں کو بندوں کی بندگی سے نکال کر اللہ کی بندگی کی جانب لے جائیں، دیگر مذاہب کے ظلم سے بچا کر اسلام کے عدل وانصاف کے سائے میں لے آئیں، دنیا کی تنگی سے نکال کر اس کی وسعت میں لے آئیں۔''

اسلام کے فکری ونظریاتی جہاد کا مقصد ایک مثالی نظام رائج کرنا ہے جس میں اختیارات اور وسائل کا حقیقی مالک اللہ ہے، انسان اس کے نائب اور امین کی حیثیت سے اس کی بخشی ہوئی زندگی اور وسائل کو اس کی رضا میں خرچ کرتا ہے، اس کی عبادت کے ساتھ ساتھ اس کے بندوں کے حقوق کی ادائیگی اور دنیا کے امن وفلاح کے لیے اپنی ذات سے بالاتر ہو کر ''الدین النصیحة'' (دین سراسر خیر خواہی کا نام ہے) کے جذبے سے کام کرتا ہے۔

اس کے مقابلے میں دیگر مذاہب واقوام کی نظریاتی جنگ صرف اپنے مقاصد کے لیے ہے۔ وہ مقاصد دنیا کی دولت اور وسائل پر قبضے اور انسانوں کو غلامی کے نت نئے شکنجوں میں گرفتار

کرنے کے سوا کچھ نہیں۔

بظاہر نظریاتی حملہ آور انسانی حقوق، مساوات، عالمگیر امن اور عالمی مفادات کا نعرہ لگاتے ہیں مگر ان کے کردار و برتاؤ کی تاریخ پر ایک نظر ڈالنے سے ہی پتا چل جاتا ہے کہ وہ دنیا کے وسائل کو ایک قوم کے لیے مسخر کرنے کی جدوجہد کر رہے ہیں۔ یہی وجہ ہے کہ وہ جائز و ناجائز اور اخلاق سے گرے ہوئے ہتھکنڈے بھی پوری ڈھٹائی اور منصوبہ بندی سے اپناتے ہیں، لوگوں کو مال و زر کا لالچ دے کر ایمان خریدتے ہیں، شراب و شباب عام کرتے ہیں، ہر دھوکے اور فریب سے کام لیتے ہیں اور ضرورت پڑے تو بے دریغ خون بھی بہا دیتے ہیں۔

اگر مزید غور سے جائزہ لیا جائے تو یہ حقیقت بھی عیاں ہوگی کہ نظریاتی حملہ آوروں کی یہ جدوجہد کسی ایک قوم کے لیے بھی نہیں ہے بلکہ حقیقت میں چند افراد ہی ساری دنیا کے مالک بننے کی تگ و دو میں ہیں۔ اگرچہ آج تک ایسا ہوا ہے نہ کبھی ہو پائے گا۔ بڑے سے بڑا فرعون ماضی میں بھی ﴿اَنَا رَبُّكُمُ الْاَعْلٰى﴾ کا نعرہ لگانے کے بعد آخر کار غرق ہو جاتا ہے اور اللہ کی قدرت ہر ظالم و جابر کو عبرت کا نمونہ بنا کر چھوڑتی ہے۔

# مراجع


- الغزوالفکری۔ باب اوّل (دراسات فی الثقافۃ الاسلامیۃ، لجنۃ المناہج)
- الغزوالفکری ووسائلہ.....شیخ عبدالعزیز بن باز
- اسالیب الغزوالفکری: ڈاکٹر علی محمد جریشہ، استاذ محمد شریف الزیبق۔ الجامعۃ الاسلامیۃ مدینہ منورہ
- الغزوالفکری فی مناہج الدراسیۃ۔ استاذ علی لبن، دارالوفاء، 1992ء
- اخطارالغزوالفکری۔ ڈاکٹر صابر طعیمہ، عالم الکتب
- تحصین مجتمع المسلم ضدالغزوالفکری.....ڈاکٹر حمود بن احمد الرحیلی
- الغزوالفکری: شیخ ممدوح فخری۔ الجامعۃ الاسلامیہ مدینہ منورہ

دوسرا باب

2

# فکری ونظریاتی جنگوں کی تاریخ

# تاريخ الغز والفكرى

# *History of* Ideological War

# تاریخ الغزو الفکری

## History of Ideological War

فکری ونظریاتی اور عسکری جنگیں دنیا میں زمانہ قدیم سے چلی آرہی تھیں۔ یہ جنگ اتنی ہی قدیم ہے جتنی حق و باطل کی کشمکش۔ بندگانِ خدا کو راہِ مولا سے ہٹانے کی سازشیں پیدائشِ آدم کے ساتھ ہی شروع ہوگئی تھیں۔ شیطان نے آدم علیہ السلام کو سجدہ کرنے سے انکار کیا اور حق تعالیٰ شانہٗ کی بارگاہ سے مردود ہوا۔ اس وقت اس نے سامنے شیخی بگھاری کہ اگر مہلت مل جائے تو وہ انسانوں کو گمراہ کر کے چھوڑے گا۔

﴿لَئِنْ اَخَّرْتَنِ اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ لَاَحْتَنِكَنَّ ذُرِّيَّتَهٗٓ اِلَّا قَلِيْلًا ۝﴾ (بنی اسرائیل)

''اگر تو مجھے قیامت کے دن تک مہلت دے تو میں تھوڑے سے شخصوں کے سوا اس کی (تمام) اولاد کی جڑیں کاٹتا رہوں گا۔''

چوں کہ اللہ تعالیٰ کو نسلِ انسانی کی آزمائش مقصود تھی اس لیے شیطان کو یہ مہلت دے دی گئی اور ارشاد ہوا:

﴿وَاسْتَفْزِزْ مَنِ اسْتَطَعْتَ مِنْهُمْ بِصَوْتِكَ وَاَجْلِبْ عَلَيْهِمْ بِخَيْلِكَ وَرَجِلِكَ وَشَارِكْهُمْ فِى الْاَمْوَالِ وَالْاَوْلَادِ وَعِدْهُمْ ۭ وَمَا يَعِدُهُمُ الشَّيْطٰنُ اِلَّا غُرُوْرًا ۝﴾ (بنی اسرائیل)

''اور ان میں سے جس کو بہکا سکے اپنی آواز سے بہکاتا رہ، اور ان پر اپنے سواروں اور پیادوں کو چڑھا کر لاتا رہ، اور ان کے مال اور اولاد میں شریک ہوتا رہ۔ اور ان سے وعدے کرتا رہ اور شیطان جو ان سے وعدے کرتا ہے سب دھوکا ہے۔''

ساتھ ہی بتا دیا گیا:

﴿اِنَّ عِبَادِىْ لَيْسَ لَكَ عَلَيْهِمْ سُلْطٰنٌ ۭ وَكَفٰى بِرَبِّكَ وَكِيْلًا ۝﴾ (بنی اسرائیل)

''جو میرے (مخلص) بندے ہیں ان پر تیرا کچھ زور نہیں اور (اے پیغمبر!) تمہارا پروردگار

کارساز کافی ہے۔"

فکری ونظریاتی جنگ کا آغاز تو اسی وقت ہو گیا تھا جب ابلیس نے حضرت آدم علیہ السلام اور حوا علیہا السلام کو بہکانا شروع کیا تھا۔ اس نے ان دونوں کو بہلا پھسلا کر ممنوعہ درخت کا پھل کھانے پر آمادہ کرنے کی کوشش کی، قسمیں کھا کر یقین دلایا کہ میں تمہارا خیر خواہ اور دوست ہوں۔

اسی طرح جنت سے آدم علیہ السلام کے زمین پر اتارے جانے اور نوع انسانی کی پیدائش کا سلسلہ پھیلنے کے ساتھ ساتھ شیطان نے اولادِ آدم کے خلاف بھی اپنی دسیسہ کاریوں کا جال بچھانا شروع کر دیا اور انسانیت گمراہی کی راہ اختیار کرنے لگی۔ تب حق جل شانہٗ کی طرف سے سچائی کا پیغام لانے والے پیغمبروں کے عظیم الشان سلسلے کا آغاز کیا گیا جو ہر طرح کی تکالیف اور مصائب برداشت کر کے گم گشتہ انسانیت تک پیغام حق پہنچاتے رہے۔ دوسری طرف شیطان اور اس کے بہکائے ہوئے لوگوں نے گمراہی پھیلانے کا سلسلہ جاری رکھا اور یہ کشاکش کبھی ختم ہونے میں نہ آئی۔ انبیاء کے مخالفین مخالفت کے جوش میں مختلف ذہنی اور نظریاتی حربے اور ہتھکنڈے آزماتے رہے تھے۔ ایسا بہت کم ہوا کہ باقاعدہ جنگیں لڑی گئیں ہوں۔ حضرت موسیٰ، یوشع بن نون، سلیمان اور داؤد علیہم السلام کے دور میں کے زمانے میں جہاد ہوا تھا، لیکن ایسی مثالیں کم ہیں۔ زیادہ تر فکری ونظریاتی طور پر مقابلہ ہوتا رہا۔

## 2.1 نبی اکرم ﷺ کا زمانہ:

جب نبی اکرم ﷺ کی بعثت ہوئی تو اس کشمکش نے ایک بھرپور مقابلے کی شکل اختیار کر لی۔ یہی وہ زمانہ تھا جب حق اور باطل کے پیروکاروں کے مابین فکری ونظریاتی جنگ کے وہ وہ مناظر دیکھنے میں آئے جن سے سابقہ تاریخ خالی تھی۔

قرآن مجید نے اسی وقت بتا دیا تھا کہ یہ جنگ مسلسل جاری رہے گی۔

﴿ وَلَا يَزَالُونَ يُقَاتِلُونَكُمْ حَتّٰى يَرُدُّوكُمْ عَنْ دِينِكُمْ اِنِ اسْتَطَاعُوا ﴾

(البقرة: ۲۱۷)

"کفار تم سے ہمیشہ لڑتے رہیں گے جب تک کہ تمہیں تمہارے دین سے نہ ہٹا دیں اگر ان کا

بس چلے۔''

﴿وَدَّ كَثِيرٌ مِّنْ أَهْلِ الْكِتَابِ لَوْ يَرُدُّونَكُم مِّن بَعْدِ إِيمَانِكُمْ كُفَّارًا﴾ (البقرة: ۱۰۹)

''اہل کتاب میں بہت سے یہ چاہتے ہیں کہ تمہیں تمہارے ایمان لانے کے بعد پھر سے کافر بنادیں۔''

سابقہ ادوار میں کسی نبی اور اس کی امت نے حق وصداقت کا پرچم بلند رکھنے کے لیے ایسی آزمائشیں برداشت نہیں کی تھیں جن سے نبی اکرم ﷺ اور آپ کے صحابہ کو واسطہ پڑا تھا۔ ان نفوس قدسیہ نے اس راہ میں گالم گلوچ اور سخت ترین جسمانی تشدد سے لے کر گھر بار تک کی قربانی دی، وطن چھوڑا، اعزہ واقارب کی قطع تعلقی بلکہ عداوت کی تکلیفیں سہیں، فاقے کیے، اپنی جانیں ہتھیلیوں پر رکھ کر اللہ کے سچے دین کی اشاعت کی، اس کی حفاظت کے لیے سردھڑ کی بازی لگائی، بے سروسامانی کے عالم میں سخت ترین جنگیں لڑیں، نہ صرف پورے عرب بلکہ قیصر وکسریٰ تک کی دشمنی کی پروانہ کی، اس وقت کی ان سب سے بڑی بادشاہتوں کی یلغار کے خطرات کا سامنا کیا، اور ان حالات میں دین اسلام کا پیغام فارس کے ایوانوں سے لے کر افریقہ کے جنگلات تک پہنچا کر چھوڑا۔

نبی اکرم ﷺ کی سیرت میں حق وباطل کے مابین فکری ونظریاتی کشمکش پر غور کرنا اور اس خاص نقطۂ نظر سے سیرت نبویہ کے ذخائر کا مطالعہ کرنا وقت کی اہم ترین ضرورت ہے کیوں کہ فی زمانہ ہمیں جن طاغوتی طاقتوں سے پالا پڑا ہے ان کی سازشوں کے توڑ کے لیے ہمیں سب سے بہتر رہنمائی سیرتِ نبویہ ہی سے مل سکتی ہے۔

یہاں ہم اختصار کے ساتھ اس دور کی فکری ونظریاتی کشمکش پر ایک نظر ڈالتے ہیں اور اسے دو حصوں مکی دور اور مدنی دور میں تقسیم کر کے اس کا جائزہ لیتے ہیں۔

### 2.1.1- مکی دَور میں:

مکی دور میں مسلمان کمزور تھے، اسلام کی دعوت کے مددگار بہت کم تھے۔ جب کہ مخالفین کی طاقت بہت زیادہ تھی، تعداد، وسائل اور طاقت کے لحاظ سے مسلمان ان کے مدمقابل نہیں بن سکتے تھے۔ مگر روشنی کی ایک کرن گھٹاٹوپ اندھیرے کا سینہ چیرنے کے لیے کافی ہوتی ہے۔

اسلام کی شمع اس تاریکی میں بھی جگمگاتی رہی اور حق کے پروانے اس کی طرف امنڈتے رہے۔ یہ دیکھ کر دارالندوۃ میں کفر کے سرغنوں کے قلق واضطراب میں اضافہ ہوتا گیا اور اسلام کو مٹانے کی نت نئی سازشیں مرتب ہوتی رہیں۔ کفار کی طرف سے فکری ونظریاتی جنگ کے لیے اختیار کی گئی ان مذموم کوششوں اور سازشوں کے چند نمونے درج ذیل ہیں:

## 2.1.2- مخالفین کی مجلس مشاورت کا قیام:

اسلام کی مخالفت کے لیے مکہ کے رؤساء مل بیٹھتے تھے اور باہمی مشاورت سے حضور اکرم ﷺ کے خلاف نت نئی اسکیمیں بنایا کرتے تھے۔ ان سرکردہ لوگوں میں ابوجہل، ابولہب، امیہ بن خلف، ابی بن خلف، ولید بن مغیرہ، عقبہ بن معیط اور نضر بن حارث پیش پیش تھے۔

## 2.1.3- پیام حق میں وساوس وشبہات پیدا کرنا:

یہ لوگ حضور اکرم ﷺ کے سچے، صاف اور واضح پیغام توحید کو طرح طرح کے وساوس اور شبہات کے ذریعے عوام کے لیے ناقابلِ قبول بنانے کی کوشش کرتے تھے۔

﴿اَجَعَلَ الْاٰلِهَةَ اِلٰهًا وَّاحِدًا ۚ اِنَّ هٰذَا لَشَیْءٌ عُجَابٌ ۝﴾ (ص)

''کیا اس نے اتنے معبودوں کی جگہ ایک ہی معبود بنا دیا۔ یہ تو بڑی عجیب بات ہے''

﴿مَا سَمِعْنَا بِهٰذَا فِی الْمِلَّةِ الْاٰخِرَةِ ۚ اِنْ هٰذَاۤ اِلَّا اخْتِلَاقٌ ۝﴾ (ص)

''یہ پچھلے مذہب میں ہم نے کبھی سنی ہی نہیں۔ یہ بالکل بنائی ہوئی بات ہے۔''

## 2.1.4- تاویلات فاسدہ:

اکثر اپنے شرک اور بداعتقادیوں کی عجیب عجیب تاویلات پیش کرتے تاکہ قوم مطمئن رہے۔

﴿مَا نَعْبُدُهُمْ اِلَّا لِیُقَرِّبُوْنَاۤ اِلَی اللّٰهِ زُلْفٰی ؕ﴾ (الزمر: ۳)

''ہم ان (بتوں) کو اس لیے پوجتے ہیں کہ ہمیں اللہ کا مقرب بنا دیں۔''

## 2.1.5- جھوٹے پروپیگنڈے:

حق کو جھٹلانے اور سچائی کو کذب ثابت کرنے کے لیے طرح طرح کے پروپیگنڈے کیے جاتے، مثلاً حضور اکرم ﷺ کی جانب سے جب قرآن مجید کی آیات سنائی جاتیں تو کفار کہتے:

﴿اِنَّمَآ اَنۡتَ مُفۡتَرٍ﴾ (النحل: ۱۰۱)

''تم یونہی اپنی طرف سے بنالیتے ہو۔''

مگر جب ساتھ ہی یہ سوال پیدا ہوتا کہ ایسا بے مثل کلام ایک ناخواندہ انسان کیسے اختراع کر سکتا ہے تو وہ پروپیگنڈا کرتے:

﴿اِنَّمَا يُعَلِّمُهٗ بَشَرٌ﴾ (النحل: ۱۰۳)

''اس پیغمبر کو کوئی شخص سکھا جاتا ہے۔''

## 2.1.6- طعنے، استہزاء، القابِ رذیلہ کی تشہیر:

حضور اقدس ﷺ کو برے القاب سے مشہور کیا جاتا، آپ کو محمد کی جگہ مذمّم کہنے کی مہم شروع کی گئی، مذاق اڑایا گیا، استہزاء کیا گیا، جھوٹا، شاعر، ساحر اور مجنون تک کہا گیا۔

﴿وَقَالُوۡا يٰۤاَيُّهَا الَّذِىۡ نُزِّلَ عَلَيۡهِ الذِّكۡرُ اِنَّكَ لَمَجۡنُوۡنٌ ۝﴾ (حجر)

اور (کفار) کہتے ہیں: اے شخص جس پر نصیحت کی کتاب نازل کی گئی ہے تُو تو دیوانہ ہے۔''

﴿بَلۡ قَالُوۡۤا اَضۡغَاثُ اَحۡلَامٍ بَلِ افۡتَرٰٮهُ بَلۡ هُوَ شَاعِرٌ ۚ﴾ (الأنبیاء: ۵)

''یہ قرآن منتشر خیالات ہیں جو خواب میں دیکھے ہیں، نہیں بلکہ یہ (شعر ہے جو اس) شاعر (کا نتیجہ طبع) ہے۔''

﴿قَالَ الۡكٰفِرُوۡنَ اِنَّ هٰذَا لَسٰحِرٌ مُّبِيۡنٌ ۝﴾ (یونس)

''کافر کہتے ہیں کہ یہ صریح جادوگر ہے۔''

## 2.1.7- حوصلہ شکن بیانات:

کبھی داعیٔ اسلام کو مایوس کرنے کے لیے حوصلہ شکن بیانات جاری کرتے، کہتے:

﴿قُلُوۡبُنَا فِىۡۤ اَكِنَّةٍ مِّمَّا تَدۡعُوۡنَاۤ اِلَيۡهِ وَفِىۡۤ اٰذَانِنَا وَقۡرٌ وَّمِنۡۢ بَيۡنِنَا وَبَيۡنِكَ حِجَابٌ فَاعۡمَلۡ اِنَّنَا عٰمِلُوۡنَ ۝﴾ (حٰمٓ سجدة)

''جس چیز کی طرف تم ہمیں بلاتے ہو اس سے ہمارے دل غلاف میں ہیں، اور ہمارے کانوں میں بوجھ (بہرا پن) ہے اور ہمارے اور تمہارے درمیان پردہ ہے، تو تم اپنا کام کرو، ہم

اپنا کام کرتے ہیں۔"

## 2.1.8- عجیب وغریب مطالبے کرنا:

﴿وَقَالُوْا لَنْ نُّؤْمِنَ لَكَ حَتّٰى تَفْجُرَ لَنَا مِنَ الْاَرْضِ يَنْۢبُوْعًا ۝ اَوْ تَكُوْنَ لَكَ جَنَّةٌ مِّنْ نَّخِيْلٍ وَّعِنَبٍ فَتُفَجِّرَ الْاَنْهٰرَ خِلٰلَهَا تَفْجِيْرًا ۝ اَوْ تُسْقِطَ السَّمَآءَ كَمَا زَعَمْتَ عَلَيْنَا كِسَفًا اَوْ تَاْتِيَ بِاللّٰهِ وَالْمَلٰٓئِكَةِ قَبِيْلًا ۝﴾ (بنی اسرائیل)

"اور کہنے لگے ہم تم پر ایمان نہیں لائیں گے جب تک (عجیب وغریب باتیں کر کے نہ دکھاؤ یعنی یا تو) ہمارے لیے زمین سے چشمہ جاری کردو، یا تمہارا کھجوروں اور انگوروں کا کوئی باغ ہو اور اس کے بیچ نہریں بہا نکالو، یا جیسا تم کہا کرتے ہو ہم پر آسمان کے ٹکڑے لا کر گراؤ یا خدا یا فرشتوں کو ہمارے سامنے لاؤ۔"

## 2.1.9- مسلمانوں کو ذہنی اور جسمانی اذیتیں دینا:

اس کے ساتھ کفار نے مسلمانوں پر ظلم وتشدد کا سلسلہ بھی شروع کر دیا، چنانچہ حضور اقدس ﷺ کے گھر کے دروازے پر کوڑا کرکٹ اور نجاست پھینک دی جاتی، راہ چلتے آپ کے سر پر خاک ڈالی جاتی، حتیٰ کہ آپ ﷺ کو حرم شریف میں دوران طواف گھیر کر شدید زدوکوب کیا گیا۔
(الروض الانف:2/40)

حضرت بلال حبشی، عمار بن یاسر، خباب بن الارت اور صہیب رومی رضی اللہ عنہم جیسے صحابہ ان کے مظالم کا بطور خاص نشانہ بنتے رہے۔ (سیرۃ ابن ہشام:1/342)

## 2.1.10- خاندانی دباؤ اور دھمکیاں:

کفار نے ابوطالب کے پاس مذاکراتی وفد لے جا کر مطالبہ کیا کہ اپنے بھتیجے کو اس دعوت سے روک لیں ورنہ انجام اچھا نہیں ہوگا مگر حضور اکرم ﷺ نے اس دباؤ کو بھی مسترد کر دیا اور یہ تاریخی جملہ ارشاد فرمایا:

"اگر یہ لوگ میرے دائیں ہاتھ پر سورج اور بائیں پر چاند بھی لا کر رکھ دیں تب بھی میں اس ذمہ داری سے باز نہیں آؤں گا، یہاں تک کہ یا تو اللہ تعالیٰ اپنے دین کو غالب کر دے گا یا میں

اسی کام میں اپنی جان دے دوں گا۔" (الکامل:1/288،289)

### 2.1.11- سرداری، مال ودولت اور حسین عورتوں کا لالچ:

لالچ کا داؤ بھی آزما کر دیکھا گیا، حضور اکرم ﷺ کو مال ودولت، حسین عورتوں اور عرب کی سرداری تک کا لالچ دیا گیا تاکہ آپ دعوت حق سے کنارہ کش ہو جائیں مگر اللہ کے پیغمبر کے ہاں ایسی کوئی پیش کش قبول کرنے کا سوال ہی پیدا نہیں ہوتا تھا۔ (سیرۃ ابن ہشام:1/295،296 ش)

### 2.1.12- سمجھوتے کا جھانسا:

ایک بار سمجھوتے کا جھانسا اس طور پر دیا گیا کہ دونوں مذاہب میں اشتراک کر لیا جائے یعنی قریش ایک سال مسلمانوں کی طرح اللہ کی عبادت بھی کریں گے اور مسلمان ایک سال بتوں کی بھی پوجا کریں۔ (تفسیر ابن کثیر، سورۃ الکافرون)

### 2.1.13- سماجی بائیکاٹ:

انتہائی اقدام کے طور پر مسلمانوں کا سماجی واقتصادی مقاطعہ بھی کیا گیا، طے ہوا کہ ان کے ساتھ نہ رشتے ناتے ہوں گے نہ خرید وفروخت۔ مسلمانوں اور ان کی حمایت کے جرم میں تمام بنی ہاشم کو تین سال تک شعب ابی طالب میں محصور رکھا گیا۔ (الکامل:1/504)

### 2.1.14- پروپیگنڈا اور شور شرابا:

شور شرابے سے حق کی آواز کو دبانے کی کوشش کی جاتی، مشرکین نے طے کیا تھا:

﴿لَا تَسْمَعُوْا لِهٰذَا الْقُرْاٰنِ وَالْغَوْا فِيْهِ لَعَلَّكُمْ تَغْلِبُوْنَ ۝﴾ (حٰمٓ سجدۃ)

"اس قرآن کو نہ سنو اور اس کی تلاوت کے دوران شور مچا دیا کرو تاکہ تم غالب آ جاؤ۔"

### 2.1.15- جلاوطنی:

تمام تر حربوں کا عروج یہ تھا کہ مسلمانوں کو وطن سے نکلنے پر مجبور کر دیا گیا۔ اس ظلم وستم کے نتیجے میں مسلمان اپنا وطن چھوڑنے پر مجبور ہوئے، کچھ نے حبشہ کی طرف ہجرت کی اور اکثریت نے چند سال بعد مدینہ کی طرف۔ غور کیا جائے تو ہر دور میں باطل مکر وفریب اور ایذا کے یہی داؤ پیچ نت نئی شکلوں میں آزماتا آیا ہے۔

## 2.2- مسلمانوں کی جانب سے اس جنگ کے ہتھیار:

یہ تو کفار کے وہ ہتھکنڈے تھے جو اسلامی نظریے کی اشاعت روکنے کے لیے اختیار کیے جاتے رہے تھے۔اس کے مقابلے میں مسلمانوں کا دفاعی اور جوابی لائحہ عمل تین حصوں پر مشتمل تھا:

1. خالق سے تعلق
2. مخلوق کی خیر خواہی
3. اپنی علمی وعملی تربیت

### 2.2.1- خالق سے تعلق:

مسلمان اللہ پر مضبوط ایمان رکھتے تھے اور اس کی ذات سے تعلق کی تجدید ہر آن کرتے رہتے تھے۔اس مقصد کے لیے ذکر الٰہی، دعائیں اور تلاوت اہم ذرائع تھے۔نماز کی فرضیت سے قبل اللہ سے رابطے کے ذرائع یہی تھے۔

مسلمانوں کے پاس سب سے بڑے ہتھیار کلمہ طیبہ اور قرآن مجید تھے۔قرآن مجید مخالفین کے اعتراضات کے اس قدر بھرپور جواب دیتا کہ وہ مبہوت رہ جاتے۔قرآن مجید کا دل پذیر اسلوب، معجزانہ فصاحت اور صوتی آہنگ بڑے سے بڑے سنگدل کو سوچنے اور غور کرنے پر مجبور کر دیتا اور دلوں کے قفل کھلتے چلے جاتے۔

### 2.2.2- مخلوق کی خیر خواہی:

مخلوق خدا کی خیر خواہی کے جذبے سے لیس ہو کر ہر مسلمان دوسروں کے واجب حقوق کی ادائیگی ہی نہیں کرتا تھا بلکہ حق سے بڑھ کر خدمت کرنے، موقع پر کام آنے اور معاشرے کے ضعیف ومجبور لوگوں کی ضروریات کی دیکھ بھال کرنے کی کوشش کرتا۔حضور اکرم ﷺ اس میں پیش پیش تھے، دیگر صحابہ بھی جن میں ابوبکر صدیق رضی اللہ عنہ نمایاں ہیں، ایسے کاموں کے لیے مشہور تھے۔

مگر انسانوں کی سب سے بڑی خیر خواہی یہ تھی کہ انہیں جہنم کی آگ سے بچانے کی کوشش کی جائے اور دین کی دعوت عام کی جائے چنانچہ ہر مسلمان دین کا داعی بن چکا تھا۔کلمے کی دعوت، پہلے خفیہ اور پھر علانیہ، انفرادی اور اجتماعی طور پر جاری رہی۔مشاورت سے کام کرنا، حکمت کے

ساتھ چلنا، اخلاق وشائستگی سے دعوت دینا اور جواب میں ملنے والی ایذاؤں پر صبر وتحمل اس مہم میں مسلمانوں کے اہم ہتھیار تھے۔

### 2.2.3- اپنی علمی وعملی تربیت:

اپنی تربیت اور اصلاح کے لیے حضور نبی اکرم ﷺ کی صحبت ورفاقت سب سے بڑا ذریعہ تھی۔ یہی پاک ہستی اصلاح نفس کا مرکز بھی تھی اور علم کا محور بھی۔

دینی علم یعنی وحی کی حفاظت اسی وقت سے ملحوظ تھی۔ مکی دور میں قرآن مجید کی آیات یاد کرنے اور سنانے کا سلسلہ جاری تھا۔ مشاورت اور دینی تعلیم کا مرکز دارِارقم تھا۔

اس تمام تر جدوجہد میں حضور نبی اکرم ﷺ اور آپ کے رفقاء کے لیے سب سے بڑا سہارا قرآن مجید تھا۔ داعیان حق کو قدم قدم پر قرآن مجید کی رہنمائی مل رہی تھی (جو آج بھی موجود ہے اور تا قیامت رہے گی)

کفار وحی میں شبہات ڈالتے تو آسمان سے جوابات نازل ہوجاتے۔ وہ حوصلہ شکن پروپیگنڈا کرتے تو وحی مسلمانوں کی حوصلہ افزائی کرتی، قرآن مجید فتح ونصرت کی بشارت دی جاتی اور صبر کی تلقین کی جاتی۔

الغزوالفکری کے اگلے ابواب کا مطالعہ کرتے ہوئے ہمیں سیرت کے اس دور پر بطور خاص نگاہ رکھنا چاہیے کیوں کہ کمزوری اور کس مپرسی کے حالات میں اپنا لائحہ عمل اپنانے کے لیے ہمارے لیے سیرت کے اس حصے میں قدم قدم پر بہترین رہنمائی موجود ہے۔ بس غور فکر کی ضرورت ہے۔

## 2.3- مدنی دَور میں:

مدنی دور میں کفار کی جانب سے الغزوالفکری کی پانچ صورتوں کا ثبوت ملتا ہے:

### 2.3.1- ذرائع ابلاغ (Media):

اس زمانے کے ذرائع ابلاغ (Media) اشعار اور تقاریر میں منحصر تھے۔ ان کے لیے باقاعدہ محفلیں منعقد ہوتیں جن میں شعراء اپنی قوموں کی تعریف اور اغیار پر تنقید کے اشعار (ہجو) سناتے اور وہ زبان زدِ عام ہوکر پورے عرب میں پھیل جاتے۔ چوں کہ کفار کے شعراء مسلمانوں کی

توہین میں اشعار کہتے تھے، اس لیے مسلمان بھی اس کا جواب دیتے تھے۔ حضرت حسان بن ثابت اور حضرت عبداللہ بن رواحہ رضی اللہ عنہما کے اشعار مسلمانوں کا حوصلہ بڑھاتے، کفار سے ان کا کوئی جواب بن نہ پڑتا۔ (شمائل ترمذی: حدیث: 247۔ الاستیعاب: 1/271۔ اسد الغابہ: 2/107)

### 2.3.2- درس وتدریس:

مشرکینِ عرب میں درس وتدریس کا عام رواج نہ تھا مگر اہل کتاب اپنے بچوں کو علمی وفکری ہتھیاروں سے لیس کرنے میں کوئی کمی نہیں کرتے تھے۔ مدینہ منورہ میں یہودیوں کی باقاعدہ درسگاہیں موجود تھیں جنہیں ''بیت المدارس'' کہا جاتا تھا۔ (سنن کبریٰ بیہقی: 10/180)

### 2.3.3- مباحثے:

اہل کتاب خصوصاً یہود کے علماء اسلام پر اعتراضات کا کوئی موقع ہاتھ سے نہیں جانے دیتے تھے۔ حضور نبی اکرم ﷺ کو لاجواب کرنے کی غرض سے طرح طرح کے سوالات کرنا ان کی عادت تھی۔ روح، اصحاب کہف اور حضرت ذوالقرنین کے بارے میں ان کے سوالات کا ذکر قرآنِ مجید میں موجود ہے۔ (تفسیر ابن کثیر۔ سورۂ بنی اسرائیل، سورۃ الکہف)

نجران کے پادریوں نے ایک بار باقاعدہ مدینہ منورہ آکر حضور نبی اکرم ﷺ سے مناظرہ کیا تھا اور دلائل پیش کیے تھے جن کا دربارِ رسالت سے منہ توڑ جواب ملا تھا، انجام کار وہ عاجز ہو کر واپس گئے تھے۔ (تفسیر ابن کثیر۔ سورۂ آل عمران)۔

### 2.3.4- منافقت:

جہاں اہل حق مغلوب ہوں وہاں باطل ظلم وتشدد کا راستہ اختیار کرتا ہے، اور جہاں صداقت کے علمبردار منہ توڑ جواب دینے کی طاقت رکھتے ہوں وہاں باطل منافقت کی آڑ لے کر وار کرتا ہے۔

مکہ میں مسلمان مجبور ومقہور تھے اس لیے کفار کی ستم رانیوں کا کوئی حد وحساب نہ تھا، مگر مدینہ منورہ میں مسلمان ریاستی قوت حاصل کر چکے تھے اس لیے شیطان کے کارندوں نے بھیس بدل کر نئی چالیں چلنا شروع کیں۔ اس دور میں ان کا سب سے مہلک ہتھیار منافقت تھا۔ عبداللہ ابنِ اُبی جو کہ منافقین کا سردار تھا کفریہ طاقتوں کا سب سے شاطر مہرہ تھا، یہود سے اس کی گہری دوستی اور

کفار مکہ سے خفیہ روابط تھے۔

منافقین کے ذریعے مسلمانوں کے خلاف بارہا خطرناک سازشیں کی گئیں، جن کا مختصر جائزہ حسبِ ذیل ہے:

- حق کی دعوت میں رکاوٹیں ڈالنا
- دھوکہ دینے کے لیے خود کو مسلمان ظاہر کرنا
- ایثار وقربانی اور جان فروشی کے ہر موقع پر بہانے بنا کر جان بچانا
- جہاد سے روکنا
- مسلمانوں میں پھوٹ ڈالنا
- اعیانِ بیت نبوت کی کردار کشی

منافقین کی سرگرمیاں عین ان مواقع پر زیادہ تیز ہوجاتی تھیں جب حق وباطل کا کوئی معرکہ درپیش ہوتا چنانچہ غزوہ احد میں انہوں نے غداری کی اور عین وقت پر میدان جنگ سے ہٹ گئے، غزوہ مریسیع سے واپسی پر مہاجرین وانصار کو آپس میں لڑانے کی کوشش کی۔ ام المؤمنین حضرت عائشہ صدیقہ رضی اللہ عنہا پر تہمتوں کا طوفان اٹھا کر بیتِ نبوت پر رکیک حملے کیے۔ غزوہ تبوک میں حضور اکرم ﷺ کو قتل کرنے کی سازش کی۔ (تفسیر ابن کثیر، سورۂ آل عمران، سورۃ التوبہ، سورۃ النور، سورۃ المنافقون، سیرۃ ابن ہشام: 2/64، 297)

## 2.3.5- جاسوسی:

چوں کہ مدینہ منورہ اس وقت مکہ کی اسلام دشمن ریاست کے علاوہ دنیا کی دو بڑی طاقتوں فارس وروم کی نگاہ میں بھی کھٹکنے لگا تھا اس لیے یہ طاقتیں یہاں کے اندرونی احوال معلوم کرنے کے لیے مستعد رہتی تھیں۔ رسول اللہ ﷺ کو اس کا علم یا اندازہ ضرور تھا، تب ہی آپ ﷺ کسی بھی غزوے کی تیاری کو حتی الامکان مخفی رکھتے تھے، جس جانب کا قصد ہوتا اس کا اظہار نہیں فرماتے تھے بلکہ مجمعے میں دوسرے علاقوں کا حال پوچھا کرتے تھے۔ اس سے صاف معلوم ہوتا ہے کہ مدینہ منورہ میں باقاعدہ غیر مسلم طاقتوں کے جاسوس کام کر رہے تھے جن سے حفاظت

حضور ﷺ کے بھی پیشِ نظر تھی۔

حضرت کعب بن مالک رضی اللہ عنہ کے غزوہ تبوک سے پیچھے رہ جانے کے طویل واقعے سے بھی اس کا ثبوت ملتا ہے۔

حضرت کعب ابنِ مالک، مرارۃ ابن ربیع اور ہلال بن امیہ رضی اللہ عنہم کسی عذر کے بغیر غزوۂ تبوک میں شریک ہونے سے رہ گئے تھے۔ نبی اکرم ﷺ ان سے ناراض ہوگئے، اللہ پاک کی جانب سے بھی عتاب کا اظہار ہوا اور مسلمانوں کو ان سے تاحکم ثانی سماجی تعلقات منقطع کرنے کا حکم دے دیا گیا۔ چالیس دنوں تک مسلمانوں نے ان سے سلام کلام نہ کیا۔ اس دوران ایک غیر مُلکی شخص تاجر کے بھیس میں مدینہ پہنچا اور کعب ابن مالک رضی اللہ عنہ سے مل کر انہیں ایک خط تھما دیا جو شام کے عیسائی بادشاہ نے ان کے نام بھیجا تھا۔ خط میں لکھا تھا:

''میں نے سُنا ہے کہ تمہارے آقا نے تمہارے ساتھ بُرا سُلوک کیا ہے۔ خُدا تمہیں ذلّت و رُسوائی کی جگہ میں نہ رکھے۔ تم ہمارے پاس آجاؤ، ہم تمہیں خوب اعزاز و اِکرام کے ساتھ رکھیں گے۔''

یہ کعب رضی اللہ عنہ کی غیرتِ ایمانی تھی کہ انہوں نے اس خط کو (جو اِس دور کے گرین کارڈ سے کم نہیں تھا) جلتے ہوئے تندور میں ڈال دیا تھا۔ (سیرت ابن ہشام: 2/530، 532)

یہاں قابلِ غور بات یہ ہے کہ حکمرانِ شام کو اتنی جلدی یہ بات کیسے پتہ چل گئی کہ کعب بن مالک کا معاشرتی بائیکاٹ ہُوا ہے۔ مدینہ منورہ اور شام کی سرحد کا درمیانی فاصلہ کم از کم دو ہفتے کا تھا۔ گویا مدینہ سے شام تک کسی خبر کے جانے اور اس کے مطابق کسی پیغام کو واپس مدینہ پہنچانے کے لیے کم از کم چار ہفتے درکار تھے۔ قرائن سے معلوم ہوتا ہے کہ کعب بن مالک رضی اللہ عنہ کو یہ خط بائیکاٹ کے تیسرے یا چوتھے ہفتے میں مل گیا تھا۔ جس سے صاف ظاہر ہوتا ہے کہ مدینہ میں بیرونی جاسوس کام کر رہے تھے جنہوں نے بائیکاٹ ہوتے ہی قاصد کو شام دوڑا دیا، وہ دو ہفتے میں وہاں پہنچا اور چوتھے ہفتے میں بادشاہ کا خط لے کر مدینہ آگیا۔ اس سے ظاہر ہوتا ہے کہ بیرونی طاقتوں کو مدینہ منورہ کی اہم خبریں فوراً بھیج دی جاتی تھیں۔

## 2.4- نظریاتی جنگ اور اسلام کا نظامِ دعوت و جہاد:

اسلام نے شروع ہی سے اپنے پیروکاروں کو نظریاتی جنگ کے بہترین ہتھیار فراہم کر رکھے ہیں۔ ہمیں جہاد کی طرح فکری لڑائی کا تفصیلی نظام بھی دیا گیا ہے جس کے باقاعدہ آداب، قواعد اور اصول بھی شریعت میں موجود ہیں۔ ابتدائے اسلام سے یہی دعوت وارشاد مسلمانوں کا الغزو الفکری ہے۔ یعنی یہ نظریاتی جنگ دعوتِ اسلام کے انداز میں لڑی جاتی ہے۔

مسلمان اس نظریاتی جنگ کو اللہ کی رضا اور اجر اخروی کی نیت سے لڑتے ہیں۔ ان کے سامنے ذاتی بلکہ قومی اغراض بھی نہیں ہوتیں، بلکہ تمام انسانیت کی بھلائی مقصود ہوتی ہے۔ وہ اخلاص اور خیر خواہی کے ساتھ میدان عمل میں اترتے ہیں، شرافت صداقت، خدمت، حسن معاملہ اور ایفائے عہد جیسے اخلاق عالیہ کو اپنی شمشیر بناتے ہیں۔ اللہ کی ذات پر بھروسہ، صبر وتحمل اور استقلال واستقامت ان کی سپر بنتے ہیں۔ کلمہ طیبہ ان کا پیغام اور ذکرِ الٰہی ان کی روحانی غذا بنتا ہے، قرآن مجید کی آیات ان کا وہ وعظ بنتی ہیں جن سے کوئی متاثر ہوئے بغیر نہیں رہ سکتا۔

چوں کہ مسلمان اللہ کے سپاہی ہیں اس لیے جنگ میں بھی شرعی اخلاق کی پاسداری کیے بغیر نہیں رہ سکتے کیوں کہ شریعت کی خلاف ورزی کر کے وہ اللہ کی ناراضی کے مستحق بن جائیں گے اور نصرتِ الٰہیہ ان سے دست کش ہو جائے گی، یہی وجہ ہے کہ وہ سازشوں اور مذموم پروپیگنڈوں کا سہارا نہیں لیتے، وعدہ خلافی نہیں کرتے، اپنے عمل سے دنیا کو سچے طور پر متاثر کرتے ہیں، ذہنوں کو لوٹتے نہیں جلا بخشتے ہیں، لوگوں کو بے وقوف نہیں بناتے، شعور عطا کرتے ہیں۔

قرونِ اولیٰ کی تاریخ گواہ ہے کہ مسلمانوں کے کہیں پہنچنے سے پہلے وہاں اسلام کا پیغام پہنچ جاتا تھا، لوگ داعیان اسلام کی گفتار سے زیادہ ان کے کردار اور اعمال سے متاثر ہو کر اسلام قبول کرتے تھے۔

اسلام کی شوکت کو چیلنج کرنے والوں اور دعوت کی راہ میں رکاوٹ بننے والوں کو جہاد کے ذریعے راستے سے ہٹا دیا جاتا تھا۔ جہاد اس دعوت کے لیے بہترین پشت پناہ اور مددگار ہے۔

## 2.5- دورِ خلافت راشدہ میں نظریاتی جنگ:

دورِ خلافت راشدہ میں اسلام کے خلاف نظریاتی وفکری جنگ کا آغاز حضور نبی اکرم ﷺ کی وفات کے ساتھ ہی ہوگیا تھا۔ وہ باطل قوتیں جو اسلام کو پورے جزیرۃ العرب پر چھاتا دیکھ کر زیر زمین چلی گئی تھیں، صدمے کے شکار مسلمانوں کی افراتفری اور بے چینی سے پورا پورا فائدہ اٹھانے کے لیے مستعد ہوگئیں، چنانچہ فوری طور پر کئی ایسے فتنے اٹھ کھڑے ہوئے جو اسلام کی بیخ کنی کے لیے کافی تھے۔ بہت سے لوگ مرتد ہوگئے، بعض قبائل نے زکوٰۃ کا انکار کردیا، ایک ساتھ نبوت کے تین جھوٹے دعوے دار کھڑے ہوگئے۔ ظاہر ہے کہ اتنا بڑا انقلاب ایک سوچی سمجھی منصوبہ بندی اور ذہن سازی کے بغیر برپا نہیں ہوسکتا تھا۔ فکری شبہات اور نظریاتی وساوس اختراع کرنے اور انہیں لوگوں کے اذہان میں اتارنے کا عمل اتفاقی نہیں ہوتا، ایک پوری مربوط سوچ اور محنت ہی ایسی تبدیلی لاسکتی ہے۔ ہاں یہ الگ بات ہے بعض مواقع زیادہ نتائج خیز ہوتے ہیں اور نظریاتی حملہ آوران کے منتظر رہتے ہیں۔

حضور نبی اکرم ﷺ کی رحلت کے موقع سے ان گمراہ کنندگان نے پورا پورا فائدہ اٹھانے کی کوشش کی اور اگر مسلمانوں کو حضرت ابوبکر صدیق رضی اللہ عنہ جیسا مستقل مزاج، حوصلہ منداور مدبر قائد میسر نہ آیا ہوتا تو اسلام کی قسمت کا اسی وقت فیصلہ ہو چکا ہوتا۔

حضرت ابوبکر صدیق رضی اللہ عنہ نے اس موقع پر استقامت، توکل اور ایمانی جذبے کی حیرت انگیز مثال پیش کرتے ہوئے ان تمام فتنوں کو نہایت مختصر مدت میں اس طرح نمٹایا کہ اسلام دشمن طاقتوں کے تمام ارمانوں پر اوس پڑ گئی اور اسلام کی حقانیت اور طاقت کا سکہ جم گیا۔

دورِ فاروقی اسلام کی تاریخ کا سنہرا دور شمار کیا جاتا ہے جس میں فتوحات کا سیلاب مشرق ومغرب کو مسخر کررہا تھا اس لیے تمام فتنے سر چھپانے کے لیے کونے کھدرے ڈھونڈ رہے تھے تاہم اس زمانے میں بھی غیر مسلموں نے بعض مواقع پر نت نئے ذرائع استعمال کرکے اسلامی فتوحات کو روکنے کی کوشش ضرور کی۔

حضرت عمر فاروق رضی اللہ عنہ کو خطرہ تھا کہ غیر مسلموں کی طرف سے مسلمانوں کی تہذیب کو

نقصان پہنچانے کی کوششیں کی جائیں گی اس لیے انہوں نے ذمیوں کے لیے امتیازی قوانین کا اجراء کیا، ان کے لباس، سواریوں اور آبادیوں کے امتیازی نشانات اور حدود طے کیں۔ عجم کے شہروں میں مسلم وغیر مسلم آبادی کے درمیان اتنے فاصلہ رکھنا لازمی قرار دیا کہ مسلمان اور ذمی ایک دوسرے کے گھروں کی آگ نہ دیکھ سکیں۔ یہ اسی لیے تھا کہ کفار اپنی ثقافت سے مسلمانوں کو متاثر نہ کرسکیں۔

ان احتیاطی کوششوں کی وجہ سے دورِ فاروقی میں دشمنان اسلام کسی بھی رخ سے آگے نہ بڑھ سکے جس کے بعد خود عظمتِ اسلام کے اس نشان کو راستے سے ہٹانے کا فیصلہ کرلیا گیا اور خلیفہ دوئم مسجد نبوی کی محراب میں ایک مجوسی کے حملے کا شکار ہوکر شہید ہوئے۔

## 2.6- پھوٹ ڈالنے کی کوششیں، فرقہ واریت کا بیج:

مجوسیت کے عناد اور یہودیت کی چالبازیوں نے دورِ عثمانی میں اشتراک کرلیا اور سبائیت کا قالب اختیار کرکے سازشوں کو نیا رخ دیا جس کے نتیجے میں عثمان بن عفان رضی اللہ عنہ کی کردار کشی کی گئی، اہل بیت کی محبت کی آڑ میں مسلمانوں کو تقسیم کرنے کا کام شروع ہوا اور آخر کار خلیفہ سوئم ایسے ہی گمراہ لوگوں کے ایک مجمعے کے حملے میں شہید ہوئے۔ اس سے مسلمانوں کی سیاسی ونظریاتی وحدت کو جو شدید تر نقصان پہنچا اس کا کبھی ازالہ نہ ہوسکا خصوصاً ایک عشرے تک تو خلافتِ اسلامیہ اور مسلم معاشرہ سخت آزمائشوں کا شکار رہے۔

حضرت علی رضی اللہ عنہ کے دور میں انہی سازشوں کی وجہ سے جنگِ جمل اور جنگِ صفین کے سانحے پیش آئے اور جب جنگِ صفین کی تباہ کاریوں کے پیش نظر حضرت علی اور امیر معاویہ رضی اللہ عنہما کے درمیان صلح کے آثار واضح ہوئے تو فوری طور پر خوارج کا نیا فرقہ تیار کرکے مسلمانوں کو پھر منتشر کردیا گیا۔ حضرت علی رضی اللہ عنہ کے جانشین حضرت حسن رضی اللہ عنہ کے تدبّر کی بدولت مسلمان پھر ایک خلیفہ امیر معاویہ رضی اللہ عنہ پر متفق ہوئے اور فتوحات کا نیا دور شروع ہوا۔

## 2.7- بنوامیہ کے دور میں خانہ جنگی کی کوششیں:

امیر معاویہ رضی اللہ عنہ کی وفات کے بعد مسلمانوں کے سیاسی نظام میں موروثیت کا رخنہ پیدا

ہونے کا خطرہ محسوس ہوا۔ اس موقع پر حضرت حسین رضی اللہ عنہ اصلاحِ احوال کے لیے کوفہ روانہ ہوئے۔ اسی سفر کے دوران آپ کو کربلا میں شہید کر دیا گیا جس سے بدامنی کے نئے طوفانوں کو ابھرنے کا موقع ملا۔ گمراہ فرقے پنپنے لگے اور مسلمان زبردست خانہ جنگی کی لپیٹ میں آ گئے جو کسی بڑے وقفے کے بغیر عبدالملک بن مروان کے دور تک جاری رہی۔ اس کے بعد حالات پر قابو پا لیا گیا۔

درمیان کے کچھ وقفوں اور آخری سالوں کو مستثنیٰ کر کے خلافتِ بنوامیہ کا زمانہ مجموعی طور پر مسلمانوں کے عروج کا زمانہ تھا۔ فرقہ بندی کی سازشوں کے باوجود مسلمانوں کے سوادِ اعظم کا وجود برقرار رہا، نئے فرقے اقلیت میں ہونے کی وجہ سے کوئی مستقل اور ناقابلِ تلافی نقصان نہ پہنچا سکے۔

اس دور میں قرآن مجید، سیرت اور احادیث کے بارے میں عیسائی پادریوں کے اعتراضات بھی سامنے آتے رہے مگر ان سے مسلمان قطعاً متاثر نہ ہوئے۔

## 2.8 خلافتِ عباسیہ میں فلسفیانہ علوم کا حملہ..... یورپ کا پہلا نظریاتی وار:

بنوعباس کے دور میں مغربی دنیا کو عالم اسلام پر پہلا بھرپور نظریاتی حملہ کرنے کا موقع ملا۔ ایشیائے کوچک اور بحیرۂ روم میں مسلسل فتوحات کے دوران مسلمانوں اور یورپی عیسائیوں کے مابین جغرافیائی فاصلے سمٹ گئے تھے، سفارتی اور تجارتی روابط میں اضافہ ہو رہا تھا۔ اسی دوران مسلمانوں کو یورپ میں مروجہ قدیم عقلی علوم وفنون کے بارے میں پتا چلا اور یورپ سے علوم کی کتب عالم اسلام کو منتقل ہونے لگیں۔ کلیسا کو اچھی طرح تجربہ ہو چکا تھا کہ یہ عقلی علوم کسی بھی مذہب کی بنیادیں کھوکھلی کرنے کے لیے کافی ہیں اس لیے پادریوں نے ان کے مطالعے اور درس وتدریس پر پابندی لگا رکھی تھی مگر اب منطق وفلسفے کی یہی کتب عالم اسلام میں منتقل ہونا شروع ہو گئی تھیں۔

جب یہ علوم عالم اسلام میں متعارف ہوئے تو یہاں قرآن وحدیث اور فقہ کے ساتھ ساتھ آزاد منش اور عقلیت پسند لوگوں کا ایک جدید طبقہ وجود میں آنے لگا جس نے جلد ہی معتزلی گروہ کی شکل اختیار کر لی۔

بدعتی فرقوں کا ظہور پہلی صدی ہجری میں شروع ہو چکا تھا جس کی وجہ سے اکابرِ امت حق وباطل کا فرق کرنے کے لیے متفکر ومستعد تھے۔ اس سلسلے میں سب سے پہلی تاریخ ساز کوشش

حضرت امام ابوحنیفہ رحمہ اللہ نے فرمائی اور ''الفقہ الاکبر'' تصنیف فرما کر نہ صرف اہل سنت والجماعت کے عقائد کی پوری وضاحت کردی بلکہ امت کو درجنوں گمراہ فرقوں کے باطل افکار اور ذہنی موشگافیوں سے بچا کر صراط مستقیم پر گامزن کر دیا۔ دوسری طرف امام شافعی رحمہ اللہ نے ''الرسالہ'' اور ''کتاب الام'' میں بعض فرقوں کے عقائد کو مدلل طور پر رد کیا۔

اس کے بعد احناف ہی کے ایک فقیہ ومحدث امام طحاوی نے ''العقیدۃ الطحاویۃ'' کے نام سے عقائد پر ایک متن تحریر فرمایا جسے آج تک امت کے نظریات کے سرنامے کی حیثیت حاصل ہے۔ اسی زمانے میں امام بخاری رحمہ اللہ نے اپنی ''الجامع الصحیح'' مرتب فرمائی تو اس میں گمراہ فرقوں کے معتقدات کی تردید کے لیے مستقل عنوانات تحریر کیے۔ اس طرز کو دیگر محدثین نے بھی اپنایا اور اپنی سنن وجوامع میں عقائدِ اہل حق کی ترجمانی اور اہل باطل کی تردید کے لیے احادیث کو مختلف عنوانات کے تحت درج کیا۔

بہرکیف اس دور میں اعتزال کا آغاز ہو چکا تھا۔ خلیفہ ہارون الرشید کے دور میں ایسے مفکرین پائے جاتے تھے جو جمہور امت سے برگشتہ تھے مگر عالم اسلام کے قاضی القضاۃ امام ابو یوسف رحمہ اللہ تھے اور ان جیسی قدر آور شخصیات کے مقابلے میں اہل ہوس کی دال نہیں گل سکتی تھی۔

مگر ہارون کے بعد مامون الرشید برسر اقتدار آیا جو عقلیت پسند تھا۔ اسے دنیا بھر کے علوم حاصل کرنے کا شغف بھی تھا، اس دور میں ایشیائے کوچک کے علاقے میں رومیوں سے جنگ جاری تھی جس کے درمیان صلح کے وقفے بھی آجاتے تھے۔ مامون کو معلوم ہوا کہ روم میں اب بھی فلسفہ ومنطق کے ذخائر مقفل پڑے ہیں تو اس نے سفیر بھیج کر شاہ روم سے یہ ذخائر طلب کیے۔ رومی بادشاہ نے اس بارے میں مشورہ کیا، اکثریت نے مخالفت کی مگر ایک زمانہ شناس پادری نے سمجھایا کہ ہر چیز کا دارومدار عقل پر رکھنے والی یہ کتب کسی بھی مذہبی حکومت کی جڑیں کاٹ سکتی ہیں اس لیے مسلمانوں کی ناسمجھی سے پیدا ہونے والے اس موقع سے پورا پورا فائدہ اٹھانا چاہیے۔ چنانچہ کتبِ فلاسفہ کے ذخائر بغداد بھیج دیے گئے جہاں مامون نے ان کے ترجمے کروا کر سرکاری سرپرستی میں ان کی اشاعت شروع کر دی۔

ابوصاعد اندلسی صاحبِ طبقات الامم لکھتے ہیں:

''مامون نے شاہانِ روم سے حکمائے یونان کی کتب کی فرمائش کی، انہوں نے افلاطون، ارسطو، بقراط، جالینوس، اقلیدس اور بطلیموس وغیرہ کی کتب ہدیہ کردیں۔ مامون نے بڑے اہتمام سے ان کے تراجم کرائے اور لوگوں کو ان کے مطالعے کی ترغیب دی۔ اس کے زمانے میں ان کتب کا رواج عام ہوگیا اور فلسفے کو عروج ہوا۔ مامون کی قدردانی کی بدولت ذہین اور قابل نوجوانوں اور اہل علم ودانش نے ان فنون میں مہارت حاصل کی۔'' (طبقات الامم: صفحہ 47)

یہ یونانی فلسفہ جس کے بانی افلاطون اور ارسطو تھے، درحقیقت ایک گمراہی کا گورکھ دھندا تھا جس پر یورپ کے کم نظر حکماء فریفتہ رہے تھے۔ اگرچہ اس فلسفے میں طبعیات اور معاشرت وسیاست سے متعلق بہت سی مفید باتیں بھی موجود تھیں مگر اس کا بڑا حصہ جو الٰہیات پر مبنی تھا، شیطانی وساوس اور ذہنی اوہام کے سوا کچھ نہ تھا۔ ظاہر ہے کہ خالق کائنات کے بارے میں ناچیز مخلوق اپنی مجرد عقل سے جو اندازے لگائے گی وہ ناقص ہی ہوں گے۔ اگر ان ناقص اندازوں کو ''محکم علوم'' کا مقام دے دیا جائے تو اس سے بڑی گمراہی کیا ہوسکتی ہے۔ خالق اور اس کے غیبی نظام کے بارے میں صحیح علم وہی ہوسکتا ہے جو اس کی جانب سے عطا ہوا ہو۔ یہ علم مسلمانوں کے پاس قرآن وحدیث کی شکل میں موجود تھا اس لیے مسلمانوں کو فلسفیانہ الٰہیات کی طرف متوجہ ہونے کی کوئی ضرورت نہیں تھی مگر جب کتبِ فلاسفہ عربی اور فارسی میں منتقل ہوئیں تو دیکھتے ہی دیکھتے مسلمان اہل علم کا ایک بڑا طبقہ یونانی فلسفے سے متاثر نظر آنے لگا۔

یہ وہ لوگ تھے جو پہلے ہی عقلیت پسند اور ہر نئی آواز سے متاثر ہونے کے عادی تھے۔ ان میں خوارج کی ذہنیت پائی جاتی تھی یعنی وہ اسلاف کی پیروی کی بجائے خودرائی کے مریض تھے۔ ان کے علم میں وسعت ضرور تھی مگر گہرائی کی کمی تھی۔ ایسے علماء نے فلسفے کو ہاتھوں ہاتھ لیا اور اس کے ایسے گرویدہ ہوئے کہ دین کے محکم عقائد کو بھی عقل کی بنیادوں پر ناپنا، تولنا اور ثابت کرنا شروع کردیا اور رویتِ باری، استواء علی العرش، کلام الٰہی اور تقدیر جیسے نازک مسائل تک کو عقلیات کی زد میں لے لیا۔ یہی گروہ ''معتزلہ'' کے نام سے مشہور ہوا۔

چونکہ خلیفہ مامون الرشید خود فلسفے سے متاثر ہو چکا تھا اور اس کے ساتھ ساتھ اسے دین کی دعوت کو عام کرنے کا شغف بھی تھا، اس لیے اس نے معتزلی گروہ کی بھرپور سرپرستی کی، کیونکہ وہ سمجھتا تھا کہ دین کی دعوت کو عام کرنے کے لیے یہی اسلوب بہتر ہے اور یہی تعبیرات ہر قوم کے نزدیک قابلِ قبول ہو سکتی ہیں۔

مامون کی سرپرستی کی وجہ سے جلد ہی معتزلہ دربارِ خلافت میں ایک مؤثر قوت بن گئے اور ان کا ایک نامور عالم قاضی احمد بن ابی داؤد بغداد کا قاضی القضاۃ بن گیا۔ اس نے عقیدہ خلقِ قرآن (یعنی کلام اللہ مخلوق ہے) کو اپنے گروہ کا شعار بنالیا اور اس کی مخالفت کرنے والوں پر سختی کی انتہاء کر دی۔ راسخ العقیدہ علماء جو عقل کی جگہ قرآن وحدیث پر اعتماد کرتے تھے اس دور میں حکومت کی چیرہ دستیوں کا نشانہ بنے۔

مامون نے وفات سے چار ماہ پہلے اس مسئلے میں اتنا تشدد کیا کہ خلق قرآن کا عقیدہ نہ رکھنے والوں کی گواہی کو ناقابلِ قبول قرار دے دیا اور حکم دیا کہ ایسے تمام لوگوں کو ان کے عہدوں سے برطرف کر دیا جائے۔

اس زمانے میں اعلیٰ عہدوں پر معتزلہ کی اجارہ داری کی وجہ سے عام طور پر یہ سمجھا جانے لگا کہ معتزلی ذہن کے لوگ زیادہ زیرک، معاملہ فہم اور حقائق شناس ہوتے ہیں اور ان کی تحقیقات غیر جانبدارانہ اور زیادہ قابل اعتماد ہوتی ہیں۔ ان کے مقابلے میں فقہاء ومحدثین کو قدامت پسند، دورِ حاضر کے تقاضوں سے نابلد اور زمانے کے اسلوبِ بیان سے جاہل باور کیا جانے لگا۔

تاہم اس دور میں امام احمد بن حنبل، امام ابوالحسن الاشعری اور امام عبدالرحمن جیسی علمی شخصیات موجود تھیں جنہوں نے اس فتنے کا نہایت حکمت، بصیرت، پامردی اور مستقل مزاجی سے مقابلہ کیا۔

امام احمد بن حنبل (م 241ھ) کا تعلق محدثین وفقہاء کے طبقے سے تھا۔ آپ نے معتزلہ کی فلسفیانہ تعبیرات سے اظہارِ بیزاری کیا اور کھل کر یہ اعلان کیا کہ کلام اللہ، رؤیت باری اور اس جیسے مسائل کی صحیح تعبیر وہی ہے جو اسلاف سے چلی آرہی ہے۔ اسی پر اجمالی ایمان رکھنا ضروری ہے۔ اس سے ہٹ کر فلسفیانہ طرز اختیار کرنا گمراہی کے سوا کچھ نہیں۔ مامون کے جانشین معتصم باللہ نے

اس حق گوئی کی پاداش میں آپ کو جیل بھیج دیا۔ اس دوران آپ کو دربار میں بلا کر معتزلہ سے آپ کا مناظرہ بھی کرایا گیا جس میں آپ نے سب کو مات کر دیا جس کے بعد آپ سے زبردستی معتزلی افکار کی تائید چاہی گئی۔ آپ نے صاف انکار کر دیا۔ آپ کو کوڑوں سے شدید زدوکوب کیا گیا مگر آپ نے استقامت کا دامن نہ چھوڑا۔

امام بخاری کے استاذ امام علی بن مدینی نے امام احمد بن حنبل کی اس بے مثال عزیمت کو خراج تحسین پیش کرتے ہوئے کیا خوب کہا ہے: ''اللہ تعالیٰ نے اس دین کی عظمت و اعزاز کا کام دو افراد سے اس طرح لیا ہے کہ (اپنے اپنے دور میں) کوئی تیسرا، ان کے ساتھ نہیں تھا۔ فتنہ ارتداد کے وقت حضرت ابوبکر صدیق رضی اللہ عنہ اور فتنہ خلق قرآن کے موقع پر احمد بن حنبل۔''

(تاریخ بغداد، خطیب بغدادی: 4/421)

معتصم کے بعد واثق باللہ ایک عرصے تک خلق قرآن کے عقیدے پر قائم رہا مگر پھر شام کے شہر ''اذنہ'' کے ایک عالم (ابوعبدالرحمن ازدی استاد امام ابوداؤد اور امام نسائی) نے جنہیں قاضی احمد بن ابی داؤد نے گرفتار کیا تھا، قاضی ابن ابی داؤد کو برسرِ دربار بحث میں کھلی شکست دے دی چنانچہ واثق باللہ نے خلق قرآن کے عقیدے پر سختی ترک کر دی۔ (الاعتصام للشاطبی: صفحہ 324)

واثق کے بعد خلیفہ متوکل نے اہل سنت والجماعت کے شعائر کو زندہ کیا، معتزلی عقائد اور فلسفیانہ نظریات کی جگہ قرآن وسنت کو رواج دیا۔ اس طرح سرکاری سطح پر اعتزال اور فلسفے کو پسپائی ہوئی۔ یہ الگ بات ہے کہ علمی مجالس میں یہ نظریات پھر بھی باقی تھے مگر ان کا زور وشور کم ہو گیا تھا۔

قاضی ابراہیم بن محمد تمیمی کا قول ہے ''تین خلفاء نے کارنامہ کر دکھایا، ایک حضرت ابوبکر صدیق رضی اللہ عنہ جنہوں نے ارتداد کے فتنے کی سرکوبی کی، دوسرے حضرت عمر بن عبدالعزیز جنہوں نے امت کو زندہ کیا اور اس کی تجدید کی، تیسرا متوکل جس نے بدعت کو مٹا کر سنت کو زندہ کیا۔''

(''تاریخ بغداد'' از ''خطیب بغدادی'')

تیسری صدی ہجری کے اختتام اور چوتھی کے آغاز میں امام ابوالحسن الاشعری (م 334ھ) جو خود پہلے ایک معتزلی عالم تھے، سابقہ بدعقیدگی کو ترک کر کے اہل سنت والجماعت کے ترجمان

بن گئے اور نہ صرف علمی میدان میں بلکہ عوامی سطح پر بھی اسلام کے خلاف اس نظریاتی حملے کا بھرپور جواب دیا۔ انہوں نے معتزلہ سے انہی کی زبان میں بات چیت کی اور محدثین ومعتزلہ کے درمیان ایک متعدل اسلوب اختیار کیا جس میں نہ تو معتزلہ کی طرح عقل کی باگ کو آزاد چھوڑا گیا تھا اور نہ محدثین کی طرح عقلی مباحث کو ترک کیا گیا تھا۔ آپ فلسفیانہ مباحث کے بارے میں سکوت کے قائل نہیں تھے بلکہ ان کی اچھی طرح چھان بین اور ان پر بے لاگ تنقید کے حامی تھے۔ آپ مخاطبین سے انہی کی اصطلاحات اور زبان میں بات کرنا زیادہ مفید سمجھتے تھے۔ آپ نے مناظروں اور تصانیف کے ذریعے عقلیت پسندوں کے خلاف بھرپور معرکہ لڑا اور اس فتنے کا رخ پھیر کر مسلمانوں کو بہت بڑے فکری ونظریاتی انتشار سے بچالیا۔

ان کے شاگرد امام ابو منصور ماتریدی (م 332ھ) نے عالم اسلام کے سب سے بڑے ماہرِ علم کلام کی حیثیت سے شہرت حاصل کی۔ معتزلہ سے برسرِ پیکار رہنے کی وجہ سے ابوالحسن الاشعری کے پیروکاروں کے اسلوب میں کچھ تشدد شامل ہوگیا تھا جس سے بعض مسائل میں خود اہل سنت کے دلائل پر حرف آتا تھا۔ ماتریدی نے اسے دور کر کے اہل سنت والجماعت کے مسلک کو مزید مستحکم کر دیا۔ ان کے بعد قاضی ابوبکر باقلانی (م 403ھ) اور شیخ ابواسحق اسفرائنی (م 418ھ) جیسے متکلمین نے مسلمانوں کے عقائد کی حفاظت کا بیڑا اٹھایا۔ امام الحرمین جوینی (م 468ھ) نے بھی اپنے دور میں نظریاتی واعتقادی فتن کا بھرپور مقابلہ کیا۔ وہ متکلم اور مناظر ہونے کے ساتھ ساتھ، محدث، فقیہ اور مفسر بھی تھے۔ پانچویں صدی ہجری میں مدرسہ نظامیہ بغداد جسے ملک شاہ سلجوقی کے وزیر نظام الملک طوسی نے قائم کیا تھا، اہل سنت کا یہ سب سے بڑا مورچہ بن گیا۔ اس مدرسے کے صدر ابواسحق شیرازی (م 476ھ) تھے۔

(ملخص از تاریخ دعوت وعزیمت: 1/94 تا 118)

غرض دوسری سے چوتھی صدی ہجری تک گمراہ فرقوں اور فتنوں کی سرکوبی کے لیے علمی میدان میں نہایت وسیع تحقیقاتی کام کیے گئے جو انتہائی ثمر آور ہوئے۔ ان علماء کی کوششوں سے پہلی اور دوسری صدی ہجری میں پیدا ہونے والے اکثر گمراہ فرقے جیسے خوارج، مرجئہ، قدریہ، جہمیہ وغیرہ

تیسری صدی کے بعد بالکل ختم گئے۔معتزلی فتنے کا زور بھی ٹوٹ گیا اور اہل سنت والجماعت ہی عوامی اور سرکاری سطح پر غالب رہے۔صرف اہل تشیع باقی رہے جن سے نت نئے فتنوں کی چنگاریاں بھڑکتی رہیں۔

## 2.9- مسلم فلاسفہ کا فتنہ:

مگر باطل قوتیں اس کے باوجود خاموش نہیں بیٹھی تھیں۔ان کے کارندے اندر ہی اندر کام کررہے تھے۔اس زمانے میں ان کا سب سے بڑا ہتھیار ایک بار پھر فلسفہ تھا۔مگر اب وہ ایک نئے انداز میں کام کررہے تھے۔گزشتہ صدیوں میں مذہب کی حیثیت تسلیم کرتے ہوئے، فلسفے کو مذہبی بحثوں میں استعمال کیا جارہا تھا۔عقلیت پسند معتزلی علماء عقل کی بالادستی کا پرچم بلند کرنے کے باوجود قرآن وحدیث اور فقہ کے اوامر ونواہی کو مانتے تھے، اور گناہوں سے بچتے تھے۔ان کی کوشش یہ تھی کہ دین کو عقل کے ساتھ ساتھ اس طرح چلایا جائے کہ یونانی فلسفہ اسلام کا وکیل نظر آئے اگرچہ وہ اس کوشش میں ناکام رہے اور اسلام کی صحیح وکالت کرنے کی بجائے خود کج فکری کا شکار ہوگئے مگر بہرکیف وہ اہل ایمان تھے۔ان کے بارے میں سخت ترین موقف رکھنے والے علمائے اسلام نے بھی انہیں ''بدعتی'' ہی شمار کیا ہے۔ان کو خارج از اسلام قرار نہیں دیا۔

مگر چوتھی اور پانچویں صدی ہجری میں فلسفے کے دریا سے جو تازہ لہریں ابھریں ان کے پیچھے اسلام اور مذہب کو پس پشت ڈالنے بلکہ کالعدم تصور کرنے کا جذبہ ویسے ہی کارفرما تھا جیسے یونانی فلسفیوں کے دل ودماغ میں۔اس نئی سوچ اور فکر کی داغ بیل ان مسلمان فلسفیوں کے ہاتھوں پڑی جنہوں نے فلاسفہ کی کتب کو تراجم کی حد تک محدود نہیں رکھا بلکہ ان کی تشریح بھی کی۔ ان میں ابویعقوب کندی (م 258ھ) اور ابونصر الفارابی (م 339ھ) سرفہرست ہیں۔

فارابی نے ارسطو کے فلسفے کو ایک نئی آن بان کے ساتھ پیش کیا۔وہ عالم اسلام میں ارسطو کا سب سے بڑا ترجمان اور شارح تھا۔وہ ارسطو سے بے حد متاثر تھا اسی لیے اس نے اس کے افکار پر جرح وتنقید کی کوئی خاص کوشش نہیں کی بلکہ تقلیدی انداز میں ان کی تدوین وتشریح کرکے اسے لوگوں کے سامنے پیش کردیا۔اس نے منطق وفلسفے کو از سرِ نو اس خوبصورتی کے ساتھ مدوّن کیا کہ

ہزاروں علماء ان علوم کی تحصیل میں لگ گئے۔ اسی لیے فارابی کو یونانی علوم کا معلمِ ثانی کہا جاتا ہے۔

اس کے بعد پانچویں صدی ہجری میں حکیم بوعلی ابن سینا (م 428ھ) نے حکمت کا قلمدان سنبھالا اور یونانی فلاسفہ کے افکار کی بڑے پیمانے پر اشاعت کی۔ ابن سینا نے طب کے میدان میں جو عظیم الشان کام کیا ہے، اس کی افادیت کا اعتراف کرنا چاہیے مگر اس کے ساتھ ساتھ اس نے فلسفے کے ذریعے عالم اسلام میں تشکیک اور آزاد خیالی کی جو زمین ہموار کی اس پر اباحیت اور بے دینی کے سوا کوئی اور فصل نہ اگ سکی۔

فلاسفہ کا یہ طبقہ اگرچہ اعلانیہ طور پر مذہب کا منکر نہیں تھا مگر عملاً دین وشریعت کو بے کار چیز سمجھتا تھا اور بنیادی طور پر ارسطو اور افلاطون کی طرح صرف عقل کی کامل برتری کا قائل تھا۔ یہ طبقہ فلسفے کو دین کے متوازی ایک الگ اور مکمل ضابطۂ حیات تصور کرتا تھا۔ نہ صرف طبعیات فلکیات بلکہ سیاسیات واخلاقیات سے لے کر عقائد اور روحانیات تک اس کے نزدیک فلسفہ ہی کامل رہنما تھا۔

جوں جوں لوگوں میں فلسفیانہ علوم کی رغبت بڑھتی گئی، ویسے ویسے خدا، رسول، مذہب اور شریعت کی وقعت دلوں سے رخصت ہوتی گئی اور عملی زندگیوں میں بھی فسق وفجور عام ہوگیا۔

## 2.10- مدرسہ اخوان الصفا:

پانچویں صدی ہجری میں جس طرح بغداد کا مدرسہ نظامیہ اہل سنت کا سب سے بڑا مورچہ تھا، اسی طرح بغداد ہی میں ''اخوان الصفا'' کے نام سے ایک خفیہ مدرسہ قائم تھا جو ملحدین اور اباحیت پسندوں کا سب سے بڑا مرکز تھا۔ اس مکتب کی بنیاد چوتھی صدی ہجری کے وسط میں رکھی گئی۔ اس مدرسے کا منشور یہ تھا:

''ان الشريعة الاسلامية قد تنجست بالجهالات واختلطت بالضلالات ولا سبيل الى غسلها وتطهيرها الا بالفلسفة.''

''بلاشبہ اسلامی شریعت جہالتوں اور گمراہیوں سے آلودہ ہوچکی ہے، اسے پاک کرنے کے لیے فلسفے سے رہنمائی لیے بغیر چارہ کار نہیں۔''

اس مکتب کے مفکرین صرف نوجوانوں اور طالب علموں کو خفیہ طور پر دعوت دے کر اپنا ہم خیال بناتے تھے، کیونکہ پختہ فکر مسلمانوں اور عمر رسیدہ لوگوں کا ایسی جدت پسندانہ بلکہ ملحدانہ سوچ کو اپنانا بہت مشکل تھا۔

اس مکتب کے سرغنوں نے وقتاً فوقتاً مختلف چھوٹی چھوٹی کتب تصنیف کیں جن کی تعداد ''52'' ہے۔ یہ کتب خراسان سے اندلس تک جدت پسندی، الحاد اور تشکیک کے بیج بوتی رہیں۔

## 2.11- باطنیت کا حملہ:

پانچویں صدی ہجری میں ایک نئے نظریے نے اسلام کی بنیادوں میں نقب لگانے کی کوشش کی۔ اس نظریے کو ''باطنیت'' کہا جاتا تھا۔ اسلام دشمن عناصر نے یہ دیکھ لیا تھا کہ اسلام کے تمام احکام قرآن وسنت اور فقہ میں بہت واضح اور مدلل انداز میں موجود ہیں اور صدیوں سے انہیں غلط ثابت کرنے کی ہر کوشش ناکام ہوتی آئی ہے، انہوں نے یہ جان لیا تھا کہ ان شرعی مآخذ کے الفاظ کے محفوظ ہوتے ہوئے وہ اپنے مقصد میں کامیاب نہیں ہو سکتے۔ اب چونکہ الفاظ کو ختم کرنا ان کے بس سے باہر تھا اس لیے انہوں نے ایک ایسا نظریہ ایجاد کیا جو ان مآخذ کے الفاظ سے لوگوں کا اعتماد ختم کر دے۔ یہی نظریہ ''باطنیت'' کہلایا۔ اس نظریے کا خلاصہ یہ تھا کہ ہر لفظ کا ایک ظاہر ہوتا ہے اور ایک باطن۔ ظاہر کو علماء جانتے ہیں مگر باطن کا علم صرف امامِ وقت کو ہوتا ہے۔ اصل مراد یہی باطن ہوتا ہے۔ اس لیے قرآن وحدیث کی کسی عبارت سے چاہے کچھ بھی ثابت ہو رہا ہو، اگر امام اس کے خلاف حکم دے تو اس کی تعمیل ضروری ہے، کیونکہ وہ باطن کو دیکھ کر حکم دے رہا ہے جو عام دنیا سے پوشیدہ ہے۔

اس نظریے کے بانی وہ اسماعیلی شیعہ تھے جو مصر پر ''فاطمی خلافت'' کے نام سے ایک مستقل حکومت قائم کیے ہوئے تھے۔ ان کے داعی اس نظریے کو پھیلاتے ہوئے اسلام کی ہر اصطلاح اور ہر مفہوم کو اپنی تحریک کے رنگ میں رنگ دیتے تھے مثلاً ان کے اماموں کی تشریح کے مطابق طہارت کا مطلب باطنی مذہب کے سوا ہر مذہب سے پاک ہونا ہے۔ زکوٰۃ سے مراد اپنے مذہب کی اشاعت ہے۔ حج سے مراد باطنی علوم کی طلب ہے۔ جنت سے مراد علم باطن ہے۔ جہنم کا

مطلب علم ظاہر (فقہاء ومحدثین کا علم) ہے۔ کعبہ سے مراد مسجد الحرام والا کعبہ نہیں بلکہ اس کا مصداق خود نبی ہے۔ بابِ کعبہ سے مراد حضرت علی ہیں۔ جبرئیل سے مراد کوئی وجود نہیں بلکہ قوت قدسیہ کا فیضان ہے۔ غرض اس طرح باطنیت پورے دین اسلام ہی کا صفایا کرنے کے درپے تھی۔ اسی لیے باطنیوں کو اہل اسلام ''ملحدین'' یا ''ملاحدہ'' کے نام سے یاد کرتے رہے۔

باطنیت کا سب سے بڑا اور کامیاب داعی حسن بن صباح تھا۔ اس نے الفاظِ شرع کے مشہور ومعروف معانی کا انکار کر کے حلال وحرام کی قیود اٹھا دیں، ہر قسم کی شہوت پرستی جائز قرار دے دی اور یوں اسلام سے بالکل متصادم ایک اور مذہب کو اسلام کا نام دے کر پیش کیا۔ اس کے ساتھ ساتھ اس نے قاتلوں کی ایک جماعت کو تربیت دے کر عالم اسلام کی بڑی بڑی شخصیات کو شہید کیا اور یوں دنیائے اسلام کو ایک خطرناک قحط الرجال میں بھی مبتلا کر دیا۔

پہلی صدی ہجری سے لے کر چھٹی صدی ہجری تک معبد الجہنی، جہم بن صفوان، جاحظ، یعقوب کندی، ابوبکر رازی، ابن الراوندی، ابن المقفع، ابوعیسیٰ وراق، ابوالعلاء معریؒ، عمر خیام، فارابی، ابن سینا، ابن رشد اور شہاب الدین سہروردی المقتول چند ایسے نام ہیں جو فلسفے اور جدت پسندی کے ذریعے عالم اسلام میں گمراہ نظریات کے بانی رہے۔

شہاب الدین سہروردی المقتول، سلطان صلاح الدین ایوبی کے زمانے میں گزرا ہے۔ وہ شام کا مشہور فلسفی تھا۔ بہترین شاعر اور ادیب تھا۔ نوجوان اس کے گرویدہ ہوتے جا رہے تھے۔ آخر کار اس کے ملحدانہ نظریات کی وجہ سے سلطان صلاح الدین ایوبی نے اسے قتل کرا دیا۔

(یاد رہے کہ شیخ شہاب الدین سہروردی رحمہ اللہ (بانیٔ سلسلہ سہروردیہ) بھی صلاح الدین ایوبی کے دور کے بزرگ ہیں مگر شہاب الدین سہروردی المقتول الگ شخصیت ہے اور وہ الگ)

## 2.12- جوابی کوششیں:

فلاسفہ اور ملحدین کے حملوں کے جواب میں علمائے اسلام نے پوری بیداری اور مستعدی کا ثبوت دیا۔ ان علماء میں سب سے مشہور امام غزالی رحمہ اللہ (م 505ھ) ہیں جنہوں نے ایک طرف ''فضائح الباطنیہ'' اور ''مواہم الاباحیہ'' میں باطنی عقائد کی پرزور تردید کی اور دوسری طرف

''تہافت الفلاسفہ'' لکھ کر فلسفے کی بنیادوں پر تیشہ چلا دیا۔ امام غزالی نے اس فرض کی انجام دہی کے لیے فلسفے کا بغور مطالعہ کیا تھا اس لیے وہ فلاسفہ کی کمزوریوں سے پوری طرح واقف تھے۔ انہوں نے کسی قسم کی مرعوبیت کے بغیر فلسفے کے ان اصولوں کی صحت کو چیلنج کیا جنہیں عالم اسلام میں اب تک لوگ من وعن مانتے چلے آرہے تھے۔ انہوں نے ثابت کیا کہ فلسفہ نے خدا، مذہب، روحانیت اور نبوت کے بارے میں جہاں بھی لب کشائی کی ہے، ٹھوکر کھائی ہے۔ فلسفے کے یہ مباحث اپنے اصول وفروع سمیت گمراہی در گمراہی کے سوا کچھ نہیں۔

امام غزالی رحمہ اللہ کی ان معرکۃ الآراء تصانیف نے جدت پسندوں کو مبہوت کر دیا اور یونانی فلسفے کی علمی دھاک کا خاتمہ کر دیا۔

ایک صدی بعد اندلس میں فلاسفہ کا ایک نیا ترجمان ابن رشد (م 595ھ) پیدا ہوا جس نے ''تہافت التہافۃ'' کے نام سے امام غزالی کی تردید کی کوشش کی اور ارسطو کی وکالت کر کے اس کے دم توڑتے ہوئے فلسفے کو نئی زندگی عطا کی مگر جلد ہی ابوالبرکات بغدادی نے ''المعتبر'' نامی کتاب لکھ کر ایک بار پھر ارسطو کے اکثر خیالات کو باطل ثابت کر دکھایا۔ پھر خراسان کے مردِ حق آگاہ امام فخر الدین رازی رحمہ اللہ نے اپنی متعدد تصانیف خصوصاً ''تفسیر مفاتیح الغیب'' کے ذریعے فلسفے پر زبردست اور مسکت اعتراضات کر کے متکلمین کی ترجمانی کا حق ادا کر دیا۔

پچاس سال بعد مشہور شیعہ فلسفی اور فلکیات دان خواجہ نصیر الدین طوسی نے ایک بار پھر ارسطو کی حمایت پر کمر باندھی اور یونانی فلسفہ ومنطق کی کھوئی ہوئی عظمت کو بحال کرنے کے لیے ایڑی چوٹی کا زور لگا دیا۔ خواجہ طوسی کو آج اسلامی تاریخ کا ممتاز دانش ور شمار کیا جاتا ہے جب کہ وہ سب سے بڑے اسلام دشمن حکمران ''ہلاکو خان'' کا مشیر اور مسلمانوں کا غدار تھا۔ بغداد کی خلافتِ عباسیہ کے خاتمے میں اس کا نمایاں ہاتھ تھا۔ اس کے ساتھ ساتھ طوسی نے علمی بنیادوں پر مسلمانوں کو اس قدر گمراہ کیا کہ عراق اور خراسان میں علوم شریعت کے نام لیوا نایاب ہو گئے اور ہر طرف منطق وفلسفے کی درسگاہیں کھل گئیں۔ اس کے شاگردوں قطب الدین شیرازی اور قطب الدین رازی نے فلسفے کو مزید عروج بخشا اور امت کے اہل علم ودانش ایک بار پھر فلسفے کے اسیر ہونے لگے۔

اس موقع پر اللہ تعالیٰ نے امام ابن تیمیہ رحمہ اللہ (م 728ھ) سے امت کی رہنمائی کا کام لیا انہوں نے ''الرد المنطقیین'' اور ''منہاج السنہ'' لکھ کر فلسفے اور منطق کی خاک اڑادی۔ اس طرح عقل پر شریعت کی بالادستی ایک بار پھر مسلّم ہوگئی اور عالم اسلام میں سابقہ زمانے کی طرح شرعی علوم ہی کو باعثِ افتخار سمجھا جانے لگا۔

امام غزالی، امام رازی اور امام ابن تیمیہ رحمہم اللہ کی ٹھوس تحقیقات کی بدولت یونانی فلسفے کی علمی روایت دفن ہوگئی۔ اس کے بعد گیارہویں صدی ہجری تک عالم اسلام میں فلسفیانہ گمراہی کی تحریکیں نہ پنپ سکیں۔ بلکہ اس کی جگہ فقہ، حدیث اور تصوف کی عظیم الشان عمارتیں تعمیر ہوئیں۔ ابن قیم، علامہ عینی، ابن ہمام، جلال الدین سیوطی، ابن خلدون، مجدد الف ثانی اور شاہ ولی اللہ جیسے مایہ ناز علماء پیدا ہوئے جن پر اسلامی تاریخ آج بھی فخر کرتی ہے۔

## 2.13- اہم نتائج:

فکری ونظریاتی جنگ کی مذکورہ تاریخ سے تین باتیں واضح ہوتی ہیں:

(1) ان صدیوں میں مسلمانوں کو غیر مسلموں کے نظریاتی حملوں سے کہیں زیادہ اندرونی گمراہی اور کج فکری کے دھچکوں سے پالا پڑا۔ مسلمانوں ہی کے اندر سے مختلف لوگ کھڑے ہوکر نت نئے افکار پیش کرتے رہے۔ ان گمراہ کنندگان کی شوریدہ فکری کے تین بڑے اسباب تھے:

الف: خودرائی

ب: اکابر پر عدم اعتماد

ج: یونانی فلسفے پر فریفتگی اور عقل کو شریعت پر غالب ماننا۔

(2) تاریخ کے اس مطالعے سے یہ بھی معلوم ہورہا ہے کہ اگرچہ ان صدیوں میں پھیلنے والی گمراہی کے بیج شروع میں یونان سے ہی درآمد کیے گئے تھے مگر اس وقت اہل یورپ نے بھرپور مہم کے انداز میں مسلمانوں کے نظریات پر ڈاکا مارنے کی کوشش نہیں کی تھی۔ ہاں وہ یہودی اور مجوسی اس سازش میں ضرور ملوث رہے جنہوں نے دورِ خلافتِ راشدہ میں اسلام کا روپ دھار کر مسلمانوں کو لڑوایا۔ بعض یورپی حکمرانوں نے باغی اور گمراہ تحریکوں کو مالی امداد بھی تھی۔ تاہم ان صدیوں میں

غیر مسلم طاقتیں اہل اسلام کو کسی منظم اور مسلسل سازش کے ذریعے گمراہ کرنے کے قابل نہ تھیں۔

③ اگرچہ مسلمانوں کو ان کج رو نظریاتی تحریکوں سے مختلف مواقع پر شدید نقصانات کا سامنا کرنا پڑا مگر پھر بھی وہ عمومی طور پر گمراہی سے محفوظ رہے اور بڑے پیمانے پر کسی نظریاتی کج فکری کا شکار نہ ہوئے۔ دشمن کی سازشیں بعض نئے فرقے پیدا کرنے، بغاوت کی چنگاریں سلگانے اور خانہ جنگیوں کی آگ کو ہوا دینے سے آگے کی حد تک کامیاب نہ ہو سکیں۔ مسلمانوں کی اکثریت بہرکیف اہل سنت والجماعت کے اسی عقیدے، نظریہ حیات اور فکر پر قائم تھی جس پر ''ما انا علیہ واصحابی'' کی مہر ثبت تھی۔ دوسرے لفظوں میں یہ سازشیں مسلمانوں کو سیاسی لحاظ سے تو زک پہنچاتی رہیں مگر نظریاتی طور پر ان کے سواد اعظم کے عقیدے اور شعور کو شکستہ نہ کر سکیں۔

## 2.14- نظریاتی حملہ آوروں کی ناکامی کی وجوہ:

نظریاتی محاذ پر حملہ آوروں کی ناکامی اور مسلمانوں کے کامیاب دفاع کی اہم وجوہ یہ تھیں:

① مسلمانوں کا اللہ و رسول سے رشتہ مضبوط تھا۔ قرآن وسنت سے وابستگی اور اپنے دین سے محبت کی حرارت باقی تھی، وہ اپنی تاریخ سے واقف اور اپنے تمدن پر نازاں تھے۔ صحابہ کرام اور اسلاف پر ان کا اعتماد برقرار تھا۔ یہی وجہ تھی کہ وہ کسی فتنے کی لپیٹ میں نہ آئے۔

② نظریاتی حملہ آور علمی طور پر خود کمزور تھے جبکہ مسلمانوں میں علم کی گہرائی تھی۔ ایسی شخصیات موجود تھیں جو نظریاتی دشمنوں کو منہ توڑ جواب دے سکتی تھیں۔

③ مسلمانوں کو سیاسی غلبہ حاصل تھا۔ سیاسی طور پر غالب قوم کو اپنے نظریات پر بھرپور اعتماد ہوتا ہے لہٰذا اسے ذہنی طور پر شکست دینا آسان نہیں ہوتا۔ اس لیے غیر مسلموں کی سازشیں ناکام رہیں۔

④ اس دور میں مسلم حکمران خود دینی حمیت سے آراستہ اور اپنے دین وایمان کے بارے میں بے حد حساس تھے اور ایسی سرگرمیوں کی روک تھام کرتے رہتے تھے۔ جیسے صلاح الدین ایوبی نے الحاد پھیلانے والے سہروردی کو قتل کرایا۔

اگر کوئی حکمران راہ سے ہٹ بھی جاتا تو بعد میں آنے والی حکومت جلد ہی اس کی تلافی کر دیتی

جیسا کہ مامون الرشید، اور معتصم باللہ کے پھیلائے ہوئے اعتزال کے دھبوں کو خلیفہ متوکل کی خالص اسلامی پالیسی نے دھوڈالا۔

(5) مسلمانوں کا عمل اور کردار ان کا بہت بڑا ہتھیار تھا۔ ان کے اخلاق اوران کے طرزِ معاشرت کی بلندی خود حملہ آوروں کو متاثر کردیتی تھی اور بسااوقات وہ خود اسلامی نظریات قبول کرنے پر مجبور ہوجاتے تھے۔

# مراجع


- سیرت ابن ہشام۔ جلد اول، دوم
- مختصر سیرت الرسول ﷺ۔ شیخ محمد بن عبدالوہاب النجدی رحمہ اللہ
- تفسیر ابن کثیر۔ حافظ ابن کثیر رحمہ اللہ
- الکامل فی التاریخ: 2، 3، دورِ خلافت راشدہ، دورِ بنو امیہ، دور بنو عباس (ہارون الرشید تا المتوکل) علامہ ابن اثیر الجزری رحمہ اللہ
- تاریخ ابن خلدون: ج 3، 4۔ علامہ عبدالرحمن ابن خلدون
- تاریخ دعوت وعزیمت: 1/ 84 تا 118، مولانا سید ابوالحسن علی ندوی رحمہ اللہ
- الغزو الفکری ووسائلہ..... شیخ عبدالعزیز بن باز
- تحصین مجتمع المسلم ضد الغزو الفکری..... ڈاکٹر حمود بن احمد الرحیلی

تیسرا باب

3

# صلیبی جنگیں

# الحروب الصليبية

# Crusades

موجودہ دور میں اہل باطل جس نہج پر الغزو الفکری لڑ رہے ہیں اس کے تانے بانے پانچویں صدی ہجری (گیارہویں صدی عیسوی) میں شروع ہونے والی صلیبی جنگوں سے جا ملتے ہیں۔ اس لیے ضروری ہے کہ آگے بڑھنے سے پہلے ہم صلیبی جنگوں پر ایک نظر ڈال لیں۔

## 3.1- تعریف:

صلیبی جنگ ایک خاص اصطلاح ہے۔ مسلمانوں کی نصرانیوں سے سینکڑوں جنگیں ہو چکی ہیں مگر ہر جنگ کو صلیبی جنگ نہیں کہا جاتا۔ صلیبی جنگ کی اصطلاحی تعریف یہ ہے:

"الحروب الصليبية التي دعا اليها رجال دين النصارىٰ والقساوسة ضد المسلمين باسم الصليب وتحت رأيته."

"صلیبی جنگیں وہ ہیں جن کی دعوت نصرانیوں کے مذہبی پیشوا اور علماء دیتے ہیں اور یہ جنگیں صلیب کے نام پر صلیبی پرچم تلے لڑی جاتی ہیں۔"

## 3.2- صلیبی جنگوں کا دور:

یہ جنگیں باقاعدہ طور پر سن 489ھ میں شروع ہوئیں اور ان کا اختتام 690ھ میں ہوا اس طرح یہ دو صدیوں پر محیط ہیں۔ ان جنگوں کے باقاعدہ آغاز سے تقریباً ڈیڑھ صدی پہلے ان جنگوں کی راہ ہموار ہونا شروع ہو گئی تھی۔ اس کا پہلا سبب عباسی خلافت کی کمزوری کی شکل میں پیدا ہو چکا تھا۔ یہ چوتھی صدی ہجری کا زمانہ تھا جب عباسی خلافت بے اختیار ہو کر دیلمی شیعہ امراء کے ہاتھوں کھلونا بن چکی تھی اور عالم اسلام منتشر حکومتوں کا مجموعہ بن کر کمزور ہوتا جا رہا تھا۔

اس موقعے سے فائدہ اٹھا کر قیصرِ روم کے سالار نیکوفورس (تغفور) نے اسلامی سرحدوں پر حملے شروع کر دیے اور شام کے ساحل پر قابض ہو گیا۔ صرف ایک مسلمان حاکم سیف الدولہ اس سے جہاد کرتا رہا، 356ھ میں سیف الدولہ کا انتقال ہوا تو عیسائی مزید جری ہو گئے۔ 361ھ میں

دیارِ بکر تک ان کا تسلط ہو گیا۔

ان جنگوں کو صلیبی جنگیں نہیں کہا جاتا مگر یہ ان کی تمہید ضرور تھیں۔ عیسائی ان فتوحات سے زیادہ فائدہ نہ اٹھا سکے، مسلمانوں نے مقبوضہ علاقے کچھ مدت بعد ان سے واپس لے لیے مگر عیسائیوں کو یہ اندازہ ہو گیا کہ مسلمان ناقابل شکست نہیں اور ان کا زوال شروع ہو چکا ہے۔ صلیبی جنگیں پانچویں صدی ہجری کے اواخر میں شروع ہوئیں۔

## 3.3- صلیبی جنگوں کے اسباب:

دورِ خلافتِ راشدہ میں مسلمانوں نے قیصر روم کی شاہی کو ٹھوکروں میں رکھ کر نصرانیت کو بحیرۂ روم کے پار دھکیل دیا تھا۔ فلسطین کے مقاماتِ مقدسہ دورِ فاروقی سے مسلمانوں کی حفاظت میں تھے، القدس ہی میں عیسائیوں کی مزعومہ مرقدِ مسیح بھی تھی جسے ان کے سب سے مقدس مقام کی حیثیت حاصل تھی۔ عیسائی اپنے اس مذہبی مرکز کی بازیابی کا خواب صدیوں سے دیکھ رہے تھے مگر ان کا مسلمانوں پر کوئی بس نہیں چلتا تھا۔ بازنطینی روم کے شعور میں پہلی صدی ہجری کی پے در پے شکستوں کی کسک اب بھی باقی تھی۔ اس کے علاوہ مسلمانوں کی خوشحالی اور ثروت دیکھ کر یہ اقوام شدید حسد کا شکار تھیں اور چاہتی تھیں کہ کسی طرح ان نعمتوں اور وسائل پر خود قابض ہو جائیں۔ صدیوں سے دبا جذبہ انتقام اور ہوسِ مال و ملک گیری صلیبی جنگوں کے اصل محرکات تھے۔ ان محرکات کے ساتھ جب کچھ اہم اسباب مل گئے تو صلیب شعلہ زن ہو گئی۔ اس جنگ کی آگ کو ہوا دینے والے فوری اسباب یہ تھے:

① دو صدیوں سے مصر اور شمالی افریقہ پر شیعوں کے ایک خاندان بنو عبید کی حکومت تھی جو مستقل خلافت کا دعوے دار بن کر خود کو فاطمی خلافت کے نام سے موسوم کرتا تھا۔ یہ خاندان شام سے لے کر خراسان تک حکومت کرنے والے سلجوقی سلاطین اور عباسی خلفاء کا (جو کہ اہل سنت تھے) سخت مخالف تھا۔ اسی مخالفت کی بناء پر 462ھ میں عبیدی حکمرانوں نے صلیبیوں کو شام پر حملے کے لیے باقاعدہ اکسانا شروع کیا تاکہ ان کے مخالف سلجوقی بادشاہ کمزور پڑ جائیں۔

② 463ھ میں روم کے قیصر ارمانوس دیوجانس کو نامور سلجوقی حکمران الپ ارسلان نے ایسی

شکست فاش دی کہ قسطنطنیہ کی عظمت خاک میں مل گئی۔اس کے بعد رومی مسلمانوں سے بدلہ لینے کے لیے پر تولنے لگے۔

③ زمانہ ماقبل از اسلام سے نصرانیت دو مراکز میں تقسیم تھی: ایشیا کے عیسائی قسطنطنیہ کے کلیسا کے تابع تھے جو مشرقی کلیسا کہلاتا تھا۔یورپ کے عیسائی کلیسائے روم کے پیروکار تھے جو مغربی کلیسا کہلاتا تھا۔ارمانوس کا انجام دیکھ کر قسطنطنیہ کے دوسرے قیصر الیکزیس نے پہلی بار مشرقی اور مغربی کلیسا کو متحد کرنے کی کوشش کی۔اس نے روم کے پوپ سے مسلمانوں کے خلاف مدد کی درخواست کی جو قبول ہوئی۔اور ایک طویل زمانے کے بعد عیسائی مسلم دشمنی کی خاطر متحد ہو گئے۔

④ 479ھ (1086ء) میں مراکش کے حکمران یوسف بن تاشفین نے اندلس کے میدان زلاقہ میں ایک تاریخی معرکہ لڑکر یورپ کے عیسائیوں کو عبرتناک شکست دی اور اندلس کو نصرانیت کے قبضے میں جانے سے بال بال بچالیا۔عیسائی اس شکست کا بدلہ ایشیا میں لینا چاہتے تھے۔

⑤ فارغ اور بے مقصد زندگی گزارنے والے کم ثروت عیسائی شہزادوں کو نئی جاگیروں کے لیے نو آبادیات کی تلاش تھی اور یورپی تاجر نئی منڈیوں کی جستجو میں تھے۔مسلمانوں کے خلاف جنگوں کا سلسلہ ان مقاصد کے حصول کا اچھا بہانہ بن سکتا تھا۔

⑥ 484ھ میں بحیرہ روم میں واقع اسلامی جزیرے صقلیہ (سسلی) پر عیسائیوں نے قبضہ کرلیا۔اس سے اہل یورپ میں مسلمانوں کے خلاف کامیابیوں کی نئی امنگیں پیدا ہو گئیں۔

⑦ باعظمت سلجوقی حکمران ملک شاہ جس کی ہیبت ساری دنیا پر طاری تھی اچانک فوت ہو گیا جس کے فوراً بعد شام کی سلجوقی حکومت کئی ٹکڑوں میں بٹ کر عیسائیوں کے لیے تر نوالہ بن گئی، اس سے یورپ کو شام پر حملے کا حوصلہ ہونے لگا اور صلیبی جنگوں کے لیے تمام راہیں ہموار ہو گئیں۔

⑧ نصرانیت میں پیدائشی گناہ کے عقیدے نے ہر شخص میں احساس جرم پیدا کر رکھا تھا، اور حقیقتاً بھی وہاں اخلاقی جرائم کا کوئی حدوشمار نہ تھا۔پادریوں نے جنگ کی آگ بھڑکانے

کے لیے اعلان کیا کہ اس جنگ میں شرکت سے آدمی گناہوں سے بالکل پاک ہوجاتا ہے۔
اس طرح صلیبی قائدین اپنے اصل مادّی مقاصد کو اوجھل رکھ کر جنگوں کو مذہبی لبادہ اوڑھاتے ہوئے عوام کو مشتعل کردیا۔

## 3.4- صلیبی جنگوں کے اہداف ومقاصد:

یورپی لیڈروں کے ذہنوں میں اس جنگ کے درج ذیل مقاصد تھے:

① ایشیائی مسلم ممالک پر قبضہ کرنا ② القدس کی بازیابی
③ مسلمانوں سے گزشتہ صدیوں کی شکستوں کا انتقام ④ اسپین پر قبضہ
⑤ عالم اسلام کے تجارتی راستوں، دولت، پیداوار، معدنیات اور جملہ اقتصادی وسائل پر تسلط حاصل کرنا
⑥ یہودیوں کا اپنی القدس واپسی کی آرزوؤں کی تکمیل کرنا۔

(یہودی اس جنگ میں کھلم کھلا شریک نہیں تھے مگر انہیں امید ہو چلی تھی کہ انہیں اس طرح ہیکل سلیمانی تک رسائی کا راستہ مل سکتا ہے۔ چنانچہ ٹیمپلرز کی شکل میں ان کی خفیہ تنظیم شروع سے عیسائیوں کے ساتھ تھی)

## 3.5- کلرماؤنٹ کانفرنس:

عیسائی پادریوں نے اپنی قوم کو اشتعال دلانے کے لیے یہ پروپیگنڈا کیا کہ مسلمان القدس میں ہمارے مقدس مقامات کی توہین اور یورپی زائرین پر ظلم کررہے ہیں جب کہ اس الزام کی حقیقت صرف اتنی تھی کہ مسلم حکام زائرین کو نظم وضبط کا پابند بنانے کی کوشش کرتے تھے۔

انہی دنوں یورپ کے ایک جنونی راہب پیٹر (پطرس) نے القدس کی زیارت سے یورپ واپس جاکر اپنی اشتعال انگیز تقاریر میں مسلمانوں کے خلاف زہر اگل اگل کر پورے براعظم میں ایک آگ سی لگادی۔ پوپ بھی اس کا ہمنوا ہوگیا۔

پوپ اربن ثانی نے ذوالقعدۃ 588ھ (نومبر 1095ء) میں فرانس کے شہر کلرماؤنٹ میں ایک عظیم مذہبی کانفرنس بلاکر امرائے یورپ کو القدس کی بازیابی پر ابھارا اور کہا کہ جو اس جنگ

میں صلیب اٹھا کر ساتھ نہیں ہوگا وہ مسیح کا پیروکار نہیں رہے گا۔ یورپی بادشاہ بھی یہ جوش وخروش دیکھ کر جنگ کے لیے تیار ہوگئے۔ پھر جمعہ 15 اگست 1085ء کو پوپ اربن نے وینس (Venice) کے مقام پر پہلی صلیبی جنگ کا اعلان کیا۔

## 3.6- ڈاکٹر محمد اسد کا تبصرہ:

نومسلم ڈاکٹر محمد اسد نے اپنی شہرہ آفاق تصنیف ''The Road to Makkah'' کی تمہید میں لکھا ہے کہ یورپ کی اسلام دشمن نفسیات کا دیباچہ اسی کانفرنس میں لکھ دیا گیا تھا اور یہی اسلام دشمنی تب سے اب تک یورپ کی روح میں رچی بسی ہے۔ وہ لکھتے ہیں:

''صلیبی جنگوں سے سارے یورپ کو ایک مشترکہ نصب العین مل گیا، یعنی مسیحیت کا نیم سیاسی اور نیم مذہبی تصور جس نے آخر کار اپنی جگہ پر یورپ کے ثقافتی تصور کو تخلیق کیا۔ جب نومبر 1095ء میں پوپ اربن ثانی نے کلیر ماؤنٹ (Cler Mont) کے مقام پر اپنی شہرہ آفاق تقریر کے دوران مسیحیوں کو اس ''ناہنجار قوم'' کے ساتھ برسرپیکار ہونے کے لیے للکارا جس نے ارض مقدس پر قبضہ کر لیا تھا تو اس وقت موصوف نے دراصل دانستہ طور پر مغربی تہذیب کی دستاویز (Charter) ہی کا اعلان کیا تھا اور اس کا نظریہ پیش کیا تھا۔''

(The Road to Makkah. Page :06)

## 3.7- پہلی صلیبی جنگ:

یلغار کے پہلے مرحلے میں پیٹر راہب تیرہ لاکھ افراد کا مجمع لے کر ایشیائے کوچک کی سرحدوں میں داخل ہوا مگر قونیہ کے حاکم قلیچ ارسلان نے اس غیر مرتب فوج کو شکست فاش دے کر بھگا دیا۔

بعد میں دس لاکھ مرتب افواج روانہ ہوئیں، فرانس کا حاکم گاڈفرے ان کا عمومی کماندار تھا۔ یہ سیلاب 489ھ (1097ء) میں عالم اسلام کی سرحدوں میں داخل ہوا اور رجب 492ھ میں القدس کا محاصرہ کر لیا۔ بیالیس دن کے محاصرے کے بعد شعبان 492ھ (جولائی 1099ء) میں ارض مقدس پر پرچم صلیب لہرا دیا گیا۔ ستر ہزار مسلمان صرف مسجد اقصیٰ میں شہید کیے گئے جن کے خون میں عیسائی فاتحین کے گھوڑے گھٹنوں تک ڈوبے ہوئے تھے۔

شام کی یہ عیسائی عملداری رفتہ رفتہ پھیلتی چلی گئی اور ساحل شام کے بڑے رقبے پر عیسائی ریاستیں قائم ہوگئیں جن کا مرکز یروشلم (القدس) تھا۔

## 3.8- عمادالدین زنگی:

القدس کے سقوط سے عالم اسلام میں صفِ ماتم بچھ گئی، مگر مسلم حکام اس کی بازیابی کے لیے ایک مدت تک کچھ نہ کر سکے۔ بیت المقدس کے سقوط کے 26 سال بعد 518ھ (1124ء) میں عمادالدین زنگی نامی ایک غیر معروف افسر واسط اور بصرہ کا جاگیردار بنا۔ 524ھ میں اس نے فرنگیوں کے مضبوط ترین قلعے "حصن اثارب" پر قبضہ کرلیا۔ پھر حارم پر حملہ کیا۔ حارم کے والی نے حارم کی سالانہ نصف آمدنی وصول کرنے کے معاہدے پر صلح کرلی اور مسلمان عیسائیوں کے مظالم سے محفوظ ہوگئے۔

عمادالدین زنگی نے 6 جمادی الثانیہ 539ھ (23 دسمبر 1144ء) کو رہا کو بھی فتح کرلیا جسے مؤرخین فتح الفتوح کا نام دیتے ہیں۔ اس فتح کی وجہ سے مدتوں بعد صلیبیوں کی قوت پر پہلی ضرب لگی، وہ زنگی کی فتوحات سے خوفزدہ ہوگئے اور مسلمانوں کے خلاف ایک بڑی جنگ لڑنے کی تیاری شروع کردی۔ اس دوران عمادالدین زنگی کا انتقال ہوگیا۔

## 3.9- نورالدین زنگی اور دوسری صلیبی جنگ:

عمادالدین زنگی کے بیٹے سلطان نورالدین زنگی نے اپنے باپ کے شروع کردہ سلسلۂ جہاد کو جاری رکھا اور صلیبیوں سے مسلسل کئی کامیاب معرکے لڑے۔ سیرت اور کردار کے لحاظ سے نور الدین زنگی کو اسلامی تاریخ کے بہترین حکمرانوں میں شمار کیا جاتا ہے۔ اس کے دور میں اسلام کا پرچم ایک بار پھر بلند تر ہونے لگا۔ القدس کی بازیابی نورالدین زنگی کی زندگی کا سب سے بڑا مقصد تھی۔

زنگی خاندان کی فتوحات کی روک تھام کے لیے یورپ میں ایک بار پھر صلیبی جنگ کا نقارہ پیٹ دیا گیا۔ 542ھ (1148ء) میں کئی لاکھ جرمن اور فرانسیسی سپاہی سینٹ برنارڈ لوئی ہفتم کی قیادت میں ایشیائے کوچک سے شام پہنچ گئے اور دوسری صلیبی جنگ شروع ہوئی۔ نورالدین زنگی اور اس کا بھائی سیف الدین غازی دمشق کے حاکم معین الدین انز کی مدد کے لیے پہنچ گئے۔ مسلم حکمرانوں کے اتحاد کی بدولت 544ھ (1149ء) میں صلیبی لشکر مرعوب ہوکر پسپا ہوگیا۔

## 3.10- سلطان صلاح الدین ایوبی اور القدس کی بازیافت:

نور الدین زنگی کے بعد سلطان صلاح الدین ایوبی نے مصر اور شام کو متحد کر کے عظیم ایوبی سلطنت کی بنیاد رکھی۔ اسلام کے اس فرزند نے ربیع الثانی 583ھ میں حطین کا معرکہ لڑ کر شام کے عیسائیوں کی طاقت کو فنا کر دیا اور 27 رجب 583ھ (ستمبر 1187ء) کو بیت المقدس فتح کر کے پوری امت مسلمہ سے خراجِ تحسین وصول کیا۔

## 3.11- تیسری صلیبی جنگ:

القدس کے ہاتھ سے نکل جانے سے یورپ میں کہرام مچ گیا۔ القدس کا لاٹ پادری ولیم صوری راہبوں مذہبی پیشواؤں اور امراء کے ایک وفد کے ہمراہ سیاہ ماتمی لباس میں ملبوس، روم پہنچا اور پاپائے اعظم کی سرپرستی میں پورے یورپ کا دورہ کیا۔ وہ مسلمانوں کے مظالم کے فرضی افسانوں کے ذریعے یخ بستہ یورپ کو ایک دہکتے آتش فشاں میں تبدیل کرنے لگا۔

اس وقت نہ صرف شاعر اور گویئے دردناک نغموں کے ذریعے عوام کے جذبات کو بھڑکا رہے تھے بلکہ مصور بھی اپنے فن کو کمال پرکاری کے ساتھ اسلام اور مسلمانوں کے خلاف اندھی نفرت پھیلانے کے لیے استعمال کر رہے تھے۔ پادری مصوروں کے ذریعے ایسی فرضی تصاویر بنواتے تھے جن میں ایک عربی شخص حضرت عیسیٰ علیہ السلام سے لڑتے دکھایا جاتا تھا..... بعض تصاویر میں یہ منظر پیش کیا جاتا تھا کہ عیسیٰ علیہ السلام اس عربی شخص کے ہاتھوں بری طرح پٹ رہے ہیں ان کے بدن سے خون جاری ہے اور وہ زمین پر گر چکے ہیں۔ لوگ یہ دہشت ناک تصاویر دیکھ کر حیران ہوتے اور پادری انہیں بتاتے کہ یہ عرب کا نبی ہے، جو مسیح کو مار رہا ہے، مسیح اس کے ہاتھوں مر گیا ہے۔'' یہ سن کر لوگ دھاڑیں مار مار کر رونے لگتے۔

اس قسم کی ڈرامہ بازیوں میں صور کا حاکم کونرڈ مارکوئیس پیش پیش تھا۔ اس نے یورپ میں اشتعال انگیزی کو ہوا دینے لیے ایک نیا حربہ آزمایا۔ دنیائے نصرانیت کے لیے القدس کا کلیسائے قمامہ (چرچ سنیٹ جان) عقیدتوں کا مرکز ہے..... اسی چرچ میں ایک فرضی قبر ہے جسے وہ حضرت عیسیٰ علیہ السلام کی قبر تصور کرتے ہیں، ان کا عقیدہ ہے کہ حضرت عیسیٰ علیہ السلام کو سولی دینے

کے بعد یہیں دفن کیا گیا تھا۔ (نعوذ باللہ من ذلک)

مارکوئیس نے یورپ کے سادہ لوح عوام کو مشتعل کرنے کے لیے ایک بہت بڑی تصویر بنوائی جس میں ایک مسلم گھڑسوار کو قبر مسیح پر چڑھتے اسے گھوڑوں کے سموں سے پامال کرتے اور گھوڑے کو قبر پر پیشاب کرتے دکھایا گیا تھا۔ یہ دیوہیکل تصویر یورپ کے کونے کونے میں گھمائی گئی اور بڑے جلسوں میں دکھائی گئی..... اس قسم کی فرضی تصاویر نے تمثیل پرست عیسائیوں کو مزید جوش دلا دیا۔

آخر کار 585ھ (1189ء) میں یورپ سے صلیبی افواج کا سیلاب شام کے ساحل پر اترا۔ چار سال تک نہایت خون ریز جنگیں ہوتی رہیں۔ سلطان صلاح الدین ایوبی نے جس پامردی سے اس ہولناک یلغار کا مقابلہ کیا وہ تاریخ میں ہمیشہ یاد رکھی جائے گی۔ عکا کے ساحل سے لے کر بیت المقدس جانے والی شاہراہ تک لاتعداد مجاہدین نے جام شہادت نوش کیا مگر عیسائیوں کے سیلاب کو مقدس شہر تک نہ پہنچنے دیا۔ انجام کار صلیبی قائد رچرڈ کی ہمت جواب دے گئی اور یورپی طاقتوں کو شدید نقصانات اٹھانے کے بعد شعبان 588ھ (ستمبر 1192ء) میں ناکام واپس لوٹنا پڑا۔

## 3.12- چوتھی صلیبی جنگ:

سلطان ایوبی کے بعد ان کے بھائی الملک العادل کے دورِ حکومت میں پاپائے روم کے اکسانے پر جرمن حکمران ہنری ششم چوتھی صلیبی جنگ کا علم اٹھا کر 591ھ (1195ء) میں شام پر حملہ آور ہوا مگر عکا پہنچ کر مر گیا اور یہ مہم بالکل ناکام رہی۔

## 3.13- پانچویں صلیبی جنگ:

618ھ (1221ء) میں پھر صلیبی جنگ چھڑی۔ یورپی لشکروں نے اس بار نیا راستہ اختیار کیا۔ وہ مشرقی افریقہ کے ساحل پر اترے اور مصر کے اہم ترین مورچے دمیاط پر قبضہ کر لیا جس سے پورے مصر اور شام پر عیسائیوں کے قبضے کا شدید خطرہ لاحق ہو گیا۔ ادھر عین جنگ کے دوران مسلمانوں کے حکمران الملک العادل کی وفات ہو گئی جس سے صورتحال مزید ابتر ہو گئی مگر اس کے بیٹوں الملک الکامل، الملک المعظم اور الملک الاشرف نے حالات کو سنبھال لیا اور مل کر زبردست معرکوں کے بعد صلیبیوں کو عبرتناک شکست دے ڈالی۔

## 3.14- چھٹی صلیبی جنگ:

چھٹی صلیبی جنگ 624ھ (1228ء) میں ہوئی جس میں شاہِ جرمنی فریڈرک دوئم کی قیادت میں فوج کشی ہوئی۔ اس وقت مصر اور فلسطین کے حاکم الملک الکامل کا اپنے بھائی الملک المعظم سے جو دمشق کا حاکم تھا، جھگڑا چل رہا تھا اس لیے مسلمان مرعوب ہو گئے اور الملک الکامل نے جنگ سے بچنے کے لیے القدس کو ایک معاہدے کے تحت خاص مدت تک کے لیے جرمنوں کے حوالے کر دیا جس سے عالمِ اسلام میں صفِ ماتم بچھ گئی۔

## 3.15- القدس کی دوبارہ بازیابی:

18 سال تک بیت المقدس نااہل مسلمان حکمرانوں کی سیاسی شطرنج کا ایک مہرہ بنا رہا۔ وہ قبلہ اوّل کے ذریعے عیسائی طاقتوں کو خوش کر کے ان سے اپنی حکومتوں کے اتحاد کو مضبوط کرتے رہے اور آڑے وقت میں کام آنے کے وعدوں کی توثیق کرواتے رہے۔ 631ھ میں نوبت یہاں تک پہنچ گئی کہ عیسائی معاہدے میں طے شدہ ادب و آداب کو بھی بھول گئے اور مقامی مسلمانوں کے سامنے مسجد اقصیٰ میں گھنٹیاں بجانے اور گنبد صخریٰ پر چڑھ کر شراب پینے لگے مگر انہیں روکنے والا کوئی نہ تھا۔

یہ دیکھ کر مصر کے دلیر حکمران الملک الصالح نجم الدین کی غیرت نے انگڑائی لی۔ اس نے خود بھی ایک لشکر تیار کیا اور سلطان جلال الدین خوارزم شاہ کے بچے کھچے خوارزمی سپاہیوں سے اعانت طلب کی۔ خوارزمی 642ھ (1244ء) میں اپنے افسران کی قیادت میں دریائے فرات عبور کر کے فلسطین میں داخل ہو گئے اور بیت المقدس پر قبضہ کر لیا، اس طرح سلطان ایوبی کی امانت مسلمانوں کو واپس مل گئی۔

شام کی عیسائی ریاستوں نے یہ دیکھا تو اسے مذہبی کی بجائے وطنی مسئلہ قرار دیتے ہوئے دمشق اور دوسرے شہروں کے مسلمان حاکموں کو اپنے ساتھ ملا کر ایک نئی جنگ کی تیاری کی۔ اس دوران الملک الصالح نجم الدین نے اپنے سالار بیبرس کو فوج دے کر خوارزمیوں کی مدد کے لیے بھیج دیا۔ جمادی الاولیٰ 642ھ میں غزہ کے مقام پر زوردار معرکہ ہوا جس میں خوارزمیوں اور

مصریوں نے مل کر عیسائیوں اور ان کے اتحادی مسلمانوں کو عبرتناک شکست دی۔

اتحادی غزہ کے میدان میں 30 ہزار لاشیں چھوڑ کر پسپا ہوئے اور القدس کے بارے میں کفار کے ارادے خاک میں مل گئے۔

## 3.16- سلطان بیبرس اور ساتویں صلیبی جنگ:

عیسائی دنیا دل ہار چکی تھی کہ ایک مدت بعد ایک جنونی حکمران نے اسے پھر سے صلیب کی خاطر جنگ کا حوصلہ دیا۔ یہ فرانس کا حکمران لوئیس نہم تھا جسے دنیائے نصرانیت ''سینٹ لوئی'' کے لقب سے یاد کرتی ہے۔ اس نے پاپائے روم کی ترغیب پر 1248ء میں ساتویں صلیبی جنگ کا علم بلند کر کے مصر کے ساحل کا رخ کیا۔

647ھ (1249ء) میں وہ مصر کی بندرگاہ دمیاط پہنچا اور شہر کا محاصرہ کر لیا۔ اس وقت مصر کے حالات بہت نازک تھے۔ شاہ مصر الملک الصالح شدید بیمار تھا۔ جنگ کے دوران 15 شعبان 647ھ (22 نومبر 1249ء) کو اس کا انتقال ہو گیا۔ تاہم اس کی ملکہ الشجرۃ الدرّ نے پوری شجاعت سے صلیبیوں کا مقابلہ کیا، خوش قسمتی سے اسے بیبرس جیسے سالار میسر تھے اس لیے مسلمانوں نے فرنگیوں کو چھٹی کا دودھ یاد دلا دیا۔ آخر کار 2 محرم 648ھ (6 اپریل 1250ء) کو خود سینٹ لوئی منصورہ کے مقام پر شکست کھا کر قیدی بن گیا۔ اس دوران الملک الصالح کا بیٹا الملک المعظم توران شاہ اس کا جانشین بن گیا مگر جلد ہی وہ ایک محلاتی سازش کا شکار ہو کر مارا گیا اور شجرۃ الدرّ نے مصر کا تخت و تاج سنبھال لیا۔ اس نے صفر 648ھ میں بھاری فدیہ لے کر شاہ فرانس کو اس شرط پر رہا کر دیا کہ دس سال تک فرانس کی طرف سے کوئی حملہ نہیں ہوگا۔

گیارہ ماہ کی ناکام مہم جوئی، قید و بند، مسلسل علالت اور سب سے بڑھ کر شکست کے اذیت ناک احساس نے شاہِ فرانس کے دل و دماغ کو بہت کچھ سوچنے پر مجبور کر دیا تھا۔ وہ رہائی پانے کے بعد فرانس واپس جانے کی بجائے چار سال تک ایک درویش کی شکل میں فلسطین میں رُکا رہا اور اپنا غم غلط کرنے کے ساتھ ساتھ مسلمانوں کی کامیابی کے اسباب اور ان کے کمزور پہلوؤں پر غور کرتا رہا۔ ساتھ ہی وہ شام میں عیسائیوں کے باقی ماندہ قلعوں کو مضبوط کراتا رہا۔ چار سال بعد

اس نے دوبارہ یورپ جا کر تخت وتاج سنبھال لیا۔

اس دوران مصر کے نئے حکمران رکن الدین بیبرس نے ساحل شام کی باقی عیسائی ریاستوں کا صفایا کرنے کی مہم جاری رکھی اور ان کے سب سے مضبوط مرکز انطاکیہ پر بھی قبضہ کر لیا جس سے یورپ میں پھر کھلبلی مچ گئی۔

## 3.17- آٹھویں صلیبی جنگ:

ان فتوحات کے ردعمل میں اٹھارہ برس بعد سینٹ لوئی نے ایک بار پھر صلیبی جنگ لڑنے کے لیے ہتھیار اٹھا لیے۔ 668ھ (جولائی 1270ء) میں اس نے حملہ کیا مگر اس بار بھی حالات موافق نہ ہوئے۔ تیونس کا ناکام محاصرہ کرنے کے سوا وہ کچھ نہ کر سکا اور محاصرے کے دوران ہی بیمار پڑ کر مر گیا۔ اس کی مدد کے لیے آنے والے برطانوی شہزادے ایڈورڈ نے 670ھ (1272ء) میں قیساریہ کے مقام پر مسلمانوں سے صلح کا معاہدہ کر لیا اور صلیبی جنگجو واپس ہو گئے۔

سینٹ لوئی کے بعد کسی یورپی بادشاہ کو صلیب کے نام پر ہتھیار اٹھانے کی ہمت نہ ہو سکی، اس طرح آٹھویں صلیبی جنگ پر صلیبی جنگوں کا سلسلہ اختتام پذیر ہو گیا۔

(کروسیڈز، ہیرلڈ لیمب: صفحہ: 446 تا 456۔ اردو دائرہ معارف اسلامیہ بعنوان صلیبی جنگیں)

690ھ (1291ء) میں شاہِ مصر الملک الخلیل نے پورے شام سے عیسائی ریاستوں کا خاتمہ کر دیا اس طرح پانچویں صدی ہجری کے کروسیڈ کی باقیات کا نام ونشان تک مٹ گیا۔

## 3.18- سینٹ لوئی، یورپ میں الغزو الفکری کا بانی:

جنگوں کے اس ناکام سلسلے سے یورپ میں کئی فکری تبدیلیاں پیدا ہوئیں اور وہاں پہلی بار یہ شعور اجاگر ہوا کہ مسلمانوں کو صرف عسکری ذرائع سے شکست دینا ناممکن ہے۔ سینٹ لوئی کو اس فکر کا بانی کہا جاتا ہے۔ مسلسل شکستوں کی وجہ سے وہ یہ سوچنے پر مجبور ہو گیا تھا کہ مسلمانوں پر قابو پانے کے لیے ان پر فکری یلغار اور اس کے لیے علمی ترقی اور تیاری بے حد ضروری ہے۔

وہ ایک حکمران ہی نہیں ایک مفکر بھی تھا۔ بہت سوچ بچار کے بعد اس نے ایک منصوبہ تیار کیا جو اس کے وصیت نامے کی شکل میں آج بھی پیرس کے عجائب گھر میں محفوظ ہے۔ اس میں

مسلمانوں کے خلاف کامیابی کے لیے چار باتوں کی سفارش کی گئی تھی:

- مسلمان حکمرانوں کے مابین پھوٹ ڈالنا۔
- ان میں پختہ عقیدے اور مضبوط ایمان والے کسی گروہ کو پنپنے نہ دینا۔
- مسلم معاشرے کو فحاشی، اخلاق باختگی اور مالی بدعنوانی کے ذریعے کمزور بنانا
- غزہ سے انطاکیہ تک ایک وسیع متحدہ یورپی حکومت قائم کرنا۔

(یہ علاقہ موجودہ فلسطین، اسرائیل اور شام پر مشتمل ہے۔)

سینٹ لوئی نے وصیت نامے میں اپنے جانشینوں کو احساس دلایا کہ ہم ایک مدت سے مسلمانوں کو مغلوب کرنے کی کوشش میں مصروف ہیں مگر شدید مہمات کے باوجود ہم فتح یاب نہیں ہو سکے۔ اس کی وجہ یہ ہے کہ جنگ کے وقت مسلمانوں میں ہمیشہ ایسا ولولہ پیدا ہو جاتا ہے جس کا مقابلہ ہم نہیں کر سکتے۔ اس لیے ضروری ہے کہ ہم نئے طریقے اور ذرائع اختیار کریں۔ اس کی صورت یہ ہے کہ ہم جنگ کو عسکری محاذ سے علمی اور روحانی محاذ پر منتقل کر دیں۔

اس طرح صلیبی جنگوں کے نتائج سے یورپ کی فکر تبدیل ہوئی۔ وہاں علم اور تحقیق کا ذوق پیدا ہونے لگا، مسلمانوں سے فکری محاذ پر لڑنے کے لیے نئے راستوں کی تلاش شروع ہوئی، علمی ہتھیار تیار کیے جانے لگے اور موجودہ الغزو الفکری کی بنیاد پڑی۔

اس تمام تر کوشش اور جستجو میں نفرت اور انتقامی جذبے کی زبردست کارفرمائی تھی جو یورپ کو تیزی سے آگے بڑھانے کے لیے بھاپ کا کام دے رہی تھی۔ یہی وہ نفرت اور عداوت تھی جس کے باعث یورپ نے اسلام کا اصل چہرہ دیکھنے اور اسے سنجیدگی سے سمجھنے کی قصداً کوشش نہ کی اور یورپی مفکرین اسلام سے جہالت کے پردوں کو مزید دبیز کرتے چلے گئے۔

پروفیسر محمد اسد لکھتے ہیں: ''صلیبی جنگوں نے جو نقصان پہنچایا وہ محض آلاتِ جنگ کے باہمی تصادم تک محدود نہیں تھا بلکہ وہ ایک ذہنی نقصان تھا جو اس طور پر واقع ہوا کہ اسلامی تصورات اور تعلیمات کو دیدہ و دانستہ مسخ کر کے مغربی دنیا کو دنیائے اسلام کی جانب سے بدگمان کیا گیا ہے۔ ظاہر ہے صلیبی جنگوں کے لیے کوئی وجہ جواز نہیں مل سکتی سوائے اس کے کہ پیغمبرِ اسلام کو خواہ مخواہ

حضرت عیسیٰ علیہ السلام کا کھلا مخالف اور دشمن قرار دیا جائے اور مذہب اسلام کو انتہائی مکروہ شکل میں پیش کر کے اس کو بداخلاقی اور بدکرداری کا سرچشمہ ظاہر کیا جائے۔ انہی صلیبی جنگوں کے زمانے میں اس مضحکہ خیز تخیل نے مغربی اذہان میں جگہ پائی کہ اسلام نفس پرستی اور بہیمانہ جارحیت کی تعلیم دیتا ہے اور تزکیہ نفس کی بجائے چند ظاہری رسوم کی ادائیگی پر زور دیتا ہے اور یہ تخیل آج تک جوں کا توں قائم ہے۔" (The Road To Makkah. Page: 7)

# مراجع


- الکامل فی التاریخ: 620/ تا670۔ از ابن اثیر عزالدین رحمہ اللہ
- تاریخ ابن خلدون: 5/ 223 تا280۔ از عبدالرحمن ابن خلدون رحمہ اللہ
- کتاب الروضتین: 1/ 100 تا140۔ 2/ 254 تا268۔ از شہاب الدین المقدسی
- البدایۃ والنہایۃ: 7/ 760 تا792۔ از حافظ ابن کثیر رحمہ اللہ
- اردو دائرہ معارف اسلامیہ: 6/ 634 تا635
- اسالیب الغزو الفکری، باب اول
- The Road to Makkah by Mohammad Asad
- کروسیڈز۔ ہیرلڈ لیمب (ترجمہ بنام صلاح الدین ایوبی، محمد یوسف عباسی)
- Saladin and the fall of the Kingdom of Jerusalam (سٹینلے لین پول)
- النجوم الزاہرہ، علامہ تغری بردی رحمہ اللہ
- المختصر فی اخبار البشر از ابوالفداء
- کتاب الاعتبار از اسامہ بن منقذ رحمہ اللہ
- النوادر السلطانیہ، بہاؤ الدین ابن شداد رحمہ اللہ
- تاریخ دعوت وعزیمت ج اول، مولانا سید ابوالحسن علی ندوی رحمہ اللہ

چوتھا باب

4

# فکری ونظریاتی جنگ کے محاذ

## ساحات الغز و الفکری

## *Fields*
## *of*
## Ideological War

باب اوّل ودوم وسوم ہمارے موضوع کی تمہید تھے، جبکہ یہ ہمارے موضوع کا سب سے اہم باب ہے۔اس میں ہم فکری ونظریاتی جنگ کے مختلف محاذوں کا جائزہ لیں گے۔اس وقت اہم ترین محاذ درج ذیل ہیں: ① الاستشراق ② الاستعمار
③ العولمۃ/ عالمگیریت/گلوبلائزیشن ④ الردّۃ/التنصیر

پہلے ہم ان کا مختصر تعارف کرادیتے ہیں۔اس کے بعد ہر ایک کا تفصیلی جائزہ لیا جائے گا۔

## 4.1- الاستشراق:

یعنی غیر مسلموں کا اسلامی ومشرقی علوم کو سیکھنا۔اس اسلوب کے ذریعے اسلامی ومشرقی علوم کے یہودی، عیسائی اور دہریے ماہرین تیار کیے جاتے ہیں۔اسلامی فکر ونظریات پر سرے سے ایمان نہ رکھنے والے یہ دانش ور جب تفسیر، حدیث، فقہ یا اسلامی تاریخ پر کام کرتے ہیں تو اَن گنت فتنوں کو جنم دیتے ہیں۔

## 4.2- الاستعمار:

یعنی اہلِ مغرب کا اقتصادی وعسکری طور پر عالمِ اسلام کو اپنی ماتحت آبادیوں (کالونیوں) میں تبدیل کرنا۔اس میں ان درجہ بدرجہ اہداف، سازشوں اور اقدامات کا تذکرہ ہوگا جن کے ذریعے گزشتہ چار صدیوں میں اسلام دشمن طاقتوں اور نظریاتی حملہ آوروں نے اسلام اور مسلمانوں پر تدریجاً غلبہ حاصل کیا۔

## 4.3- العولمۃ/ عالمگیریت/گلوبلائزیشن:

امریکی اور یہودی لابی کا دنیا بھر کو ایک اقتصادی، سیاسی وثقافتی نظام میں جکڑنے کی کوشش کرنا۔

## 4.4- الردّۃ/التنصیر:

یعنی مسلمانوں کو اپنے باطل دین کی دعوت دینا۔انہیں مرتد بنانا۔

# 4.1- پہلا محاذ (الساحۃ الاولیٰ)

# الاستشراق

## Orientalism

### 4.1.1- استشراق کے لغوی معنی:

استشراق شرق سے نکلا ہے، شرق یا Orient سے وہ علاقے مراد لیے جاتے ہیں جہاں سورج پہلے طلوع ہوتا ہے۔ گویا یہ لفظ مشرق کے معنیٰ میں ہے۔ عربی کے لفظ استشراق کا لغوی ترجمہ ''مشرق کو طلب کرنا'' ہے۔ ظاہر ہے کہ مشرق کو طلب کرنا کوئی مفہوم نہیں رکھتا اس لیے اس سے مشرقی علاقوں کے علم وادب کی جستجو ہی مراد لی جاتی ہے۔

انسائیکلو پیڈیا برنا ٹیکا کے مطابق یہ اطالوی لفظ Oriens سے مشتق ہے جس کا معنیٰ ''طلوعِ آفتاب'' ہے۔ گویا علم کی روشنی کو سورج کی روشنی سے مشابہ تصور کر کے یہ لفظ مشرقی علوم کے حصول کے لیے استعمال کیا جانے لگا۔

یہاں یہ سمجھ لینا چاہیے کہ اہل یورپ کے ہاں مشرق دو معنوں کے لیے استعمال ہوتا ہے: پہلے معنیٰ کے لحاظ سے مشرق سے مراد وہ تمام علاقے ہیں جو یورپ سے مشرق کی سمت ہیں۔ اس طرح اس مفہوم میں ایشیا کے تمام ممالک داخل ہوں گے۔ دوسرے معنیٰ کے لحاظ سے بحیرہ روم کے پار کی دنیا مشرق کہلاتی ہے، گویا ایشیا کے علاوہ یورپ کے جنوب میں واقع افریقہ بھی اس مفہوم میں شامل ہو جائے گا۔

### 4.1.2- استشراق کا اصطلاحی معنیٰ یا تعریف (Definition)

علمائے عرب استشراق کی تعریف یوں بیان کرتے ہیں:

''دِرَاسَةُ الْغَرْبيينِ لِلشَرْقِ الاسْلَامي حَضَارَتَه وَ اَديانَه وَ آدَابَه

ولُغَاتِه وتَارِيخَه وَثَقَافَاتِه وَعَادَاتِه.''

''اہل مغرب کا مشرقی اسلامی دنیا کی تہذیب، مذاہب، ادب، لغت، تاریخ، ثقافت اور عادات واطوار کی تعلیم حاصل کرنا۔''

## 4.1.3- استشراق (Orientalism) کا مغربی مفہوم:

انکارٹا ڈکشنری (Encarta Dictionary) میں استشراق (Orientalism) کی تعریف یوں بیان کی گئی ہے:

The study of the Civilizations of Eastern Asia.

''یعنی مشرقی ایشیا کی معاشرت کا مطالعہ کرنا۔''

مگر حقیقت یہ ہے کہ استشراق کا دائرہ اس سے بہت وسیع ہے اور پورا عالم اسلام اور ہر مسلم معاشرہ چاہے وہ مشرق میں ہو یا مغرب میں، استشراق کا نشانہ ہے۔ اگرچہ مستشرقین ہندوازم اور بدھ مت سمیت مشرقی ممالک کے تمام مذاہب اور تہذیبوں کا مطالعہ کرتے ہیں مگر استشراق کے آغاز سے لے کر اب تک ان کا اصل 'ہدف' اسلام ہی رہا ہے، کیوں کہ شروع سے مغرب اسلام ہی کو اپنا سب سے بڑا حریف سمجھتا آیا ہے اور استشراق کی تحریک اسی حریفانہ جذبے اور انتقامی ولولے کی پیداوار ہے۔

## 4.1.4- مستشرقین: Orientalist

جو لوگ استشراق کا کام کرتے ہیں انہیں مستشرق (Orientalist) کہا جاتا ہے۔

دورِ حاضر کے عرب محققین نے ان کا جو تعارف کرایا ہے اس کا خلاصہ یہ ہے:

''مستشرق وہ مغربی دانشور ہیں جو مذہبی تعصب کی بناء پر علوم اسلامیہ کا مطالعہ کرتے ہیں تاکہ اسلام کے مصادر میں آمیزش کی جائے، اسلام کی روح کو متاثر کیا جائے اور اس کی شکل وصورت کو بگاڑ کر اس کی عظمتوں کو داغدار کیا جائے۔''

مولانا سید ابوالحسن علی ندوی رحمہ اللہ مستشرقین کا تعارف کراتے ہوئے تحریر فرماتے ہیں:

''ان کو عام طور پر مستشرقین (Orientalist) کہا جاتا ہے جو اپنے علمی تبحر، تحقیقی انہماک

اور مشرقیات سے گہری واقفیت کی بناء پر مغرب اور مشرق کے علمی وسیاسی حلقوں میں بڑی عظمت واحترام کی نگاہ سے دیکھے جاتے ہیں اور ان مشرقی اسلامی مباحث ومسائل میں ان کی تحقیق ونظریات کو حرف آخر اور قول فیصل سمجھا جاتا ہے۔'' (مغربی مستشرقین کے فکر وفلسفہ کا اثر: صفحہ 1)

مگر اس کے ساتھ ہی وہ ان کے کردار کے دوسرے پہلو پر روشنی ڈالتے ہوئے بتاتے ہیں:

''مستشرقین عمومی طور پر اہل علم کا وہ بدقسمت اور بے توفیق گروہ ہے جس نے قرآن وحدیث، سیرت نبوی، فقہ اسلامی وتصوف کے سمندر میں بار بار غوطے لگائے اور بالکل خشک دامن اور تہی دست واپس آیا بلکہ اس سے اس کا عناد، اسلام سے دوری اور حق کے انکار کا جذبہ اور بڑھ گیا۔ اس کی بڑی وجہ یہ ہے کہ نتائج ہمیشہ مقاصد کے تابع ہوتے ہیں۔ عام طور پر ان مستشرقین کا مقصد کمزوریوں کا تلاش کرنا اور دینی یا سیاسی مقاصد کے تحت ان کو نمایاں کرنا اور چمکانا ہوتا ہے، چنانچہ صفائی کے انسپکٹر کی طرح ان کو ایک گلزار وجنت نشان شہر میں صرف غیر صحت مند مقامات ہی نظر آتے ہیں۔'' (مغربی مستشرقین کے فکر وفلسفہ کا اثر: صفحہ 2)

## 4.1.5- مستشرقین کی قسمیں:

عقیدے ونظریے کے لحاظ سے مستشرقین قسم قسم کے ہیں۔ ان میں یہودی بھی ہیں اور عیسائی بھی۔ کیمونسٹ بھی ہیں اور سیکولر بھی۔ اکثر مستشرقین مشرقی علوم اور اسلامی مآخذ پر کام کرتے ہوئے اپنی قوم، اپنے نظریے اور اپنے گروہ کا مفاد اور اپنے اداروں کی طرف سے دیے گئے مخصوص اہداف ومقاصد پیش نظر رکھتے ہیں۔ غیر جانبدارانہ تحقیق کرنے والے بہت کم ہوتے ہیں۔

مولانا سید ابوالحسن علی ندوی رحمہ اللہ ان کے دین واعتقاد کا ذکر کرتے ہوئے فرماتے ہیں:

''مستشرقین کی بڑی تعداد اصلاً پادری ہے، ان میں سے ایک بڑی تعداد نسلاً ومذہباً یہودی ہے۔'' (مغربی مستشرقین کے فکر وفلسفہ کا اثر: صفحہ: 2)

ڈاکٹر مصطفی السباعی کا تبصرہ ہے:

''استشراق کے چشمے عموماً کلیسا سے پھوٹے ہیں اور سامراجی ملکوں میں گرجا اور وزارتِ خارجہ پہلو بہ پہلو ان کے ساتھ ہیں۔'' (المسلمون والاستشراق: صفحہ: 88)

## 4.1.6- تاریخ استشراق (History of Orientalism):

استشراق کی تاریخ بہت پرانی ہے، کسی خاص تاریخ اور ماہ وسن کو اس کا نقطۂ آغاز قرار نہیں دیا جاسکتا۔ استشراق کی ایک شکل ہمیں زمانہ ماقبل از مسیح میں ملتی ہے جب ایشیا کو فتح کرنے والے یونانی بادشاہ سکندر اعظم نے اپنے حکماء اور دانشوروں کو مشرقی علوم کے گہرے مطالعے کا کام سونپا تھا تاکہ وہ اہل مشرق کی کمزوریاں دریافت کریں جن کی مدد سے ان پر قابو پانا آسان ہو۔ یہ استشراق کی ایک ابتدائی شکل تھی، مگر ہم جس استشراق کی تاریخ پڑھنا چاہتے ہیں وہ اسلام کے مقابل آنے والا استشراق ہے۔ یہ استشراق حقیقی شکل میں صلیبی جنگوں کے بعد شروع ہوا تاہم اس کی جڑیں ہمیں ابتدائے اسلام میں بھی نظر آتی ہیں۔ استشراق کی تاریخ کو ہم چار ادوار میں تقسیم کر کے دیکھ سکتے ہیں۔

### پہلا دور: سن 1ھ تا 700ھ

یہ دور حضور نبی اکرم ﷺ کی ہجرت مدینہ سے شروع ہو کر صلیبی جنگوں پر ختم ہوتا ہے۔ گویا اس کا دورانیہ سات صدیوں پر محیط ہے۔

الغزو الفکری کی تاریخ میں آپ پڑھ چکے ہیں کہ یہود و نصاریٰ نے مسلمانوں کی ہجرتِ مدینہ کے بعد اسلام سے متعارف ہوتے ہی اس پر اعتراضات کا سلسلہ شروع کر دیا تھا، ان کے اعتراضات کا بڑا مقصد یہ تھا کہ قرآن مجید کے وحی خداوندی ہونے اور حضور اقدس ﷺ کے نبی برحق ہونے میں شبہات پیدا کیے جائیں۔

دورِ خلافت راشدہ میں شام اور مصر کی فتوحات کے بعد مسلمانوں اور ایشیا کے اہل کتاب کے درمیان جغرافیائی فاصلے ختم ہو گئے اور ایک وطن کے باشندے ہونے کے باعث انہیں ایک دوسرے سے بکثرت واسطہ پڑنے لگا۔ ایک طویل عرصے تک یہ صورتحال رہی۔ اس دوران یہودی علماء اور عیسائی پادریوں کی جانب سے دھیمے دھیمے انداز میں اسلام پر اعتراضات کا سلسلہ جاری رہا۔

اس زمانے میں ایک عیسائی پادری یوحنا دمشقی (John of Damascus) نے اسلام کے خلاف مہم شروع کی اور اس سلسلے میں دو کتابیں لکھیں: ایک ''حیاۃ محمد'' اور دوسری ''حوار بین مسیحی

وسلم"۔ یوحنا ان کتابوں کے ذریعے عیسائیوں کو اسلام کے خلاف دلائل فراہم کرنا چاہتا تھا مگر اس کوشش سے مسلمان قطعاً متاثر نہ ہوئے۔ خود عام عیسائیوں اور یہودیوں کو بھی اسلام کے خلاف اس مہم سے کوئی دلچسپی نہیں تھی۔ اس کی وجہ بتاتے ہوئے مولانا عبدالقدوس ہاشمی تحریر کرتے ہیں:

"بازنطینی حکومت کی سخت گیری کے مقابلے میں مسلمانوں کی رواداری اور آزادی نے مفتوحہ علاقوں کی غیر مسلم آبادی کے لیے ایسی صورتحال پیدا کردی تھی کہ لوگ مسلمان فاتحین کی آمد کو 'خدا کی رحمت' سے تعبیر کرتے تھے اور اپنے متعصب مذہبی پیشواؤں کی طرف لوگ کم توجہ کرتے تھے۔ اس زمانہ میں لوگ جوق در جوق مسلمان ہوتے جاتے تھے۔ مصر اور شام کے عیسائی اور یہودی علماء اور پیشوایان مذاہب اس کے مقابلے میں بے دست و پا سے ہو گئے تھے۔

(مستشرقین کا طریقہ کار: صفحہ 2)

الغرض یہود و نصاریٰ کی یہ کوششیں لاحاصل رہیں اور ان کی اکثریت نے سمجھ لیا کہ فی الحال اعتراضات تلاش کرنے کی نیت سے قرآن وحدیث پڑھنے کی کوشش کارِ عبث ہے چنانچہ انہوں نے طب، کیمیا، ریاضی، زراعت اور ادب جیسے علوم میں مسلمانوں کی شاگردی اختیار کی۔ بلاشبہ اس زمانے میں مسلمانوں کی حیثیت پوری دنیا کے استاد کی سی تھی اور مشرق ومغرب کے اہل علم ان کے تلامذہ کی صف میں ہاتھ باندھے کھڑے تھے۔ یہودیوں اور عیسائیوں میں علم سے دلچسپی رکھنے والوں کی بڑی تعداد بغداد سے لے کر قرطبہ تک مسلمانوں کی علوم عصریہ کی درسگاہوں میں پوری سہولت سے تعلیم حاصل کر رہی تھی۔ فراغت کے بعد انہیں معاشرے میں ایک طبیب، کیمیا گر اور ریاضی دان کے طور پر بلاپس وپیش قبول کیا جاتا تھا۔ ان کی خاصی تعداد سرکاری اداروں میں منشیوں اور کاتبوں جیسے عہدوں پر ذمہ داریاں انجام دیتی تھی۔

یہ صورتحال عالم اسلام کی تھی۔ جہاں تک یورپ کا تعلق ہے وہاں یہ صدیاں علم، اخلاق اور تمدن کے لحاظ سے انتہائی پستی کا نمونہ تھیں۔ علم کے تمام دروازوں پر کلیسا کے تقدس کا پہرہ تھا۔ پادریوں نے علم وتحقیق پر پابندی لگائی ہوئی تھی۔ ارسطو اور افلاطون کے فلسفے سمیت ہر نئے علم وآگہی کا راستہ مسدود تھا۔

## استشراق کے بانی:

کچھ پادری ایسے تھے جو اس گھٹن کے خلاف تھے اور علوم مشرقیہ سے آشنائی کے خواہاں تھے۔ انہیں ہم یورپ میں استشراق کے بانیوں میں شمار کر سکتے ہیں۔ان میں سے چند اہم افراد یہ تھے:

① ہربرٹ ڈی اورلیک:Herbert de Oraliac (938–1003)

یہ بینڈ یکیٹ فرقے کا فرانسیسی پادری تھا۔علم حاصل کرنے اندلس گیا اور کئی علوم وفنون میں یکتا بن کر واپس آیا۔اس کی قابلیت کی وجہ سے 999ء میں اسے پوپ چن لیا گیا۔تاریخ میں وہ پوپ سلفٹر ثانی کے لقب سے مشہور ہے۔فرانس سے تعلق رکھنے والا یہ پہلا پوپ تھا۔اس قسم کے پوپ خود عالم اسلام سے عربی کتب ورسائل منگوا کر دلچسپی سے پڑھا کرتے تھے۔

② پطرس المکرم:Prerre le venerable (1094–1156)

یہ بھی بینڈ یکیٹ فرقے کا عیسائی اور فرانسیسی رئیس تھا۔اس نے عربی سیکھ کر خود 1143ء میں عربی زبان کا پہلی بار لاطینی زبان میں ترجمہ کیا جو اس دور میں یورپ کی علمی زبان تھی۔بعد میں رابرٹ اوف کیٹون (robert of Ketton) نے اسی ترجمے کو انگریزی میں منتقل کیا۔پطرس کا سب سے بڑا کارنامہ یہ سمجھا جاتا ہے کہ اس نے مترجمین کی ایک پوری جماعت تیار کر کے اسے عربی کتب کے ترجمے پر لگا دیا۔

③ جیرارڈ ڈی گریمونا:Gerard de Gremona (1114 – 1187)

یہ اٹلی کا پادری تھا۔اس نے اندلس کے شہر طلیطلہ جا کر علم حاصل کیا۔عربی میں مہارت حاصل کر کے اس نے فلسفے، طب، فلکیات اور دیگر فنون میں 87 سے زائد عربی کتب کا لاطینی زبان میں ترجمہ کر کے اہل یورپ کو مشرقی علوم کی طرف متوجہ کیا۔

④ یوحنا اشبیلی:Juan de Sevilla

بارہویں صدی عیسوی کے وسط میں مشہور ہونے والا یہ شخص یہودی النسل تھا مگر خود کو عیسائی ظاہر کرتا تھا۔اس نے بھی ترجمے کے کام میں خاصا نام پیدا کیا۔علم نجوم کا ماہر تھا۔

⑤ روجر بیکن:Roger Bacon(1214 – 1294)

آکسفورڈ یونیورسٹی کا یہ فاضل برطانیہ کا مشہور دانش ور اور فلسفی بنا، پیرس سے بھی تعلیم حاصل کی اور فلسفے کا ماہر شمار ہوا۔ اس نے ''مرآۃ الکیمیاء'' کا ترجمہ کیا۔

⑥ دانتے: (1265-1321)

یہ اٹلی کا مشہور سیاست دان اور مفکر تھا۔ اس نے فلورنس، بولونیا اور پیڈووا کی جامعات میں تعلیم حاصل کی۔ عربی کا ماہر اور بہترین شاعر تھا۔ اہلِ مغرب اسے دنیا کے چند بڑے شعراء میں سے ایک مانتے ہیں۔ اس کی سب سے مشہور کتاب ''ڈیوائن کامیڈی'' دراصل ابن العربی رحمہ اللہ کی تصانیف سے سرقہ کی گئی ہے۔

## ابتدائی دور کے مستشرقین کا کام:

اس ابتدائی دور میں یورپ میں عالم اسلام کی بیسیوں منتخب کتب کے تراجم کیے گئے تھے۔ طلیطلہ کے بڑے پادری نے 1130ء میں کچھ عربی کتب کا ترجمہ کیا۔ اٹلی اور فرانس میں مشہور طبیب بوعلی سینا، نامور کیمیادان جابر بن حیان، استاذِ منطق الفارابی اور معروف فلسفی ابن رشد کی کتب کو مقامی زبانوں میں ڈھالا گیا تھا تاہم مترجمین نے مصنفین کے ناموں کو بگاڑ کر ان کی شناخت چھپالی تھی۔ بوعلی ابن سینا کو ایوی سینا، ابن رشد کو ایوی روس، جابر بن حیان کو جبیر، اور الفارابی کو فاربس کہہ کر متعارف کرایا گیا تھا۔ صدیوں تک عام یورپی لوگ انہیں اپنا ہم قوم باور کرتے رہے۔ ان ترجموں کو یورپ میں محدود پیمانے پر بڑی دلچسپی سے پڑھا جاتا تھا۔

اس دور کی دوسری اہم بات یہ ہے کہ اس میں پہلی بار اہلِ یورپ کو عالم اسلام کی طرز کی جامعات بنانے کا خیال آیا۔ پہلی صلیبی جنگ کے نتیجے میں جب یورپی حملہ آور القدس سمیت شام کے کئی شہروں پر قابض ہوئے تو انہیں مسلمانوں کے علمی مراکز کی ترقی اور معیار نے حیران کر دیا۔ چنانچہ پہلی صلیبی جنگ کے فوراً بعد اٹلی کے شہر بولوگنا (Bologna) میں یورپ کی پہلی یونیورسٹی ظہور میں آتی دکھائی دیتی ہے۔ پچاس ساٹھ سال بعد بارہویں صدی عیسوی کے وسط میں (1160ء میں) فرانس کی پیرس یونی ورسٹی کی بنیاد رکھی گئی اور پھر جامعات کا ایک تانتا بندھ گیا۔ 1167ء میں برطانیہ کی آکسفورڈ یونیورسٹی اور 1175ء میں اٹلی کی موڈینا (Modena) یونی ورسٹی کی داغ

بیل پڑی۔ پھر تیرہویں صدی عیسوی شروع ہوتے ہی 1208ء میں اسپین کی عیسائی ریاستوں میں بلنسیہ (Palencia) یونی ورسٹی، 1209ء میں برطانیہ کی کیمبرج یونی ورسٹی، 1218ء میں اسپین کے عیسائی شہر طلیطلہ کے مغرب میں سلمانکا (Salamanca) یونی ورسٹی اور 1222ء میں اٹلی کی پادوا (Padua) یونیورسٹی کا آغاز ہوا۔ ان میں مسیحی مذہب کے علاوہ قانون، طب اور آرٹ سمیت کئی علوم وفنون کی اعلیٰ تعلیم دی جاتی تھی۔ بیرونی طلبہ کی رہائش کا انتظام بالکل اسلامی درسگاہوں کی طرز پر تھا۔ اس سے قبل یورپ کی کسی درسگاہ میں بیرونی طلبہ کے لیے دارالاقامۃ کا تصور نہ تھا۔ ان جامعات نے ایسے لوگ پیدا کیے جو آگے چل کر استشراق کے حقیقی نقیب بنے۔

## اِستشراق کا دوسرا دور.....1300ء تا 1800ء:

استشرق کا پہلا دور محض ایک تمہید تھا جبکہ دوسرا دور اصل استشراق کہلانے کا حق رکھتا ہے۔ یہ دور صلیبی جنگوں کے خاتمے سے لے کر استعماری طاقتوں کے عروج تک پھیلا ہوا ہے۔ آپ صلیبی جنگوں کے ضمن میں پڑھ چکے ہیں کہ لوئیس نہم کی سوچ سے یورپ میں بیداری کا آغاز ہوا۔ اہل علم اور ارباب حل وعقد ان گرہوں کو کھولنے کے لیے بے چین ہوئے جو کلیسا کی ناروا پابندیوں سے یورپ پر طاری تھیں اور جن کی موجودگی میں علم کا کوئی راستہ کھلنا مشکل تھا۔

ان اہل علم میں ریمنڈ لول (1314 – 1235) کا نام قابل ذکر ہے۔ اس نے 1266ء سے 1275ء تک نو برس عربی اور قرآن مجید سیکھنے میں گزارے۔ پھر روم جا کر پوپ کو ابھارا کہ یورپی جامعات میں عربی علوم وفنون کی تعلیم کا اہتمام کیا جائے تاکہ عیسائی فضلاء اسلام سے فکری جنگ کے لیے علمی اسلحے سے لیس ہو سکیں۔ پوپ نے اس کی تائید کی اور یوں یہ سوچ تیزی سے پروان چڑھنے لگی۔

صلیبی جنگوں کے خاتمے کے کچھ عرصے بعد 1312ء میں یورپ کے اہل علم عمائد کی ایک کانفرنس منعقد ہوئی جس میں یہ طے کیا گیا کہ مشرقی علوم کو اپنے تعلیمی اداروں کے نصاب میں شامل کیا جائے۔ یہ استشراق کی طرف پہلا باقاعدہ قدم تھا۔

اس فیصلے کے تحت پانچ یورپی جامعات.....پیرس یونیورسٹی، آکسفورڈ یونیورسٹی، بولونگا

یونیورسٹی (اٹلی)، سلمانکا یونیورسٹی (اسپین) اور پادوا یونی ورسٹی (اٹلی) میں عربی و اسلامی علوم کی تعلیم شروع کر دی گئی۔

پندرہویں اور سولہویں صدی عیسوی میں استشراق کا دائرہ کار آہستہ آہستہ فرانس، اٹلی، ہالینڈ اور جرمنی سمیت تمام یورپ میں پھیل گیا۔ اس سلسلے میں اہل یورپ نے اسپین کے تعلیمی اداروں اور کتب خانوں سے بطورِ خاص استفادہ کیا اور اپنے ہاں سے جہالت کی تاریکیاں دور کرنے کے لیے سرگرم ہوئے۔ علم کی اس جستجو کے نتیجے میں یورپ میں صنعتی انقلاب آیا، علم کے ذرائع آسان تر ہوئے جن میں پریس کی ایجاد قابل ذکر ہے۔

اس زمانے میں یورپی بادشاہوں نے استشراق کو اپنے مقاصد کے لیے نہایت مفید یقین کر کے اس کی باقاعدہ سرپرستی شروع کی۔ اس بارے میں سترہویں صدی عیسوی کے شاہِ فرانس لوئی چہاردہم کی کوششیں بڑی اہمیت رکھتی ہیں۔ اس نے خطیر معاوضے دے کر مستشرقین سے عربی کتب کے تراجم کرائے اور عربوں کی تاریخ پر نئی کتابیں لکھوائیں۔ ان کتب میں عرب قومیت پرستی کے رجحان کی حوصلہ افزائی واضح نظر آتی ہے جس کا مقصد اس کے سوا کچھ نہ تھا کہ عربوں کو ترک عثمانی خلفاء سے متنفر کیا جا سکے جو کہ عجمی تھے اور جن کی فتوحات سے یورپ لرزہ براندام تھا۔

اس دور کے بعض مستشرقین نے اپنے گزشتہ پیشروؤں کے کام پر تنقید بھی کی اور اسلام پر ان کے بعض شبہات کو کمزور قرار دیا مگر اس کے ساتھ ساتھ انہوں نے خود اسلام پر کچھ نئے اعتراضات جڑ دیے جو ان کی دانست میں بہت وزنی تھے۔

### تیسرا دور..... 1801ء تا 1924ء

استشراق کا تیسرا دور استعماری طاقتوں کے عروج کے ساتھ ساتھ آگے بڑھتا دکھائی دیتا ہے۔ اس زمانے میں یورپ صنعتی ترقی کی انتہاء کی جانب جا رہا تھا۔ مادّیت پرستی کے جنون نے کلیسا سے بغاوت کا ماحول عام کر دیا تھا اور اہل مغرب کے عقائد کی دنیا ویران ہو رہی تھی۔ اس صورتحال میں ان کے اہل علم نے یہی بہتر سمجھا کہ استشراق کی تحریک کو مزید پھیلائیں اور اسلام پر علمی حملوں کو تیز تر کر دیں، تاکہ مغربی عوام کے پاس اپنے عقائد اور اپنی مذہبی کتب کی کمزوریوں

پر غور کرنے اور اعتراضات جڑنے کا وقت نہ رہے۔اس کی بجائے وہ اسلام اور مسلمانوں کی خامیوں کو سوچتے اور ان پر گرجتے برستے رہیں۔

یہ وہی زمانہ تھا جب یورپ کے لشکر اسلامی ممالک میں اتر کر انہیں محکوم بنا رہے تھے اور مراکش سے لے کر ہندوستان تک مسلمانوں کی حکومتیں دم توڑ رہی تھیں۔اس لیے استشراق کی تحریک نے ہر مقبوضہ ملک میں استعماری طاقتوں کے لیے راہیں ہموار کرنے کا بیڑا بھی اٹھالیا۔ اس دور میں یہ واضح نظر آتا ہے کہ استشراق کی تحریک کوئی علمی تحریک نہیں بلکہ یورپی طاقتوں کے سیاسی مفادات کی محافظ ہے۔استعماری طاقتیں مستشرقین کے ذریعے محکوم ممالک کے علمی ذخائر کا عرق نکالنے میں مصروف تھیں۔مستشرقین کی کوششوں سے یورپی سیاست دانوں کو محکوم قوموں کے علوم، تاریخ، نفسیات، جغرافیے، شعر وادب اور تہذیب وثقافت سے آگاہی ہو رہی تھی جسے سامنے رکھتے ہوئے وہ ان قوموں کی خوبیوں اور خامیوں سے آگاہ ہو رہے تھے اور انہیں بڑی کامیابی سے زیر کرتے جا رہے تھے۔

اس دور میں مستشرقین تاریخ اسلام کی جگہ تاریخ عرب کو متعارف کرا رہے تھے،ان کی تصانیف میں عرب قوم پرستی کی حمایت،غیر عربوں خصوصاً ترکوں کی کردار کشی اور استعمار کے خلاف لڑنے والے مجاہد قائدین کی تحقیر صاف نظر آتی ہے۔احادیث اور رواۃِ حدیث پر حملے بھی ان کا خاص ہدف تھا۔عالم اسلام کے مختلف فرقوں کے درمیان پائی جانے والی منافرت کو تیز تر کرنے کے لیے اسلامی فرقوں کے حالات پر بھی کام ہوا۔اس کے علاوہ ہزاروں اسلامی کتب کو یورپ کی تمام مشہور زبانوں میں منتقل کیا گیا۔

اس صدی میں مستشرقین کی عالمی کانفرنسوں کے سلسلے کی داغ بیل بھی پڑ گئی۔سب سے پہلی کانفرنس 1812ء میں پیرس میں ہوئی جس کے بعد آج تک ایسی کانفرنسیں ایک تسلسل سے پوری دنیا میں منعقد ہو رہی ہیں۔

اس دور میں بعض مستشرقین نے ایسے موضوعات پر بھی کام کیا جن کی مسلمان اہل علم نے تعریف کی ہے۔انہوں نے بیسیوں نایاب اسلامی متون تلاش کر کے تصحیح کے ساتھ انہیں از سر نو طبع

کرایا۔ احمد بن ابی یعقوب کی 'تاریخ یعقوبی' مسلمانوں کے لیے اجنبی بن گئی تھی، مستشرقین کی توجہ سے یہ 1883ء میں لیڈن سے دوبارہ طبع ہو کر مسلمانوں تک پہنچی۔ طبقات ابن سعد عرصہ دراز سے گم شدہ تھی، جرمنی کے مستشرقین نے 1898ء میں اسے بڑے اہتمام سے بارہ جلدوں میں شایع کرایا۔ اسی طرح اسلامی تاریخ کا مشہور ماخذ ''فتوح البلدان'' اور یاقوت حموی کا جغرافیائی انسائکلو پیڈیا ''معجم البلدان'' بھی اسی دور میں یورپ میں چھپ کر منظر عام پر آئے۔

اس میں شک نہیں کہ ان کتب کو تلاش کر کے دوبارہ شایع کرنا مستشرقین کا ایک بڑا کارنامہ ہے مگر اس کارنامے کا یہ پہلو نظر انداز نہیں کرنا چاہیے کہ یہ یورپی طاقتیں ہی تھیں جو اسلامی ممالک میں اس علمی انحطاط کی ذمہ دار تھیں۔ یورپی طاقتیں جس طرح مسلم ممالک سے سیم وزر کے خزانے لوٹ لوٹ کر اپنے محلات اور عجائب گھروں کو آراستہ کر رہی تھیں اسی طرح اسلامی ملکوں کے علمی خزانوں پر بھی ہاتھ صاف کر رہی تھیں۔ ان کی فوجی مہمات کی تباہ کاریوں سے اَن گنت اسلامی کتب خانے خاکستر ہوئے۔ لاتعداد قلمی نسخے اسلامی دنیا خصوصاً عرب ممالک کے عوام سے خرید کر، لوٹ کر یا کتب خانوں سے چوری کر کے یورپی دنیا میں بھیجے گئے۔ اس طرح بے شمار کتب لاد کر یورپ کی لائبریریوں میں سجا دی گئیں۔ 1850ء تک جو کتب یورپی ممالک کی لائبریریوں میں شمار کی گئیں وہ 50 ہزار سے متجاوز تھیں، مگر صحیح تعداد اس سے کہیں زیادہ تھی اور اس میں مسلسل اضافہ ہوتا رہا۔ اب ان کتب کی تعداد لاکھوں میں ہے۔

مشہور پاکستانی طبیب اور دانش ور حکیم محمد سعید مرحوم نے جو دنیا کے کونے کونے میں گھوم پھر کر لائبریریاں کھنگالنے کے شوقین تھے، اپنے سفرناموں میں لکھا ہے کہ دنیا میں مسلم علماء اور دانشوروں کے لکھے ہوئے تیس لاکھ قلمی نسخے موجود ہیں جنہیں آج تک طبع نہیں کیا گیا اور ان کی بڑی تعداد اب بھی یورپ کی لائبریریوں میں محفوظ ہے۔

اقبال بھی اس حقیقت سے آشنا تھے، اسی لیے فرما گئے:

مگر وہ علم کے موتی کتابیں اپنے آباء کی
انہیں دیکھیں جو یورپ میں تو دل ہوتا ہے سی پارہ

## چوتھا دور۔1925ء تا1972ء:

چوتھا دور ہمیں استشراق کا ایک بالکل نیا روپ دکھاتا ہے۔اس دور میں استشراق میں بنیادی تبدیلی یہ آئی کہ اسلام پر اعتراضات کر کے اسے کمزور اور بے اصل ثابت کرنے کی بجائے مستشرقین ایک نئے اسلام کی اساس رکھنے کے لیے کوشاں ہو گئے۔دراصل گزشتہ دو صدیوں کی سعی بسیار کے بعد انہوں نے سمجھ لیا تھا کہ ان کے طریقہ کار میں بنیادی خرابی یہ ہے کہ وہ اسلام کے ناقابلِ تسخیر قلعے پر براہِ راست حملے کر رہے ہیں جس کو فتح کرنا واقعی بہت مشکل ہے۔پھر اسلام پر یہ حملے خود مسلمانوں کو بیدار کر دیتے ہیں اور وہ ردعمل میں الزامات کے دفاع اور جوابی کارروائیوں کے لیے تیار ہونے لگتے ہیں۔

مستشرقین نے اس کا حل یہ نکالا کہ اسلام پر براہ راست حملوں کو چھوڑ کر خود کو مسلمانوں کا دوست اور اسلام کا وکیلِ صفائی باور کرایا جائے اور اپنے اس منصب سے فائدہ اٹھا کر اسلام کی من پسند تشریحات کی جائیں،اس طرح ایک ایسا نیا اسلام وجود میں لایا جائے جو مغرب کے نزدیک قابلِ قبول ہو اور اسی اسلام کو مسلمانوں میں مقبول عام بنانے کی کوشش کی جائے۔مستشرقین کے ایک چھوٹے سے گروہ کو چھوڑ کر ان کا اکثریتی طبقہ گزشتہ پون صدی سے مسلسل اسی تگ و دو میں مصروف ہے۔اس عرصے میں تفسیر،حدیث،فقہ،سیرت اور تاریخِ اسلام پر ان کی جانب سے پیش کیے جانے والے مواد سے اسلام کی ایک نئی تصویر بلکہ ایک نئی عمارت تیار ہو رہی ہے جو حضور نبی اکرم ﷺ،صحابہ کرام،ائمہ مجتہدین اور اسلاف کے خالص اسلام سے بہت مختلف ہے۔

استشراق کے انداز میں اس بڑی تبدیلی کا ایک اہم سبب سیاسی حالات بھی تھے۔اس وقت تک یورپی طاقتیں مسلم ممالک میں اپنے عسکری و سیاسی اہداف کی تکمیل کر چکی تھی۔ان کے راستے کا سب سے بڑا کانٹا عثمانی خلافت تھی جو 1924ء میں ختم کر دی گئی تھی اس لیے اب یورپ کو مکمل محکوم مسلمانوں سے کوئی خطرہ نہیں رہ گیا تھا۔اس کی بجائے سوویت روس کی شکل میں ایک نئی حریف طاقت یورپ اور امریکا کے سامنے آن کھڑی ہوئی تھی جس کے لیے یورپ کے سرمایہ داروں کو اپنے سارے تیر و ترکش اکھٹے کرنا پڑ رہے تھے۔اس نئی جنگ کی وجہ سے مستشرقین کے اہداف بھی وقتی

طور پر تبدیل ہو گئے اور اسلام اور مسلمانوں کے بارے میں مستشرقین کا لب ولہجہ نسبتاً نرم ہو گیا، تاہم بعض مشہور مستشرقین اس دور میں بھی اپنی فطرت سے باز نہ آئے اور حسب سابق زہر اگلتے رہے۔

اس دور میں علمی وسائل کی افزونی اور جامعات کی کثرت نے استشراق کا دائرہ تمام مشرقی اور اسلامی علوم تک وسیع کر دیا۔ تفسیر، حدیث، سیرت، فقہ، اصول فقہ، اصول حدیث، عروض، معانی، بلاغت اور مسلم ممالک کی زبان وثقافت پر بے پناہ کام ہوا۔ تاریخ پہلے ہی مستشرقین کا خاص میدان تھی۔ اب اس میں مزید وسعت آ گئی۔ اسلامی فرقوں، مذہبی گروہوں اور تحریکوں پر بھی کام ہوا۔ مستشرقین نے اشاریہ سازی (انڈیکس) کو بھی رواج دیا اور اس سلسلے میں بعض ایسے کارنامے انجام دیے کہ مسلمان علماء بھی داد دیے بغیر نہ رہ سکے جیسا کہ مستشرقین کی ایک جماعت نے ڈاکٹر وینسینک کی نگرانی میں احادیث کی فہرست مرتب کی جو سات جلدوں میں ہے اور ''المعجم المفہرس لالفاظ الحدیث النبوی'' کے نام سے موسوم ہے۔

استشراق کی یہ تحریک اس مرحلے میں بڑے ہمدردانہ لہجے میں مسلمانوں کو اس بات کا احساس دلاتی رہی ہے کہ ان کے اندر مصلحین (Reformers) پیدا ہونے چاہییں جو اسلام اور مغرب میں فاصلوں کو کم کر سکیں۔ مستشرقین کی یہ مہم اس قدر کامیاب رہی ہے کہ گزشتہ صدی میں عالم اسلام میں اصلاح ودعوت کے میدان میں شہرت پانے والے اکثر وبیشتر قائدین انہی مستشرقین سے متاثر نظر آتے ہیں اور اصلاح کے نام پر وہ مسلمانوں کو تجدد اور مغربیت کی طرف لے جانے میں مصروف رہے ہیں۔

## تقلیدی استشراق:

اسی دور کے اواخر میں ایک اہم تبدیلی یہ آئی کہ مستشرقین نے استشراق کو تحقیقی اسلوب سے ہٹا کر تقلیدی اسلوب کی طرف لانے کی کوشش شروع کر دی۔ دراصل مستشرقین کو یہ خطرہ لاحق ہونے لگا تھا کہ کہیں استشراق کی راہ سے ایسے لوگ تیار نہ ہونے لگیں جو سچ اور جھوٹ میں تمیز کرنے کے بعد الٹا اپنے پیشواؤں کی تردید شروع کر دیں اور استشراق کے مقاصد فوت ہو جائیں۔

اس خطرے کی روک تھام کے لیے امریکا اور یورپی جامعات کے مشرقی شعبوں میں ایسا

ماحول بنادیا گیاہے کہ اسلام اور مشرق کے بارے میں نئی آزادانہ تحقیق اور سابقہ تحقیقات کی تردید کرنا نہایت مشکل ہوگیا ہے۔ مثلاً اگر پی ایچ ڈی کرنے والا کوئی طالب علم اپنے مقالے میں، گولڈزیہر کی جانب سے قرآن وحدیث پر وارد کردہ اعتراضات کا جواب دینا چاہے تو اس کا مقالہ یا تو مسترد کردیا جائے گا یا اس کی اس قدر حوصلہ شکنی کی جائے گی کہ وہ تعلیم ادھوری چھوڑ دے گا۔ چنانچہ ایسے ماحول میں ہر طالب علم مجبور ہوتا ہے کہ وہ ائمہ مستشرقین کی تقلید کرے یا کم از کم ان کی تردید کیے بغیر کسی غیر متنازعہ مسئلے پر تحقیق کر کے سند حاصل کرلے۔

## پانچواں دور۔ 1973ء تا 2000:

چوں کہ استشراق کے قائدین کی ترک تازیوں کا دائرہ وسیع سے وسیع تر ہوتا جارہا تھا اور ان کے عالمگیر منصوبوں کے سامنے خود استشراق کا مفہوم محدود ہوگیا تھا اس لیے 1973ء میں پیرس میں منعقدہ ایک کانفرنس میں استشراق کی اصطلاح ترک کردینے کا فیصلہ کرلیا گیا اور اس کی جگہ عالمگیریت (Globalization) کی اصطلاح کو متعارف کرایا جانے لگا۔ (عالمگیریت کے بارے میں تفصیل مستقل باب میں آرہی ہے) تاہم عام طور پر استشراق کی اصطلاح اب بھی استعمال ہوتی ہے اور ایسے مغربی محققین اب بھی موجود ہیں جو استشراق کے محدود مفہوم ہی کے دائرے میں کام کرنا پسند کرتے ہیں۔

1991ء میں سوویت روس کی شکست وریخت کے بعد امریکا پوری دنیا کی باگ ڈور سنبھالنے کے لیے کمربستہ ہوا تو اسے مسلمان ہی سب سے بڑا خطرہ نظر آئے کیوں کہ انہی کے ایمانی جوش وجذبے نے سوویت یونین کو شکست سے دوچار کیا تھا۔ اس صورتحال میں امریکا کی سرپرستی میں ایک بار پھر مستشرقین نے اسلام اور مسلمانوں کی کردارکشی کی مہم شروع کردی۔

## موجودہ دور.....امریکی ویہودی استشراق:

اس وقت کا استشراق امریکی یہودی استشراق ہے اور انہی کی ملی بھگت سے چل رہا ہے۔ 11 ستمبر 2001ء کے بعد استشراق کی باگیں مکمل طور پر امریکی یہودیوں کے ہاتھ میں ہیں۔ 1973ء کی پیرس کانفرنس میں کیے گئے فیصلے کے مطابق استشراق بڑی حد تک عالمگیریت کی

شکل میں ڈھل چکا ہے اور اسلام پر زبردست حملے کر رہا ہے۔

مشنریوں سے لے کر فری میسنریوں تک، گمراہی کے ہر مظہر کو استشراق کا تعاون حاصل ہے۔ دورِ حاضر کے مستشرقین پختہ فکر مسلمانوں کو بنیاد پرست، جذبہ عمل رکھنے والے مومنوں کو انتہاء پسند اور کفر کی بالادستی قبول نہ کرنے والوں کو دہشت گرد کا لقب دے چکے ہیں۔ وہ اسلام کی اصل شکل کو مسخ کیے دے رہے ہیں، انہوں نے اسلام کی ایک نئی تعریف ایجاد کی ہے جس کا حاصل مطلب یہود و نصاریٰ کی غلامی قبول کرنے کے سوا کچھ نہیں۔ وہ صرف امریکا اور اس کے اتحادیوں کی پالیسیوں سے مکمل اتفاق کرنے والوں کو مسلمان باور کرا رہے ہیں اور باقی مسلمانوں کو انسان کہلانے کا حق دینے کے لیے بھی تیار نہیں۔

## 4.1.7- استشراق کے انداز (اسالیب الاستشراق):

مستشرقین کی تحقیقات اور کارناموں کا گہرائی سے جائزہ لیا جائے تو ہمیں ان کی کارکردگی کے تین انداز نظر آتے ہیں۔ ان کو ''مراحل الاستشراق'' کے عنوان سے بھی بیان کیا جاتا ہے کیوں کہ لوگ عموماً ان مختلف قسموں کی کارکردگیوں سے مرحلہ وار متاثر ہوتے ہیں اور آہستہ آہستہ پوری طرح ان کے جال میں پھنس جاتے ہیں۔ کارکردگی کے یہ تین اسالیب درج ذیل ہیں۔

### انکشافات اور تحقیق (مرحلۃ الاستکشاف):

اس اسلوب کے تحت مشرق اور اسلام سے متعلقہ ایسے موضوعات پر تحقیق کی جاتی ہے جن کی اسلامی یا یورپی دنیا میں واقعی کوئی ضرورت ہوتی ہے۔ ایسی تصانیف پر محنت کی جاتی ہیں جن کے علمی فوائد واضح ہوتے ہیں۔ اسے ''مرحلۃ الاستکشاف'' اسی لیے کہا جاتا ہے کہ اس میں دیے گئے مواد میں بظاہر تحقیق، انکشاف اور اشاعتِ علم مقصود نظر آتی ہے۔ مسلمانوں یا مشرق سے کسی بغض کا اظہار محسوس نہیں ہوتا۔ اس طرح قارئین کا دل ان تحقیقات کی طرف مائل ہو جاتا ہے۔

اس پہلے مرحلے میں مستشرقین بڑے اہتمام سے ایسا مواد پیش کرتے ہیں جسے ہر شخص غیر جانبدارانہ تحقیق محسوس کرے اور خوب پرکھنے کے باوجود اس میں تعصب کا کوئی پہلو نہ ملے۔ مثلاً بغداد کی قدیم لائبریریوں کے گم گشتہ مخطوطات کو تلاش کرنا، سو سال سے زائد عمر پانے والے محدثین

کی فہرست مرتب کرنا، عرب اور یورپ میں ماقبل از اسلام تجارت کے راستوں پر تحقیق کرنا، قوم ثمود کے کھنڈرات سے ملنے والے کتبوں کو پڑھنے کی کوشش.....اس طرح کے سینکڑوں علمی کام ہیں جو ہم نہیں کر پائے یا ہم ان کی ضرورت محسوس نہیں کر سکے۔ اب جب کسی مستشرق کے قلم سے ان موضوعات پر کتب مرتب ہو کر منظر عام پر آتی ہیں تو لامحالہ ان کی تحقیق کا سکہ بیٹھ جاتا ہے۔

اس نوع کی بہت سی کتب اس لیے بھی لکھی جاتی ہیں تا کہ یورپی دانشوروں اور سیاست دانوں کو مسلمانوں کے بارے میں درست گائڈ لائن ملے۔ چناں چہ ان میں ٹھیک ٹھیک بتایا جاتا ہے کہ قرونِ اولیٰ کے مسلمانوں کی حیرت انگیز فتوحات کے اسباب کیا تھے، ان کی فوج کے نقل وحمل اور کمک ورسد کے لیے کون سے ذرائع استعمال ہوتے تھے۔ ان کا اسلحہ کیسا تھا۔ طارق بن زیاد اور موسیٰ بن نصیر نے جب اندلس کے مختلف شہروں پر یلغار کی تو انہوں نے کون سے راستوں کا انتخاب کیا تھا۔ تسخیر عالم میں مسلمانوں کی کامیابی کے معنوی اور اخلاقی اسباب کیا تھے۔ وہ کون سے آداب تھے جنہوں نے انہیں مقبول بنایا، وہ کونسی صفات تھیں جن کے بل بوتے پر وہ فاتحِ عالم بن گئے۔ آیا وہ ان کی قوت ارادی تھی، یا مذہبی جذبہ۔ وہ کوئی روحانی قوت تھی یا قومی عصبیت۔

بعض اوقات ایسی تحقیقات کے دوران مستشرقین اس نتیجے پر بھی پہنچ جاتے ہیں کہ مسلمانوں کی کامیابیوں کے پیچھے اصل طاقت ان کے مذہب کی سچائی، پروردگار کی نصرت اور ان کا پختہ ایمان تھا، لیکن ایسے حقائق اخذ کرنے والے مستشرقین میں سے بھی اکثر ایمان نہیں لاتے کیونکہ عموماً وہ متعصب ہوتے ہیں۔ ان میں سے غیر جانبدار کام کرنے والوں کی کدّ وکاوش بھی تحقیق برائے تحقیق ہوتی ہے۔ صداقت تلاش کر کے آخرت کی فلاح پانا اور سچے مذہب کے ذریعے ملنے والی روحانی تسکین حاصل کرنا ان کے پیش نظر نہیں ہوتی۔

## ملاوٹ بھرا انداز (مرحلۃ الاختلاط):

اس اسلوب کے تحت کی گئی تحقیقات اور تصانیف مقدار اور تعداد میں سب سے زیادہ ہیں۔ ان میں ملا جلا انداز اپنایا جاتا ہے۔ تحقیق تو کی جاتی ہے مگر ضمناً مسلمانوں کے عقائد ونظریات پر غیر محسوس انداز میں وار کیا جاتا ہے اور بڑے دھیمے پیرایے میں اسلامی مآخذ اور اسلامی شخصیات

سے ان کی عقیدت کو مجروح کرنے کی کوشش کی جاتی ہے۔ گزشتہ اور موجودہ صدی کے زیادہ تر مستشرقین کا اسلوب یہی ہے۔

مولانا سید ابوالحسن علی ندوی رحمہ اللہ تحریر کرتے ہیں:

''اکثر مستشرقین اپنی تحریروں میں زہر کی ایک مناسب مقدار رکھتے ہیں، اور اس کا اہتمام کرتے ہیں کہ وہ تناسب سے بڑھنے نہ پائے اور پڑھنے والے کو متنفر و بدگمان نہ کردے۔ ان کی تحریریں زیادہ خطرناک ثابت ہوتی ہیں اور ایک متوسط آدمی کا ان کی زد سے نکل کر بچ جانا مشکل ہے۔ (مغربی مستشرقین کے فکر وفلسفہ کا اثر: صفحہ:16)

اس اسلوب کے تحت کبھی مسلمان حکمرانوں کی جہانگیری و جہانداری کی تعریف کرتے کرتے ذاتی زندگی میں انہیں بدکار اور عیاش قرار دے دیا جاتا ہے۔ کبھی مجاہدین اسلام کی مہمات کو بڑے خوبصورت انداز میں پیش کرتے ہوئے فتوحات کے اسباب کی غلط تعبیر کردی جاتی ہے۔ کبھی غزوات میں اللہ کی نصرت کے مناظر کو کسی سائنسی توجیہ کا نشانہ بنادیا جاتا ہے۔ مثلاً روایات میں ہے کہ صحابہ کرام رضی اللہ عنہم ایک غزوہ میں گئے اور اللہ اکبر اللہ اکبر کہا جس سے شہر کی فصیلیں گر گئیں۔ مستشرقین یہاں تاویل کرتے ہیں کہ آواز کی فریکونسی یا دالیوم کی بلندی کے باعث فصیلیں گر پڑیں تھیں جیسا کہ سپر سونک طیارے کے گزرنے سے دیواروں میں دراڑ پڑ جاتی ہے۔ گویا کرامت کے ایمانی پہلو کو ایک مادّی توجیہ میں چھپادیا گیا۔

اسلام کی کامیابیوں کی اکثر ایسی غلط توجیہات کی جاتی ہیں جن سے پڑھنے والے کو یہ شبہ ہوتا ہے کہ قرونِ اولیٰ کے مسلمانوں کی کامیابیوں میں اسلام کے اللہ کے ہاں پسندیدہ ہونے کا کوئی دخل نہیں تھا بلکہ یہ مسلمانوں کی سیاست وشجاعت کا کرشمہ تھا۔

اسی طرح مسلمانوں کی حکمرانی کی شان وشوکت بیان کرتے ہوئے وہ بے ساختہ انداز میں کہہ جاتے ہیں کہ اسلام تلوار کے زور پر پھیلا تھا، لوگوں کو زبردستی اسلام قبول کرنے پر مجبور کیا گیا تھا۔ حالانکہ اسلام میں ایسا تصور قطعاً نہیں ہے مگر جو لوگ پہلی قسم (مرحلۃ الاستکشاف) کی کتب پڑھ کر مستشرقین کی علمی استعداد سے متاثر ہو چکے ہوتے ہیں وہ اس خفیف

زہر (Slow Poison) کو بھی بلا تامل نگل جاتے ہیں اور اسلامی فکر و نظر کے لحاظ سے انتشار خیالی کا شکار ہو جاتے ہیں۔ عموماً وہ بیشتر مسائل میں اسلاف اور پختہ فکر علماء کی آراء سے منحرف ہو جاتے ہیں۔

## واضح دشمنی کا انداز (مرحلۃ العدوان الواضح)

اس قسم کے لیے تیار کیا جانے والا مواد اسلام سے مستشرقین کی کھلی دشمنی کا عکاس ہوتا ہے۔ اس مرحلے پر آ کر مستشرقین اسلامی عقائد اور شریعتِ محمدیہ پر حملے کرتے ہیں بلکہ بعض اوقات رحمت عالم ﷺ، اصحاب کرام اور شعائر اسلام کا مذاق تک اڑانے سے گریز نہیں کرتے۔

اس قسم کا مواد دراصل ان مسلمانوں کے لیے تیار کیا جاتا ہے جن کا ایمان بہت کمزور ہو چکا ہوتا ہے۔ باشعور مسلمان یقیناً اس تیز زہر کو محسوس کر لیتے ہیں، لیکن جو کم فہم لوگ پہلی اور دوسری قسم کی کتب پڑھ کر مستشرقین کی اندھی عقیدت میں مبتلا ہو چکے ہوتے ہیں وہ ان خرافات کو بھی قبول کر لیتے ہیں۔ نتیجہ یہ نکلتا ہے کہ اس قسم کے مواد کو اعتماد کے ساتھ پڑھ کر ایسے لوگ اسلام بعض اوقات خود بھی اسلام کا مذاق اڑانے لگتے ہیں اور دین سے خارج ہو جاتے ہیں۔ کم از کم اتنا اثر تو فوری طور پر ہوتا ہے کہ وہ اسلام کو زندگی کے تقاضوں کا ساتھ دینے سے عاجز تصور کر لیتے ہیں اور اسے دیگر قدیم مذاہب کی طرح ایک فرسودہ مذہب سمجھنے لگتے ہیں۔

اس کی ایک مثال مولانا عبدالماجد دریابادی رحمہ اللہ کی ہے جو نوجوانی میں مستشرقین کے لٹریچر سے بڑے متاثر تھے، درجنوں کتب پڑھنے کے بعد سیرت نبوی پر کسی مستشرق کی ایک ایسی کتاب ان کے ہاتھ لگی جس میں حضور اکرم ﷺ کی خوفناک فرضی تصویر بنائی گئی تھی۔ چوں کہ وہ مستشرقین پر اندھا اعتماد کرنے لگے تھے لہٰذا اسے دیکھ کر وہ مصنف اور ناشر پر مشتعل ہونے کی بجائے خود پیغمبر ﷺ سے متنفر ہو گئے (نعوذ باللہ) اور اسلام ترک کر دیا۔ برسوں بعد اللہ والوں کی صحبت سے ان کے قلبی روگ کا علاج ہوا اور وہ از سرِ نو مسلمان ہوئے۔

مستشرقین اس تیسرے قسم مواد کے ذریعے اپنے اندھے مقلدوں کو نہ صرف حقیقی اسلام سے مکمل طور پر برگشتہ کرتے ہیں بلکہ ان تلبیسات کے ذریعے وہ انہیں اہل حق سے مقابلے اور

بحث کے لیے نئے نئے ہتھیار بھی فراہم کرتے ہیں۔ عام طور پر جب آپ ملحد اور بے دین قسم کے لوگوں کو علماء سے بحث کرتے اور دلائل دیتے دیکھتے ہیں تو عموماً اس وقت وہ لوگ مستشرقین کا پلایا ہوا زہر ہی اگل رہے ہوتے ہیں۔

اس تیسری قسم کے مواد کے مخاطب وہ غیر مسلم بھی ہوتے ہیں جن کے اسلام کے قریب ہونے کا خطرہ ہوتا ہے۔ ایسے مواد کے ذریعے انہیں اسلام اور مسلمانوں سے متنفر کر کے حق کی منزل تک ان کی رسائی کے امکانات کو ختم کیا جاتا ہے۔

## 4.1.8- استشراق کے عوامل اور محرکات:

جب ہم پاک وہند سے لے کر مراکش کے ساحل اور بحرِ اوقیانوس کے پار تک ہزاروں مستشرقین کو عالمِ اسلام سے متعلق اَن گنت علمی موضوعات پر سر کھپاتے اور اس محنت کے لیے اپنی زندگیاں وقف کرتے دیکھتے ہیں تو ایک شدید حیرت کے ساتھ یہ سوال ابھرتا ہے کہ آخر وہ کونسا جذبہ اور کونسا محرک ہے جس نے عالم اسلام اور مشرقی دنیا کو ان کے لیے اتنا دلچسپ اور اس قدر اہم بنا دیا ہے۔

غور کرنے سے معلوم ہوتا ہے کہ مستشرقین کی مساعی اور جدوجہد کے بڑے عوامل ومحرکات پانچ ہیں:

① صلیبی محرک ② سیاسی واستعماری محرک
③ دفاعی محرک ④ تجارتی واقتصادی محرک
⑤ علمی محرک

### صلیبی محرک:

مستشرقین کی سرگرمیوں کا سب سے بڑا محرک ''صلیبی جذبہ'' ہے۔ یہ وہی ولولہ ہے جو انہیں ابھار کر صلیبی جنگوں کے لیے ایشیا میں لایا تھا۔ جب عسکری محاذ میں انہیں مسلسل ناکامیوں کا سامنا کرنا پڑا تو انہوں نے اسی جذبے اور انہی مقاصد کو سامنے رکھتے ہوئے مسلمانوں کے خلاف علمی محاذ کھول لیا۔ وہ اپنے مذہبی تعصب اور دینی جوش وجذبے کی بناء پر استشراق کو اسلام کے خلاف

ایک ہتھیار کے طور پر استعمال کر رہے ہیں اور نصرانیت کے غلبہ کے لیے کوشاں ہیں۔

صلیبی محرّک کے تحت کام کرنے والے مستشرقین کی تحقیق برائے غلبۂ صلیب ہوتی ہے۔ ایسے مستشرقین مختلف اہداف پر کام میں جٹے ہوئے ہیں، کوئی قرآن مجید کے کلام الٰہی ہونے کو جھٹلا رہا ہے، کوئی احادیث میں شبہات پیدا کرنے میں مصروف ہے، اور کوئی مسلمانوں کی تاریخ کو داغدار کرنے میں منہمک ہے۔

مولانا سید ابوالحسن علی ندوی رحمہ اللہ لکھتے ہیں:

''اس (استشراق) کا بڑا مقصد مذہبِ عیسوی کی اشاعت وتبلیغ اور اسلام کی ایسی تصویر پیش کرنا ہے کہ مسیحیت کی برتری اور ترجیح خود بخود ثابت ہو اور نئے تعلیم یافتہ اصحاب اور نئی نسل کے لیے مسیحیت میں کشش پیدا ہو۔ چنانچہ اکثر استشراق اور تبلیغ مسیحیت ساتھ ساتھ چلتے ہیں۔''

(مغربی مستشرقین کے فکر وفلسفہ کا اثر: صفحہ:2)

ہم صلیبی جذبے کے تحت سرگرم مستشرقین کی کارکردگی کا تجزیہ کریں تو مندرجہ ذیل اہداف پر ان کا زیادہ زور دکھائی دیتا ہے۔

## اسلام کو موجودہ یہودیت ونصرانیت سے ماخوذ قرار دینا:

مستشرقین اس ہدف پر کام کرنے کے دوران کبھی دوستانہ انداز میں باور کراتے ہیں کہ یہودی، نصرانی اور مسلمان سب ایک ہیں۔ اس کے لیے قرآن وحدیث کی نصوص میں من مانی تاویلات کر کے دلائل پیش کیے جاتے ہیں۔ کہا جاتا ہے کہ محمد ﷺ نے اہل کتاب سے علم حاصل کیا تھا اور اسلام گزشتہ آسمانی کتب کی تعلیمات ہی کو دہرا رہا ہے۔ اس طرح مستشرقین بظاہر تو دنیا کو یہ دھوکا دیتے ہیں کہ وہ اسلام اور یہودیت ونصرانیت میں فاصلے کم کر رہے ہیں اور منافرت کی فضا کو ختم کرنے میں مصروف ہیں مگر درحقیقت وہ اس جھوٹے پروپیگنڈے کے ذریعے مسلمانوں میں اپنے مذہب سے بداعتمادی اور ایک امت کی حیثیت سے ان میں احساس کمتری پیدا کرتے ہیں وہ انہیں احساس دلاتے ہیں کہ ان کا مذہب کوئی عالمگیر نظام حیات یا آخری وآفاقی مذہب نہیں بلکہ سابق مذاہب کی نقالی ہے (نعوذ باللہ)۔ وہ دعویٰ کرتے ہیں کہ خدا کا اصل

پیغام ملتِ عیسوی کے پاس ہے اور بائبل کی تعلیمات اسلام کی بنیاد ہیں۔ یوں اسلام کا رجوع دوسرے مذاہب کی جانب کر کے در پردہ اسلام کی حقیقت کو ختم کر دیا جاتا ہے۔

ان کی ساری بحث کا مطلب یہی نکلتا ہے کہ اسلام اصل میں کچھ ہے ہی نہیں۔ اس طرح ان کی کتب پر اعتماد کرنے والا مذاہب کی تحقیق کے نام پر نصرانیت اور یہودیت کے جال میں پھنس جاتا ہے، بعض اوقات باقاعدہ عیسائی مذہب اختیار کر لیتا ہے یا اسلام سے نکل کر ملحد بن جاتا ہے۔ کم از کم اسلام پر اس کا اعتماد تو کمزور ہو ہی جاتا ہے۔

## رسالت میں شک پیدا کرنا:

مستشرقین حضور نبی اکرم ﷺ کی رسالت میں اسی طرح شکوک وشبہات پیدا کرتے آرہے ہیں جس طرح مکی دور میں کفار مکہ اور مدنی دور میں یہود انکارِ رسالت کی مہم میں مصروف تھے۔ مستشرقین کی لکھی ہوئی اکثر کتبِ سیرت میں یہی زہر گھلا ہوا ہے۔ زبان کی سلاست، ترتیب کی عمدگی اور اسلوب کے دلچسپ ہونے کے باوجود یہ کتب مجموعی طور پر جو تاثر دیتی ہیں وہ اس کے سوا کچھ نہیں ہوتا کہ محمد ﷺ ایک کامیاب مفکر، زبردست قائد اور بڑے نیک انسان تو تھے مگر ان کا سچا پیغمبر ہونا یقینی نہیں۔

ایسی ایمان کُش باتوں کو وہ ایسے پرکشش اسلوب اور مسحور کن انداز سے پیش کرتے ہیں کہ اچھا بھلا آدمی بھی متاثر ہو جاتا ہے۔ مثلاً وہ حضور اکرم ﷺ کے اخلاق وعادات، حکمت وبصیرت، قائدانہ صلاحیت اور قومی خدمات کو خراج تحسین پیش کرنے کے ساتھ ساتھ یہ بھی کہہ جاتے ہیں کہ مسلمانوں کے پیغمبر کو خود اپنے رسول ہونے کا پورا یقین نہیں تھا اس لیے پیغمبرِ اسلام کی رسالت (معاذ اللہ) مشکوک ہو جاتی ہے اور اس بارے میں مزید غور کرنا چاہیے۔ اس بارے میں وہ ایسے عقلی قرائن پیش کرتے ہیں جنہیں ایک عصری تعلیم یافتہ شخص بڑا وزنی محسوس کرتا ہے۔

ایسی ابحاث میں مستشرقین نبی اکرم ﷺ کی نبوت کے ان کھلے دلائل سے جو تاریخ وسیرت میں قدم قدم پر بکھرے ہوئے ہیں بڑے فنکارانہ انداز میں کنی کترا کر گزر جاتے ہیں۔ قارئین کو احساس تک نہیں ہوتا کہ سیرت کے نام پر کس طرح حضور ﷺ کی رسالت پر ان کے یقین کو

کمزور کر دیا گیا ہے۔

## قرآن مجید کے متعلق شکوک پیدا کرنا:

قرآن مجید میں شکوک وشبہات نکالنا بھی صدیوں سے مستشرقین کا ایک اہم ہدف چلا آرہا ہے۔اس ضمن میں عموماً وہ یہ ثابت کرنے کے لیے زور لگاتے ہیں کہ قرآن پاک محمد ﷺ کی تصنیف ہے،کوئی آسمانی کتاب نہیں۔اکثر وہ قرآن مجید کے علمی و ادبی معیار پر ناقدانہ بلکہ حاسدانہ بحث کرتے ہیں اور طرح طرح کی موشگافیاں کر کے اس کی صداقت اور فصاحت وبلاغت کو مشکوک قرار دینے کی ناکام کوشش کرتے ہیں۔مثلاً سورۂ یوسف میں ارشاد ہے:

﴿ ثُمَّ يَأْتِي مِنْ بَعْدِ ذَٰلِكَ عَامٌ فِيهِ يُغَاثُ النَّاسُ وَفِيهِ يَعْصِرُونَ ﴾ (یوسف)

یہاں ﴿ يُغَاثُ ﴾ کے لفظ پر گزشتہ صدی کے ایک مستشرق نے اعتراض کرتے ہوئے کہا تھا کہ دنیا کے بارے میں قرآن کے مصنف محمد ﷺ کی لاعلمی کا یہ عالم تھا کہ انہوں نے مصر کے قحط کی دوری کے لیے بارشوں کا ذکر کر دیا۔وہ نہیں جانتے تھے مصر میں زراعت کا سارا دارومدار دریائے نیل پر ہے،وہاں کی زراعت کی سرسبزی کا بارشوں سے کوئی تعلق نہیں۔

حضرت مولانا اشرف علی تھانوی رحمہ اللہ کو مولانا عبدالماجد دریابادی مرحوم کے ذریعے اس اعتراض کا پتا چلا تو جواب دیا کہ چاہے مصر کی زراعت بارشوں پر موقوف نہ ہو مگر دریا کا پانی جن منابع سے آتا ہے ان میں بارش ضرور مؤثر ہے۔نیز یُغاث مضارع مجہول کا صیغہ ہے جو ''غوث'' (مدد) سے بھی مشتق ہو سکتا ہے۔مستشرق کا یہ خیال درست نہیں کہ یہ لامحالہ غیث (بارش) ہی سے مشتق ہوگا۔

## حدیث کے بارے میں شک پیدا کرنا:

مستشرقین کا بڑا نشانہ حدیث نبوی ہے۔اس بارے میں ان کے پاس کچھ گنے چنے اعتراضات ہیں جنہیں حدیث پر کام کرنے والا ہر مستشرق اس قدر زور وشور سے بیان کرتا ہے جیسے یہ اعتراض پہلی بار اسی کے ذہن میں آیا ہو اور اس کا جواب دینا ناممکن ہے۔حالاں کہ علمائے اسلام ایسے شکوک کے جواب میں درجنوں کتب لکھ چکے ہیں۔

مثلاً ان کا ایک مشہور اعتراض یہ ہے کہ تمام ذخیرۂ حدیث قرن ثانی یا ثالث کی پیداوار ہے۔ اس لیے اس پر اعتماد کیسے کیا جائے؟ اس اعتراض کا بار بار مدلل جواب دیا جا چکا ہے کہ حدیث کی نقل، حفاظت اور کتابت کا کام حضور اکرم ﷺ کے دور میں شروع ہو چکا تھا۔ مگر مستشرقین جواب کو نظر انداز کر کے چند سال بعد پھر کسی تصنیف میں یہی اشکال دہرا دیتے ہیں۔

اس وقت فرقہ منکرین حدیث کے پاس حدیث کی حیثیت کو مجروح کرنے کے لیے جو بھی نئے اور پرانے اشکالات ہیں، وہ سب مستشرقین کی تصانیف سے ماخوذ ہیں۔ یہ الگ بات ہے کہ منکرینِ حدیث انہیں اپنی تحقیقات کا نام دے کر جاہلوں سے داد وصول کر رہے ہیں۔

**گھڑی ہوئی روایات اور ضعیف و کمزور احادیث سے استدلال کرنا اور ان کو آگے پھیلانا:**

مستشرقین ایک طرف تو حدیث کے مستند ترین مآخذ کو بھی نشانہ بنانے سے گریز نہیں کرتے مگر دوسری طرف وہ ضعیف بلکہ موضوع روایات تک کو اپنی تحقیقات میں دلائل اور شواہد کے طور پر بے دھڑک استعمال کرتے جاتے ہیں۔ یہ مستشرقین کا ایک شرمناک حربہ ہے جو ان کی تحقیقات کے کھوکھلے پن اور ان کے کردار کے دوغلے پن کا واضح ثبوت ہے۔

**فقہ اسلامی پر وار:**

اسی طرح مستشرقین نے فقہ اسلامی کے بارے میں میں بھی شکوک وشبہات پیدا کیے کہ یہ اصل میں رومن لاء تھا۔ پھر مسلمان فقہاء نے وہاں سے کتابیں لا کر ان کو اسلامی فقہ میں بدل دیا۔

**عقیدۂ تثلیث کی اشاعت کرنا:**

مستشرقین کی اکثریت عیسائی ہے اور دنیا کو عیسائی بنانا ایسے مستشرقین کا آخری ہدف ہے۔ بیشتر عیسائی مستشرقین کسی نہ کسی مشنری ادارے سے بھی وابستہ ہوتے ہیں اور اپنی تصانیف میں بھی مشنریوں کی اغراض کو سامنے رکھ کر مواد مرتب کرتے ہیں۔

**سیاسی واستعماری محرک:**

اکثر مستشرقین کی کوششوں کا محرک سیاسی اور استعماری ہے۔ ان کی بڑی تعداد مغربی سیاست دانوں اور استعماری قوتوں کے مذموم مقاصد کے لیے کام کرتی ہے اور ان کے دیے گئے اہداف

کی تکمیل کے لیے سرگرم رہتی ہے۔ان میں سے بہت سے باقاعدہ ان حکومتوں کے ملازم ہوتے ہیں اور عموماً وزارتِ خارجہ کے تحت کام کرتے ہیں۔استعماری محرّک کے تحت کام کرنے والے مستشرقین کی کوششوں کا بڑا ہدف یہ ہے کہ مغربی دنیا، عالم اسلام کی سیاست پر حاوی رہے۔اس مقصد کی تکمیل کے لیے، مستشرقین درج ذیل اہداف پر کام کررہے ہیں:

## اسلامی عادات ومعاشرت کا مطالعہ کرنا:

مستشرقین کی ایک جماعت اسلامی معاشرے کی تہذیب وثقافت اورادب آداب اوراقدار کی باقاعدہ تعلیم حاصل کرتی ہے تاکہ ان کی سوچ، فکر، طرزِ حیات، عادات ونفسیات اور کمزوریوں سے آگاہ ہوکر زمینی حقائق کے مطابق اپنی حکومتوں کی رہنمائی کریں۔

ان معلومات کی روشنی میں یہ حکومتیں مسلمانوں کوان کی تہذیب وثقافت سے متنفر کرنے اور اسلامی دنیامیں مغربی کلچرکوفروغ دینے کی مربوط سازشیں بھی مرتب کرتی ہیں۔

## اسلامی ممالک کی زبانیں سیکھنا:

اس ہدف کے تحت مستشرقین اسلامی ممالک میں رائج زبانیں (عربی، اردو، ترکی، بنگلہ، فارسی، سندھی، پنجابی، پشتووغیرہ) سیکھتے ہیں۔ان زبانوں کے ادب کا وسیع مطالعہ کرتے ہیں اور پھران کواپنا ہتھیار بناکر مسلم ممالک میں کام کرتے ہیں۔سیاست، سفارت، تجارتی روابط، نجی تعلقات، ثقافتی تشہیر، مشنری اہداف، میڈیا مہمات اور جاسوسی سمیت تمام مطلوبہ ضروریات کی تکمیل کے لیے مقامی زبانوں میں مہارت بہترین ہتھیار ثابت ہوتی ہے۔

پہلی جنگ عظیم سے قبل جزیرۃ العرب میں برطانوی مستشرق ''لارنس آف عربیا'' نے عرب لیڈر کاروپ دھارکروہاں خلافتِ عثمانیہ کے خلاف فضاہموار کی۔وہ اپنی مہم میں اسی بنا پر بہت جلد کامیاب ہوا کہ وہ بہترین عربی دان تھا۔

مستشرقین عالم اسلام کی زبانوں میں اپنے الفاظ کی ملاوٹ کرکے ان کی اصل ہیئت تبدیل کرنے کی بھی کوشش کرتے ہیں اور بعض اوقات ایک علاقے میں دوسرے علاقے کی زبان سے نفرت بھی پھیلاتے ہیں۔

## عربی زبان پر وار:

عربی زبان قرآن وحدیث کی زبان ہونے کی وجہ سے مسلمانوں کے ایمان، اعمال اور مذہبی زندگی کی حفاظت کے لیے بنیادی اہمیت رکھتی ہے۔عربی سیکھے بغیر اسلامی تعلیمات کے کسی مآخذ تک رسائی ممکن نہیں۔سیاسی واستعماری تحریک پر کام کرنے والے مستشرقین مسلمانوں کو ان کے مذہب کے مآخذ سے دور کرنے کے لیے عربی سے ان کا رشتہ ختم کر دینا چاہتے ہیں۔ان کی کوشش ہے کہ مسلمان قرآن وحدیث، فقہ، سیرت اور اسلامی تاریخ وادب کو عربی زبان میں پڑھنے کی بجائے انگریزی، فرانسیسی یا اطالوی زبانوں میں پڑھیں۔جب کوئی شخص علمائے اسلام کی اصل کتابوں کی جگہ مستشرقین کی تحریر کردہ تفسیر، سیرت اور تاریخ پڑھے گا تو لامحالہ اسے مستشرقین کا اسلام سیکھنے کو ملے گا اور اصل اسلام سے وہ قطعاً ناواقف رہے گا۔

اس کے علاوہ مستشرقین عربی زبان کا دائرہ اثر کم کرنے کی سازشوں میں بھی مصروف ہیں اور مختلف طریقوں سے عربی زبان پر حملے کر رہے ہیں۔وہ جانتے ہیں کہ عربی زبان عراق سے لے کر مراکش تک پھیلی ہوئی عرب دنیا کی قومی و وطنی زبان ہے۔یہ مسلمانوں کے اتحاد واتفاق کا نشان ہے اور تمام عالم اسلام کی دینی قوتوں کے درمیان رابطے کا سب سے مؤثر ذریعہ بھی یہی ہے۔اس لیے مستشرقین عربی زبان کو قدیم اور فرسودہ قرار دینے، موجودہ دور کی ایجادات اور نت نئی اصطلاحات کے لیے اس کا دامن تنگ بتانے، اس کی فصاحت پر اعتراضات کرنے اور اس میں غیر متوازن حد تک یورپی الفاظ ٹھونس کر اس کی اصل شکل کو بگاڑ دینے کے لیے طرح طرح کے حربے استعمال کر رہے ہیں۔

عربی زبان کی حیثیت کو مجروح کرنے کے لیے جرجی زیدان جیسے مستشرقین نے ایسے لوگوں کو تیار کیا جو عربی زبان وادب کے ماہر ہونے کے باوجود اس زبان کے دینی اثرات کے سخت مخالف تھے، جیسے ڈاکٹر طٰہٰ حسین اور ان کے ہم فکر دانشوروں نے عربی زبان کے دینی تشخص کے خاتمے کی پوری کوششیں کیں تاکہ یہ زبان اپنی اصل بزرگی اور مقام سے محروم ہو کر دنیا کی ایک عام زبان کی مانند ہو جائے۔

مستشرقین کے بعض آلۂ کار یہ دعوت دے رہے ہیں کہ فصیح عربی کو قرآن وحدیث تک محدود رکھا جائے اور زندگی کے تمام شعبوں میں عامی زبان کو فروغ دیا جائے۔

مشہور مفکر علامہ جمال الدین افغانی مرحوم کا کہنا تھا کہ خلافت عثمانیہ کے زوال کی ایک وجہ یہ بھی تھی کہ خلافتِ عثمانیہ کی سرکاری زبان کا درجہ عربی زبان کو حاصل نہ تھا، اسی لیے عربوں اور ترکوں کے نام پر الگ الگ قومیتوں کے نعرے لگے اور عظیم خلافت عثمانیہ کا شیرازہ بکھر کر رہ گیا۔

(الاعمال الکاملۃ لجمال الدین الافغانی، از ڈاکٹر محمد عمارۃ، ص:219 طبع قاہرہ)

فی زمانہ عرب دنیا میں ایسے مفکرین عام ہو گئے ہیں جو برملا کہتے ہیں کہ قرآن وحدیث کی عربی ''العربیۃ الفصحیٰ'' دورِ حاضر کے تقاضے پورے کرنے سے قاصر ہے لہٰذا بول چال، علوم وفنون اور صحافت وادب میں اس کی جگہ مقامی زبانوں اور علاقائی بولیوں کو رواج دیا جائے۔ اس کے ساتھ ساتھ عربی رسم الخط کی جگہ لاطینی رسم الخط کو رواج دینے کی مہم چل رہی ہے۔ ظاہر ہے کہ ان سازشوں کے نتیجے میں عرب دنیا کے ہر صوبے بلکہ ہر شہر کی زبان الگ الگ ہو جائے گی، ان میں افتراق وانتشار انتہاء کو پہنچ جائے گا اور وہ اپنے مذہبی علوم کے سرچشموں سے بھی محروم ہو جائیں گے۔

## عرب ممالک میں عربی کی بجائے وہاں کی قدیم متروکہ زبانیں پھیلانا:

عرب دنیا کی اپنی پہچان ختم کرنے اور وہاں جاہلی تفاخر اور زمانہ ماقبل از اسلام کی تہذیب وثقافت کو فروغ دینے کے لیے عرب دنیا کی ان قدیم زبانوں کو زندہ کیا جا رہا ہے جو صدیوں سے متروک ہو چکی ہیں اور دورِ حاضر میں ان کی کوئی اہمیت اور افادیت نہیں۔ مثلاً مراکش اور الجزائر میں ''بربری''، مصر میں ''فرعونی'' اور عراق میں ''آشوری'' زبانوں اور تہذیبوں کو فروغ دینے کی مہم چل رہی ہے۔ اگر یہ مہم کامیاب ہو گئی تو خطرہ ہے کہ ایک ڈیڑھ صدی بعد ان ملکوں میں عربی جاننے والے مشکل سے ملیں جیسا کہ ڈیڑھ سو سال قبل ہندوستان میں اردو سے زیادہ فارسی زبان کا رواج تھا مگر انگریزوں نے مغل حکومت کا اثر ورسوخ ختم کرنے کے لیے فارسی کا اس طرح ناطقہ بند کیا کہ اب یہاں مشکل سے کوئی فارسی دان نظر آتا ہے۔

## غیر عرب ممالک میں مقامی غیر مسلموں کی زبانوں اور بازاری لہجوں کی حوصلہ افزائی کرنا:

مستشرقین عرب دنیا کے علاوہ دیگر اسلامی ممالک کو بھی اپنی سازشوں کا نشانہ بنائے ہوئے ہیں۔ عجم کے جن ملکوں میں مسلمانوں کی مقامی زبانوں کے بالمقابل غیر مسلموں کی کوئی الگ زبان موجود ہے، اسے مستشرقین نے اپنی نظرِ کرم کا محور بنالیا ہے اور اس زبان کی خدمت کے لیے مستقل ادارے قائم کردیے گئے ہیں۔ اس زبان کے شعروادب سے دلچسپی رکھنے والوں کے لیے سنہرے مستقبل کو یقینی بنادیا گیا ہے۔ مثلاً ہندوستان میں مسلمانوں کی زبان اردو کے مقابلے میں ہندی زبان کو فروغ دینے میں مستشرقین بھارتی حکمرانوں، سیاستدانوں اور ادب وثقافت کے اداروں کی مدد کررہے ہیں۔ بنگلہ دیش میں بھی ہندی کے فروغ کی کوششیں بہت کامیاب جارہی ہیں۔

جن اسلامی ملکوں میں براہ راست ایسی کوششیں نہ کی جاسکیں وہاں سوقیانہ زبان اور بازاری لہجوں کو عام کرکے یہ بڑی حدتک مطلب حاصل کرلیا جاتا ہے مثلاً پاکستان میں حکومتی پالیسی کی وجہ سے ہندی کو اردو کے بالمقابل تو نہیں لایا جاسکتا مگر بھارتی میڈیا کے ذریعے پاکستان میں سوقیانہ زبان کو فروغ دے دیا گیا ہے اور ہم دیکھ رہے ہیں کہ چند برسوں میں بیسیوں ہندی الفاظ غیر محسوس طور پر عام بول چال کا حصہ بن چکے ہیں۔

## عالم اسلام میں یورپین زبانوں کی اشاعت کرنا:

استعماری مستشرقین اسلامی ممالک کی مقامی زبانوں کو زیادہ عرصے تک زندہ رکھنے کے حق میں نہیں چنانچہ جو استعماری طاقت جس ملک میں گئی وہاں اپنی زبان کو پہلے سرکاری اور پھر قومی زبان بنانے کے لیے سرگرم رہی۔ مراکش میں ہسپانوی، الجزائر میں فرانسیسی، لیبیا میں اطالوی اور پاک وہند سمیت اکثر اسلامی دنیا میں انگریزی کو اسی مقصد کے لیے فروغ دیا جاتا رہا ہے۔

اس مہم کی وجہ سے عالم اسلام کی مقامی زبانیں شدید خطرے سے دوچار ہیں، اکثر مقامی زبانیں یورپی الفاظ کی بھرمار کی وجہ سے بڑی حدتک بگڑ گئی ہیں۔ پاکستان میں آج ہر شخص

انگریزی زبان سے مرعوب ہے۔ انگریزی کے سینکڑوں الفاظ جو عام بول چال میں شامل ہو چکے تھے اب شعر و ادب میں بھی جگہ پا رہے ہیں۔ ماڈرن طبقے کے علاوہ سرکاری ملازمین، تعلیمی اداروں سے وابستہ افراد، میڈیا کی دنیا اور تعلیم یافتہ حلقوں کی اردو میں اس حد تک انگریزی کی ملاوٹ کی جاتی ہے کہ اردو کی جگہ ایک نئی زبان وجود میں آ گئی ہے۔ جب کوئی قوم اپنی زبان کو چھوڑ کر اغیار کی زبان کو اختیار کرنے میں فخر محسوس کرتی ہے تو اس کی اپنی شناخت اور پہچان مٹ جاتی ہے۔

## مسلمانوں کے مختلف قبائل، ممالک، حکومتوں اور طبقات کے درمیان نفرت کی آگ بھڑکانا:

مستشرقین جب عالم اسلام کے مختلف ملکوں، قوموں اور طبقات کی تاریخ لکھتے ہیں تو اس تحقیقی کام کی خوب واہ واہ ہوتی ہے۔ اسی تحقیق کے ضمن میں وہ بڑے اہتمام سے ایسا مواد بھی پیش کرتے ہیں جو عالم اسلام کے ایک طبقے کو دوسرے طبقے سے، ایک برادری کو دوسری برادری سے اور ایک ملک کو دوسرے ملک سے مستقل طور پر متنفر کر دیتا ہے۔

ایسا مواد اگر سچ ہو تب بھی اس کا پیش کرنا مسلمانوں کے اجتماعی مفاد میں نہیں ہوتا مگر یہ مصلحتیں کوئی قوم کا خیر خواہ ہی سوچ سکتا ہے۔ مستشرقین بھلا ان کی پروا کیوں کریں گے۔ ان کا تو مقصد ہی یہ ہے کہ مسلمان آپس کے اختلافات میں الجھے رہیں اور سیاسی طور پر کبھی متحد اور مضبوط نہ ہو سکیں۔

اس مقصد کے لیے ایک بڑی سازش یہ کی جا رہی ہے کہ جن مسلم ممالک میں کئی کئی علاقائی زبانیں رائج ہیں وہاں قومی زبانوں کی جگہ انہی علاقائی زبانوں کو رواج دیا جا رہا ہے۔ میڈیا پر پورے زور و شور سے کہا جا رہا ہے کہ مقامی زبانوں ہی کو تصنیف و تالیف اور ابلاغ کی زبان کے طور پر اپنایا جائے۔

اس قسم کی کوششوں کا نتیجہ یہ نکل رہا ہے کہ مسلم ممالک میں علاقائی تعصب بڑھ رہا ہے، عربی زبان اور قرآن و حدیث کی زبان پر توجہ تو کجا، ملک کی قومی زبان کو بھی پامال کیا جا رہا ہے۔ اسلامی وحدت کا تصور تو دور کی بات، ملکی سلامتی کو برقرار رکھنا بھی مشکل ہو رہا ہے۔ ہر صوبے، بلکہ

ہر علاقے کے لوگ اسلام اور ملت کے مفاد کو پس پشت ڈال کر اپنی زبان اور تہذیب و تمدن کے دفاع اور اس کی اشاعت کو اپنا مقصد بنا کر تحریکیں چلانے لگے ہیں جس کا نتیجہ یہ نکل رہا ہے کہ پاکستان، عراق اور افغانستان سمیت کئی اسلامی ملکوں کے کئی ٹکڑوں میں تقسیم ہونے کا خطرہ پیدا ہو گیا ہے اور صوبے مزید چھوٹے چھوٹے صوبوں میں بٹنے پر تلے ہیں۔

## مغربی دنیا کو چمکا دمکا کر پیش کرنا اور اس کی عظمت ثابت کرنا:

مستشرقین عالم اسلام کو استعماری طاقتوں سے مرعوب رکھنے کے لیے اپنی تصانیف میں جا بجا مغرب کی قصیدہ گوئی کرتے اور اس کی ترقی اور عظمت کے گن گاتے نظر آتے ہیں۔ ان کی کتب پڑھ کر ایک عام مسلمان یہ محسوس کرتا ہے کہ وہ انسانوں کے نہیں جانوروں کے بیچ آباد ہے اور انسان صرف یورپ میں پائے جاتے ہیں۔ اس کے ساتھ ساتھ پختہ فکر مسلمانوں اور عالم اسلام کے دین دار طبقے اور علماء کے کردار کو بطورِ خاص اہانت کا نشانہ بنایا جاتا ہے۔ شریعتِ اسلامیہ پر عمل کرنے کو قدامت پسندی، بنیاد پرستی، اور دقیانوسیت کا نام دے کر مسلمانوں کو ترغیب دی جاتی ہے کہ وہ دین داری اور دین داروں سے دور رہ کر مغرب کی اندھا دھند نقالی میں اپنی عزت سمجھیں۔

## مسلمانوں کو کمزور اور جاہل قرار دینا:

اکثر مستشرقین مسلمانوں سے ہمدردی کا پیرایہ اختیار کر کے ان میں جان بوجھ کر مایوسی پھیلاتے ہیں۔ یہ لٹریچر پڑھ کر ایک عام مسلمان یہ سمجھنے لگتا ہے عالم اسلام کی دنیا میں کوئی حیثیت نہیں ہے، اس کی زمین بانجھ ہے اور مسلمان بحیثیتِ قوم ناقابلِ اصلاح ہیں۔ مستشرقین کا مقصد بھی یہی ہے کہ مسلمان مغرب سے مرعوب ہو کر احساس کمتری کے بوجھ تلے دبے رہیں و رانجام کار مغرب کے گرویدہ بن کر اسلام کو بھول جائیں۔

## اسلام کے سیاسی نظام اور جہاد کی غلط تاویلات کرنا:

مغرب کو ہمیشہ مسلمانوں کے سیاسی غلبے سے خوف لاحق رہا ہے اس لیے مستشرقین مسلمانوں کو اسلام کے سیاسی نظام اور جہاد سے دور رکھنے کی کوششوں میں مصروف رہتے ہیں۔ اس کے

لیے وہ کئی طریقے استعمال کرتے ہیں، مثلاً:

- کبھی جہاد پر ''مجتہدانہ'' بحث کرتے ہوئے اس کے معنیٰ ومفہوم کو بدل دیتے ہیں جس کی وجہ سے مستشرقین کی کتب پر انحصار کرنے والا مسلم طبقہ عمر بھر جہاد کی صحیح تعریف ہی نہیں سمجھ پاتا۔ مثلاً جہاد کو صرف دفاعی قرار دینا اور اسلام میں اقدامی جہاد کے تصور کی نفی کرنا۔
- کبھی جہاد سے متعلقہ نصوص کی ایسی فاسد تاویلات کی جاتی ہیں جن کے ذریعے جہاد کی حقیقت ختم ہوجائے اور عملاً مسلمانوں میں جہاد باقی نہ رہے۔ مثلاً ہر فلاحی واصلاحی کوشش اور ہر کارِ خیر کو جہاد قرار دینا۔
- اکثر مستشرقین یہ شور مچاتے ہیں کہ اسلام تلوار کے زور سے پھیلا ہے اور اس معنے میں جہاد کو اتنا بدنام کرتے ہیں کہ ناسمجھ مسلمان اپنی صفائی پیش کرتے ہوئے جہاد بالسیف ہی کی نفی پر اُتر آتے ہیں۔
- مجاہد قائدین اور مسلم فاتحین کے حق میں تعریف وتوصیف کے کچھ جملے لکھ کر ان کی گھناؤنی کردار کشی کرنا بھی مستشرقین کا خاص داؤ ہے تاکہ مسلمان جہاد کرنے والوں سے متنفر ہوکر جہاد سے لاتعلق ہوجائیں۔

یہ وہ اہداف ہیں جنہیں استعماری اور سیاسی محرک کی بناء پر کام کرنے والے مستشرقین اپنے سامنے رکھتے ہیں اور ان کی تکمیل کے ذریعے مغربی حکومتوں اور سیاست دانوں کی بڑی اہم خدمات انجام دیتے ہیں۔

## دفاعی محرک:

اسلام کی خوبیاں ہمیشہ سے سلیم الفطرت لوگوں کو اپنی طرف کھینچتی رہی ہیں۔ ہر دور میں ہر خطے میں ایسے لوگوں کی مثالیں موجود رہی ہیں جو غور وفکر کے نتیجے میں اپنی خوشی سے اسلام قبول کرتے آرہے ہیں۔ علمی اور معلوماتی وسائل کی ترقی کے ساتھ ساتھ اہل مغرب کے قبول اسلام کی یہ رفتار بھی بڑھ رہی ہے۔ یہ صورتحال مستشرقین کو اپنی مذموم جدوجہد پر ابھارنے کا ایک بہت بڑا محرک ہے۔ وہ اس صورتحال کی روک تھام کے لیے پوری کوشش کررہے ہیں کہ اپنی اقوام کو

اسلام سے حد درجے متوحش رکھا جائے کہ وہ اسلام کے قریب بھی نہ جانے پائیں اور ان کے مسلمان ہونے کے امکانات ختم ہو جائیں۔ اس مقصد کے لیے وہ بڑے پیمانے پر ایسا لٹریچر چھاپتے چلے آرہے ہیں جسے پڑھ کر ایک عیسائی اسلام میں دلچسپی نہیں لے سکتا۔

اس کے علاوہ مستشرقین ایسے علاقوں پر بھی نگاہ رکھتے ہیں جہاں ابھی تک اسلام نہیں پہنچا۔ وہاں اسلام سے متنفر کرنے والا لٹریچر پھیلا کر اسلام کی دعوت کے راستے مسدود کرنے کی کوشش کی جاتی ہے۔ ایسے علاقوں میں مشنری بھی سرگرم رہتے ہیں مگر مستشرقین کے لیے اتنا نتیجہ بھی کافی ہوتا ہے کہ اگر لوگ نصرانیت قبول نہ کریں تو کم از کم اسلام بھی نہ لائیں۔

## تجارتی واقتصادی محرک:

مشرقی علوم اور اسلام سے مستشرقین کے شغف کا ایک خاص محرک تجارتی اور اقتصادی مفادات بھی ہیں۔ مغربی ناشرین جانتے ہیں کہ یورپی اور ایشیائی ممالک مشرقی واسلامی علوم وفنون پر لکھی گئی کتابوں کی بہت بڑی مارکیٹ ہیں جہاں سے بے پناہ نفع کمایا جاسکتا ہے، چنانچہ وہ تجارتی نفع کے پیشِ نظر مشرقی موضوعات پر تصنیفی وتحقیقی کاموں کی سرپرستی کرتے اور کتابیں چھاپ کر پوری دنیا میں فروخت کرتے ہیں اس طرح انہیں بے تحاشا دولت حاصل ہوتی ہے۔

اسی طرح بہت سے مستشرقین بھی صرف معاشی فائدے کی خاطر عالم اسلام کے موضوعات پر مغزماری کرتے ہیں کیوں کہ اس محنت کے بدلے انہیں ناشرین اور تحقیقی اداروں سے خطیر رائلٹی یا بھاری مشاہرے ملتے ہیں۔

استشراق کے تجارتی واقتصادی محرک کی ایک اور شکل بھی ہے جو زیادہ خطرناک ہے۔ اہل مغرب مشرق میں اپنی تجارت کو پھیلانے اور اقتصادی فتوحات حاصل کرنے کے لیے یہ ضروری سمجھتے ہیں کہ انہیں مشرقی دنیا خصوصاً عالم اسلام کے بارے میں وہ تمام جدید وقدیم معلومات حاصل ہوں جو ان کی تجارتی منصوبہ بندیوں کے لیے مفید ثابت ہوسکتی ہیں۔ اس سوچ کے پیش نظر مستشرقین کو اہداف دیے جاتے ہیں کہ وہ مشرق کے وسائل، معدنی ذخائر، وہاں کی پیداوار، ضروریات، لوگوں کی مانگ اور معاشی حالات کا ریکارڈ تیار کریں۔

جدید دور میں ایسی معلومات کے لیے مستقل تحقیقاتی ادارے قائم کر دیے گئے ہیں۔ ملٹی نیشنل کمپنیاں ان اداروں سے بھاری معاوضے پر معلومات لے کر کسی ملک کے بارے میں اپنی تجارتی پالیسی تیار کرتی ہیں۔ یہی کمپنیاں اس وقت عالم اسلام کے وسائل پر قبضہ کرتی جارہی ہیں۔ پوری دنیا میں ان کا جال بچھا ہوا ہے اور انہوں نے عالم اسلام کے وسائل کو جکڑ لیا ہے۔

## علمی محرک:

بعض مستشرقین واقعتاً مشرق اور عالم اسلام سے فطری دلچسپی رکھتے ہیں اور اپنے ذوق وجستجو سے مجبور ہو کر مشرقی موضوعات کو اپنی تحقیقات کا محور بناتے ہیں۔ چوں کہ ایسے مستشرقین کا مقصد کسی تعصب کے بغیر غیر جانبدارانہ تحقیق ہوتا ہے، اس لیے ان کا تحقیقی معیار دیگر مستشرقین سے بہت بہتر ہوتا ہے، کیوں کہ اس میں شعوری طور پر حقائق کو چھپانے یا بگاڑنے کی کوشش نہیں کی جاتی۔ اس کے باوجود ایسی کاوشوں کو آنکھیں بند کر کے قبول نہیں کیا جاسکتا، کیوں کہ کوشش کے باوجود غیر شعوری طور پر مصنف یا محقق سے غلطی ہوسکتی ہے۔ ہاں اگر مواد علمی پیمانے پر پورا اترے تو ہمیں بھی تعصب کا مظاہرہ کیے بغیر ایسی تحقیق کو قبول کرنا چاہیے۔

حقیقت یہ ہے کہ بعض اوقات ایسے غیر جانبدار مستشرقین کے قلم سے بڑی وقیع تصانیف وجود میں آتی ہیں جن سے مشرق ومغرب کے اہل علم قرارِ واقعی فائدہ اٹھاتے ہیں۔ جیسا کہ ڈاکٹر وینسینک کی ''المعجم المفہرس للاحادیث النبویہ'' اور ''مفتاح کنوز السنۃ'' نے پورے عالم اسلام کے علمی حلقوں سے داد وصول کی۔ اسی طرح اسٹینلے لین پول کی ''صلاح الدین'' کو اپنے موضوع پر دنیا کی بہترین کتب میں شمار کیا جاتا ہے۔ اس کے علاوہ کئی اہم اسلامی مآخذ اور تاریخی وحوالہ جاتی کتب ان کی سعی سے پہلی بار شایع ہوئی ہیں۔ عموماً ایسے مستشرقین اسلام کی خوبیوں کے دل سے معترف ہوجاتے ہیں۔ ان میں سے بعض کو اللہ تعالیٰ نے اسلام قبول کرنے کی توفیق بھی دی ہے۔

یہاں یہ بات ملحوظ رہنی چاہیے کہ غیر متعصب مستشرقین کی غیر جانب دارانہ انداز میں لکھی گئی تصانیف کے فوائد اپنی جگہ ہیں مگر تصانیف کا ایسا ذخیرہ جب ہم سے یہ اعتراف کرالیتا ہے کہ

اسلامی موضوعات پر مغربی دانشوروں کو بڑی مہارت حاصل ہے تو اس سے مسلم معاشرے میں مستشرقین کی ان کتب کے فروغ کی راہ بھی ہموار ہو جاتی ہے جو زہر آلود ہیں۔ کیوں کہ ہر شخص یہ تمیز نہیں کر سکتا کہ کونسا مستشرق متعصب ہے اور کونسا غیر متعصب۔ ان کی کونسی کتب علمی ولولے کے تحت لکھی گئی ہیں اور کونسی صلیبی یا استعماری عزائم کے تحت۔ چوں کہ استشراق کے کتب خانوں میں خیر پر شر غالب ہے اس لیے عام مسلمانوں کو اس کوچے سے احتراز ہی کرنا چاہیے۔

## 4.1.9- مستشرقین کے دو اہم ترین اہداف:

اب تک کی بحث میں مستشرقین کے کئی اہداف سامنے آچکے ہیں، لیکن دو اہداف ان کے ہاں سب سے اہم ہیں۔

### عقائد و شرائع اسلام کا خاتمہ:

ان کا سب سے بنیادی نشانہ اسلامی عقائد اور شریعت اسلامیہ کو مٹا دینا ہے۔ دراصل مغربی استعماری قیادت اور مغربی دانشوروں کو اصل دشمنی اسلام سے ہے۔ یہ وہ نظریہ اور نظام ہے جس کا متبادل اور مقابل پیش کرنے سے وہ بالکل عاجز آچکے ہیں۔ اس کی خوبیوں اور قوتِ تاثیر سے وہ بری طرح خائف ہیں۔ اس لیے وہ چاہتے ہیں کہ اسلامی عقائد اور شریعتِ اسلامیہ کو دنیا سے ہمیشہ ہمیشہ کے لیے مٹا دیا جائے۔

### مغرب کو اسلام سے دور رکھنا:

چوں کہ مغرب اپنے ہاں اسلام کے فروغ سے خوفزدہ ہے اس لیے استشراق کے ذریعے اپنے لوگوں میں اسلام کی نشوونما کو روکنے کی پوری کوشش کی جارہی ہے۔

❀❀❀

## 4.1.10- استشراق کے ذرائع اور وسائل (وسائل الاستشراق)

## Resources of Orientalism

مستشرقین اپنے مقاصد کی تکمیل کے لیے ہر طرح کے وسائل اور ذرائع استعمال کرتے ہیں۔ تجزیے کے لیے ہم ان وسائل و ذرائع کو دو قسموں میں تقسیم کر سکتے ہیں:

① براہ راست ذرائع (Direct Resources)

② بالواسطہ ذرائع (Indirect Resources)

## براہِ راست ذرائع: (Direct Resources)

اس کے ذیل میں درج ذیل ذرائع بہت اہم ہیں:

### کتب:

مستشرقین نے اسلام اور مشرقیات سے متعلقہ ہر موضوع پر سینکڑوں کتب لکھی ہیں جن میں چالیس پچاس صفحات کے کتابچوں سے لے کر کئی کئی جلدوں کی ضخیم تحقیقات بھی شامل ہیں۔ ان میں سے زیادہ تر کام انگریزی میں ہوا ہے، فرانسیسی، جرمن، اطالوی اور دیگر زبانوں میں بھی ان گنت کتب موجود ہیں۔

### تراجم:

مستشرقین کی کتب کے ایڈیشن عالم اسلام کی مختلف زبانوں میں بھی شایع کیے جاتے ہیں۔ اس کے لیے تراجم کے بڑے بڑے ادارے قائم ہیں۔ ترجمے کے میدان کو مستقل حیثیت دینے کی ایک بڑی وجہ یہ بھی ہے کہ اکثر مستشرقین عربی فارسی اور دوسری ایشیائی زبانیں پڑھ تو لیتے ہیں مگر لکھنے پر عبور نہیں رکھتے اور اپنی تصانیف کسی مشرقی زبان میں تحریر نہیں کر سکتے۔ چنانچہ ان کی اکثریت اپنا تحقیقی کام اپنی مادری زبان (جرمن، فرنچ یا انگریزی) ہی میں پورا کرتی ہے۔ اب یہ شعبۂ ترجمہ کا کمال ہے کہ دیکھتے ہی دیکھتے یہ کتب دیگر زبانوں میں منتقل ہو کر پوری دنیا میں پھیل جاتی ہیں۔ ترجمے کا سب سے زیادہ کام عربی زبان میں ہوتا ہے۔

مترجمین کی فوج کے ذریعے مسلم ممالک کی کتب کو یورپی زبانوں میں منتقل کرنے کا کام بھی کیا جاتا ہے تاکہ خود مستشرقین کو کام میں سہولت رہے۔ اور عربی، اردو، فارسی کو پوری طرح نہ سمجھ پانا ان کی ''تحقیقات'' میں کوئی رکاوٹ پیدا نہ کرے۔

### رسائل، مجلات، اخبار و جرائد:

مستشرقین کے سینکڑوں ماہنامے اور، ہفت روزے شائع ہو رہے ہیں، رسائل و جرائد اور

مجلات کا ایک سیلاب ہے جو صحیح اسلامی فکر پر حملہ آور ہے۔ اکثر رسائل و جرائد میں موضوعات کی رنگارنگی ہوتی ہے مگر بعض میں صرف ایک ہی موضوع پر مضامین اور مقالات شایع ہوتے ہیں۔ یہ رسائل پورے عالم اسلام کے کتب خانوں اور علمی اداروں میں پہنچتے ہیں اور مسلمانوں کے فکری زاویے کو تبدیل کرنے کی کوشش کرتے ہیں۔

## کانفرنسیں، سیمینار اور کنونشن:

پوری دنیا میں مستشرقین گاہے گاہے مختلف علمی عنوانات پر کانفرنسیں، سیمینارز اور کنونشنز منعقد کرتے رہتے ہیں جن میں عالم اسلام کی مشہور شخصیات کو بھی مدعو کیا جاتا ہے۔ راسخ العلم علمائے اسلام کو تو اکثر نظر انداز کیا جاتا ہے البتہ اپنے ہم فکر شہرت یافتہ مسلم دانشوروں کو اہتمام سے شریک کیا جاتا ہے۔ ایسی کانفرنسوں کو مستشرقین مسلم دنیا کو کسی خاص مسئلے پر اپنا ہم خیال بنانے، اس پر اپنی علمیت کی دھاک بٹھانے اور اس کے علمی و سیاسی حلقوں میں مقبولیت حاصل کرنے کے لیے استعمال کرتے ہیں۔ مستشرقین اپنی سابقہ کارکردگی کا جائزہ لینے اور آئندہ کی منصوبہ بندی کرنے کے لیے بھی کانفرنسیں منعقد کرتے ہیں۔ ایسے اجتماعات مستشرقین کی تمام سرگرمیوں کے لیے سنگ میل کی حیثیت رکھتے ہیں۔

## انسائیکلو پیڈیاز:

مغربی دانشوروں نے مسلم علماء کو ہر فن میں معاجم مرتب کرتا دیکھ کر اس سے انسائیکلو پیڈیا کا تصور اخذ کیا۔ مستشرقین نے اسی تصور سے فائدہ اٹھاتے ہوئے گزشتہ صدی میں اسلامی اور مشرقی موضوعات پر درجنوں انسائیکلو پیڈیاز تیار کر دیے ہیں جو اس وقت خود عالم اسلام میں کسی بھی تحقیقی مقالے یا مضمون کے لیے بنیادی ماخذ کی حیثیت اختیار کر گئے ہیں۔ انسائکلو پیڈیاز کو بیسیوں مستشرقین مل کر سالہا سال کی عرق ریزی کے بعد مرتب کرتے ہیں۔

اس وقت مروجہ چند مشہور ترین انسائکلو پیڈیاز یہ ہیں:

1- Encyclopedia of Islam

2- Encyclopedia of Social Sciences

3- Short Encyclopedia of Islam

4- Studies in history

5- Encyclopedia of Religion and Ethic

## الیکٹرانک میڈیا (ریڈیو، سینما، ٹی وی اور انٹرنیٹ):

اس وقت مستشرقین اور عیسائی مبلغین کے اشتراک سے سینکڑوں ریڈیو اسٹیشن، ٹی وی چینل اور انٹرنیٹ پر سینکڑوں ویب سائٹس سرگرم ہیں جن میں مشرقی موضوعات پر بحث کی جاتی ہے حالاتِ حاضرہ سے لے کر معاشرتی مسائل اور مذہبی معتقدات تک کو موضوعِ سخن بنایا جاتا ہے اور اسی ذیل میں سامعین، ناظرین اور براؤزرز کی اپنے مقاصد کے مطابق ذہن سازی کی جاتی ہے۔

## بالواسطہ ذرائع (Indirect Resources)

یہ انداز بہت خطرناک ہے کیونکہ اس میں دشمن چھپ کر وار کرتا ہے، کسی کو براہ راست نظر نہیں آتا لہٰذا مسلمان غیر محسوس طریقے سے اس کے اس حملے کا شکار ہو جاتے ہیں۔

اس ضمن میں درج ذیل ذرائع قابلِ ذکر ہیں:

① جامعاتِ مستشرقین

② مغربی جامعات کے اسلامی و مغربی شعبے

③ تلامیذِ مستشرقین

## جامعاتِ مستشرقین:

یورپ اور امریکا میں اسلامی اور مشرقی علوم کی اعلیٰ اسناد دینے والی کئی مشہور جامعات ہیں جو مستشرقین کی زیرِ نگرانی چل رہی ہیں۔ مسلم دنیا کے ذہین اور باصلاحیت طلبہ کو اسکالرشپس کے ذریعے اعلیٰ تعلیم کے لیے وہاں بلوایا جاتا ہے، وہاں دورانِ تعلیم ان کی ایک خاص نہج پر ذہن سازی کی جاتی ہے جس کی وجہ سے وہ نہ صرف اکثر و بیشتر دینی مسائل میں بلکہ اسلام کے بنیادی اصولوں میں بھی ائمہ مجتہدین، سلفِ صالحین، علماء کرام اور جمہور امتِ مسلمہ کے افکار سے منحرف ہو جاتے ہیں۔ وہ واپسی پر مسلمانوں اور اسلامی دنیا کے لیے تحقیر آمیز ذہنیت لے کر آتے ہیں

اوراسی آلودہ سوچ کوآگے پھیلاتے ہیں۔

## مغربی جامعات کے اسلامی ومغربی شعبے:

اکثر مغربی جامعات میں اسلامی علوم کے علیحدہ شعبے قائم ہیں۔اسلامی علوم کے شعبے بھی اپنے مضمرات میں جامعاتِ مستشرقین سے کم نہیں۔ظاہر ہے کہ جب کوئی مسلمان کیمبرج اور آکسفورڈ کے حیاباختہ ماحول میں کسی دھریے یا یہودی پروفیسر سے حدیث پر لیکچر سنے گا تو اسے حدیثِ پاک کی حقیقت کیا خاک حاصل ہوگی؟.....ایسی تعلیم اگر مواد کے لحاظ سے درست ہو تب بھی عمل کا داعیہ پیدا کرنے کی بجائے قوتِ عمل کو مردہ کر دیتی ہے۔ان تعلیمی اداروں میں باقاعدہ منصوبہ بندی کے ساتھ مسلم طلبہ کو نصرانیت اور یہودیت کے قریب لایا جاتا ہے، بالواسطہ طور پر نصرانیت کی تبلیغ بھی کی جاتی ہے اور اگر ان کا عقیدہ نہ بدلا جاسکے تب بھی ان کے اساتذہ اکثر انہیں اپنے مخصوص استشراقی اہداف کے لیے کام کرنے پر تیار کر لیتے ہیں۔

## تلامیذ مستشرقین:

عالم اسلام کے سیاسی حلقوں اور عصری تعلیمی اداروں میں جامعاتِ مستشرقین اور مغربی یونیورسٹیوں کے اسلامی شعبوں کی دھاک بیٹھی ہوئی ہے اس لیے وہاں سے فارغ التحصیل مسلم اسکالرز کو اسلامی دنیا میں بڑی وقعت کی نگاہ سے دیکھا جاتا ہے اور انہیں بہت جلد حکومت کے بعض اہم شعبوں مثلاً اسلامی قانون سازی کا محکمہ، وزارتِ تعلیم، وزارتِ خارجہ، محکمہ آثار قدیمہ اور تعلیمی اداروں میں اعلیٰ عہدے مل جاتے ہیں۔ان میں سے بہت کم ہوتے ہیں جو اپنا دین اور ایمان سلامت لے کر لوٹتے ہیں۔اکثر اسلام کے نام پر گم راہ ہو چکے ہوتے ہیں۔ان کی بڑی تعداد تمام مذاہب کو یکساں سمجھتی ہے۔بعض دلی طور پر نصرانیت قبول کر چکے ہوتے ہیں۔کچھ اندرونی طور پر اسلام اور نصرانیت کے درمیان وساوس کی کسی انجانی منزل پر ہوتے ہیں۔

ایسے تلامیذِ مستشرقین مسلم ممالک میں مستشرقین سے زیادہ تباہ کن ثابت ہوتے ہیں۔ مسلمانوں جیسے ناموں کی وجہ سے دنیا انہیں مسلمان ہی تصور کرتی ہے۔اسلامی خاندانی پس منظر کے باعث انہیں معاشرے میں کبھی اس طرح شک کی نگاہ سے نہیں دیکھا جاتا جیسا کہ کسی

مستشرق یا مشنری کو دیکھا جاسکتا ہے۔ لہٰذا وہ بڑے اعتماد کے ساتھ لوگوں کے عقائد ونظریات کو خراب کرتے رہتے ہیں۔ ماضی میں مصر کے ڈاکٹر طٰہٰ حسین اور برصغیر کے غلام احمد پرویز اور حال میں جاوید احمد غامدی مستشرقین کے تلامذہ کی چند مثالیں ہیں۔

## 4.1.11- عالم اسلام میں مستشرقین کی وقعت اور قدر ومنزلت:

گزشتہ دو صدیوں کی لگاتار کوششوں سے مستشرقین نے کس قدر کامیابیاں حاصل کی ہیں اور عالم اسلام کے بڑے بڑے اذہان کو کس طرح مسخر کرلیا ہے اس کا اندازہ اس بات سے لگایا جاسکتا ہے کہ اسلامی دنیا کی بڑی بڑی درسگاہوں میں اسلامی ومشرقی علوم کی تدریس کے لیے مسلم اہل علم وفضل کی جگہ کسی مستشرق کا تقرر بڑے فخر کی بات تصور کی جاتی ہے۔ عالم اسلام کی چوٹی کی علمی مجلسوں اور اداروں میں مستشرقین کو اہم عہدے دیے گئے ہیں۔ دمشق کی مجمع اللغوی ہو، مصر کی مجمع العلمی العربی ہو، یا عراق کی مجمع العلمی العراقی، سب میں مستشرقین کی ایک خاص تعداد موجود ہے۔ تفسیر، حدیث اور سیرت سے متعلقہ عالمی کانفرنسوں میں مستشرقین کی شرکت اپنے لیے اعزاز تصور کیا جاتا ہے اور ان کے مقالات کو خاص توجہ کے ساتھ سنا اور پڑھا جاتا ہے۔

عالم اسلام کے بڑے بڑے دانشوروں کا یہ حال ہے کہ وہ اسلاف کی تصانیف اور تحقیقات سے مطمئن نہیں ہوتے اور مستشرقین کی تحریرات پڑھے بغیر کسی موضوع پر ان کی تشفی نہیں ہو پاتی۔ مستشرقین کا پیش کردہ مواد حقیقت میں خواہ کتنا ہی کمزور کیوں نہ ہو، یہ لوگ اس کے دلچسپ اسلوب، طرزِ استدلال، حسنِ استنباط اور تخریج وحوالہ جات کے سحر سے نکل نہیں پاتے۔

## 4.1.12- مستشرقین کا طریقہ واردات اور معیارِ بحث:

آیئے! اب ایک نظر مستشرقین کے تالیفی طریقہ کار اور تحقیقی معیار پر ڈالتے ہیں۔ اس میں کوئی شک نہیں کہ ان کا پیش کردہ مواد بہت دلکش، مرتب اور مسحور کن ہوتا ہے مگر وزن اور حقیقت کے اعتبار سے عام طور پر اس کی حیثیت بہت ساقط ہوتی ہے۔ ان کے تحقیقی انداز کی چند اہم خصوصیات ذکر کی جاتی ہیں جن سے ان کے طریقہ واردات کا اندازہ لگایا جاسکتا ہے۔

- مستشرقین سب سے پہلے تحقیق کا ایک مقصد طے کرلیتے ہیں مثلاً: ''مسلمانوں کے سامنے

ان کی تاریخ کو شرمناک انداز میں پیش کر کے انہیں اپنے اسلاف سے متنفر کرنا''..... یا .....''عیسائی اور یہودی تہذیب کو اسلامی تہذیب پر فائق ثابت کرنا۔''

- اس کے بعد اس مقصد کے لیے کسی مناسب موضوع کا انتخاب کیا جاتا ہے مثلاً.....''اموی دور میں عربوں کی عجمی مسلمانوں پر برتری کی وجوہ''..... یا.....''حضرت علی اور امیر معاویہ رضی اللہ عنہما کے تنازعات''
- موضوع پر قلم اٹھانے سے پہلے مصنف یہ طے کر لیتا ہے کہ وہ اپنا مدعا کسی نہ کسی طرح ثابت کر کے چھوڑے گا ورنہ تحقیق کا مقصد فوت ہو جائے گا۔
- مصنف اپنے مقصد کے لیے مذہبی مآخذ یعنی قرآن وحدیث اور فقہ سے لے کر تاریخی کتب بلکہ ادب، شاعری اور سفرناموں تک سے مواد چنتا چلا جاتا ہے، کیوں کہ اسے کتب کا وافر ذخیرہ میسر ہوتا ہے۔ اس ذخیرے سے وہ ہر ایسی بات اٹھا لیتا ہے جو اس کے مدعا کے لیے کسی بھی درجے میں مفید ہو، چاہے وہ سند اور ثبوت کے لحاظ سے کتنی ہی گری ہوئی کیوں نہ ہو۔
- مفید مطلب مواد کا ذخیرہ جمع ہو جانے کے بعد وہ بڑی مہارت سے اپنے مطلوبہ نظریے کی عمارت کا ڈھانچہ تیار کرتا ہے۔ مواد کا یہ منتشر انبار اس نظریاتی عمارت کے لیے بجری، سیمنٹ اور اینٹوں کا کام دیتا ہے۔ یہ نظریہ محض محقق کے تخیل کی پیداوار ہوتا ہے، حقیقت کی دنیا میں اس کا کوئی ثبوت نہیں ہوتا مگر مصنف کا کمال یہ ہوتا ہے کہ وہ گرے پڑے مواد کو خوب صورتی سے ترتیب دے کر اسے پوری فنکاری کے ساتھ لوگوں کے تصور میں اس طرح لے آتا ہے جیسے وہ اپنی آنکھوں سے اسے دیکھ رہے ہوں۔
- ڈھانچہ تیار ہو جانے کے بعد مصنف جمع شدہ مواد کے ایک خاص حصے سے اس کے نقش ونگار کو نکھارتا ہے اور اس کے لیے اپنی انشاء نگاری اور قلم کاری کی تمام صلاحیتوں کو بروئے کار لاتا ہے۔ ایک بے اصل بات کو وہ اپنی ملمع کاری کے ذریعے ایسی آن بان کے ساتھ پیش کرتا ہے کہ پڑھنے والا متاثر ہوئے بغیر نہیں رہ سکتا۔ سطر سطر کے ساتھ حوالوں کی بھرمار ہوتی ہے جن پر نگاہ ڈال کر اس فن کے ماہر بھی پہلی نظر میں مرعوب ہو جاتے ہیں۔ ظاہر ہے

کہ اتنی فرصت کس کے پاس ہوتی ہے کہ وہ حوالوں کی تحقیق کرے۔

❁ اس پرکاری کے ذریعے مصنف اپنے مطلوبہ نظریے کو قارئین کے اذہان میں اس طرح پیوست کر دیتا ہے جیسے کوئی جیتی جاگتی حقیقت ان کے سامنے ہو۔

مولانا سید ابوالحسن علی ندوی رحمہ اللہ مستشرقین کے طریقہ واردات پر روشنی ڈالتے ہوئے تحریر فرماتے ہیں:

''وہ اکثر ایک برائی بیان کرتے ہیں اور اس کو دماغوں میں بٹھانے کے لیے بڑی فیاضی کے ساتھ اپنے ممدوح کی دس خوبیاں بیان کرتے ہیں تاکہ پڑھنے والا ان کے انصاف، وسعت قلب اور بے تعصبی سے مرعوب ہو کر اس ایک برائی کو (جو تمام خوبیوں پر پانی پھیر دیتی ہے) قبول کر لے۔ وہ کسی شخصیت یا دعوت کا ماحول، تاریخی پسِ منظر، قدرتی وطبعی عوامل ومحرکات کا نقشہ ایسی خوبصورتی اور عالمانہ انداز سے کھینچتے ہیں (خواہ وہ خیالی ہو) کہ ذہن اس کو قبول کرتا چلا جاتا ہے اور اس کے نتیجے میں وہ اس شخصیت ودعوت کو اس ماحول کا قدرتی ردِّعمل یا اس کا فطری نتیجہ سمجھنے لگتا ہے اور اس کی عظمت وتقدیس اور کسی غیر انسانی سرچشمہ سے اس کے اتصال وتعلق کا منکر بن جاتا ہے۔ (مغربی مستشرقین کے فکر وفلسفہ کا اثر: صفحہ:16)

## 4.1.13- مستشرقین کی علمی قابلیت کے چند نمونے:

اگرچہ مستشرقین نے اسلامی ومشرقی علوم میں تصانیف کے انبار لگا دیے ہیں مگر اس کے باوجود ان کی علمیت عموماً سطحی ہوتی ہے، اس میں وسعت ضرور ہوتی ہے مگر گہرائی نہیں ہوتی۔ وہ اپنی محدود سوچ بلکہ تنگ نظری کے ساتھ صحیح معنوں میں تفسیر، حدیث، سیرت اور تاریخ اسلام کو کبھی سمجھ ہی نہیں سکتے۔ حقیقت یہ ہے کہ بہت سے مستشرقین صحیح تلفظ کے ساتھ عربی کے چند جملے بولنے پر بھی قادر نہیں ہوتے۔ لغات اور شروح کی مدد سے عربی مواد کو سمجھ تو لیتے ہیں مگر لکھنے میں معمولی شد بد ہی رکھتے ہیں۔ اپنی تصانیف کے عربی تراجم اُجرت پر دوسروں سے کراتے ہیں۔ پھر ان کی اسلامی علوم سے واقفیت عموماً ایک خاص دائرے کے اندر ہوتی ہے۔ اکثر مستشرقین اپنے خاص موضوع کے سوا دیگر اسلامی علوم سے بے بہرہ ہوتے ہیں۔

ذیل میں ان کی علمی قابلیت کے چند نمونے پیش کیے جاتے ہیں، تاکہ ان کی مہارت اور لیاقت کا اندازہ ہو سکے۔

- نامور مستشرق فوگل نے 1842ء میں قرآن مجید سے الفاظ کی فہرست مرتب کر کے ایک ضخیم لغات القرآن شایع کی۔ اس میں 49 الفاظ کے مادّے تک غلط ہیں، مثلاً:

اَثَرْنَ کا مادہ اثر کو قرار دیا جب کہ اس کا مادہ "ث و ر" ہے۔

اَلْمَخَاض کا مادہ خوض کو قرار دیا جب کہ اس کا مادہ م خ ض ہے۔

اِسْتَبِقُوْا کا مادہ بقی کو قرار دیا جب کہ اس کا مادہ س ب ق ہے۔

وَقَرْنَ کا مادہ ق رن کو قرار دیا جب کہ اس کا مادہ قرر ہے۔

مَقِیْلاً کا مادہ قول کو قرار دیا جب کہ اس کا مادہ ق ی ل ہے۔

- لندن یونی ورسٹی کے استاذ پروفیسر ڈینس سورا مشہور مستشرق تھے۔ تاریخ الادیان جو 1932ء میں شایع ہوئی، ان کی معروف تصنیف ہے جسے مستشرقین کے ہاں نہایت محققانہ کاوش مانا جاتا ہے۔ اس میں وہ حضور نبی اکرم ﷺ کی تعریف میں تحریر کرتے ہیں:

''مذاہب کے عظیم بانیوں میں سے شاید محمد ہی ایک شخص ہیں جن کی شخصیت تاریخی حیثیت سے بالکل واضح ہے اور خرافات نے ان کی شخصیت پر کوئی پردہ نہیں ڈالا۔''

مگر اس کے بعد اپنی جہالت کا ثبوت دیتے ہوئے لکھتے ہیں:

''بلاشبہ عرب کے لوگ جنوں اور روحوں کی پوجا کرتے تھے اور روحوں کے حجری مجسموں میں جاگزیں ہونے کے قائل تھے۔ ان کے علاوہ ہر قبیلے کے الگ الگ بت تھے۔ اسلام نے ان سب بتوں کو نابود کر دیا۔ صرف ایک حجرِ اسود کو باقی رکھا شاید اس لیے کہ اس سے حضرت ابراہیم علیہ السلام کا احترام مقصود تھا۔ یا شاید یہ ایک سیاسی عمل تھا جس کے ذریعے عربوں کے باہمی اتفاق کو باقی رکھنا مقصود رہا ہو۔''

- یہ بات بھی قابلِ ذکر ہے کہ اٹھارہویں صدی عیسوی تک مستشرقین کی بڑی تعداد یہ کہتی اور لکھتی رہی کہ مسلمان حج کو اس لیے جاتے ہیں کہ خانہ کعبہ میں رسول اللہ ﷺ کے بنائے

ہوئے ان کے اپنے بُت کو سجدہ کریں۔ (نعوذ باللہ)

❁ مشہور مستشرق لوئی ونڈرمین نے یہ اعتراض جڑا ہے کہ حضرت زبیر رضی اللہ عنہ، اکثر حضرت خدیجہ رضی اللہ عنہا کے گھر جایا کرتے تھے اور کبھی وہاں سو بھی جاتے تھے اور ام المؤمنین ان کے سر میں کنگھی بھی کر دیا کرتی تھیں جبکہ اسلام میں ایسا تعلق جائز نہیں ہے۔

لوئی ونڈرمین کو اتنا بھی معلوم نہیں تھا کہ حضرت خدیجہ رضی اللہ عنہا، حضرت زبیر رضی اللہ عنہ کی سگی پھوپھی تھیں، غیر محرم نہیں تھیں۔

❁ نامور یہودی مستشرق ڈاکٹر گولڈ زیہر نے مذاہب التفاسیر میں زور دے کر لکھا ہے کہ قرآن کے ایک لفظ کی صحت بھی قابلِ اعتماد نہیں۔ دلیل یہ دی ہے کہ جب اسے ابتداء میں لکھا گیا تو اس پر نقطے نہیں تھے اس لیے نہ جانے لوگوں نے کیا لکھا اور کیا پڑھا گیا۔

گولڈ زیہر کی یہ دلیل جہالت کا افسوس ناک نمونہ ہے۔ پہلی بات تو یہ ہے کہ اُس دور میں ایک قرآن مجید ہی نہیں بلکہ عربوں کے تمام نوشتے (خطوط، سرکاری کاغذات، معاہدے وغیرہ) بغیر نقطوں کے ہوتے تھے، مگر ان کو صحیح صحیح پڑھا جاتا تھا، کبھی ابہام کا کوئی مسئلہ سرے سے پیش نہیں آیا۔ نقطے اموی دور میں ان نومسلموں کی سہولت کے لیے ایجاد کیے گئے تھے جو عربی زبان سے واقف نہیں تھے۔

دوسری بات یہ ہے کہ قرآن مجید کی حفاظت شروع سے اب تک زبانی حفظ کے ذریعے چلی آرہی ہے اور یہ ہمیشہ سینوں میں ایسا محفوظ رہا ہے کہ لکھے ہوئے نسخوں میں ایک حرف بلکہ زبر زیر پیش کی غلطی بھی فوراً پکڑی جاتی ہے۔ گولڈ زیہر، یا تو بالکل جاہل تھا کہ اس کھلی حقیقت سے بھی ناواقف تھا..... یا جان بوجھ کر دوسروں کو گمراہ کر رہا تھا۔

❁ یہی گولڈ زیہر دعویٰ کرتا ہے کہ احادیث نبویہ تیسری صدی ہجری میں اختراع کی گئیں۔ حالانکہ تدوین حدیث اور حفاظتِ حدیث کے موضوع پر علمائے اسلام کی درجنوں کتب موجود ہیں جن سے اس شبہے کی مکمل نفی ہو جاتی ہے مگر مستشرقین اور ان کے منکرِ حدیث تلامذہ کے ہاں گولڈ زیہر کا سکھایا ہوا یہ اعتراض اب بھی لاجواب سمجھا جاتا ہے۔

❁ گولڈزیہر نے ایک جگہ امام ابوحنیفہ رحمہ اللہ پر تنقید کرتے ہوئے لکھا ہے:

''ابوحنیفہ یہ بھی نہیں جانتے تھے کہ غزوہ بدر، احد سے پہلے ہوا تھا یا بعد میں۔''

اس انکشاف کے لیے موصوف نے بطور حوالہ علامہ دمیری رحمہ اللہ کی حیات الحیوان کو پیش کیا ہے، حالانکہ اس کتاب کے نام ہی سے ظاہر ہے کہ یہ رواۃِ حدیث یا رجال کی نہیں، جانوروں کے حالات پر تصنیف کردہ کتاب ہے۔

❁ گولڈزیہر امام محمد ابن شہاب الزہری پر الزام لگاتا ہے کہ وہ اموی خلفاء کی خوشنودی کے لیے احادیث گھڑا کرتے تھے۔ اپنے اس دعوے پر وہ اس کے سوا کوئی دلیل نہیں دے سکا کہ امام زہری، اموی خلیفہ عبدالملک ابن مروان کے معاصر تھے۔ اس دلیل کا بے وزن ہونا محتاجِ بیان نہیں۔

❁ کارل بروکمان نے ''تاریخ الشعوب الاسلامیہ'' میں دعویٰ کیا ہے کہ عرب حکمران عجمی مسلمانوں کو بھیڑ بکریوں کا ریوڑ شمار کرتے تھے۔ اس کی دلیل یہ پیش کی ہے وہ عجمی مسلمانوں کو ''رعیۃ'' کہتے تھے جس کا ترجمہ ریوڑ یا گلّہ ہے۔

کارل بروکمان اتنا بھی نہ سمجھ سکا کہ عربوں کے ہاں صرف عجمی مسلمانوں ہی کو نہیں بلکہ ماتحت تمام لوگوں کو رعیۃ کہا جاتا ہے۔ اگر یہ لفظ تحقیر آمیز ہوتا تو اس کا اطلاق عرب وعجم سب پر کیوں کیا جاتا۔ لغت سے ثابت ہے کہ عربوں کے ہاں رعیۃ کے معنے صرف ریوڑ نہیں بلکہ یہ لفظ ماتحتوں کے لیے بھی استعمال ہوتا ہے۔ جیسا کہ حدیث میں ہے:

''الا کلم راع وکلم مسئول عن رعیته.'' (مشکوٰۃ)

''خبردار! تم میں سے ہر ایک نگران ہے اور ہر ایک سے اس کے ماتحتوں کے بارے میں سوال ہوگا۔''

جس طرح یہاں راعی کا ترجمہ چرواہا نہیں ہوسکتا اسی طرح رعیۃ کا ترجمہ ریوڑ نہیں کیا جاسکتا۔ جب اس لفظ کا اطلاق انسانوں پر ہو رہا ہو تو ماتحتوں کے سوا کچھ اور معنے مراد لینا ممکن ہی نہیں۔

❁ مستشرق مرجیلوٹ کا خیال ہے کہ عرب کے لوگ بلاغت اور زبان دانی کا فن سیکھنے کا خاص

اہتمام کرتے تھے، اس لیے بعید از قیاس نہیں کہ حضور ﷺ نے بھی اسی طرح اس فن میں مہارت حاصل کر کے غیر معمولی مقام پالیا ہو۔ (مراد یہ ہے کہ اس طرح معجز بیان قرآن مجید گھڑنے کی قدرت پالی ہو۔ نعوذ باللہ)

اس وہم اور فضول قیاس کا جواب تو خود قرآن مجید نے ﴿ فَأْتُوا بِسُورَةٍ مِّن مِّثْلِهِ ﴾ ''اس جیسی ایک سورت بنالاؤ'' کہہ کر چودہ صدیاں پہلے دے دیا ہے، مگر تشکیک کے مارے دانش وران فرنگ غور کہاں کرتے ہیں۔

یہ چند نامور مستشرقین کی تحقیقات کے کچھ نمونے تھے جن سے ان کی علمی رفعتوں کا کچھ اندازہ لگایا جاسکتا ہے۔

قیاس کن بہار من ز گلستان من

مناسب ہوگا کہ مستشرقین کی اس تشکیک پر فرانسیسی نومسلم مستشرق ناصرالدین الدینیہ کا تبصرہ نقل کر دیا جائے۔ وہ فرماتے ہیں:

''مستشرقین نے سیرت اور تاریخ اسلام کو اپنے مزاج وعقل اور معیار پر جانچنے کی کوشش کی ہے اور اسی نقطہ نظر سے اس پر تنقید بھی کرتے ہیں، یہی ان کی گمراہی کا سبب ہے جب کہ حقیقت بالکل برعکس ہے۔ یورپین مستشرقین اپنے منطبق کردہ معیار سے انبیائے کرام علیہم السلام کے بارے میں کبھی بھی صحیح نتائج اخذ نہیں کر سکتے۔''

وہ آگے چل کر لکھتے ہیں:

''اگر ہم ان (مستشرقین) کی متضاد آراء کو جمع کرنا چاہیں تو ہمیں مدتوں کی چھان بین کے بعد بھی کسی ایک حقیقت تک کا پتا نہ چل سکے گا۔ لہٰذا اس کے سوا کوئی صورت نہیں کہ ہم اطمینان قلب کے لیے عربوں کی کتب کی طرف رجوع کریں۔''

## 4.1.14- مستشرقین کی کمزوریوں اور گمراہیوں کی بنیادی وجوہ:

مستشرقین کی کمزوریوں اور گمراہیوں کی بنیادی وجوہ یہ ہیں:

- دین کے مستند شارحین کے اقوال کے بجائے اپنی ذاتی رائے کے مطابق تشریح کرنا۔

- ہر دین اور ہر تہذیب میں مغربی تصورات اور مغربی ادارے ڈھونڈنا اور ایسے عناصر کو فوقیت دینا جہاں مغرب کی جدیدیت کا رنگ نظر آئے۔
- عقائد تک کو تاریخی نقطۂ نظر سے دیکھنا۔
- لسانیات کے مطالعے پر زور دینا اور عقائد واحکام کی تشریح لغت کے اعتبار سے کرنا۔
- ادیان کو نظریۂ ارتقاء کی رو سے دیکھنا۔
- تحقیق برائے تحقیق میں مصروف رہنا۔ محض واقعات کی چھان بین کرنا، چاہے ان سے کوئی نتیجہ برآمد نہ ہو سکے۔
- پرانی کتابیں تلاش کر کے شائع کرنا اور یہ معلوم کرنے کی کوشش نہ کرنا کہ ان کی دینی حیثیت کیا ہے؟ دینی معاملات میں قصہ کہانی کی کتابوں تک کو شہادت میں پیش کرنا۔
- سائنس کے طریقے سے مذہب کا مطالعہ کرنے کا زعم۔
- دین اور تصوف کو فلسفہ سمجھنا۔
- مذہب کی حقیقت نہ سمجھنا۔
- یونانی فلسفے کو دین سے برتر سمجھنا اور مشرقی ادیان کو یونانی فلسفے کی نظر سے دیکھنا۔
- خود عیسوی دین بلکہ مغربی تہذیب سے بھی قرار واقعی آگاہی نہ رکھنا اور اس کے باوجود مشرق کی ہر چیز پر محاکمہ کرنے کا دعویٰ کرنا۔
- اپنے مطالعہ اور اپنی تحقیقات کی بنیاد اس مفروضے پر رکھنا کہ مشرق کا ذہن منجمد ہو گیا ہے اور مغرب کا ذہن برابر ترقی کرتا رہا ہے اور ترقی کرتا رہے گا۔

(ملخص از مغرب کے ذہنی انحطاط کی تاریخ۔ محمد حسن عسکری)

## 4.1.15- مستشرقین کی کامیابیوں کی وجوہ:

اب تک کی گفتگو سے از خود یہ سوال پیدا ہوتا ہے کہ آخر مواد کی ان کمزوریوں اور دلائل کے اس بودے پن کے باوجود مستشرقین کی علمی سازشیں کامیاب کیوں ہو رہی ہیں؟ اس سوال کے جواب پر غور کرنے سے جو اہم ترین وجوہ سامنے آتی ہیں وہ یہ ہیں:

## مسلمانوں کی جہالت:

مستشرقین کی راہیں ہموار ہونے کا سب سے بڑا سبب تعلیم یافتہ مسلمانوں کی اپنے دین ومذہب سے ناواقفیت ہے۔ مسلمانوں کے اس طبقے کے اکثر افراد علم ودانش کے دعوے کے باوجود مذہب سے لاعلم ہوتے ہیں لہٰذا وہ مستشرقین کے دھوکے کا بڑی آسانی سے شکار ہوجاتے ہیں۔

## انگریزی سے مرعوبیت:

مسلم معاشرے میں انگریزی کو علم کے مترادف بلکہ علم کا سب سے بڑا معیار سمجھ لیا گیا ہے۔ کالجوں اور یونی ورسٹیوں کے فضلاء عربی سے ناواقف ہونے کے علاوہ وہ اپنی مقامی زبان میں بھی کسی دینی کتاب کا مطالعہ اپنے معیار کے خلاف سمجھتے ہیں مگر مستشرقین کی اکثر تصانیف جو انگریزی میں ہیں ان کے لیے بڑی پرکشش ہوتی ہیں اور وہ کسی عالم دین سے مسائل سیکھنے کی بجائے ''مغربی معلموں'' پر اعتماد کرنا پسند کرتے ہیں۔ اسی اعتماد کی رَو میں وہ گمراہی کی کھائی میں جا گرتے ہیں۔

## مسلمانوں کے علمی طبقے کا سکوت:

مسلمانوں کا وہ علمی طبقہ جو مستشرقین کی تلبیسات کا پول کھولنے کی صلاحیت رکھتا ہے، عموی طور پر فتنۂ استشراق سے واقف نہیں ہے۔ اکثر علماء استشراق اور مستشرقین کے مختصر تعارف کے سوا ان کے بارے میں کچھ نہیں جانتے۔ بہت کم اہل علم ایسے ہیں جنہیں مستشرقین کی کتب کے مطالعے کا موقع ملا ہو۔

اس کی ایک بڑی وجہ یہ ہے کہ مستشرقین کی اکثر کتب انگریزی یا یورپین زبانوں میں ہیں جن پر بیشتر علماء کو دسترس حاصل نہیں۔ اگرچہ ان کی کتب کا ایک بڑا حصہ عربی میں منتقل ہو چکا ہے مگر اس کے مطالعے کے بھی فرصت درکار ہے جو علماء کے پاس عنقا ہے، کیوں کہ ایک تو ان کی تعلیم وتدریس، محراب ومنبر کی خدمات اور تبلیغی سرگرمیوں کی مشغولیتیں بھی کم نہیں۔ اس کے ساتھ ساتھ وہ درجنوں مخالف عناصر اور حکومتوں کی سازشوں سے دینی اداروں اور تحریکوں کے دفاع کی کوششوں میں بھی جٹے رہتے ہیں۔ ان ہنگامی اور فوری توجہ کے قابل مسائل کی وجہ سے انہیں فرصت نہیں ملتی کہ کسی ایسے فتنے پر توجہ دیں جو فقط لائبریریوں میں کتب کے صفحات پر خاموشی سے حرکت کر رہا ہے۔

## بے سروسامانی اور حوصلہ شکنی:

ایک بڑی وجہ یہ ہے کہ وہ اہل علم جو استشراق کا مطالعہ کر چکے ہیں اور ان کی تلبیسات کا محققانہ جواب دینے کی صلاحیت رکھتے ہیں ان کے پاس کام کے لیے مناسب وسائل نہیں ہوتے۔ مسلم حکومتوں کی طرف سے بھی انہیں کوئی تعاون حاصل نہیں ہوتا۔ اکثر اہل علم کو وہ کتابیں ہی میسر نہیں ہو پاتیں جن کی روشنی میں کوئی معیاری کام کیا جا سکے۔ کوئی تحقیقی ادارہ ان کا ہم فکر نہیں بنتا۔ کوئی ناشر ان کی خدمات کا معقول معاوضہ دے کر انہیں فکرِ معاش سے نجات نہیں دلاتا تا کہ وہ یکسوئی سے ایک موضوع پر جٹ جائیں اور مستشرقین کو جواب دینے کا حق ادا کریں۔

بعض اوقات کوئی خدا کا بندہ اپنے بل بوتے پر کسی موضوع پر قلم اٹھا لیتا ہے مگر اسے قدم قدم پر حوصلہ شکن رویوں کا سامنا کرنا پڑتا ہے اور اس کے مسائل روز گار بڑھتے چلے جاتے ہیں۔ نتیجتاً وہ دلبرداشتہ ہو کر کام چھوڑ دیتا ہے۔ بہت کم افراد اپنی تحقیقات مکمل کر پاتے ہیں۔ پھر تحقیقی مواد کی اشاعت کا مرحلہ انہیں مزید مایوس کر دیتا ہے کیوں کہ اکثر ناشرین یہ کہہ کر مسودہ طبع کرنے سے انکار کر دیتے ہیں کہ مارکیٹ میں اس کی مانگ نہیں ہے۔

## مستشرقین کے لیے سہولیات اور حکومتی سرپرستی:

دوسری طرف مستشرقین کا اکثر کام دلجمعی اور یکسوئی کا شاہکار ہوتا ہے۔ انہیں ایک موضوع کے ایک باب پر طویل سے طویل وقت صرف ہو جانے کی کوئی پروا نہیں ہوتی کیوں کہ وہ جس ادارے کے ماتحت تحقیق میں مصروف ہوتے ہیں اس کی جانب سے انہیں بھرپور مالی تعاون میسر ہوتا ہے۔ حکومتوں کی جانب سے بھی ان سے بھرپور تعاون کیا جاتا ہے اور تحقیق کے سلسلے میں تمام وسائل مہیا کیے جاتے ہیں۔

اس کے علاوہ کتاب کی اشاعت کے موقع پر انہیں زبردست شہرت کی شکل میں اپنی محنت کا شیریں ثمر مل جاتا ہے کیوں کہ اکثر مستشرقین کی کتب کی اشاعت بہت بڑے پیمانے پر ہوتی ہے اور پوری دنیا کے نہ صرف استشراقی بلکہ مسلم حلقوں کی طرف سے بھی ان کی کاوش کی تعریف وتوصیف اور ہمت افزائی ہوتی ہے۔ عموماً دو چار کتابیں کسی مستشرق کو عمر بھر آسودہ حال اور نیک

نام رکھنے کے لیے کافی ہوتی ہیں۔ان وجوہ سے مستشرقین اپنے میدان میں دن رات آگے بڑھ رہے ہیں جبکہ مسلمانوں کے لیے تغافل کی موجودہ صورتحال میں استشراق کا مقابلہ کرنا بے حد دشوار ہے۔ جہاں تک عرب علماء کا تعلق ہے وہ فتنۂ استشراق کے خلاف خاصا وقیع کام کر چکے ہیں مگر برصغیر پاک و ہند اور باقی اسلامی دنیا میں اس جانب کوئی توجہ نہیں دی جا رہی۔ ہمیں اس منظر نامے کو تبدیل کرنا ہوگا۔

## 4.1.16- استشراق کے موضوعات (موضوعات الاستشراق):

مستشرقین اپنی تصانیف، مقالوں اور تقریروں میں عموماً جن موضوعات کو زیر بحث لا کر گمراہی پھیلاتے ہیں ان کا مختصر تعارف یہ ہے:

### ذاتِ باری تعالیٰ:

مستشرقین اللہ تعالیٰ کی ذات کے بارے میں فلسفیانہ ابحاث کر کے شکوک و شبہات پیدا کرتے ہیں اور مخاطب کو بسا اوقات ایسے مقام تک لے جاتے ہیں جو کفر تک پہنچ جاتا ہے۔

### رسالت محمدیہ:

مستشرقین نبی اکرم ﷺ کی رسالت پر سب سے زیادہ بحث کرتے ہیں، سیرت کے کسی گوشے کا منفی مطلب نکال کر شک پھیلاتے ہیں۔ مقام رسالت کے بارے میں ذہنی الجھن پیدا کر کے لوگوں کو نبی اکرم ﷺ کی رسالت کا منکر بناتے ہیں۔

### قرآنِ مجید:

قرآن مجید کی صداقت، حفاظت اور تدوین کے بارے میں سوال اٹھا کر اور وساوس پھیلا کر یہ باور کراتے ہیں کہ قرآن انسانی تصنیف ہے اور اپنی اصل شکل میں موجود نہیں ہے۔

### مجموعہ احادیث:

احادیث کی تدوین کو مشکوک قرار دیتے ہیں۔ معتبر ترین رواۃِ حدیث کے اخلاق و کردار پر انگلیاں اٹھا کر بدظنی پیدا کرتے ہیں۔ کبھی کسی صحیح سند کو لے کر اس کے معتبر ہونے پر شک کا اظہار کرتے ہیں اور قرائن جمع کرتے ہیں کہ یہ آپ ﷺ کا قول نہیں۔ صحیح احادیث کو بھی موضوعات میں

شمار کر کے رواۃِ حدیث، ماہرین جرح وتعدیل اور فنِ حدیث کی تمام محنت کو مشکوک بناتے ہیں۔

## فقہ اسلامی:

اسلامی فقہ کو موضوعِ بحث بنا کر طرح طرح سے اس پر وار کرتے ہیں۔ مثلاً: فقہاء نے رومن لاء کا مطالعہ کر کے اسے اسلام میں ضم کر دیا ہے، قرآن وحدیث میں فقہ کا کوئی ثبوت نہیں۔ یہ فقہاء کی موشگافیاں ہیں، فقہی مسائل اسلام کے اصل مآخذ قرآن وسنت سے متصادم ہیں۔ امام ابوحنیفہ رحمہ اللہ حدیث سے واقف نہیں تھے اور ان کی شخصیت محدثین کے ہاں مجروح ہے۔ جو آزاد خیال حضرات ائمہ اربعہ اور فقہِ اسلامی پر اعتراضات کرتے ہیں ان کے دلائل عام طور پر مستشرقین ہی سے منقول ہوتے ہیں۔

## لغۃ القرآن، عربی

لغۃ قرآن یعنی عربی پر تنقید کرنا، اسے فرسودہ اور قدیم زبان قرار دینا اور اس کی جگہ عبرانی اور سریانی زبانوں کی اہمیت ثابت کر کے مسلمانوں کو ان کے مأخذِ دین سے دور کرنے کی کوشش کرنا مستشرقین کا مرغوب موضوع ہے۔

## سیرۃ النبی علیٰ صاحبہا الصلوٰۃ والسلام:

نبی کریم ﷺ کی سیرت پاک کی عظمت کو متاثر کرنا اور اس میں کجی ڈھونڈنا بھی ان کا اہم ہدف ہے۔

## تاریخ اسلام:

مستشرقین اسلامی تاریخ کے سنہرے دور کو چھپا کر منفی پہلوؤں کو سامنے لانے، مسلمانوں کے شاندار ماضی کو قابلِ نفرت بنانے اور عظیم اسلامی شخصیات کی کردار کشی کرنے کا کوئی موقع ہاتھ سے نہیں جانے دیتے تاکہ مسلمان اپنے اسلاف سے ناواقف بلکہ متنفر رہیں اور ان کے نقش قدم پہ نہ چل سکیں۔

## اسلامی گروہ اور فرقے:

مختلف اسلامی گروہوں پر تنقید کرنا، ان میں منافرت پیدا کر کے مسلمانوں کو آپس میں لڑانا

اور گمراہ فرقوں کی تاریخ کو بنا سنوار کر پیش کرنا مستشرقین کا من پسند مشغلہ ہے۔

## مسلم حکومتیں:

مستشرقین مختلف اسلامی ممالک کے ماضی وحال پر بحث کر کے ان کے درمیان نفرت پیدا کرتے ہیں، تحقیق کے نام پر ایک ملک میں دوسرے ملک کے بارے میں شکوک وشبہات پیدا کرتے ہیں۔ تاکہ وہ ایک دوسرے کے قریب نہ ہونے پائیں اور عالم اسلام متحد نہ ہو سکے۔

## اسلامی تحریکیں:

مستشرقین اسلامی تحریکوں پر بطورِ خاص تحقیق کرتے ہیں اور ان میں سے جسے صحیح اسلامی فکر کا ترجمان محسوس کرتے ہیں لٹھ لے کر اس کے پیچھے پڑ جاتے ہیں، اس کے منشور کی غلط تاویل کر کے مسلمانوں کو ان سے دور کرنے کی کوشش کرتے ہیں اور اس کے قائدین کو بدنام کرتے ہیں۔ اس کے برعکس جس تحریک کو اپنے لیے مفید اور مسلمانوں کی نشاۃ ثانیہ کی راہ میں رکاوٹ سمجھتے ہیں اسے اسلام کی اصل نمائندہ باور کرانے کے لیے ایڑی چوٹی کا زور لگا دیتے ہیں۔

مولانا سید ابوالحسن علی ندوی رحمہ اللہ اسلامی موضوعات پر مستشرقین کی مساعی کا جائزہ لیتے ہوئے لکھتے ہیں:

''قرآن، سیرتِ نبوی، فقہ، کلام، صحابہ کرام، تابعین، ائمہ مجتہدین، محدثین وفقہاء، مشائخ وصوفیہ، رواۃِ حدیث، فنِ جرح وتعدیل، اسماء الرجال، حدیث کی حجیت، تدوینِ حدیث، فقہ اسلامی کے مآخذ، فقہ اسلامی کا ارتقاء..... ان میں سے ہر موضوع کے متعلق مستشرقین کی کتابوں اور تحقیقات میں اتنا تشکیکی مواد پایا جاتا ہے جو ایک ایسے ذہین وحساس آدمی کو جو اس موضوع پر وسیع اور گہری نظر نہ رکھتا ہو، پورے اسلام سے منحرف کر دینے کے لیے کافی ہے۔''

(مغربی مستشرقین کے فکر وفلسفہ کا جائزہ: صفحہ:16)

## 4.1.17- استشراق کا مقابلہ کیسے کیا جائے:

اتنا سب کچھ جان لینے کے بعد لازمی طور پر یہ سوال پیدا ہوتا ہے کہ آخر استشراق کا مقابلہ کیسے کیا جائے۔ ظاہر ہے اس کے لیے زبردست منصوبہ بندی اور اَن تھک محنت کی ضرورت

ہے۔دورِ حاضر کے مسلم دانشوروں نے اس سلسلے میں جو سفارشات مرتب کی ہیں، ان کا خلاصہ کچھ ترمیم اور اضافے کے ساتھ پیش خدمت ہے:

- اسلامی دنیا کی حکومتوں، اداروں اور اہم شخصیات کو فتنہ استشراق کی مضرتوں سے آگاہ کیا جائے۔الغزوالفکری کو اسلامی دنیا کے نصابِ تعلیم کا باقاعدہ حصہ بنادیا جائے۔
- استشراق کے مقابلے کے لیے مستقل ادارے قائم کیے جائیں۔دینی وعصری تعلیمی اداروں میں استشراق سے نبردآزما ہونے کے لیے تخصیصی شعبہ جات کا انتظام کیا جائے۔
- ان اداروں اور شعبہ جات میں پہلے مرحلے میں ایسے رجال کار تیار کیے جائیں جو اس فتنے سے نبردآزما ہونے کی تمام تر صلاحیتوں اور فکری ہتھیاروں سے لیس ہوں۔
- رجالِ کار کا پہلا کام ایجابی تحقیق ہوگا۔یعنی مستشرقین کی تردید کیے بغیر مثبت انداز میں تحقیقات پیش کرنا۔

ایجابی تحقیق کے دو مراحل ہوں گے: پہلے مرحلے میں ہمارے اہل علم کو ان موضوعات پر زیادہ بہتر انداز میں کام کرکے دکھانا ہوگا جن پر گزشتہ دو صدیوں میں ہماری بجائے مستشرقین کا کام اجاگر ہوا ہے۔تفسیر، حدیث، فقہ، سیرت اور تاریخ میں سینکڑوں اہم موضوعات ہیں جن پر مسلمانوں سے زیادہ مستشرقین کے کام کو اہمیت دی جارہی ہے۔ہمیں ان موضوعات پر اتنا معیاری کام کرنا ہوگا کہ مستشرقین کے کام کا معیار ماند پڑ جائے۔اس کے لیے ہمیں نہ صرف وہ تمام اچھی خصوصیات اپنانا ہوں گی جو مستشرقین کے کام میں نظر آتی ہیں بلکہ اس سے دو ہاتھ آگے بڑھ کر بہتر کام کرنا ہوگا۔

ایجابی تحقیق کے دوسرے مرحلے میں ایسے نئے موضوعات پر کام کرنا ہوگا جو عالمگیر افادیت کے حامل ہیں اور جن پر کام کرکے مستشرقین کی مہارتِ فن کا طلسم توڑا جاسکتا ہے۔

- تحقیقی کام کی دوسری قسم سلبی ہوگی۔یعنی مستشرقین کی دسیسہ کاریوں، غلط فہمیوں اور جہالتوں کو ناقابلِ تردید دلائل کے ذریعے واضح کیا جائے گا۔اس سلسلے میں ان کی اصل کتب (تراجم نہیں) کے لفظ بلفظ حوالے پیش کرنا اور پھر ان کی تردید میں موضوع سے متعلقہ اصل

مآخذ سے پختہ شواہد لانا ضروری ہوگا۔ یہ ظاہر کرنا ہوگا کہ اسلامی علوم کے متون کو سمجھنے میں مستشرقین سے کہاں اور کیا غلطی ہوئی ہے۔ ترجمے اور تشریح میں انہوں نے کہاں ٹھوکر کھائی ہے اور کہاں تلبیس سے کام لیا ہے۔ کس کس جگہ انہوں نے غیر معتبر مآخذ سے مواد لیا ہے اور کہاں کہاں حوالے غلط دیے ہیں۔

جواب اتنا نکھرا ہوا ہو کہ اگر مستشرق کو واقعی غلط فہمی ہوئی ہو تو وہ دور ہو جائے اور اگر اس نے قصداً تلبیس کی ہے تو اس کا دجل سب پر واضح ہو جائے۔

اسلوب ایسا رکھا جائے جو جذباتی پن اور تعصب سے پاک ہو۔ بالکل غیر جانبدارانہ انداز اپنایا جائے اور کج بحثی سے ہرگز کام نہ لیا جائے۔ ٹھوس دلائل پیش کرتے ہوئے اسلامی نظریے کو برحق اور حریف کے توہمات کو باطل ثابت کیا جائے۔

❁ کام ایجابی ہو یا سلبی، بہرکیف اس کے معیار کے بارے میں درج ذیل چیزیں ملحوظ رکھنا ہوں گی:

(1) سب سے پہلے موضوع کی ضرورت، اہمیت، افادیت اور طلب کا اندازہ کر لیا جائے۔

(2) کام میں تحقیقی انداز اپنایا جائے۔

(3) مطالعے کی وسعت اور تحقیقات کی اصالت (Originality) کا خاص لحاظ رکھا جائے۔ اصل مآخذ کا براہِ راست اور گہرا مطالعہ کیا جائے۔ حوالے بالکل درست دیے جائیں۔

(4) عجلت پسندی سے اجتناب کیا جائے، چاہے کئی سال لگ جائیں مگر کام بھرپور ہو۔

(5) ایک شخص ایک زمانے میں ایک سے زائد موضوعات پر کام نہ کرے۔

(6) تحقیق کے ساتھ اسلوب کا ادبی ہونا ضروری ہے، عبارت اتنی خشک نہ ہو کہ پڑھنے والا اکتا جائے بلکہ شائستہ، سلیس اور جاذبِ توجہ انداز ہو۔

(7) ادبی اسلوب اتنا غالب نہ ہو کہ تحقیق کی جگہ داستان سرائی، کالم نگاری یا شاعری کا انداز پیدا ہو جائے۔

(8) ہر بات ٹھوس اور مفید مطلب ہو۔ کوئی پیراگراف بلکہ کوئی جملہ بھی ہلکا اور کم وزن نہ ہو۔

⑨ مواد کو پیش کرنے کے لیے حسن ترتیب، ابواب بندی اور اشاریہ سازی سمیت وہ تمام خوبیاں ملحوظ رکھی جائیں جو مستشرقین کی کتب کا طرہ امتیاز ہیں۔

⑩ کتابت، کمپوزنگ، سرخیاں، سرورق، جلد بندی ہر چیز اعلیٰ معیار کی ہو۔

⑪ تحقیق کا کئی زبانوں میں ترجمہ کرایا جائے خصوصاً انگریزی اور عربی میں۔

⑫ محققین کو تمام ممکنہ سہولیات، وظائف، رائلٹی اور معاشرتی عزت و تکریم دی جائے تاکہ وہ یکسوئی سے اسی میدان میں جم کر کام کر سکیں اور ان کا حوصلہ بلند رہے۔ بصورتِ دیگر فکرِ معاش انہیں بہت جلد ایسے مشاغل کی طرف متوجہ کر دے گی جن میں محنت کم اور آمدن زیادہ ہو۔

اگر اس انداز میں کام کیا گیا تو امید ہے کہ فتنۂ استشراق کے سامنے نہ صرف ایک مضبوط حصار کھڑا ہو جائے گا بلکہ اپنی مساعی کو نامراد دیکھ کر ایک مدت بعد مستشرقین کی سرگرمیاں ماند پڑ جائیں گی۔

## 4.1.18- چند مشہور مستشرقین کا تعارف:

### ویٹر (Vetter) متوفی 1667ء:

فرانسیسی مستشرق تھا، ابن سینا کی امراض عقلیہ اور علامہ طغرائی کی لامیہ سمیت کئی عربی کتب کے فرنچ میں تراجم کیے۔

### سلیفٹر ڈی ساسی (1758-1838) Silvester de Sacy:

پیرس میں پیدا ہوا، عربی، فارسی اور ترکی زبانیں سیکھنے کے بعد فرانس کے قومی کتب خانے میں مشرقی مخطوطات کی نشر و اشاعت میں مصروف ہو گیا۔ مشرقی زبانوں کے استاد کی حیثیت سے فرانس کی درسگاہوں میں تعلیم دی۔ فرنچ میں نحو پر ایک کتاب بھی لکھی جس کے انگریزی اور جرمن زبانوں میں ترجمے ہو چکے ہیں۔ فرانسیسی حکومت کا ملازم بھی رہا۔ اس کے دور میں فرانس کو مستشرقین کا مرکز کہا جانے لگا تھا۔

### جارج ولیم فریٹیگ (1788-1861) George Wilhelm Freytag:

یہ مشرقی لسانیات کا ماہر تھا۔ جرمنی اور پیرس کی درسگاہوں میں تعلیم حاصل کی۔ ایک مدت

تک بون یونی ورسٹی میں لغات شرقیہ کا استاد رہا۔ ''قاموس العربی اللاطینی'' چار جلدوں میں مرتب کرنے کی وجہ سے مشہور ہے۔ اسلامی تمدن کے عظیم ماخذ ''معجم البلدان'' کی از سرنو اشاعت میں بھی شریک رہا۔

## ولیم میور (William Muir 1819-1905):

یہ مشنری پادری تھا، 1885 تا 1903ء ایڈنبرا یونی ورسٹی میں مدیر رہا، ہندوستان میں برطانوی افسر کے طور پر بھی تعینات ہوا اور دوران ملازمت عربی سیکھی۔ مشنری اداروں کی علمی مدد کے لیے بہت پرجوش تھا۔ اس کی کتب ''حیاتِ محمد'' اور ''القرآن تالیفہ وتعالیمہ'' بہت مشہور ہیں۔ حیاتِ محمد میں نبی اکرم ﷺ پر جا بجا اعتراضات کر کے آپ ﷺ کی رسالت کو مشکوک بنانے کی کوشش کی گئی ہے۔

### اہم تصانیف:

1- A Life of Mahomet and History of Islam

2- Annals of the Early Caliphate

3- The Beacon of Truth; or, Testimony of the Coran to the

4- Truth of the Christian Religion

## جولیس ویلسن (Jullius Wellhausen (1844-1918:

اس نے تاریخ اسلامی اور اسلامی فرقوں پر کام کر کے خوب نام پیدا کیا۔ الامبراطوریۃ العربیۃ وسقوطہا، الاحزاب المعارضہ للاسلام، الشیعۃ والخوارج، تنظیم محمد للجماعۃ فی المدینۃ، محمد والسفارات التی وجہت الیہ اور محمد فی المدینۃ, Muhammed in Medina .Berlin, (1882) اس کی شہرۂ آفاق تالیفات ہیں۔

## اگناز گولڈزیہر Ignaz Goldziher(1850-1921):

ہنگری کا یہ متعصب یہودی مستشرق گزشتہ صدی کے استشراقی اسلوب کا بانی تصور کیا جاتا ہے۔ اس نے حصول تعلیم کے لیے بوڈاپسٹ اور برلن کی یونی ورسٹیوں سے لے کر جامعہ ازہر تک

اسفار کیے۔ ایک مدت تک بوڈاپسٹ یونی ورسٹی میں تاریخ، عربی اور اسلامیات کی تعلیم دیتا رہا۔ دین اسلام، عقائدِ اسلامی، شریعتِ اسلامیہ، قرآن مجید اور حدیث اس کی تحقیقات کا خاص موضوع رہے، اس نے ان موضوعات پر کئی متعصبانہ کتب لکھیں جو یورپ میں انتہائی مقبول ہیں۔ ''تاریخ مذاہب التفسیر الاسلامی'' اور ''العقیدۃ والشریعۃ'' کو اس کی سب سے اہم تصانیف سمجھا جاتا ہے جو اسلام پر اعتراضات سے بھرپور ہیں۔

### تھیوڈور نولڈیک (1836-1930) Theodor Noldeke:

لیڈن اور برلن کی جامعات سے تعلیم حاصل کرنے والا یہ مستشرق، لغت، تاریخ اور شعر عربی کی تدریس کی وجہ سے مشہور ہوا۔ ''تاریخ القرآن'' اور ''مختارات من الشعر العربی'' اس کی مقبول عام تصانیف ہیں۔

### بارتھولڈ (1869-1930) V.V. Barthold:

اس روسی مستشرق نے اسلامی دنیا خصوصاً ایشیائی اسلامی ملکوں کی معاشرت اور تہذیب وتمدن پر کام کیا ہے۔ پیٹرزبرگ یونیورسٹی میں تعلیم حاصل کی اور وہیں طویل مدت تک تدریسی خدمات انجام دیں۔ تاریخ اسلام پر بکثرت کتب تحریر کیں۔ روسی مجمع العلوم کا رکن اور مستشرقین کی کمیٹی کا چیرمین بھی رہا۔

**اہم تصانیف:**

1- Mussulmen Culture

2- Turkestan Down to the Mongol Invasion

### تھامس آرنلڈ (1864-1930) Sir Thomas Walker Arnold:

اس برطانوی مستشرق نے کیمبرج یونی ورسٹی میں عربیت پڑھی۔ ہندوستان میں 1883ء سے 1888ء تک علی گڑھ یونی ورسٹی میں دس سال تک تدریس کا کام کیا، پھر پنجاب یونی ورسٹی میں فلسفہ کے استاد کی حیثیت سے خدمات انجام دیں۔ 1921ء سے 1930ء تک لندن یونی ورسٹی میں اسلامیات اور عربیت کی تعلیم دی۔

دعوت الی الاسلام، الخلافۃ، حول العقیدۃ الاسلامیہ مشہور تصانیف ہیں۔لیڈن ہالینڈ سے شایع ہونے والی ''الموسوعۃ الاسلامیہ'' کے پہلے ایڈیشن کی مجلس مدیران میں پروفیسر آرنلڈ کا نام بھی ہے۔ ہندوستان کے بہت سے مشاہیر جن میں شاعر مشرق ڈاکٹر اقبال بھی شامل ہیں آرنلڈ کے شاگرد رہے۔

آرنلڈ کو معتدل مستشرقین میں شمار کیا جاتا ہے، مگر پھر بھی بعض جگہ فکر کی کجی نمایاں ہوتی ہے خود علامہ اقبال کا کہنا ہے کہ پروفیسر صاحب کی سب سے مشہور کتاب ''دعوۃ الی الاسلام'' میں بین السطور جہاد کی نفی کر دی گئی ہے۔

**اہم تصانیف:**

1- The preaching of Islam: (1913)

2- The Old and New Testaments in Muslim Religious Art (1928)

## Stnley Lane-Poole (1854 - 1931) :اسٹینلے لین پول

برطانوی مستشرق تھا، لندن میں پیدا ہوا، ڈبلن یونی ورسٹی میں پروفیسر رہا۔اسلامی تاریخ پر کئی کتب لکھیں۔اپنی معتدل مزاجی کی وجہ سے دنیائے اسلام میں مشہور ہے۔

**اہم تصانیف:**

1- The People of Turkey (1878)

2- Lane's Selection From the Kuran (1879)

3- Egypt (1881)

4- Studies in a Mosque (Cairo, February 1883)

5- Social Life in Egypt(1884)

6- The Story of the Moors in Spain (1886)

7- The Speeches and Table-Talk of the Prophet

8- Mohammad (1893)

9- The Mohammedan Dynasties (1894)

10- Saladin: All-Powerful Sultan and the Unite of 11-Islam (1898)

12- Babar (1899)

13- Medieval India under Mohammedan Rule, AD 712-1764 (1903)

14- Saladin and the Fall of the Kingdom of Jerusalem (1903)

**ڈیوڈ سانٹیلانا(1855-1931) David Santillana:**

تیونس میں ولادت ہوئی اور روم یونی ورسٹی سے فقہ اسلامی اور فلسفہ اسلام میں اسناد حاصل کیں۔ مصر یونی ورسٹی میں تاریخ فلسفہ اور روم یونی ورسٹی میں قانونِ اسلام کا استاذ رہا۔

**کارل ہنری بیکر (1876-1933) Carl Heinrich Becker:**

جرمن مستشرق ہے جو ایشیائی ادیان اور تاریخ پر کام کرنے کی وجہ سے مشہور ہے۔ برلن میں تعلیم حاصل کی اور اسپین کے علاوہ مصر میں بھی تدریس کا کام کیا۔ اس کی شرکت سے مستشرقین کا مشہور مجلہ ''الاسلام'' 1910ء میں شروع ہوا۔ جرمنی میں وزیر ثقافت بھی رہا۔

**اگنازیو جوڈی(1844-1935) Ignazio Guidi:**

اس اطالوی مستشرق نے روم یونی ورسٹی میں تعلیم حاصل کی اور وہیں تدریس میں مشغول رہنے کے ساتھ ساتھ عربی لغت اور عربیت پر مقالے لکھ کر شہرت حاصل کی۔

**پرنس لیون کایتانی(1869-1935) Leone Caetani:**

عربی وفارسی کا ماہر اطالوی مستشرق تھا۔ اس کا باپ ''سرمونٹیا'' کا نواب تھا اس لیے کایتانی بھی ڈیوک (نواب) اور پرنس کے لقب سے مشہور ہوا۔ اس نے پندرہ سال کی عمر میں عربی اور سنسکرت پڑھنا شروع کر دی تھی۔ اپنی وجاہت اور علمیت کی وجہ سے اٹلی کی پارلیمنٹ کا رکن اور

عرب امارات میں سفیر بھی رہا۔

اسے عالم اسلام کی سیاحت کے بھرپور مواقع ملے۔ الجزائر، تیونس، مصر، شام، لبنان، ترکی، عراق، ایران، ہندوستان، وسط ایشیا اور روس میں اس نے اسلامی تمدن کا بغور مشاہدہ کیا۔ اس کی مشہور تصنیف ''حولیات الاسلام'' جو دس جلدوں میں ہے، تاریخ اسلام میں اکثر مستشرقین کا ماخذ ہے۔

**اہم تصانیف:**

- Annuli dell' Islam (1907) 10 Volumes.
- Uthman and the Recession of the Koran, Muslim World 5 (1915)
- Study of the history of the Orient (1914)

## ہنری لامینس (1862.1937) Henry Lammens:

مسیحی کالج بیروت کا یہ پروردہ مستشرق مشنریوں کا سرکردہ رکن اور اسلام کے بارے میں شدید متعصب تھا۔ تاریخ اسلام اس کا خاص میدان تھا۔ سیرتِ خلفاء راشدین اور خلفائے امویین کو داغ دار کرنے میں کوئی کسر نہیں چھوڑی۔ اس کی کئی تصانیف مشہور ہیں۔ مشنریوں کے مجلۃ ''الشرق'' اور مجلۃ ''البشیر'' کا مدیر بھی رہا۔

**اہم تصانیف:**

1- Islam: Beliefs and Institutions
2- The Age of Muhammad and the Chronology of the Sira
3- Fatima and the Daughters of Muhammad

## اے جے وینسک (1882-1939) Arnet Jan Wensink:

ہالینڈ کے اس مستشرق نے حدیث کی اشاریہ سازی پر خاصی محنت کی اور المعجم المفهرس للحديث النبوية اور اس کی تلخیص مفتاح كنوز السنة کو مرتب کر کے عالم اسلام کے اہل علم سے بڑی داد وصول کی مگر اس کی دیگر کتب میں کئی مقامات

سے اس کا تعصب اور حسد ظاہر ہوتا ہے۔ محمد والیھود فی المدینة (پی ایچ ڈی کا مقالہ) اور العقیدة الاسلامیة نشأتھا وتطورھا فی التاریخ الاسلامی اس کی دیگر مشہور تصانیف ہیں۔

## ڈیوڈ سموئیل مارگولیتھ:

## David Samuel Margoliouth (1858-1940):

یہودی گھرانے سے تعلق رکھنے والا یہ مستشرق آکسفورڈ یونی ورسٹی میں 48 سال تک عربی کا پروفیسر رہا۔ العلاقات بین العرب والیہود، الاسلام، السیرۃ النبویہ مشہور تصانیف ہیں جو کہ تعصب اور پروپیگنڈے سے بھرپور ہیں۔

### اہم تصانیف:

1- Mohammed and the Rise of Islam. 1905.

2- Umayyad's and 'Abbasids. 1907.

3- The Early Development of Mohammedanism. 1914.

4- The Relations Between Arabs and Israelites Prior to the

5- Rise of Islam

## اے ای سمتھ (1871-1941) :A.E. Schmidt

یہ بھی روسی مستشرق ہے جسے اسلامی لغات اور تاریخ میں اختصاص حاصل تھا۔ پیٹرز برگ میں 20 سال تک تدریس کی۔ 1920ء کو تاشقند میں ایک یونی ورسٹی کی بنیاد رکھی۔ ''النبی محمد''، ''محاولة التقریب بین السنة والشیعة'' اور ''فہرس مخطوطات العربیة فی تاشقند'' مشہور تالیفات ہیں۔

## سموئیل زویمر (1867.1952) :Samuel Marinus Zwemer

اس امریکن مستشرق کی اسلام دشمنی ضرب المثل ہے۔ مشنری پادری، جہاں گشت مبلغ اور مصنف کی حیثیت سے بہت کام کیا۔ اس نے اسلامی دنیا میں مشنریوں کی نقل وحرکت بڑھانے

اور مشنریوں کو اسلام کے خلاف دلائل فراہم کرنے میں پوری جان لگادی اور اس مقصد کے لیے درجنوں کتابیں لکھ ڈالیں۔

**اہم تصانیف:**

1- Arabia, the Cradle of Islam (1900)
2- Moslem Doctrine of God (1906)
3- The Mohammedan World of Today (1906)
4- Islam: a challenge to faith (1907)
5- Our Moslem sisters: a cry of need from lands of darkness interpreted by those who heard it, (1907)
6- The Moslem Christ (1911)
7- The Unoccupied Mission Fields of Africa and Asia (1911)
8- Childhood in the Moslem World (1915)
9- Mohammed or Christ? (1916)
10- The Disintegration of Islam (1916)
11- The Influence of Animism on Islam (1920)
12- The Law of Apostasy in Islam (1924)
13- Moslem Women (1926)
14- Across the world of Islam (1929)
15- Studies in Popular Islam: (1939)
16- The Art of Listening to God (1940)
17- Islam in Madagascar (1941)
18- Heirs of the Prophets (1946)

## کارل بروک مان (1868-1956) :Carl Brockelmann

اس جرمن مستشرق نے تاریخ اسلامی پر کام کیا ہے۔ ''تاریخ الشعوب الاسلامیۃ'' اور ''تاریخ الادب العربی'' معروف تالیفات ہیں جنہیں آج کل ہماری جامعات کے اسکالرز بہت بنیادی

ماخذ کی حیثیت دیتے ہیں حالانکہ یہ کتب مغالطہ آرائیوں اور کذب بیانیوں سے پُر ہیں۔

## لوئی ماسنیون (1883-1962) Louis Massingon:

فرانس کے مشہور ترین مستشرقین میں شمار کیا جاتا ہے۔ پیرس میں پیدا ہوا، عربی لغت سیکھی۔ الجزائر، قاہرہ، القدس، لبنان، ترکی، حجاز اور مراکش کے دورے کیے۔ متعصب یہودی مستشرق گولڈ زیہر سے بھی استفادہ کیا۔ 1907ء میں قاہرہ میں فرانسیسی کالج برائے آثارِ مشرقیہ میں تدریس شروع کی۔ 1926ء تا 1956ء فرانسیسی کالج میں اسلامی علوم کا استاذ اور شعبے کا نگران رہا۔ اسلامی فرقوں اور طبقات پر کام کیا ہے۔ تشیع اور تصوف پر کئی کتب لکھی ہیں۔ دائرہ المعارف الاسلامیہ کے مرتبین میں شامل ہے۔ دمشق کی مجمع العلمی کا ممبر رہا۔ الحلاج الصوفی الشہید (Hallaj: Mystic and Martyr) اس کی سب سے مشہور تصنیف ہے۔

## ہیرلڈ البرٹ لیمب:

## Harold Albert Lamb (1892 - April 9, 1962):

نیویارک میں پیدا ہوا۔ کولمبیا یونیورسٹی سے تعلیم حاصل کی۔ تاریخ اور ایشیائی تمدن سے خاص شغف تھا۔ ادبی اور تاریخی موضوع پر کئی کتب لکھیں جو دنیا بھر میں بے حد مقبول ہوئیں۔ ہیرلڈ لیمب محقق نہیں بلکہ بنیادی طور پر ادیب اور کہانی نگار تھا مگر 1927ء میں ''چنگیز خان'' پر تاریخی کتاب لکھ کر اس نے جو مقبولیت پائی اس کے بعد اس کا رخ مکمل طور پر سوانح نگاری کی طرف مڑ گیا اور اسے محقق اور تاریخ دان شمار کیا جانے لگا۔

ہیرلڈ لیمب کی تحریر میں ادیبانہ دلکشی موجود ہے۔ بظاہر وہ مسلمانوں کے بارے میں معتدل محسوس ہوتا ہے مگر کئی مقامات پر اس نے واضح تعصب کا ثبوت دیا ہے اور حقائق کو غلط انداز سے پیش کر کے مسلمانوں کی خامیاں اور مغرب کی برتری ثابت کرنے کی کوشش کی ہے۔

### اہم تصانیف:

1- Genghis Khan: The Emperor of All Men (1927)

2- The Flame of Islam (1930)

3- The Crusades (1931)

4- The March of the Barbarians (1940)

5- Suleiman the Magnificent (1951)

6- Babur the Tiger: (1962)

## جوزف شاخت (1902-1969) Josef Schacht:

برطانوی جرمن نژاد مستشرق تھا، لغاتِ مشرقیہ میں مہارت حاصل تھی۔ مصر یونی ورسٹی میں فقہ اللغۃ العربیۃ اور اللغۃ السریانیۃ کی تعلیم دی۔ کولمبیا یونیورسٹی نیویارک میں بھی ایک عرصے تک مدرس رہا۔ دائرۃ معارف اسلامیہ کی طبع ثانی میں اہم کردار ادا کیا۔ اسلام پر اعتراضات گھڑنے کی وجہ سے بہت مشہور ہوا۔

## جان آربرے (1905-1969) Arthur John Arberry:

جنوبی انگلینڈ میں پیدا ہوا۔ مصر میں فارسی اور عربی کی تعلیم حاصل کی، شام اور لبنان میں بھی رہا۔ دوسری جنگ عظیم میں برطانوی وزارت دفاع میں اطلاعات ومواصلات کے شعبے میں کام کیا۔ 1955ء میں قرآن مجید کا انگریزی میں ترجمہ کیا۔ اقبالیات، مولانا روم رحمہ اللہ اور صوفی ازم پر بھی کام کیا۔

### اہم تصانیف:

1- Translations of Iqbal's Works

2- Aspects of Islamic Civilization

3- The Doctrine of the Sufis

4- The Essential Rumi

5- The Life and Work of Jalaluddin Rumi

6- Religion in the Middle East

## ہیلمٹ ریٹر (1892-1971) Hellmut Ritter:

اس نے ترکی میں علمی مخطوطات اور نایاب کتابی خزانے تلاش کرنے میں بڑی محنت کی۔

مقالات الاسلامیین (ابوالحسن اشعری)،اساس البلاغۃ (عبدالقاہر جرجانی)اور فرق الشیعۃ (حسن بن موسیٰ) جیسی کئی معدوم کتب از سرنو شایع کرائیں۔ 1918ء جرمنی میں ''مکتبۃ الاسلامیۃ'' کی بنیاد ڈالی تاکہ اسلامی مخطوطات کی اشاعت کی جائے۔ 1948ء میں مجلۃ Oriens کی داغ بیل ڈالی۔

## ہملٹن آر اے گب

## Sir Hamilton R.A.Gibb (1895 – 1971):

اسکاٹ لینڈ سے تعلق رکھنے والے اس مستشرق نے ایڈنبرا یونیورسٹی میں سامی (عربی) علوم، اور لندن یونی ورسٹی میں مشرقی وافریقی علوم کی تعلیم پائی،لندن یونی ورسٹی اور آکسفورڈ یونیورسٹی میں عربی لغت کی تدریس کی۔

تاریخ سے خاص دلچسپی تھی۔الفتوحات الاسلامیہ فی الآسیۃ الوسطیٰ،الاتجاہات الحدیثۃ فی الاسلام اور المحمدیۃ (الاسلام) مشہور تصانیف ہیں۔

### اہم تصانیف:

1- Modern Trends in Islam (1947)

2- Mohammedanism: An Historical Survey (1949)

3- Shorter Encyclopedia of Islam (1953)

4- Islamic Biographical Literature, (1962)

5- Studies on the Civilization of Islam

## فلپ حتی(1886-1978) :Philip Khuri Hitti

لبنان سے تعلق رکھنے والا انتہائی متعصب عیسائی مستشرق تھا۔امریکن پریس بائی ٹیرین مشن اسکول، امریکن یونیورسٹی بیروت اور کولمبیا یونی ورسٹی نیویارک میں تعلیم حاصل کی۔ پرینسٹن یونی ورسٹی میں اسلامیات کی تدریس کی۔ امریکہ کی وزارت خارجہ میں کونسلر کے عہدے پر رہا۔مسلمانوں کے علم ودانش کو ناقص قرار دینا اور اسلامی تاریخ کا تمسخر اڑانا اس کی

خاص عادت تھی۔

**اہم تصانیف:**

1- The Syrians in America (1924)
2- History of Syria (1957)
3- The Arabs (1960)
4- Lebanon in History (1967)
5- Makers of Arab History (1968)
6- The Near East in History (1961)
7- Islam and the West (1962)
8- Islam: A Way of Life (1970)
9- Capital cities of Arab Islam (1973)

**جبریلی فرانسسکو(1904–1996) Gabrieli Francesco:**

عربی ادب وتاریخ کا ماہر اطالوی مستشرق تھا۔روم یونی ورسٹی میں اُستاذ رہا، 1948ء میں مجمع علمی دمشق کا رکن چنا گیا۔

**اہم تصانیف:**

1- A short history of the Arabs. 1965
2- Arab historians of the Crusades. 1969
3- Muhammad and the conquests of Islam. 1973

**این میری شمل:**

**Annemarie Schimmel (April 7 1922 - January 26, 2003):**

یہ نامور مستشرقہ جرمنی میں پیدا ہوئی، پندرہ سال کی عمر میں عربی سیکھی، فارسی، ترکی اور اردو

میں بھی مہارت حاصل کی۔ برلن یونی ورسٹی میں تعلیم حاصل کی۔انقرہ یونی ورسٹی میں تاریخ مذاہب کی لیکچرار رہی۔ بون یونی ورسٹی میں بھی اعزازی پروفیسر کے طور پر کام کیا۔عمرانیات، لسانیات اور تاریخ مذاہب کی ماہر تھی۔اقبال اور مولانا روم سے خاص دلچسپی تھی۔پی ایچ ڈی بھی اقبال پر کی۔جرمن زبان میں جاوید نامہ کا ترجمہ بھی کیا۔فارسی، سندھی، اردو اور ترکی زبانوں کی منتخب شاعری کا انگریزی اور جرمنی میں ترجمہ کیا۔ پچاس کے لگ بھگ کتب لکھیں۔اسلامی دانشور اسے معتدل مستشرقین میں شمار کرتے ہیں۔

**اہم تصانیف:**

1- Muhammad Is His Messenger
2- Islamic Calligraphy
3- Islam: An Introduction
4- Rumi's World

## جیک وارڈین برگ (1930) Jacque Waardenburg:

دورِ حاضر میں ہالینڈ کا مشہور مستشرق ہے۔ایمسٹرڈم یونیورسٹی سے تعلیم حاصل کی۔اسلامی قانون اور عربی میں اختصاص حاصل ہے۔تیونس، لبنان، عراق، اردن، شام، کیلیفورنیا اور لاس اینجلس کی یونیوسٹیوں میں تدریس کی ہے۔الاسلام فی مرآۃ العرب (پی ایچ ڈی کا مقالہ)، واقعات الجامعات العربیۃ 2 جلد، اور المستشرقون، مشہور تصانیف ہیں۔دائرہ معارف اسلامیہ کی طبع ثانی میں بھرپور حصہ لیا۔

**اہم تصانیف:**

1- Religion und Religion
2- Official and popular religion in Iran
3- Islam and Christianity
4- Muslim perceptions of other religions
5- Islam. Historical, social, and political perspectives

Muslims and others

## میکسم روڈنسن (1915.2004) :Maxim Rodinson

پیرس میں ولادت ہوئی۔شام اورلبنان میں فرانسیسی حکومت کے ماتحت کالجز میں تدر
کرتا رہا۔فرانس اور یورپی حکومتوں سے متعدد میڈل اورانعامات واعزازات حاصل ک
''الاسلام والراس المالیۃ''،''محمد''،''اسرائیل والرفض العربی'' نے اسے شہرت بخشی۔

### اہم تصانیف:

Islam and Capitalism (1973)

The Arabs (1981)

Marxism and the Muslim world (1982)

Israel and the Arabs (1982)

Israel: A Colonial-Settler State? (1988)

Muhammad (2002)

## مونٹگمری واٹ (1909.2006) :Montgomery Watt

عہدِ قریب کا یہ کثیر التصانیف مستشرق اسکاٹ لینڈ سے تعلق رکھتا تھا۔اینڈ برا یونی ورسٹی
ٹورنٹو یونیورسٹی (کینیڈا)،فرانس کالج (پیرس)،جارج ٹاؤن یونیورسٹی (واشنگٹن) میں عربی ا
اسلامیات کا پروفیسر رہا۔نصرانیت کی تبلیغ سے خاص شغف تھا۔آکسفورڈ،لندن اور ایڈنبرا میں
گرجوں کی نگرانی اس کے ذمہ تھی۔محمد فی مکہ،محمد فی مدینہ،تاثیر الاسلام فی اوربا،موجز تار
الاسلام،حقیقۃ الدین فی عصرنا،الفترۃ التکوینیۃ للفکر الاسلامی مشہور کتب ہیں۔

### اہم تصانیف:

- Muhammad at Mecca (1953)
- Muhammad at Medina (1956)
- Muhammad: Prophet and Statesman (1961)

4- Islamic Philosophy and Theology (1962)

5- Islamic Political Thought (1968)

6- Islamic Surveys: (1972)

7- The Majesty That Was Islam (1976)

8- What Is Islam? (1980)

9- Muhammad's Mecca (1988)

10- Muslim-Christian Encounters: (1991)

11- Early Islam (1991)

12- Islamic Philosophy And Theology (1987)

13- Islamic Creeds (1994)

14- History of Islamic Spain (1996)

15- Islamic Political Thought (1998)

16- Islam and the Integration of Society (1998)

17- Islam: A Short History (1999)

18- A Christian Faith For Today (2002)

## برنارڈ لوئیس (1916) Bernard Lewis:

دورِ حاضر کا سب سے بڑا یہودی مستشرق ہے۔ یہ برطانوی نژاد امریکی ہے۔ لندن تاریخ اور فرانس سے اسلامیات کی تعلیم حاصل کی۔ فرانسیسی مستشرق لوئیس ماسینون کا خ شاگرد ہے۔ 1939ء میں ''حول اصول الاسماعیلیہ'' کے موضوع پر مقالہ لکھ کر لندن یونیورسٹی شعبہ مشرقیات وافریقیات سے پی ایچ ڈی کی سند حاصل کی۔

1974ء تک لندن یونی میں تاریخ اسلام وتاریخ عام کے شعبوں سے منسلک سے شعبے کے نگران تک کے عہدوں پر کام کیا۔ امریکا میں کولمبیا، اکلوہاما، برنسٹون

تدریس کی۔ فلاڈلفیا میں یہودی علوم کے ادارے میں لیکچر دیتا رہا۔ تاریخ اسلام، اسماعیلی، حشاشین، عالم عربی کے مسائل اور اسلامی تحریکات پر کئی کتابیں لکھیں۔

**اہم تصانیف:**

1- The Origins of Islamism (1940)
2- The Arabs in History (1950)
3- The Emergence of Modern Turkey (1961)
4- Race and Color in Islam (1979)
5- The Muslim Discovery of Europe (1982)
6- The Jews of Islam (1984)
7- The Political Language of Islam (1988)
8- Islam and the West (1993)
9- Islam in History (1993)
10- The Future of the Middle East (1997)
11- What Went Wrong? The Clash Between Islam and Modernity in the Middle East (2002)
12- The Crisis of Islam: Holy War and Unholy Terror (2003)
13- From Babel to Dragomans: Interpreting the Middle East (2004)
14- Islam: The Religion and the People (2008, with Bunt Ellis Churchill)

## ولفریڈ سمتھ (1916) Wilfred Cantwell Smith:

کینیڈا سے تعلق رکھنے والے اس مستشرق نے ٹورنٹو یونیورسٹی سے تعلیم حاصل کی۔ حاضر العالم الاسلامی اور عقائد اس کے خاص موضوعات ہیں۔ ہارورڈ یونیورسٹی کے علاوہ نارمن مشنری کالج لاہور میں 1941ء سے 1945ء تک مدرس رہا۔ نماذج الایمان حول العالم، الایمان نظرۃ

تاریخیۃ، الایمان والاعتقاد والفرق بینہما مشہور تصانیف ہیں۔

### باربرا ریجینا سٹوسیر Barbara Regina Fryer Stowasser:

دورِ حاضر کی خاتون امریکن مستشرق ہے۔ جرمنی میں پیدا ہوئی، Munster یونیورسٹی (جرمنی) سے اسلامیات میں پی ایچ ڈی کی، جامعہ انقرہ میں ترکی، فارسی اور عربی کی تعلیم حاصل کی۔ جامعہ کیلیفورنیا سے تاریخِ مشرق وسطیٰ میں اختصاص کی سند لی۔ جارج ٹاؤن یونیورسٹی میں پروفیسر کی حیثیت سے کام کر رہی ہے۔ امریکا کی علوم اسلامیہ کی کمیٹی کے بنیادی ارکان میں شامل ہے۔

النساء فی القرآن وفی الحدیث وفی التفسیر، التطور الدینی والسیاسی، اور ''حول بعض افکار ابن خلدون ومیکیا فیلیلی'' مشہور تصانیف ہیں۔

### رچرڈ بلٹ Richard W. Bulliet (October 30, 1940):

امریکن مستشرق ہے۔ ہارورڈ یونی ورسٹی سے 67ء میں تاریخ اور دراسات الشرق الاوسط پر پی ایچ ڈی کیا۔ کیلیفورنیا اور کولمبیا یونیورسٹیز میں تدریس کی۔ جاپان، پاکستان، ازبکستان، مصر، ہندوستان اور عمان سمیت متعدد ایشیائی ممالک کے دورے کیے۔ دراسات فی التاریخ الاسلام الاجتماعی فی القرون الوسطیٰ، التحول الی الاسلام فی القرون الوسطیٰ، الاسلام نظرۃ من الخارج مشہور تصانیف ہیں۔

### اہم تصانیف:

1- The Patricians of Nishapur, 1972

2- Islam: The View from the Edge, 1993

3- Under Siege: Islam and Democracy 1994

4- The Encyclopedia of the Modern Middle East, 1996

5- The Case for Islam -o- Christian Civilization, 2004

## 4.1.19- چند مستشرقین جو مشرف باسلام ہوئے:

### عبداللہ (اے تورامیداہ):

اٹلی میں تعلیم حاصل کرنے والا یہ مستشرق عیسائیوں کی خانقاہ کا پیشوا تھا۔ بعد میں تیونس کا

سفر کیا اور وہاں مسلمان ہوگیا۔ اس نے 80 برس کی عمر میں 1432ء میں وفات پائی، اس کی قبر تیونس کے باب المنارہ میں ہے۔

## یحییٰ نورالدین صوفی۔ رینے گینوں (Rene Guenon):

رینے گینوں کی ولادت 15 نومبر 1888ء کو ہوئی۔ 1908ء میں فری میسن کی رکنیت اختیار کی۔ 1923ء سے 1929ء تک گینوں کی کئی کتابیں شایع ہوئیں جو فلسفے اور مابعد الطبیعیات کے مباحث پر تھیں۔ 1930ء میں گینوں نے مصر میں سکونت اختیار کرلی۔ 1931ء میں پہلی مرتبہ مصر ہی میں انھوں نے اپنے اسلام کا اظہار کیا اور اپنا نام یحییٰ نورالدین استعمال کرنے لگے۔ تصوف کی طرف خاص رجحان تھا، وہ شیخ علیش الکبیر نامی ایک بزرگ سے بیعت تھے۔ مصر میں 1931ء، 1932، 1945، اور 1946ء کے دوران انہوں نے چند مزید شہرہ آفاق کتب تصنیف کیں۔ 7 جنوری 1951ء کو انتقال ہوا۔

### اہم تصانیف:

1- Crisis of the Modern World

2- East and West

3- Introduction to the Study of Hindu Doctrines

## ناصرالدین (دینیہ):

یہ فرانسیسی مستشرق ایک مدت تک الجزائر میں مسلمانوں کے ساتھ رہا اور ان کے کردار سے متاثر ہوکر مشرف بااسلام ہوگیا۔ اس نے الجزائر کے ایک عالم کی سرپرستی میں سیرت پر ایک عمدہ تصنیف "محمد ﷺ علی نبوۃ الاسلام" بھی لکھی ہے، فرانس میں انتقال ہوا اور الجزائر میں تدفین ہوئی۔

## اسد (Leopold Weiss)1900-1992:

پولینڈ کے ایک یہودی خاندان سے تعلق تھا۔ فلسفیانہ طبیعت پائی تھی مگر صحافت کا پیشہ اختیار کرکے بہت نام کمایا، مختلف ادیان کا مطالعہ بھی جاری رہا۔ اس دوران رپورٹنگ کے لیے مشرق وسطیٰ و افغانستان کا دورہ کیا اور مسلمانوں کی معاشرت سے متاثر ہوئے۔ آخر میں قرآن

مجید کے مطالعے نے ان کے دل میں ایمان کی روشنی جگا دی اور اسلام قبول کر کے محمد اسد بن گئے۔ اس کے بعد لیبیا کے جہاد میں عملاً حصہ لیا، حجاز میں سلطان ابن سعود اور ہندوستان میں علامہ اقبال کی خدمت میں بھی رہے اور پاکستان میں وزارتِ خارجہ کی ملازمت بھی کی۔

ان کی تصانیف میں جس طرح اسلام کی حقانیت کو عقلی طور پر ثابت کیا گیا ہے اس سے زمانے کی ایک بہت بڑی ضرورت پوری ہوتی ہے۔

**اہم تصانیف:**

1- Road to Mecca

2- The Message of The Qur'an

3- Translation and commentary on the Sahih Bukhari

4- This Law of Ours

5- Islam at the Crossroads

## 4.1.20- چند مشہور کتبِ مستشرقین جو عربی میں بھی دستیاب ہیں:

- پریچنگ اوف اسلام، آرنلڈ
- حیاۃ محمد، آرنلڈ ٹوین بی
- الاسلام، ولیم مور
- دین الشیعہ، الفرڈ گیوم
- الاسلام، بشپ ٹرپن
- المستشرقون والاسلام، اے جے وینسینک
- تاریخ العرب، گولڈ زیہر
- الیہودیۃ فی الاسلام، فلپ حتی
- الحرب والاسلام، لوئی ماسنیون
- طریق الاسلام، اے آرگب

- مصادر تاریخ القرآن، نکلسن
- مقدمۃ القرآن، آربل
- محمد و مطلع الاسلام، ڈی ایس مارگولیس
- الاعیاد والحمدیہ، ون گرونبام
- تاریخ مذاہب التفسیر الاسلامی، گولڈزیہر
- تاریخ ادبیاتِ ایران، ڈاکٹر ایڈورڈ براؤن
- الاتجاہات الحدیثہ فی الاسلام، بارون کیراڈی فرانسیسی
- المذہب المحمدی، بارون کیراڈی فرانسیسی
- الاسلام والمجتمع العربی، بارون کیراڈی فرانسیسی
- الاسلام، ایس ایم زویمر
- تاریخ العرب، فلپ حتی
- تاریخ سوریا، فلپ حتی
- الاسلام، الفرڈ جیوم
- اسلام العصور الوسطیٰ، محاولات فی شرح الاسلام المعاصر۔ جی فون گروبم
- الجبر والاختیار فی الاسلام۔ ایم واٹ
- جے ولسن، تاریخ الیہود
- الاسلام والقومیۃ، ہارٹنر
- العرب فی التاریخ، برنارڈ لیوئس
- تاریخ الحرب الصلیبیہ، ایم اسٹریک
- القوانین الاجتماعیہ فی القرآن، آر رابرٹ
- القرآن والتوراۃ فی القوانین الاجتماعیۃ، آر رابرٹ
- اصول الاسلام فی البنیۃ المسیحیۃ، آربیل

- امت محمدیہ، اریک شرودر
- تاریخ المسلمین وفتوحاتہم، ایڈورافرمان
- تاریخ الشعوب الاسلامیہ، کارل بروکرمین، جرمنی
- الاسلام الیوم، جے آر برے

❀❀❀

## 4.1.21- مستشرقین کی چند تصانیف جو انگریزی میں ہیں اور بازار میں عام دستیاب ہیں:

1- The Life of Mohammad. (William Muir)
2- Islamic law in Palestine and Israel. (Robert H. Eisenman)
3- A history of Islamic law. (N. J. Coulson)
4- The origins and evolution of Islamic law. (Wael B. Hallaq)
5- Islamic law: Theory and Practice. (Robert Gleave)
6- Islamic family law. (Chibli Mallat, Jane Frances Connors, University of London. 1990 - 395 Pages)
7- The justice of Islam. Lawrence Rosen - - 2000 - 234 pages
8- Contingency in a sacred law: (Baber Johansen - 1999 - 521 Pages)
9- A history of Islamic legal theories: (Wael B. Hallaq - 1999 - 294 pages)
10- Wahhabi Islam: (Natana J. DeLong-Bas - 2007 - 370 pages)
11- Women in Muslim Family Law. (John L. Esposito - 1982 - 172 pages)

12- Islam and Christian Theology (James Windrow Sweetman - 2002 - 368 Pages)

13- The Arabs in history (Bernard Lewis - 2002 - 240 pages)

14- The Arabs: a short history (Philip Khûri Hitti - 1996 - 273 pages)

15- A history of the Arab peoples (Albert Habib Hourani, Malise Ruthven - 2002 - 565 pages)

16- A history of the modern Middle East. (William L. Cleveland - 2000 - 585 pages)

17- A history of the Arabs in the Sudan (Harold Alfred Macmichael - History - 1922 - 347 pages)

18- Is religion killing us? violence in the Bible and the Quran Jack Nelson-Pallmeyer

19- Prophets in the Quran: (Brannon M. Wheeler)

20- What everyone needs to know about Islam (John L. Esposito - Page 119)

21- Islam: a short history (Karen Armstrong)

22- The truth about Muhammad: (Robert Spencer - Page 35)

23- Religions of the World (Lewis M. Hopfe, Mark R. Woodward)

24- A Dictionary of Islam: (Thomas Patrick Hughes - Page 642)

25- Hadees: or the place of departed spirits (Robert Govett)

26- The spirit of Islamic law (Bernard G. Weiss)

# مراجع


- مستشرقین کا طریقۂ کار: مولانا عبدالقدوس ہاشمی رحمہ اللہ
- مغربی مستشرقین کے فکر و فلسفہ کا اثر: مقالہ از مولانا سید ابوالحسن علی ندوی رحمہ اللہ
- المستشرقون والاسلام: شیخ مصطفی السباعی رحمہ اللہ
- الاستشراق: موقع شبکۃ مشکوٰۃ الاسلامیۃ، موسوعۃ الشاملۃ
- المستشرقون والتنصیر: علی بن ابراہیم النملۃ
- الموسوعۃ المیسرۃ فی الادیان: موقع شبکۃ مشکوٰۃ الاسلامیۃ، موسوعۃ الشاملۃ
- الاستشراق: مازن بن صلاح
- الاستشراق وجہودہ واہدافہ: عبدالمنعم محمد حسنین، جامعہ اسلامیہ مدینہ منورہ
- موسوعۃ الرد علی المذاہب: علی بن نایف الشحوذ
- موسوعۃ الغزو الفکری: علی بن نایف الشحوذ
- کتابات اعداء الاسلام ومناقشتہا: عماد السید محمد اسماعیل الشربینی
- المستشرقون والاسلام: شیخ زکریا ہاشم زکریا
- ماہنامہ ساحل، جلد 2005ء
- الاستشراق والتبشیر: ڈاکٹر محمد السید الحلی ند

# 4.2- دوسرا محاذ (الساحۃ الثانیۃ)

## الاستعمار

## (سامراجیت)

## Colonialism, Colonizing, Imperialism

(۱) استعمار یا سامراجیت کا مطلب ہے ایک ملک کا دوسرے علاقے پر نوآبادیاتی نظام قائم کرنا۔

(۲) کیمبرج ڈکشنری کے مطابق: ''colonialism سے مراد ایسے نظام کو فروغ دینا ہے جس میں ایک ملک دوسرے ملک کے معاملات کو کنٹرول کرے۔''

اگرچہ نوآبادیات بنانے کا سادہ مفہوم یہ ہے کہ کسی غیر آباد علاقے کو اپنی تحویل میں لے کر اسے آباد کیا جائے اور وہاں کے غیر مستعمل وسائل کو کام میں لایا جائے مگر یورپی طاقتوں نے انار کیٹکا اور قطب شمالی کے سوا دنیا کے جتنے علاقوں کو بھی اپنی نوآبادیات بنایا ہے وہ پہلے سے آباد تھے۔ (۳) ان طاقتوں نے ان خطوں کو اپنی کالونیاں بنا کر انہیں آباد نہیں کیا بلکہ پہلے سے آباد اقوام کو برباد کیا ہے اور مقامی وسائل کو بڑی بے دردی سے لوٹا ہے اس لیے استعمار یا نوآبادیاتی نظام کا صحیح مفہوم یہ ہے کہ ''کسی علاقے پر اپنے ایجنٹ مسلط کر کے اس طرح تسلط حاصل کرنا کہ مقامی وسائل کو لوٹا جاتا رہے۔'' (۴)

### 4.2.1- استعماری سوچ کی بنیادیں:

استعماری سوچ کی بنیاد دو چیزیں ہیں:

(الف) ہوسِ زر و اقتدار

(ب) تعصب اور نسلی تفاخر

جب دنیا کی کسی قوم کو مال و زر جمع کرنے اور اقتدار کو زیادہ سے زیادہ وسعت دینے کا خبط

ہوجائے اور ساتھ ہی دماغ میں یہ سودا سما جائے کہ نسلی، لسانی، تہذیبی اور معاشرتی طور پر اس سے برتر کوئی نہیں تو پھر وہ دیگر اقوام کے لوگوں کو انسان کا درجہ دیے بغیر ان کی زمین، ان کی تہذیب، ان کے تشخص اور ان کے تمام حقوق کو غصب کرنے کے درپے ہوجاتی ہے۔

استعماری ذہنیت بہت پرانی ہے، اس کا قدیم ترین نمونہ یونانی فاتح سکندر اعظم کی فتوحات اور اس کے معاصر فلسفی ارسطو کی تعلیمات میں ملتا ہے۔ سکندر نے 334 ق م میں یورپ سے یلغار کر کے ایشیا کے بہت بڑے رقبے کو فتح کیا تھا۔ اس مہم کے دوران ایران پر قبضے کے بعد اس نے جب ارسطو کو خط لکھ کر علاقے کے حالات بتائے تو ارسطو نے جواباً تجویز دی:

''اس ملک کو مقامی سرداروں کے مابین تقسیم کر کے ہر سردار کو بادشاہ کا لقب دیں۔ اس کا علاقہ چاہے کتنا ہی مختصر کیوں نہ ہو، پھر بھی اس کو تاج شاہی پہنا کر علاقے کا مستقل حکمران باور کرائیں۔ چوں کہ بادشاہ کا لقب پانے والا کبھی کسی دوسرے کی نہیں مانتا، اس لیے اس نظام کے قیام سے ان مقامی بادشاہوں میں ملک گیری کی جنگ ہوتی رہے گی، وہ آپ سے لڑنے کی بجائے باہم لڑتے رہیں گے۔ اگر آپ ان کے پاس رہیں تو وہ آپ کے سامنے عاجز بنے رہیں گے اور اگر آپ دور دراز قیام پذیر ہوں تب بھی وہ آپ ہی سے منسوب ہو کر خود کو معزز سمجھیں گے۔ اس طرح وہ آپ کے خلاف اٹھ کھڑے ہونے سے غافل ہو کر خانہ جنگی میں مبتلا رہیں گے۔ آپ کے بعد بھی ان کی طرف سے کسی بھی خطرے سے امن رہے گا۔''

یہ استعماری سوچ کا پہلا سبق تھا جسے سکندر اعظم نے فوری طور پر نافذ کر دیا۔ اس کے ساتھ ساتھ اس نے دیگر اقوام پر اپنی تہذیب مسلط کرنے کے لیے تمام مفتوحہ علاقوں میں جہاں تک ممکن ہوا، یونانی تہذیب وتمدن کا پرچار کیا، مصر کے ساحل پر اپنے نام سے اسکندریہ شہر بسا کر وہاں یونانی فلسفیوں کے مراکز قائم کیے تاکہ یہی فلسفہ دنیا کی نظریاتی اساس بنے، دریائے آمو کے ساحل سے لے کر ٹیکسلا تک جگہ جگہ یونانی تہذیب کے حجری نمونے پھیلا دیے گئے جو آج بھی سکندر کی استعماری سوچ کی گواہی دے رہے ہیں۔ سکندر تو ایشیا سے واپسی کے سفر میں عین جوانی میں مر گیا مگر اس پالیسی کے نتیجے میں ایشیائی اقوام نے لگ بھگ چار سو سال تک یونانیوں

کی غلامی کی اور اس دوران ایک دوسرے سے دست وگریباں رہیں۔

## 4.2.2- عالم اسلام کے خلاف استعماری کوششیں، تمہیدی دور:

سکندرِ اعظم اور ارسطو کے دور کا یورپی استعمار کسی خاص امتیاز کے بغیر تمام ایشیائی اقوام کے خلاف تھا، مگر صلیبی جنگوں کے بعد یورپ سے استعمار کی جو لہر اٹھی وہ بنیادی طور پر مسلم اقوام ہی کے خلاف تھی۔ اگرچہ یورپ کے اس استعمار کا ظہور صحیح معنوں میں پندرہویں صدی عیسوی کے اواخر میں ہوا مگر اس سے قبل ایک تمہیدی دور تھا جس کے نقوش دورِ خلافتِ راشدہ سے صلیبی جنگوں کے اختتام تک نظر آتے ہیں۔ اس تمام مدت میں نہ صرف یورپ کی بازنطینی سلطنت، بلکہ دوسرے عیسائی ممالک اور دیگر اسلام دشمن عناصر درج ذیل چار اہداف کے لیے سرگرم نظر آتے ہیں:

① اسلامی خلافت کا خاتمہ ② مقاماتِ مقدسہ پر قبضہ

③ عالم اسلام پر قبضہ ④ عالم اسلام کو فنا کر دینا

تاریخ میں ان میں سے ہر ہدف کے لیے کی گئی کوششوں کے بیّن ثبوت موجود ہیں جن کی تفصیل درج ذیل ہے:

### اسلامی خلافت کا خاتمہ:

دورِ خلافتِ راشدہ سے لے کر خلافتِ عباسیہ تک کفریہ طاقتوں کا پہلا ہدف یہی تھا کہ خلافت اسلامیہ کا خاتمہ کر دیا جائے کیوں کہ اس کے بغیر مسلمانوں کو منتشر اور کمزور کرنا بظاہر ممکن نہیں تھا۔ اس اوّلین ہدف کی تکمیل کے لیے حضرتِ عمر فاروق رضی اللہ عنہ کو ساسانی سلطنتِ ایران کے ایک گماشتے فیروز نے قتل کیا۔ پھر اسی مقصد کے لیے حضرت عثمان رضی اللہ عنہ کے خلاف باغیانہ فضا بنائی گئی اور انہیں بلوائیوں کے ذریعے شہید کیا گیا۔ اسی قسم کی سازشوں نے جنگِ جمل، جنگِ صفین اور سانحۂ کربلا کو جنم دیا۔ مگر ان تمام تر سانحوں کے باوجود خلافتِ اسلامیہ نہ صرف باقی رہی بلکہ پوری آب وتاب سے دنیا پر غالب رہی۔

خلافتِ عباسیہ کے دورِ زوال میں اسلام دشمن طاقتوں کو اس وقت بڑا اطمینان ہوا جب مصر میں ایک متوازی جعلی خلافت، دولتِ بنو عبید قائم ہو جانے سے عالم اسلام دو حصوں میں بٹ

گیا اور تین سو سال تک یہی صورتحال رہی مگر پھر سلطان صلاح الدین ایوبی نے دولتِ بنوعبید کا خاتمہ کر کے مسلمانوں کو دوبارہ ایک خلافت کے ماتحت جمع کر دیا۔

چند عشروں بعد 616ھ میں جب چنگیز خان نے عالم اسلام پر حملہ کیا تو اہل یورپ نے خلافتِ اسلامیہ کے خاتمے کی بڑی امیدیں وابستہ کرلیں۔ اسی دور میں عیسائی مبلغین چنگیز خان کے دربار میں جا پہنچے اور تاتاریوں کو نصرانیت کی طرف مائل کرنے لگے۔ چنگیز خان کے پوتے ہلاکو خان نے محرم 656ھ میں بغداد کو تہس نہس کر کے خلافت کا خاتمہ کیا تو عیسائیوں نے اسے اپنی فتح کے مترادف قرار دیا۔ ہلاکو خان کی فوجیں دمشق میں داخل ہوئیں تو مقامی عیسائیوں نے ان کا استقبال کیا، انہوں نے جلوس نکال کر خوشی کا اظہار کیا اور نعرے لگائے کہ ''یسوع مسیح کا دین غالب آ گیا۔''

**مقاماتِ مقدسہ پر قبضہ:**

مقاماتِ مقدسہ پر قبضے کے لیے عالم اسلام پر صلیبی جنگوں کا عذاب مسلط کیا گیا جس میں اَن گنت مسلمان قتل کیے گئے اور درمیان میں 90 سال تک صلیبیوں نے القدس پر قبضہ جمائے رکھا۔ صلاح الدین ایوبی کے القدس کو بازیاب کرانے کے بعد صلیبی جنگیں نئی شدت سے چھڑ گئیں اور مزید سو سال تک یہ سلسلہ جاری رہا۔

**عالم اسلام پر قبضہ:**

صلیبی جنگوں کے آغاز ہی میں یورپ میں مسلمانوں کے خلاف استعماری سوچ خاصی حد تک پروان چڑھ چکی تھی۔ اس وقت ان کا مقصد صرف بیت المقدس پر قبضہ کرنا نہیں تھا بلکہ وہ خلافتِ اسلامیہ کے خاتمے کے درپے بھی تھے اور عالم اسلام کی زمین اور وسائل کو ہر ممکنہ حد تک ہتھیانا چاہتے تھے۔

**عالم اسلام کو فنا کر دینا:**

اس تمام ترک وتاز کے پیچھے دنیا سے اسلام کے خاتمے اور اپنے مذہب کے عالمگیر غلبے کی زبردست خواہش موجود تھی۔ آخر میں عیسائیوں نے اپنے مقاصد کے لیے تاتاریوں کو ساتھ ملانے کی بھی کوشش کر ڈالی جس کے بعد واقعی یہ خطرہ پیدا ہو گیا تھا کہ وہ مذکورہ چاروں اہداف کو

حاصل کرلیں گے۔

### 4.2.3- ماضی میں اہلِ باطل کی ناکامی کی وجوہ:

مگر اس موقعے پر مسلمانوں نے تین ایسے بنیادی کام کیے جن کی وجہ سے عیسائیوں اور تاتاریوں کی تمام کوششیں ناکام ہوگئیں:

① مسلمانوں نے تاتاریوں میں دعوتِ اسلام کا کام شروع کردیا جس کی بدولت تاتاری جوق در جوق مشرف باسلام ہونے لگے اور امت کو جان کنی کی اس کیفیت سے نجات مل گئی۔

② مسلمانوں نے خلافت کے منصب کی اہمیت کو سمجھا اور بغداد میں خلافتِ عباسیہ کے خاتمے کے صرف دو سال بعد سلطان رکن الدین بیبرس نے مصر میں بنوعباس کی خلافت کو بحال کردیا۔ اس طرح امت مسلمہ کا نقطۂ وحدت برقرار رہا۔

③ مسلمانوں نے پرچم جہاد بلند رکھا اور کفار کے سامنے سر نہ جھکایا۔ سالہا سال تک سلطان ایوبی کے جانشین صلیبیوں سے اور سلطان جلال الدین خوارزم شاہ جیسے جری مجاہد تاتاریوں سے برسرِ پیکار رہے۔ پھر سلطان سیف الدین قطز نے عینِ جالوت میں تاتاریوں کو شکستِ فاش دے کر ان کی فتوحات کا گھمنڈ توڑ ڈالا اور سلطان رکن الدین بیبرس نے ساتویں صلیبی جنگ میں سینٹ لوئی کے چھکے چھڑا کے عیسائیوں کے عزائم کو خاک میں ملادیا۔

### 4.2.4- سوچ بچار اور ذہنی تبدیلیوں کا دور:

غرض یہ وہ تجربات تھے جن کے بعد اسلام دشمن طاقتیں یہ سمجھنے پر مجبور ہوگئیں کہ خلافت اسلامیہ کو ختم کرنا، مقامات مقدسہ پر قبضہ کرنا اور مسلمانوں کو مٹانا آسان نہیں، اس سے پہلے زمین ہموار کرنا ہوگی اور بہت سے مراحل طے کرنے پڑیں گے۔ چنانچہ اس کے بعد استشراق کی تحریک بھی آگے بڑھی اور دو صدیوں میں یورپ نے علمی، فکری اور فنی لحاظ سے خاصی پیش رفت کرلی، اس طرح پندرہویں صدی عیسوی تک وہ فلکیات، جغرافیہ، ریاضی اور سائنس میں خاصے بہتر ہوگئے۔ بیرونی دنیا سے تعلقات میں بھی وہ نسبتاً آگے بڑھ گئے تھے۔ اس سلسلے میں اٹلی کے سیاح مارکوپولو کے اس سفر کو نظر انداز نہیں کیا جاسکتا جو تیرہویں صدی عیسوی کے آخری عشرے

میں یورپ سے چین تک کیا گیا تھا۔ اس سفر میں بحیرۂ روم، شام، بیت المقدس، عراق، خراسان اور کوہِ پامیر کا دشوار گزار اور طویل راستہ طے کیا گیا تھا۔ مارکو پولو نے چین کے بادشاہ قبلائی خان کے دربار میں رہ کر یورپ اور چین کو قریب لانے کی کوشش کی تھی۔ اس کی کتاب (مارکو پولو کا سفرنامہ) نے اہل یورپ کو بیرونی دنیا کے بارے میں جو معلومات دیں وہ ان کی ذہنی وسعت میں اضافے کا بہت بڑا سبب بنی۔

چودھویں اور پندرھویں صدی میں اہل یورپ نے اسلحہ سازی پر خاص توجہ دی اور سلطنتِ عثمانیہ کو چھوڑ کر وہ عالم اسلام کے بہت سے ممالک سے بہتر اسلحہ بنانے لگے جس کے بعد ایک بار پھر ان کے ذہنوں میں دنیا پر قبضے کی امنگیں چٹکیاں لینے لگیں۔

## 4.2.5- استعماری سوچ کو مہمیز دینے والے چار واقعات:

ان صلاحیتوں، ولولوں اور چند خاص واقعات کے نتیجے میں 1450ء سے 1500ء تک کی نصف صدی میں یورپ ایک ایسے سوئے ہوئے دیو کی طرح کروٹیں لینے لگا تھا جس کی نیند پوری ہو چکی ہو۔ یہ خاص واقعات جن سے یورپ میں از سرِ نو استعماری سوچ کو تقویت ملی، چار تھے:

① 1453ء میں عثمانی ترک حکمران سلطان محمد فاتح نے قسطنطنیہ فتح کر کے قدیم بازنطینی رومی سلطنت کا خاتمہ کر دیا تھا۔ اس صورتحال میں یورپی دنیا انگاروں پر لوٹنے لگی اور قسطنطنیہ کی شکست کا بدلہ لینا ان کے لیے ایک قومی چیلنج بن گیا۔

② قسطنطنیہ پر مسلمانوں کے قبضے کے بعد وہاں آباد بہت سے رومی فلسفی اور حکماء یورپ چلے گئے اور وہاں ایک بار پھر قدیم یونانی فلسفے کا پرچار کرنے لگے۔ یورپ میں استشراق کی تحریک چلنے کی وجہ سے پہلے ہی علمی سرگرمیاں رفتہ رفتہ تیز ہو رہی تھیں، اب لوگ ایک بار پھر یونانی فلسفہ پڑھ کر ارسطو اور افلاطون کے سیاسی نظریات سے متاثر ہونے لگے اور استعماری سوچ بھی ساتھ ساتھ پروان چڑھنے لگی۔

③ اسی زمانے میں اسپین پر عیسائیوں کے قبضے کی تکمیل کا سانحہ پیش آیا۔ جنوری 1492ء میں قسطلیہ کے حکمران فرڈی ننڈ نے اسپین میں مسلمانوں کے آخری مورچے غرناطہ پر بھی قبضہ

کرلیا اور یوں اس سرزمین پر مسلمانوں کے آٹھ سو سالہ عہد کا خاتمہ ہوگیا۔ اس تاریخی فتح نے یورپ کے غرور کو بڑھانے اور اس کے استعماری عزائم کو شہ دینے میں اہم کردار ادا کیا۔

④ اسی زمانے میں ترکوں نے یورپی ممالک کی ریشہ دوانیوں کے پیشِ نظر مشرقی ممالک میں یورپی قافلوں کی آمدورفت کے راستے بند کردیے تھے جس سے یورپی تاجر سخت پریشان تھے۔ انہوں نے نئے تجارتی راستوں کی تلاش شروع کردی اور مسلم دنیا کی خوشحال مگر عسکری لحاظ سے کمزور ریاستوں تک پہنچنے میں کامیاب ہوگئے۔ اس طرح استعمار کا دروازہ کھل گیا۔

غرض یہ چار اسباب تھے جن کی وجہ سے یورپ کے استعماری جذبات نے انگڑائی لی اور ایک نئے دور کا آغاز ہوا۔

## 4.2.6- استعمار کا اصل دور:

سولہویں صدی عیسوی کے اواخر میں اصل عالمگیر استعمار کا آغاز ہوتا ہے۔ اگر بغور دیکھا جائے تو معلوم ہوگا کہ یہاں یورپ کے اجتماعی شعور نے مسلمانوں کو نیست و نابود کرنے کے اس قدیم طرزِ عمل کو ترک کردیا تھا جس میں ابتداء ہی سے خلافت کے خاتمے کو ہدف بنایا گیا تھا۔ اب جو ترتیب سامنے آتی ہے اس میں قدرتی وسائل اور تجارتی و اقتصادی قوت کے اعتبار سے خود کو مضبوط بنانا سرفہرست تھا، ثانیاً تجارت و اقتصادیات کے میدان میں مسلمانوں پر غلبہ حاصل کرنے کو اہمیت دی گئی تھی، ثالثاً مسلمانوں کا تجارتی اور عسکری محاصرہ کرنے کا فیصلہ کیا گیا تھا۔ خلافت کے خاتمے، اسلامی دنیا کے حصے بخرے کرنے اور مسلمانوں کو منانے کے اہم اہداف کو مؤخر کردیا گیا تھا۔

اس طرح اب ہمیں مسلمانوں کے مقابلے میں یورپی اقوام کا نقشِ راہ کچھ یوں مرتب ہوتا نظر آتا ہے۔

① معاشی و تجارتی مضبوطی اور خود انحصاری

② اسلامی دنیا کا اقتصادی اور عسکری محاصرہ

③ تجارت و اقتصاد میں دنیا پر غالب آنا

④ اسلامی دنیا پر تسلط

⑤ خلافتِ اسلامیہ کا خاتمہ

⑥ عالم اسلام کو ٹکڑے ٹکڑے کرنا

⑦ عالم اسلام کے تشخص کا خاتمہ کر دینا

استعمار کی پیش قدمی کی اس داستان کو ذرا تفصیل سے جاننا بہت ضروری ہے تا کہ ہم استعماری قوتوں کے طریقہ واردات کو اچھی طرح سمجھ سکیں۔ ہم اس داستان کو اسی طرح نمبر وار شروع کرتے ہیں۔

## پہلا مرحلہ: معاشی و تجارتی مضبوطی اور خود انحصاری:

قدیم زمانے سے یورپ کی مشرق سے تجارت کے مشہور راستے دو تھے:

(الف) مصر کے ساحل اسکندریہ پر اتر کر اونٹوں کے ذریعے بحیرۂ احمر تک سفر ہوتا تھا اور وہاں سے پھر بحری جہازوں کے ذریعے ہندوستان اور مشرق بعید کے ممالک تک پہنچا جاتا تھا۔

(ب) شام کے ساحل پر اتر کر خشکی کا راستہ اختیار کر لیا جاتا تھا۔ عراق اور خراسان کے راستے ہندوستان اور چین تک سفر کیا جاتا تھا۔

چودھویں اور پندرھویں صدی عیسوی میں ان دونوں راستوں پر عثمانی خلافت کا قبضہ تھا۔ یورپی تاجران سے گزر کر مشرقی ممالک تک جاتے، اپنا سامان خود فروخت کرتے تھے اور معقول نفع لیتے تھے۔ اگرچہ ان کی مصنوعات پست معیار کی تھیں، پھر بھی کچھ چیزیں اسلامی دنیا میں ہاتھوں ہاتھ لی جاتی تھیں جیسے اونی کپڑے، تالے، آئینے اور چاکلیٹ۔ اس تجارت کا سب سے بڑا مرکز ہندوستان تھا، جس کی مصنوعات اور گرم مصالحے یورپ میں بے حد مقبول تھے۔ یورپی تاجر نیل، گڑ، سوتی کپڑے، ڈھاکے کی ململ، کاغذ، قالین اور غالیچے بھی یہیں سے خرید کر اپنے ملک لے جاتے تھے اور مہنگے داموں فروخت کر کے خوب نفع کماتے تھے۔

جب ترکوں نے اپنے تحفظات کی وجہ سے یورپ پر خشکی اور سمندر کے تجارتی راستے بند کر دیے تو مرچ مصالحے سمیت مشرق کی تمام تجارت انہی کے ہاتھ میں آ گئی۔ یورپی تاجر اپنا

تمام سامان مصر کے ساحلوں پر سستے داموں فروخت کرنے اور ترکوں سے مشرقی ملکوں کی مصنوعات مہنگے داموں خریدنے پر مجبور ہو گئے اور ان کی اقتصادی خود انحصاری خطرے میں پڑ گئی۔ اس تجارتی نقصان کو دیکھتے ہوئے یورپی جہاز راں بحر اوقیانوس سے مشرق کی طرف نکلنے والے کسی نئے راستے کی تلاش میں سرگرداں ہو گئے۔

اگرچہ اس کوشش کے پسِ پردہ ترکوں کی طاقت کو توڑنے اور قسطنطنیہ کی شکست کا بدلہ لینے کے جذبات پنہاں تھے مگر یورپ ابھی اتنا طاقتور نہیں ہوا تھا کہ عثمانیوں سے براہِ راست ٹکر لے سکتا، اس لیے تجارتی مفادات حاصل کر کے اپنی اقتصادیات کو مضبوط بنانے پر توجہ مرکوز کر دی گئی جس کے لیے پہلا قدم یہی تھا کہ تجارتی راستے تلاش کر کے ترکوں کی جانب سے کی گئی اقتصادی ناکہ بندی کو غیر مؤثر کر دیا جائے۔ چنانچہ یورپ کے بڑے بڑے تاجر اور امراء اس کوشش میں جٹ گئے۔ اُس دور میں ایک ایسے یورپی شہزادے کا قصہ بھی ملتا ہے جس نے اپنی زندگی اور تمام مال و دولت نئے سمندری راستوں کی تلاش میں گزار دی تھی مگر کامیاب نہ ہو سکا۔

**واسکوڈی گاما کی مہم:**

بہر کیف یہ کوششیں جاری رہیں۔ عیسائیوں کی ایک تنظیم ٹیمپلرز اس سلسلے میں غیر معمولی طور پر سرگرم تھی۔ صلیب کی خاطر رضا کارانہ طور پر لڑنے والی اس عسکری تنظیم کی بنیاد پہلی صلیبی جنگ کے بعد بیت المقدس میں رکھی گئی تھی اور مسلمانوں کو اس کی خوں خواری کا بارہا تجربہ ہو چکا تھا۔ ٹیمپلرز سود خور بھی تھے اور بینکاری کے ذریعے بڑے بڑے بادشاہوں کو قرض دے کر اپنا اسیر بنا لیتے تھے۔ جب صلاح الدین ایوبی نے بیت المقدس کو بازیاب کرانے کے بعد شام کے ساحلوں کو ٹیمپلرز کے قلعوں سے پاک کیا تو یہ لوگ یورپی ممالک میں چلے گئے۔ وہاں ایک صدی تک انہوں نے جو فتنہ و فساد برپا کیا اس کی وجہ سے 1312ء میں پوپ نے اس جماعت پر پابندی لگا دی۔ اس کے بعد ٹیمپلرز زیرِ زمین چلے گئے اور کچھ مدت بعد ''آرڈر اوف کرائسٹ'' کے نام سے پرتگال میں دوبارہ منظم ہو گئے۔ پوپ نے بھی 1319ء میں اس نئی جماعت کو کام کرنے کی منظوری دے دی۔

جب پندرہویں صدی عیسوی کے وسط میں یورپی دنیا کو نئے سمندری راستوں کی تلاش ہوئی تو آرڈر اوف کرائسٹ اس مہم میں پیش پیش رہی۔ پرتگال اور اسپین کی حکومتیں ایسی مہمات کی خاص طور پر سرپرستی کررہی تھیں۔ان مہمات کے نتیجے میں یورپی حکمرانوں کو پہلی بار یہ معلوم ہوا کہ مشرقی افریقہ کے ساحلوں پر مسلمانوں کی چھوٹی چھوٹی پرامن اور خوشحال ریاستیں ہیں جن کی عسکری قوت نہ ہونے کے برابر ہے، یہ ساحلی آبادیاں بین الاقوامی تجارت کے مراکز ہیں جہاں عرب، ہندوستان اور چین تک کے تجارتی بیڑے آتے ہیں۔ پرتگال کا ایک تجربہ کار جہاز راں بارتھولودیاز 1488ء میں جنوبی افریقہ کے کونے تک جا پہنچا تھا اور اس نے یہ دیکھ لیا تھا کہ یہاں سے براعظم کی زمین مشرق کی طرف مڑ رہی ہے۔اس کے بعد یورپین جہاز رانوں کو مشرقی ممالک تک پہنچنے کے نئے راستے ملنے کی بڑی امید پیدا ہوگئی تھی۔

ان دنوں اسپین میں فرڈی ننڈ اور پرتگال میں شاہ مینوئیل کی حکومت تھی۔ یہ دونوں اسلام دشمنی میں ایک دوسرے سے بڑھ کر تھے۔اب تک پرتگال اور اسپین میں محکوم مسلمانوں کی بڑی تعداد آباد تھی مگر ان دونوں جنونی حکمرانوں نے اپنے اپنے دائرہ حکومت میں مسلمانوں کی نسل کشی کرنے یا انہیں زبردستی عیسائی بنانے کی ایسی مہم چلائی کہ کچھ ہی مدت میں اسپین اور پرتگال کے بڑے بڑے شہر مسلمانوں سے بالکل خالی ہوگئے۔

فرڈی ننڈ اور اس کی ملکہ ازابیلا نے مسلمانوں کے مدمقابل غالب ترقوت بننے کے جذبے سے نئے سمندری راستوں کی تلاش پر بھی توجہ مرکوز کردی اور غرناطہ پر قبضے کے فوراً بعد اگست 1492ء میں مشہور جہاز ران کرسٹوفر کولمبس کو مشرقی ملکوں کا راستہ ڈھونڈنے کے لیے روانہ کردیا، چوں کہ اس وقت تک اہلِ یورپ کو یہ معلوم ہو چکا تھا کہ دنیا گول ہے، اس لیے کولمبس کا خیال تھا کہ وہ مغرب کی طرف سفر کرتے ہوئے ایک نہ ایک دن مشرقی ملکوں کے ساحلوں تک پہنچ جائے گا مگر وہ راستہ بھٹک کر نئی دنیا جنوبی امریکا پہنچ گیا۔ بظاہر اس کا یہ سفر ناکام رہا کہ وہ مشرقی ملکوں کا راستہ تلاش نہ کرسکا مگر اس طرح یورپ کو امکانات کی ایک نئی دنیا مل گئی اور آنے والے دنوں میں وہ اس کے تمام تر معدنی وقدرتی وسائل کے بلاشرکتِ غیرے مالک بن گئے۔

ادھر پرتگال کا بادشاہ مینوئیل بھی اسپین کی طرح نئی ریاستوں کو تلاش کرنے اور ان کے وسائل لوٹنے کے لیے پر تولنے لگا۔ اس طرح خطرہ پیدا ہو گیا کہ کہیں یورپ کی یہ دو نئی پروان چڑھتی ہوئی طاقتیں آپس میں نہ ٹکرانے لگیں۔ اس موقع پر ہمیں اہلِ یورپ کی سوجھ بوجھ پر غور کرنا چاہیے کہ پرتگال کی طرف سے کسی نئی مہم کے آغاز سے قبل ہی عیسائی دنیا کے پیشوا پوپ کے ذریعے اس مسئلے کو طے کر لیا گیا۔ پوپ نے فیصلہ دیا کہ اسپین بحر اوقیانوس کے مغرب میں مہم جوئی کرے گا اور پرتگال بحر اوقیانوس کے مشرق میں افریقہ اور بحرِ ہند میں اپنی کوششوں کا آغاز کر سکتا ہے۔

اس معاہدے کے بعد شاہِ پرتگال نے واسکوڈی گاما نامی ایک جہاز ران کی کمان میں ایک بحری مہم بھیجنے کا فیصلہ کیا۔ واسکوڈی گاما انتہائی متعصب اور سنگ دل انسان تھا۔ اس کی تربیت آرڈر اوف کرائسٹ کے خون خوار جنگ جوؤں نے کی تھی کیوں کہ اس کا باپ اس تنظیم کا مقامی لیڈر تھا۔

اس مہم کے کئی مقاصد تھے۔ بڑا مقصد تو یہ تھا کہ نیا راستہ تلاش کر کے ہندوستان تک پہنچنے کی کوشش کی جائے گی۔ پرتگالیوں کو یہ غلط فہمی بھی تھی کہ ہندوستان میں عیسائی آباد ہیں، اس لیے شاہ مینوئیل کا خیال تھا کہ ان سے معاہدہ کر کے مسلمانوں کے خلاف اتحاد بھی بنایا جا سکتا ہے۔ یہ بھی طے کر لیا گیا تھا کہ تجارتی سرگرمیوں کے ساتھ ساتھ جہاں بھی ممکن ہو گا لوٹ مار کر کے مسلمانوں اور مشرقی دنیا کی کمزور ریاستوں کو مرعوب کیا جائے گا۔ اس مقصد کے لیے ڈی گاما نے پرتگال کی جیلوں سے سزائے موت کے بہت سے قیدیوں، غنڈوں اور لٹیروں کو اس شرط پر آزاد کرا کے اپنے ساتھ لیا کہ وہ دینِ مسیح کے لیے جان دینے کے لیے تیار رہیں گے۔

8 جولائی 1497ء کو واسکوڈی گاما کا بحری بیڑا لزبن کی بندرگاہ سے روانہ ہونے لگا تو استعمار کے اس ہراول دستے کو پوپ کا پیغام پڑھ کر سنایا گیا جس میں انہیں مسلمانوں اور افریقی باشندوں کو بے دریغ قتل کرنے کی پوری اجازت دی گئی تھی۔ چار جہازوں پر مشتمل اس بحری بیڑے میں 170 افراد شامل تھے، 3 سال کا راشن اور سامانِ رسد ساتھ لے لیا گیا تھا۔ چار جدید توپیں بھی نصب تھیں۔ تین ماہ میں چھ ہزار میل کا سفر کر کے یہ لوگ دسمبر میں جنوبی افریقہ کے کونے راس امید (کیپ ٹاؤن) پہنچے اور پھر مشرق کی طرف مڑ گئے، جو بالکل اجنبی راستہ تھا۔ وہ

خیریت سے موزمبیق پہنچ گئے جو مسلمان ریاست تھی۔ واسکوڈی گاما یہاں مسلمانوں کا روپ دھار کر موزمبیق کے سلطان سے ملا اور مقامی روایت کے مطابق اسے کچھ تحائف پیش کیے جن میں تانبے کے برتن، ٹین کی گھنٹیاں اور سوتی کپڑا شامل تھے۔ سلطان ان چیزوں کو دیکھ کر ناراض ہوا، اسی طرح یہ چیزیں موزمبیق کے بازار میں بھی کوئی خاص قیمت نہ پا سکیں کیوں کہ ان کا معیار اسلامی دنیا کے لحاظ سے بہت کمتر تھا۔ واسکوڈی گاما نے برافروختہ ہو کر جاتے جاتے موزمبیق کے ساحل پر گولہ باری کی اور فرار ہو گیا۔

اب اس کا بیڑا اسلامی دنیا کے بیچ میں سفر کر رہا تھا۔ راستے میں انہیں عربوں کے تجارتی جہاز بھی ملے جو سپاہیوں اور اسلحے سے خالی تھے۔ واسکوڈی گاما نے انہیں لوٹ لیا، ساتھ ہی پرتگالیوں کو یہ اندازہ ہو گیا کہ سمندر میں مسلمانوں کے دفاعی انتظامات برائے نام ہیں اور ان پر دست درازی کرنا کوئی مشکل نہیں۔ فروری 1498ء میں استعمار کا یہ پہلا قافلہ کینیا کی بندرگاہ ملندی پہنچا۔ یہاں ڈی گاما کو کچھ ہندو جہاز ران مل گئے، ڈی گاما اپنی دانست میں انہیں عیسائی سمجھا اور ان سے دوستی گانٹھ لی۔ انہی ہندوؤں نے پرتگالیوں کی راہنمائی کی اور انہیں ہندوستان لے گئے۔
(مستشرقین کا یہ دعویٰ کہ مسلمان امیر البحر احمد بن ماجد نے ان کی رہبری کی تھی، قطعاً غلط ہے)

18 مئی 1498ء کو استعماریوں کا یہ پہلا بیڑہ ہندوستان کے ساحل کالی کٹ پر لنگر انداز ہوا۔ ابھی ہندوستان میں مغلیہ سلطنت کی بنیاد نہیں پڑی تھی اور دہلی کی مسلمان حکومت کا ساحلوں پر کوئی اثر و رسوخ نہیں تھا۔ کالی کٹ اور ساحل کی اکثر ریاستیں خود مختار تھیں۔ واسکوڈی گاما نے کالی کٹ کے راجا کا دل جیتنے کے لیے شیشے کی مالائیں، شہد اور سوتی کپڑا ساتھ لیا جسے دیکھ کر ایک عرب تاجر نے کہا: ''راجا یہ کچرا ہرگز قبول نہیں کرے گا۔''

یہی ہوا، شروع میں راجا نے پرتگالیوں کی آؤ بھگت کی مگر تحائف دیکھ کر اس کا موڈ خراب ہو گیا اور واسکوڈی گاما کو اپنے مقاصد میں پوری کامیابی نہ ہو سکی۔ البتہ اس نے افریقہ اور ہندوستان کی ساحلی حکومتوں کی کمزوریوں کا اچھی طرح اندازہ لگا لیا تھا۔ یہاں تین ماہ قیام کر کے وہ واپس پرتگال پہنچ گیا۔

اس سے لی گئی معلومات کی روشنی میں 1500ء میں شاہ مینوئیل نے کپتان کابرل کی قیادت
میں ایک اور مہم ہندوستان بھیجی جس نے کالی کٹ کے راجہ کو پرتگالیوں کا خاطر خواہ استقبال
کرنے کی سزا دینے کے لیے شہر پر گولہ باری کی اور پھر دوسری ساحلی ریاستوں سے گرم مصالحہ
کی بھاری کھیپ لے کر واپس آیا۔

مگر استعماری صرف تجارت کرنے نہیں گئے تھے، کمزور ریاستوں پر جبراً قبضہ اور خونریزی
ان کے منشور میں شامل تھی، چنانچہ اس کے بعد واسکوڈے گاما 1502ء میں دوبارہ باقاعدہ بحری
فوج لے کر ہندوستان روانہ ہوا، راستے میں اس نے موزمبیق اور تنزانیہ کے ساحلوں پر تو
کر کے لوٹ مار کی اور مسلمانوں کا بے دریغ خون بہایا۔ ہندوستان پہنچ کر اس نے گوا کے شہر پر
حملہ کیا اور اسے اپنا باج گذار بنالیا۔ کنانور (کانور) کے ساحل پر اس نے عربوں کے ایک جہاز
کو گھیر لیا جس میں عمرہ کر کے مکہ سے واپس آنے والے سات سو مرد، عورتیں، بوڑھے اور بچے
سوار تھے، واسکوڈی گاما نے جہاز کا ساز و سامان لوٹنے کے بعد مسافروں کو کمروں میں بند کر کے
جہاز کو نذرِ آتش کر دیا اور تمام زائرین جل کر کوئلہ بن گئے۔

گاما نے جلد ہی کالی کٹ پر حملہ کر کے پچاس کے لگ بھگ مسلمانوں اور ہندوؤں کو گرفتار
کر لیا اور شہریوں کے مجمعے میں ان کے ہاتھ پیر اور ناک کان کاٹ کر ان کے تڑپنے کا تماشا دیکھتا
رہا۔ کچھ مسلمانوں کو جہاز کے مستولوں سے باندھ کر دیر تک ان پر تیر اندازی کی مشق کی گئی۔

گاما کے بعد ایک اور پرتگیزی کمانڈر البرقوق، نے گوا میں مسلمانوں کا قتل عام کر کے اپنی
حکومت کو یہ مراسلہ لکھا:

''میرے شمشیر زن چار دن تک لوگوں کا خون بہاتے رہے، شہر سے مسلمانوں کا خاتمہ کر کے
ہی ہماری تلواروں کی پیاس بجھی، ہم نے ان کی لاشوں سے مساجد کو بھر دیا اور انہیں آگ لگا دی۔''

اس طرح کے مناظر دکھا کر استعماری قوتیں نہ صرف مسلمانوں کے ہاتھوں اپنی گزشتہ
شکستوں کا غصہ نکال رہی تھیں بلکہ وہ شروع ہی سے دنیا پر اپنی دہشت بٹھا دینے کی کوشش بھی
کر رہی تھیں۔

ہندوستان کے بارے میں پرتگالیوں کا یہ خیال تو شروع ہی میں غلط ثابت ہوگیا تھا کہ وہاں عیسائی بستے ہیں جن سے اتحاد کر کے اپنی طاقت بڑھائی جاسکتی ہے تاہم واسکوڈی گاما کی مہم سے یورپ کو تجارت کے نئے راستے اور لوٹ مار کے لیے موزوں شکارگاہیں مل گئیں، اس طرح ترکوں کی تجارتی ناکہ بندی بے اثر ہوگئی۔ ادھر کولمبس کے سفر نے یورپ کو وسائل سے مالا مال ایک نئی دنیا دے دی اور یوں یورپ میں خوشحالی کے دور کی بنیاد پڑ گئی اگرچہ خوشحالی کی یہ عمارت مظلوم اقوام کی ہڈیوں پر تعمیر کی جارہی تھی۔

## دوسرا مرحلہ: اسلامی دنیا کا اقتصادی و عسکری محاصرہ:

یورپ نئے تجارتی راستوں کے ذریعے اپنی معاشی مضبوطی کا سفر طے کرنے لگا تھا۔ تاہم اسے توقع نہیں تھی کہ وہ اتنی جلد مسلمانوں کا اقتصادی اور عسکری محاصرہ کرنے میں بھی کامیاب ہوجائے گا۔ مگر یورپی جہاز رانوں نے اس جہاں گردی اور لوٹ مار کے دوران اچھی طرح دیکھ بھال لیا تھا کہ مسلمان اپنے سمندری راستوں کی حفاظت سے بڑی حد تک غافل ہیں۔ سلطنتِ عثمانیہ کے سوا کسی کی بحریہ میں دم خم نہیں ہے، خصوصاً وہ علاقے جو سلطنتِ عثمانیہ کی دسترس سے دور ہیں، بالکل کھلے پڑے ہیں۔ چنانچہ چند برسوں کے اندر اندر یورپ کے مختلف ملکوں کے مسلح بیڑے عالم اسلام کی مختلف بحری سرحدوں پر قبضے کرنے لگے اور رفتہ رفتہ ان کی گرفت اتنی مضبوط ہوگئی کہ اسلامی دنیا اقتصادی و عسکری اعتبار سے محاصرے میں آگئی۔

## پرتگیزی استعمار:

ہندوستان کے بعد پرتگال نے خلیج فارس اور بحیرۂ عرب کو کسی مزاحمت سے خالی دیکھ کر 1515ء میں مسقط، ہرمز اور بحرین جیسی اہم بندرگاہوں پر قبضہ کرلیا۔ عرب تاجر جو صدیوں سے ان تجارتی راستوں کو استعمال کر رہے تھے، چند عشروں کے اندر اندر منظر نامے سے باہر ہوگئے۔ نہ صرف ایشیا سے یورپ کی تجارت پرتگیزیوں کے ہاتھ میں آگئی بلکہ عرب دنیا کی عجم سے تجارت کے بحری راستوں پر بھی یورپیوں کا قبضہ ہوگیا۔

اس موقعے پر عثمانی ترکوں نے چند ایک بار بحری بیڑے بھیج کر یورپی نو واردوں کو ان سمندروں

سے بھگانے کی معمولی کوششیں کیں مگر ہر بار انہیں ناکام لوٹنا پڑا۔ کچھ عرصے بعد انہوں نے اسے دوسرے مسلم ملکوں کا مسئلہ سمجھ کر نظر انداز کر دیا اور اپنے لیے بحیرۂ احمر اور بحیرۂ روم کی حفاظت کافی سمجھی۔ اس طرح بحرِ ہند اور بحیرہ عرب پر اجارہ داری کے لیے یورپیوں کو کھلی چھوٹ مل گئی۔

## بحر الکاہل استعماریوں کے قبضے میں:

اس وقت تک اہل یورپ کو نو دریافت شدہ براعظم (امریکا) کی وسعت اور اس کے پار کی دنیا کا کچھ اندازہ نہیں تھا۔ 1519ء میں ایک پرتگیزی جہاز ران میجی لن نے اسپین کے بادشاہ فلپ کے تعاون امریکا کے پار کی دنیا دیکھنے کے لیے کمر باندھی۔ وہ اپنے بحری بیڑے کو لے کر اسپین سے امریکا کی سمت روانہ ہوا۔ سوا دو مہینے تک بحرِ اوقیانوس میں سفر کرنے کے بعد وہ امریکا کے مشرقی ساحل تک پہنچا، یہ برازیل کی ایک بندرگاہ تھی۔

کچھ مدت یہاں رکنے کے بعد 1520ء کے اواخر میں یہ بیڑا جنوب کی طرف روانہ ہوا اور جنوبی امریکا کے جنوبی کونے کے ساتھ گھوم کر مغرب کی طرف مڑا، ایک ماہ تک وہ ایک طویل آبنائے سے گزرتا رہا جسے اب آبنائے میجی لن کہا جاتا ہے۔

آبنائے کے پار انہیں ایک نیا سمندر بحر الکاہل ملا اور ہسپانوی اس کی حدود ناپنے کے لیے نکل کھڑے ہوئے، یہ بحر الکاہل میں یورپی جہاز رانوں کا پہلا سفر تھا۔ اس سمندر کو عبور کر کے وہ 1521ء میں چند سرسبز و شاداب جزائر تک جا پہنچے۔ میجی لن نے ان جزائر کو اسپین کے بادشاہ فلپ سے منسوب کر کے فلپائن کا نام دیا۔

فلپائن میں اس وقت مسلمانوں کی حکومت تھی، یہ لوگ چودھویں صدی عیسوی میں مسلم جہاز رانوں اور تاجروں کے کردار اور تبلیغ سے متاثر ہو کر مشرف باسلام ہوئے تھے۔ ہسپانویوں نے اس پرامن اور خوشحال مسلم ریاست کو بھی اپنی خون آشامی کا نشانہ بنایا، میجی لن کے ساتھیوں نے اس علاقے سے ناجائز طریقے سے سونا جمع کیا اور مئی 1522ء میں مشرق کی طرف سفر کر کے بحرِ ہند سے ہوتے ہوئے واپس اسپین پہنچ گئے۔ اس طرح کرۂ ارض کا پہلا مکمل چکر لگایا گیا۔

اس کے بعد مشرق بعید پر اسپینی استعمار کے حملے شروع ہو گئے۔ فلپائنی مسلمان ہسپانیہ کی

جدید توپوں کا مقابلہ نہ کر سکے اور یوں 1565ء میں ہسپانوی فلپائن کے ساحلوں پر قابض ہو گئے۔ 1771ء میں انہوں نے منیلا پر بھی قبضہ کر لیا (یہ قبضہ 1899ء تک برقرار رہا جس کے بعد فلپائن امریکا کے قبضے میں چلا گیا)

فلپائن پر قبضے کے دوران ہسپانویوں نے یہاں نصرانیت کی تبلیغ اور لوگوں کو جبراً عیسائی بنانے کی مہم بھی جاری رکھی جس کی وجہ سے آج اس ملک میں 70 فی صد آبادی عیسائی ہے۔ مسلمان جو 30 فیصد ہیں، زیادہ تر ملک کے جنوبی حصے میں آباد ہیں۔

1578ء میں ہسپانویوں نے ایک اور مسلم ریاست برونائی پر حملہ کیا، اس وقت وبائی امراض کی وجہ سے وہ یہاں قابض نہ رہ سکے مگر جاتے جاتے برونائی کی تمام دولت لوٹ کر لے گئے۔

اسی زمانے میں افریقہ کے ساحلوں اور وسطی ریاستوں پر اسپین، پرتگال اور دوسرے یورپی ملکوں کے مسلح تاجروں کی تاخت وتاراج جاری رہی جس کے نتیجے میں براعظم افریقہ کے 14 ملین افراد غلام بنا کر امریکا میں فروخت کیے گئے اور افریقہ کی وہ آبادیاں جہاں مسلمانوں کے دم سے علم وفن کے چراغ جلا کرتے تھے، جہالت اور بدحالی کا مرقع بن کر رہ گئیں۔

یہاں اس غلط فہمی کا ازالہ کر لینا چاہیے کہ استعمار کی کامیابیوں میں یورپی طاقتوں کے اتحاد کا کوئی کردار تھا۔ حقیقت یہ ہے کہ استعمار کی کامیابیوں میں مسلم حکمرانوں کی اپنی غفلت، اجنبی اقوام پر حد سے زیادہ اعتماد اور اپنے ساحلوں کی حفاظت سے خطرناک حد تک غفلت کا سب سے زیادہ دخل تھا۔ جہاں تک یورپی ملکوں کا تعلق ہے وہ ہرگز متحد نہیں تھے بلکہ استعماری سرگرمیوں کے ساتھ ساتھ باہمی تنازعات اور جنگوں میں بھی مشغول تھے۔ یہ تنازعات اور جنگیں کسی نہ کسی صورت میں دوسری جنگ عظیم تک جاری رہیں۔ یہ کہا جائے تو بے جا نہ ہوگا کہ اسلامی دنیا کی دولت وثروت کو لوٹنے کی غیر معمولی حرص ہی نے یورپی ممالک کو باہم دست وگریباں کیا تھا۔ مسلم حکمران اگر ذرا بھی موقع شناسی سے کام لیتے تو وہ یورپی ممالک کے اس اختلاف سے فائدہ اٹھا کر انہیں بہت جلد قدموں پر جھکا سکتے تھے مگر اس کے برعکس وہ عواقب سے بے خبر ہو کر یورپیوں کے جھگڑوں میں خود استعمال ہوتے رہے۔

## سونے کی چڑیا، برطانوی استعمار کے نرغے میں:

شروع میں ایک صدی تک برصغیر کے ساحلوں پر پرتگیزیوں کی بلاشرکتِ غیرے اجارہ داری رہی اور وہ جی بھر کے اس تجارتی راستے سے نفع کماتے رہے، ساتھ ساتھ نصرانیت کی تبلیغ بھی جاری رکھی۔ ہندوستان کی دولت کے قصے سن کر سولہویں صدی کے اواخر میں ہالینڈ کے باشندے ولندیزی (ڈچ) چار جہازوں کا بیڑا لے کر یہاں آئے اور پہلی بار اس صنعتی وتجارتی جنت کے نظارے دیکھے۔ اس طرح بحرِ ہند میں ولندیزیوں کی تجارت کا سلسلہ شروع ہوا۔

اس وقت تک ہندوستان میں ایک اہم تبدیلی رونما ہو چکی تھی، لودھی خاندان کی کمزور حکومت کی جگہ مغلوں نے ایک مضبوط حکومت قائم کر لی تھی اس لیے یورپی تاجروں کو پہلے کی طرح کھلی مار دھاڑ کرنے سے احتراز کرنا پڑا۔ انہوں نے پہلی کوشش یہ کی کہ ہندوستان کی مغل حکومت ان سے مطمئن رہے اور ان کی تجارتی سرگرمیوں میں کوئی رکاوٹ نہ ڈالے۔ باقی مراحل بعد میں طے کرنے کا فیصلہ کیا گیا۔

ہالینڈ کے ایک تاجر جان ہوائیلین نے چھے سال گوا میں قیام کرنے کے بعد یہاں کے حالات پر ایک کتاب لکھ کر اپنے ہم وطنوں کو یہاں سرمایہ کاری کا شوق دلایا۔ اس نے یہ بھی انکشاف کیا کہ یہاں کی تجارت پر پرتگیزیوں کی گرفت اتنی مضبوط نہیں کہ ان کی اجارہ داری ختم نہ کی جا سکے۔ 1595ء میں اس کتاب کی اشاعت کے ساتھ ہی ہالینڈ کے تاجروں نے ''یونائیٹڈ ایسٹ انڈیا کمپنی اوف نیدرلینڈ'' کے نام سے ایک تجارتی کمپنی قائم کر لی جسے ''ڈچ ایسٹ انڈیا کمپنی'' (Dutch East India Company) بھی کہا جاتا ہے۔ ولندیزی تجارتی نظم وضبط میں پرتگیزیوں سے بہتر ثابت ہوئے۔ انہوں نے جلد ہی پرتگیزی تاجروں کا زور توڑ دیا۔ اس طرح ہندوستان کی تجارت پر ولندیزی چھانے لگے۔

اس دوران جان کے سفرنامے کے انگریزی، فرنچ، اطالوی اور جرمن زبانوں میں تراجم ہو گئے اور کئی ملکوں کے جہاز ران ہندوستان آنے کے منصوبے بنانے لگے۔ ہندوستان کو یورپ میں سونے کی چڑیا کہا جانے لگا اور اس کے سنہرے پر کاٹنے کے لیے یورپی تجار کے مسلح گروہ

ایک دوسرے پر بازی لے جانے کی کوشش کرنے لگے۔

ان دنوں ولندیزیوں نے ہندوستان کی برآمدات خصوصاً مرچ مصالحے کی قیمتیں بڑھادی تھیں۔ جب انہوں نے ایک پونڈ گرم مصالحے کی قیمت میں یکدم پانچ شلنگ کا اضافہ کیا تو لندن کے تاجروں نے احتجاج شروع کر دیا اور 24 ستمبر 1599ء کو یہ فیصلہ کیا کہ وہ اپنی الگ تنظیم بنا کر ہندوستان سے تجارتی مال خود درآمد کریں گے۔ چنانچہ 31 دسمبر 1600ء کو ملکۂ برطانیہ کی اجازت سے ''ایسٹ انڈیا ٹریڈنگ کمپنی'' کی داغ بیل پڑی جس میں 125 حصہ داروں کے 72 ہزار پونڈ جمع تھے۔ ملکہ کی جانب سے کمپنی کو پندرہ سال تک بلاشرکتِ غیرے ہندوستان سے درآمد و برآمد کے حقوق دے دیے گئے۔

یاد رہے کہ اس زمانے میں تمام استعماری ممالک اپنی اپنی تجارتی کمپنیوں کو ریاستی اختیارات کی مانند مراعات دے رہے تھے۔ انہیں لوٹ مار، قتلِ عام، جنگوں، معاہدوں، علاقوں پر قبضے اور قلعوں کی تعمیر تک کا مجاز بنایا جا رہا تھا تاکہ وہ زیادہ سے زیادہ دولت اور وسائل لوٹ سکیں۔ ایسٹ انڈیا کمپنی کی دیکھا دیکھی ہالینڈ کی حکومت نے بھی 1602ء میں اپنی تجارتی کمپنی کو مذکورہ اختیارات دے دیے۔

ہندوستان میں تجارت شروع کرنے کے لیے انگریزوں نے اپنے نمائندے کیپٹن ہاکنز کو روانہ کیا، اس کا جہاز 1608ء میں سورت کی بندرگاہ پر لنگر انداز ہوا، ہاکنز دہلی پہنچ کر مغل بادشاہ نورالدین جہانگیر کے دربار میں حاضر ہوا اور سورت میں تجارتی کوٹھی کی تعمیر کی اجازت کے ساتھ ضروری تجارتی مراعات کی درخواست پیش کی مگر اس کی کوئی خاص پذیرائی نہ ہوئی اس لیے کہ وہاں پہلے سے پرتگیزیوں کی خاصی ساکھ بنی ہوئی تھی، ہاکنز تین سال تک وہاں ٹھہرا رہا۔ آخرکار جہانگیر نے کمپنی کو اجازت نامہ جاری کر دیا مگر عین وقت پر پرتگیزیوں نے بادشاہ کے کان بھر کے اسے منسوخ کرا دیا اور 1611ء میں ہاکنز کو نامراد واپس جانا پڑا۔

انگریزوں نے ہمت نہ ہاری اور کچھ ہی دنوں بعد کیپٹن بیسٹ کو سفیر بنا کر دو مضبوط مسلح بحری جہازوں کے ساتھ ہندوستان روانہ کر دیا۔ سورت کے قریب پرتگیزیوں نے اس بیڑے کو روکنا

چاہا مگر کیپٹن بیسٹ نے انہیں شکست دے دی۔ جہانگیر کو خبر ہوئی تو انگریزوں کی بہادری سے متاثر ہوا اور جب کیپٹن عرضی لے کر اس کے ہاں حاضر ہوا تو جہانگیر نے ایسٹ انڈیا کمپنی کو سورت اور احمد آباد میں تجارت کا پروانہ جاری کر دیا۔

یہ انگریزوں کی بہت بڑی کامیابی تھی، جلد ہی ان کی تجارت خوب چمک اٹھی۔ مگر شاہِ برطانیہ جیمز اول کی خواہش تھی کہ برطانیہ پرتگیزیوں اور ولندیزوں کو اس کھیل سے باہر کر کے تنہا اس تجارت کا مالک بن جائے۔ اس مقصد کے لیے اس نے اپنے نہایت ہوشیار سفیر سر ٹامس ریو کو دہلی بھیجا جس نے وہاں تین سالہ قیام کے دوران بادشاہ کا بے حد اعتماد حاصل کر لیا۔ اسے پرتگیزیوں اور ولندیزوں کی تجارت پر پابندی لگوانے میں تو کامیابی نہ ہوئی مگر 1618ء میں اس نے جہانگیر سے یہ اجازت نامہ حاصل کر لیا:

''آئندہ ایسٹ انڈیا کمپنی کے تاجر ہندوستان میں آزادانہ تجارت کر سکیں گے۔ ساحلی آبادیوں میں کرائے کے مکانات میں رہ سکیں گے۔ اپنے معاملات کا خود انتظام کر سکیں گے۔ گھر سے باہر نکلتے ہوئے اسلحہ ساتھ لے سکیں گے۔۔ ان پر عام محصولات کی شرح سے زائد ٹیکس عائد نہیں کیا جائے گا۔''

ایک سال بعد 1619ء جب ٹامس ریو برطانیہ واپس گیا تو ایسٹ انڈیا کمپنی سورت اور احمد آباد میں تجارتی کوٹھیاں تعمیر کر چکی تھی۔ جلد ہی اس نے کلکتہ کے قریب ہگلی میں ایک دفتر بھی کھول لیا۔ چند سالوں بعد گولکنڈہ کے حاکم سے بھی پروانہ تجارت حاصل کر لیا، نیز پٹنہ اور ڈھاکا میں بھی تجارتی ادارے قائم کر لیے۔ یہ ایسٹ انڈیا کمپنی کا ابتدائی دور تھا جس میں خستہ و بدحال برطانیہ خوشحالی اور ترقی کی راہ پر چل نکلا تھا تاہم اسے ہندوستان کے سیاسی معاملات میں دخل دینے کی جرأت اب بھی نہیں تھی۔ اس وقت بھی امرائے برطانیہ ہندوستان کے دولت مندوں کو رشک سے دیکھتے تھے۔ دونوں ملکوں کے امراء میں سرمایے کے تناسب کا اندازہ اس بات سے لگایا جا سکتا ہے کہ سورت کے صرف ایک تاجر عبدالغفور کی دولت ایسٹ انڈیا کمپنی کے تمام اثاثوں اور سرمایے سے زائد تھی۔

ایسٹ انڈیا کمپنی آہستہ آہستہ اپنی مراعات میں اضافوں کی راہیں تراشتی گئی۔ 1637ء میں ایک انگریز ڈاکٹر بائیڈن، شاہ جہاں کے دربار میں آیا۔ اس نے شاہ جہاں کی بیمار بیٹی جہاں آراء کا کامیاب علاج کیا جس کے صلے میں شاہ جہاں نے منہ مانگا انعام دینے کا اعلان کر دیا۔ اس موقع پر ڈاکٹر بائیڈن نے اپنے قومی مفادات کو ترجیح دیتے ہوئے بنگال کی تجارت پر محصول معاف کرنے کی درخواست منظور کروالی۔ اس طرح انگریزوں کا تجارتی نفع بہت بڑھ گیا۔ 1639ء میں مدراس کی بندرگاہ پر ان کی اجارہ داری قائم ہوگئی۔ 1640ء میں انہوں نے راجہ چندگری سے مدراس میں ایک وسیع رقبہ خرید کر اس پر تجارتی کوٹھی کے نام سے ایک قلعہ ''سینٹ جارج'' تعمیر کر لیا۔

اس دوران ہالینڈ اور برطانیہ کی کمپنیوں میں رقابت دن بدن بڑھتی چلی گئی حتیٰ کہ باقاعدہ جنگیں بھی ہوئیں جن کے نتیجے میں ولندیزیوں کو ہندوستان کا ساحل چھوڑ کر مشرقِ بعید کی طرف جانا پڑا جہاں چند برسوں بعد انہوں نے انڈونیشیا کو اپنے استعماری شکنجے میں لے لیا۔ انگریزوں نے پرتگیزیوں کی ساکھ ختم کر انہیں صرف گوا میں محدود کر دیا۔ ایسٹ انڈیا کمپنی کی کامیابیوں کو دیکھتے ہوئے اس پر برطانوی حکومت کی نوازشات بڑھتی گئیں اور 1661ء میں بمبئی کا ایک پورا جزیرہ اسے دے دیا گیا۔

انگریزوں کی تجارتی فتوحات جو اب لوٹ مار کی حدود کو چھونے لگی تھیں، فرانس کو اُکسانے کا سبب بنیں اور 1664ء میں فرانسیسی تاجروں نے فرنچ ایسٹ انڈیا کمپنی (French East India Company) کے نام سے ایک تجارتی فرم بنا کر ہندوستان کے ساحلوں پر اپنی سرگرمیوں کا آغاز کر دیا۔

## عالمگیر اور ایسٹ انڈیا کمپنی:

ہندوستان میں یہ عظیم مغل بادشاہ اورنگ زیب عالمگیر کا زمانہ تھا اور مغلوں کی سطوت کا آفتاب نصف النہار پر تھا۔ اگر مغل چاہتے تو ایک لحظے میں یورپی تاجروں کو ہندوستان سے بھگا سکتے تھے، مگر وہ تصور نہیں کر سکتے تھے کہ چند تاجر یا ان کے چند سو مسلح نوکر مسلمانوں کی عظیم مغل حکومت کا کچھ بگاڑ سکتے ہیں۔ تاہم اورنگ زیب کو اس وقت حیرت ہوئی جب انگریزوں نے 1688ء

میں نو وارد فرانسیسیوں کو طاقت کے زور پر تجارت سے روکنے کی کوشش کی۔ اورنگ زیب نے اندازہ لگالیا کہ انگریز تجارت سے آگے بڑھ کر سیاسی قوت بننے کی کوشش کررہے ہیں چنانچہ دہلی سے فرمان جاری کردیا گیا کہ انگریزوں کو ہندوستان سے نکال دیا جائے۔ اس حکم کے مطابق سورت اور بمبئی میں کمپنی کے دفاتر، کارخانے اور کوٹھیوں کو بند کردیا گیا اور ان کے گورنر کو بمبئی میں اس کے قلعے میں نظر بند کردیا گیا۔ عیار انگریزوں نے اس وقت انتہائی ندامت، معذرت اور عاجزی کا اظہار کرکے مغل حکومت کا اعتماد حاصل کرنے کی کوشش کی، بار بار کی کوشش کی بعد انہیں معافی مل گئی اور مراعات بھی بحال کردی گئیں۔ اس طرح 1687ء میں کمپنی پھر فعال ہوگئی۔

اگلے ہی سال کمپنی نے وعدہ خلافی کرتے ہوئے چٹاگانگ (بنگال) پر قبضے کی کوشش کی جو ناکام رہی۔ عالمگیر کا عتاب نازل ہوا تو کمپنی نے بنگال کے صوبے دار ابراہیم خان کی وساطت سے ایک بار پھر دربارِ عالمگیری میں معذرت پیش کی۔ عالمگیر نے وسعتِ قلبی کا ثبوت دیتے ہوئے انہیں پھر معاف کردیا۔ وجہ وہی تھی کہ مغل حکمران اپنی اقبال مندی اور شان وشوکت کے سامنے غیر ملکی تاجروں سے کوئی خطرہ محسوس نہیں کرتے تھے۔

**اورنگ زیب کے بعد:**

مگر حالات بدلتے دیر نہیں لگتی اور مصائب بتا کر نہیں آتے، 1707ء میں اورنگ زیب عالمگیر کے فوت ہوتے ہی اس کے جانشینوں میں پھوٹ پڑ گئی اور دیکھتے ہی دیکھتے ہندوستان کی مغل حکومت کی ہیبت قصہ پارینہ بن گئی۔ عالمگیر کے جانشین بہادر شاہ اوّل نے شیعہ مسلک اختیار کرکے اپنے باپ کی اس تمام محنت پر پانی پھیر دیا جو احیائے سنت کی خاطر کی گئی تھی۔ فرخ سیر کے دورِ حکومت میں امراء کی بن آئی اور بادشاہ ان کے ہاتھوں میں کھلونا بن گیا۔

انگریزوں کو اس وقت ایک اور نادر موقع ملا جب شاہ فرخ سیر کی لڑکی آتش زدگی کا شکار ہوکر جھلس گئی اور حکیم اس کا علاج نہ کرسکے۔ انگریزوں کو خبر ہوئی تو ایک ماہر طبیب ڈاکٹر ہملٹن کو دہلی بھیج دیا جس کے علاج سے شہزادی کے زخم ٹھیک ہوگئے۔ اس ڈاکٹر نے بھی انعام میں ہیرے جواہر لینے کی بجائے قومی مفاد کا خیال کیا اور انگریزوں کو تمام محصولات ←

مستثنیٰ کرنے کا مطالبہ کیا جو منظور کرلیا گیا۔

ان دنوں فرانسیسیوں اور انگریزوں کی تجارتی رقابت باقاعدہ جنگوں کی شکل اختیار کرگئی تھی۔ دونوں طاقتیں ہندوستان کے ساحلوں سمیت دنیا کے مختلف خطوں میں برسرپیکار تھیں مگر مغل حکومت کچھ نہیں کرپارہی تھی کیوں کہ ان حالات میں جب کہ صوبے مرکز سے آزاد ہورہے تھے، ساحلوں کا انتظام کرنے کی کسے فرصت ہوتی۔

1740ء میں کرناٹک کی جنگ میں ایسٹ انڈیا کمپنی نے فرانسیسیوں کو شکستِ فاش دے کر ان کے جرنیل گونٹ لالی کو پانڈی چری کے مقام پر گرفتار کرلیا۔ فرانس یہ معاہدہ کرنے پر مجبور ہوگیا کہ وہ مزید علاقوں پر قبضے کی کوشش نہیں کرے گا۔

اس کے بعد ہندوستان کے ساحلوں پر ایسٹ انڈیا کمپنی واحد غالب طاقت کی حیثیت اختیار کرگئی۔ اس عرصے میں دوسری استعماری طاقتوں نے بھی دنیا کے مختلف گوشوں میں اپنے اپنے پنجے اس طرح گاڑ لیے تھے کہ اب انہیں وہاں سے بے دخل کرنا آسان نہیں رہا تھا۔ اس طرح اٹھارہویں صدی عیسوی کے وسط میں استعمار نے مسلم دنیا کا اقتصادی وعسکری محاصرہ مکمل کرلیا تھا اور مسلمان بڑی حد تک ان کے گھیرے میں آچکے تھے۔

## تیسرا مرحلہ: تجارت واقتصاد میں دوسرے ملکوں پر غالب آنا:

مسلم دنیا کا اقتصادی وعسکری محاصرہ مکمل کرنے کے بعد عالمی تجارت بھی یورپی طاقتوں کے ہاتھوں میں چلی گئی تھی لہٰذا مسلم ملکوں کی پیداوار کا زیادہ تر نفع اب اہلِ یورپ کی جیب میں جارہا تھا۔ اگر یہ نفع جائز اور قانونی طریقوں کے مطابق ہوتا تو اس کا کوئی حدوحساب ہوتا مگر استعماری طاقتیں تجارت نہیں لوٹ مار کرنے پر تلی ہوئی تھیں اور اپنے خزانوں کو دن دوگنا رات چوگنا بھرتی جارہی تھیں۔ اٹھارہویں صدی عیسوی میں ایسٹ انڈیا کمپنی نے بنگال کے ساحلی علاقوں میں جو لوٹ مار مچائی اس کا اندازہ اس بات سے لگائیے کہ انگریز تاجر مقامی تاجروں کو برآمدات کی مطلوبہ قیمت کا صرف چوتھائی حصہ دے کر مال جبراً چھین لیتے ہیں اور اپنی دی ہوئی چیز کے بدلے صحیح نرخ سے پانچ گنا زیادہ قیمت وصول کرتے تھے۔ اسی طرح مقامی ہنرمندوں کو اپنی

مرضی کے مطابق برائے نام اجرت دے کر کام کرواتے تھے۔ ایک انگریز سوداگر ولیم بولٹس کا بیان ہے:

''انگریز یہ طے کر لیتے تھے کہ ایک کاریگر کتنا سامان تیار کرے گا اور اسے کیا اجرت ملے گی۔ اگر کوئی مقررہ اجرت لینے سے انکار کرتا تو اس کو باندھ دیا جاتا۔''

رمیش چند ''ہندوستان کی اقتصادی تاریخ'' میں لکھتے ہیں:

''ہندوستان سے جتنا مال ولایت روانہ کیا جاتا، اس کے معاوضے میں ایک پائی بھی لوٹ کر نہ آتی..... کمپنی کی پالیسی یہ تھی کہ ہندوستان کی صنعت کو برباد کر دیا جائے، بنگال میں ریشم کے کپڑے کو تیار ہونے سے روکنے کے کھلے احکام صادر کیے گئے۔ ریشم بافوں کو جبراً کمپنی کے کارخانوں میں ملازم لگایا گیا اور کسی دوسرے کے لیے کپڑا بننے کی ممانعت کر دی گئی۔ اسی طرح جنوبی دکن کی چھینٹوں اور سوتی کپڑوں کی صنعت برباد کر دی گئی۔''

(بحوالہ انگریز کے باغی مسلمان: ص60)

اس قسم کی لوٹ مار سے یورپی طاقتوں نے چند عشروں میں اپنے خزانے بھر لیے۔ اس کے ساتھ ساتھ یورپ اپنی صنعت وتجارت کو بہتر بنانے میں بھی جٹا ہوا تھا۔ وہاں مشینی اور صنعتی انقلاب آچکا تھا اور دھڑا دھڑ مصنوعات تیار ہو رہی تھیں۔ یورپی ممالک کی حکومتیں صنعت کاروں اور تجارتی فرموں کو زیادہ سے زیادہ مراعات دے رہی تھیں جس سے ان ملکوں کی خوشحالی بڑھ رہی تھی۔ غرض ان جائز اور ناجائز سرگرمیوں کی بدولت اٹھارہویں صدی عیسوی کے وسط تک یورپ صنعت وتجارت اور اقتصادی طاقت کے لحاظ سے اکثر اسلامی ملکوں سے آگے نکل گیا جس کے بعد اس کے لیے اپنے چوتھے ہدف کو پانا آسان ہو گیا۔

## چوتھا مرحلہ: اسلامی دنیا پر تسلط:

استعماری طاقتیں اب دنیائے اسلام پر غلبہ پانے کے لیے تیار تھیں۔ اگرچہ مسلمان حکمرانوں پر بھی اب ان کے عزائم واضح ہونے لگے تھے مگر وہ ان کے خلاف اپنی ذمہ داریاں ادا کرنے کی بجائے بدستور عیش وعشرت اور باہمی تنازعات میں الجھے رہے۔ ہندوستان میں انگریز

سب سے پہلے بنگال پر قبضے کے لیے پر تول رہے تھے اور کلکتہ میں قلعہ فورٹ ولیم کو مستحکم کرا رہے تھے۔ بنگال کے حاکم نواب سراج الدولہ نے انہیں لگام دینے کی کوشش کی اور 19 ستمبر 1755ء کو انہیں فرمان لکھا:

''ہم نے تاجر سمجھ کر تمہارا خیر مقدم کیا تھا، یہ مطلب نہ تھا کہ تم قلعے اور مورچے تعمیر کرنے لگو۔ ان قلعوں کو فوراً مسمار کر دیا جائے۔''

انگریزوں نے حکم ماننے سے انکار کر دیا اور کھلم کھلا جنگ کے لیے تیار ہو گئے۔ اس طرح تجارت کے لبادے سے استعمار کا بھیانک چہرہ اہلِ ہند کے سامنے عیاں ہو گیا۔ یہاں سے انگریزوں کی سرگرمیوں کا ایک نیا باب شروع ہوتا ہے۔ انہوں نے غدار امراء کی مدد سے 1757ء میں سراج الدولہ کو پلاسی کے میدان میں شکست دی اور بنگال پر قبضہ کر کے ہندوستان کی ایک مستقل طاقت کی حیثیت حاصل کر لی۔

اس کے بعد میسور کے حکمرانوں حیدر علی اور ٹیپو سلطان نے جنگیں کیں۔ ٹیپو سلطان نے ایک مدت تک انگریزوں کا ڈٹ کر مقابلہ کیا۔ فرانس اور برطانیہ میں رقابت بدستور موجود تھی، ٹیپو نے اس سے فائدہ اٹھاتے ہوئے فرانسیسیوں سے صلح کر لی اور انہیں اپنی فوج میں ملازم رکھ لیا۔ اگرچہ فرانس بھی ایک استعماری طاقت تھا اور اس زمانے میں خلافت ترکیہ سے اس کی زبردست چپقلش چل رہی تھی مگر ہندوستان کے حالات کے پیشِ نظر سلطان ٹیپو کے نزدیک انگریز فرانسیسیوں سے زیادہ خطرناک تھے، اور مقابلے پر بھی وہی تھے۔

سلطان ٹیپو کا خیال تھا کہ شاہِ فرانس نپولین کے ذریعے انگریزوں کو شکست دی جا سکتی ہے چنانچہ سلطان نے فرانس سے بہتر تعلقات قائم کرنے کی سعی جاری رکھی۔ دہلی کے مغل بادشاہ، حاکم افغانستان شاہ زمان، نواب حیدر آباد دکن اور عثمانی خلیفہ سمیت متعدد مسلم فرمانرواؤں کو بھی انگریز کے مقابلے میں متحد ہونے کی دعوت دی مگر کہیں سے مدد نہ ملی بلکہ نواب حیدر آباد نظام بھی ٹیپو کے خلاف انگریزوں کا حلیف بن گیا۔ شاہ زمان سلطان کی مدد کے لئے روانہ ہوا تھا مگر راستے میں اسے بغاوت کی خبر ملی جس کی وجہ سے اسے واپس جانا پڑا۔ جب آخر میں انگریزوں نے ٹیپو کو

سری رنگا پٹم میں گھیر لیا تب اس نے مجبور ہو کر نپولین سے ہندوستان پر فوج کشی کر کے انگریزوں کو مار بھگانے کی تاکیدی درخواست کی۔ نپولین نے وعدہ کر لیا مگر مشرق وسطیٰ کی مہم میں ناکامی کی وجہ سے وہ ہندوستان نہ آسکا۔

اس زمانے میں خلافتِ عثمانیہ نے فرانس کے حملے سے بچاؤ کے لیے برطانیہ سے تعلقات بڑھا لیے تھے، اسے ٹیپو کے فرانس سے دوستانہ تعلقات کا علم ہوا تو ہندوستان کی صورتحال پر غور کیے بغیر ٹیپو سلطان کو فہمائش کی وہ انگریزوں سے صلح کر لے اور فرانس سے تعلق قطع کر دے۔ خلیفہ نے لکھا: فرانسیسی خلافتِ عثمانیہ کے سخت ترین دشمن ہیں، اور ان سے ہماری جنگ چل رہی ہے۔ ان کے مقابلے میں انگریز بہتر ہیں۔ ہمارا تجربہ ہے کہ یہ بھلے اور شریف لوگ ہیں اس لیے آپ انگریزوں سے صلح کر لیں اور فرانسیسیوں سے تعلقات ختم کر دیں ورنہ ہم آپ کے خلاف کارروائی پر مجبور ہو جائیں گے۔''

غرض اس عجیب صورتحال میں مسلمان فیصلہ نہیں کر پا رہے تھے کہ کس کا ساتھ دیں اور کس سے دشمنی کریں۔ ٹیپو کا کسی نے ساتھ نہیں دیا اور آخر کار ہندوستان کا یہ مردِ حر 4 مئی 1799ء کو اپنے پایہ تخت سری رنگا پٹم میں انگریزوں کا مقابلہ کرتے ہوئے شہید ہو گیا۔

ان جنگوں میں انگریزوں نے مکاری اور فریب کے تمام حربے آزمائے ''لڑاؤ اور حکومت کرو'' ان کا بنیادی اصول رہا۔ اپنے خلاف کسی اتحاد کی تشکیل کو ناممکن بنانے کے لیے وہ ایک وقت میں کسی حکمران کو دولت دے کر اپنا ہم نوا بناتے اور کسی کو ڈرا دھمکا کر چپ سادھنے پر مجبور کر دیتے۔ باحمیت حکمرانوں کے مقابلے میں وہ جب بھی کمزور پڑنے لگتے معاہدے کر کے خود کو بچا لیتے اور جوں ہی سنبھلتے، معاہدوں کو فراموش کر کے حریف پر ٹوٹ پڑتے۔ انہوں نے ہر باحمیت حاکم کے خلاف اندرونی غداروں کی جماعت تیار کی اور اس کے بعد کھلی جنگیں لڑ کر انہی غداروں کے بل بوتے پر غیر متوقع فتوحات حاصل کیں۔ بنگال میں سراج الدولہ کے خلاف اسی کے وزیر میر جعفر کو اور میسور میں ٹیپو کے خلاف اس کے معتمد مصاحبین، میر صادق، میر معین الدین، پورنیا اور غلام علی لنگڑے کو پوری کامیابی سے استعمال کیا۔

ٹیپو سلطان کے بعد انگریزوں نے دیکھتے ہی دیکھتے وسطی ہندوستان اور گنگا جمنا کے درمیانی علاقے دوآبے پر بھی تسلط حاصل کرلیا۔ سندھ کے میر انگریزوں کے حلیف تھے مگر 1843ء میں انگریزوں نے سندھ پر بھی قبضہ کرلیا، 1849ء میں پنجاب پر بھی قابض ہوگئے۔ 1857ء میں انگریزوں کے تسلط کے خلاف تحریک آزادی کے شعلے بھڑکے جن کو جلد ہی سرد کردیا گیا۔ ہزاروں بے گناہوں کا خون بہایا گیا، دہلی کے آخری مغل بادشاہ بہادر شاہ ظفر کو گرفتار کرکے رنگون بھیج دیا گیا۔ تاج دار برطانیہ نے اس موقع پر ایسٹ انڈیا کمپنی کو ختم کرکے ہندوستان کے معاملات براہِ راست اپنے ہاتھ میں لے لیے، یوں پورا ہندوستان استعمار کے شکنجے میں پھنس کر رہ گیا۔

برطانیہ کی ان استعماری سرگرمیوں کا ذکر ذرا تفصیل سے اس لیے کیا گیا ہے کہ اس کا تعلق براہِ راست اس خطے سے ہے جس میں ہم آباد ہیں۔ قارئین دیگر استعماری طاقتوں کی ان مہمات کو جو دوسرے ملکوں میں جاری تھیں، اسی پر قیاس کرکے استعمار کے طریقۂ واردات کو سمجھ لیں۔ تقریباً سب ہی جگہ اہداف، حربے اور اخلاقی پیمانے یکساں تھے، ہر جگہ مقامی حکمرانوں کے بھولے پن اور شرافت کا ناجائز فائدہ اٹھایا گیا اور اپنا اقتصادی وعسکری اثر ورسوخ قائم کرنے کے بعد بے دریغ لوٹ مار کی گئی، حکومتوں کے تختے الٹے گئے، اپنے من پسند ایجنٹوں کو مسلط کیا گیا اور ان کے ذریعے مقامی آبادیوں کا اس قدر استحصال کیا گیا کہ اہل وطن اپنے وطن میں خود پردیسی بن گئے۔

یہ تو ہندوستان کا احوال تھا۔ اب دیگر ملکوں پر برطانیہ کے غلبے کی ایک جھلک دیکھئے۔ 1851ء میں انگریز نائیجیریا پر قبضہ کرچکے تھے۔ 1888ء میں انہوں نے مصر پر قبضہ جمالیا۔ 1898ء میں سوڈان بھی ان کے زیرنگین آگیا۔ 1914ء میں وہ عراق پر قابض ہوئے۔ اور 1918ء میں اردن اور فلسطین پر بھی ان تسلط ہوگیا۔

## انگریز اور افغانستان:

اس دوران انگریزوں نے 1840ء، 1880 اور 1918ء میں افغانستان سے تین جنگیں لڑیں مگر غیور مسلمانوں کے اس دیس پر قبضہ نہ کرسکا۔ تاہم انیسویں صدی عیسوی کے آغاز سے بیسویں صدی کے دوسرے عشرے تک انگریزی سیاست اور سازشوں کے اثرات نے

افغانستان کو مسلسل غیر مستحکم رکھا، اس سوا صدی میں افغانستان پر حکومت کرنے والے چاروں بڑے حکمران، شاہ شجاع، امیر دوست محمد خان، امیر عبدالرحمن خان اور امیر حبیب اللہ خان انگریزوں سے مرعوب اور ان کی پالیسیوں پر عمل پیرا رہے۔ اس دوران انگریز پہلے معاہدہ گندمک اور پھر معاہدہ ڈیورنڈ لائن کے ذریعے افغانستان کو اس کے خاصے رقبے سے محروم کرنے میں بھی کامیاب ہو گئے۔ استعماری سازشوں کی وجہ سے افغانستان کبھی پرامن اور مستحکم ریاست نہ بن سکا اور باقی دنیا سے ایک صدی پیچھے ہی رہا۔

## دیگر استعماری طاقتوں کے احوال

### روس کی استعماری مہمات:

روس ''سلاف'' قوم کا قدیم مسکن ہے۔ اس کا صدر مقام سینکڑوں برس سے مسکووی (ماسکو) چلا آ رہا ہے۔ یہاں کے بادشاہ مذہباً عیسائی تھے۔ سب سے پہلے روسی حکمران ''ولادیمیر'' نے 989ء میں نصرانیت قبول کی تھی اور اس نے سب سے پہلے روس کی سرحدوں کو وسعت دی تھی۔ سولہویں صدی عیسوی میں روس نے ایک نئی ابھرتی ہوئی استعماری طاقت کا روپ دھار لیا۔

1530ء میں آئی ون چہارم روس کا بادشاہ بنا اور ''زار'' کا لقب اختیار کیا۔ یہ لقب تین صدیوں تک روسی حکمرانوں میں چلتا رہا۔ دیگر استعماری طاقتوں کی دیکھا دیکھی روس نے بھی اسلامی دنیا کی طرف پیش قدمی شروع کر دی۔ 1556ء میں اس نے نومسلم تاتاریوں کے دارالحکومت ''استراخان'' پر قبضہ کر کے وسط ایشیا کی مسلم ریاستوں اور ایران تک کا راستہ پا لیا۔ 1670ء میں جھیل اورال پر قبضہ کر لیا۔

1692ء میں روسی بادشاہ زار پیٹر اعظم نے یورپ سے تعلقات مضبوط کر کے اسلامی دنیا پر باقاعدہ استعماری یلغار کا آغاز کر دیا۔ اس دور کا روس نصرانیت کی متعصبانہ تعلیمات سے متاثر تھا، زار خاندان کے افراد بھی عیسائی تھے۔ زار پیٹر اعظم نے اپنی فوج کو یورپی افسران سے تربیت دلوا کر انہیں عالم اسلام کو مسخر کرنے کے لیے تیار کیا۔ اسلامی خلافت کا مرکز ترکی اس کا پہلا اور سب سے بڑا نشانہ تھا۔ 1696ء میں روس ترکی کے اہم شہر ازوف پر قابض ہو گیا۔ اس کے بعد 1711ء

سے 1792ء تک روسی افواج بار بار عثمانی ترکوں کے مقبوضات پر حملے کرتی رہیں۔ ترکوں نے کئی بار روس کو عبرتناک شکستیں دیں مگر جوں جوں عثمانی سلطنت سازشوں کا شکار ہو کر کمزور ہوتی گئی روس کی جارحیت تیز ہوتی چلی گئی۔ 1768ء سے 1774ء تک جاری ترک روس جنگ میں جو بلقان کے محاذ پر ہوئی روس کا پلّہ بھاری رہا۔ اس کامیابی کے بعد روس نے مفتوحہ ممالک میں صدیوں سے آباد مسلم تاتاریوں کی نسل کشی شروع کی جس کا سلسلہ جنگ عظیم دوم تک جاری رہا۔

1778ء میں روس بحیرہ اسود میں ترکی کے دفاعی مرکز ''کریمیا'' پر قابض ہو گیا۔ اگلے پندرہ برسوں میں ترکی کے مزید کئی اہم سرحدی اضلاع روس کے ہاتھ آ گئے۔ 1792ء میں جنگ بندی معاہدے کے تحت روس کا بحیرہ اسود کے تمام شمالی ساحلی علاقوں پر قبضہ قبول کر لیا گیا جس کے بعد ترک سلطنت کا دفاع کمزور تر ہوتا چلا گیا۔ 1824ء میں روس نے بحیرہ اسود کے اہم دفاعی نقطے جزیرہ قرم پر قبضہ کر لیا۔

انیسویں صدی میں روس نے وسط ایشیا کی طرف پیش قدمی شروع کی اور یکے بعد دیگرے کئی اسلامی ریاستوں پر قبضہ جما لیا۔ غازی محمد، ''ہمزار بے'' اور امام شامل جیسے مجاہد قائدین سالہا سال تک روس سے جہاد کرتے رہے مگر یہ تحریک آخر کار بیرونی مسلم ممالک کی بے اعتنائی کے باعث ختم ہو گئی۔ جس کے بعد روس بڑی تیزی سے ماوراء النھر کی اسلامی ریاستوں پر قابض ہوتا چلا گیا۔ 1864ء میں قفقاز پر قبضہ کیا۔ 1867ء میں تاشقند، 1868ء میں بخارا، 1873ء میں خیوہ اور 1884ء میں مرو، روس کے سامنے سرنگوں ہو گئے۔

**فرانس:**

فرانس یورپ کے طاقتور ترین ممالک میں شمار ہوتا تھا۔ اس کی تجارتی تنظیم فرنچ ایسٹ انڈیا کمپنی ہندوستان میں انگریزوں کی وجہ سے آگے نہ بڑھ سکی مگر دوسرے خطوں میں فرانسیسی استعمار کی مہم جوئی جاری رہی۔ فرانس نے 1830ء میں الجزائر پر قبضہ کر لیا جو خلافتِ عثمانیہ کا صوبہ تھا، یہاں کے گورنر حسین پاشا کو گرفتار کر کے پیرس لے جایا گیا۔ اس کے بعد شمالی افریقہ کے مسلم ممالک یکے بعد دیگرے مسخر ہوتے چلے گئے۔ 1881ء میں تیونس اور 1882ء میں

سینیگال اور مدغاسکر زیرِ نگین آئے۔ 1912ء میں مراکش اور 1921ء میں شام بھی فرانس کی ہوسِ ملک گیری کا نشانہ بن گئے۔

## اٹلی:

اٹلی نے بھی افریقہ کے اسلامی ممالک کو اپنا ہدف بنایا، 1887ء میں صومالیہ اور اریٹریا پر حملہ کیا اور 1911ء میں لیبیا پر قبضہ کیا۔ غرضیکہ بیسویں صدی کے شروع میں تقریباً سارا عالم اسلام استعماری طاقتوں کے قبضے میں آچکا تھا۔ یعنی اسلامی دنیا پر تسلط (السیطرۃ علی العالم الاسلامی) کا دیرینہ خواب پورا ہو چکا تھا۔

قصہ مختصر! اس زمانے میں برطانیہ کے ساتھ ساتھ دوسری استعماری طاقتیں بھی مختلف خطوں میں پیش قدمی کرتی رہیں۔ برطانیہ کی طرح ان کی استعماری تاریخ کا ہر ورق بھی خونریزیوں، بدعہدیوں، مقامی لوگوں کے ساتھ بدترین زیادتیوں اور فریب کاریوں سے مملوء ہے۔

## پانچواں مرحلہ: خلافت اسلامیہ کا خاتمہ

استعماری طاقتیں اب خلافتِ اسلامیہ کا خاتمہ کرنے کے قابل تھیں۔ خلافت کی محافظ ترکی کی عثمانی سلطنت اپنے دورِ عروج میں تین براعظموں میں پھیلی ہوئی تھی۔ ایشیا میں ایشیائے کوچک، عراق، شام، فلسطین اور جزیرۃ العرب اس کی حفاظت میں تھے، یورپ میں ہنگری، آسٹریا اور بلقان کی ریاستیں، بوسینا، ہرزیگوینا، سربیا، کروشیا، مقدونیہ، یونان، مونٹی نیگرو، البانیہ، بلغاریہ، یوکرائن اور رومانیہ خلافتِ عثمانیہ کے ماتحت تھیں۔ افریقہ میں سوڈان، نائیجیریا، چاڈ، مصر، لیبیا، تیونس، الجزائر اور مراکش تک کا علاقہ اس کے پاس تھا۔ یورپی ممالک صدیوں سے خلافتِ عثمانیہ کی اس عظمت و شوکت پر دانت پیستے آرہے تھے، انہوں نے مل کر ترک خلافت کی قوت وسطوت کو ''مشرقی مسئلہ'' (Eastern Question) کا نام دے دیا تھا۔

انیسویں صدی میں یورپ کے ادباء، شعراء اور مفکرین نے بلقان کے مقامی نصاریٰ کو لسانیت اور وطنیت کے نعرے دے کر مسلمانوں کے خلاف بھڑکانے کی مہم شروع کر دی اور ترکوں کا حوصلہ پست کرنے کے لیے یورپی دنیا نے خلافت عثمانیہ کے لیے ''یورپ کا مردِ بیمار'' کی

اصطلاح مشہور کردی۔

ان مسلسل سازشوں کے نتیجے میں پہلے اہل یونان کو ان کی سابقہ شان وشوکت یاد دلا کر ترکوں کے خلاف آزادی بغاوت پر ابھارا گیا اور یوں یورپی ممالک کی مدد سے مارچ 1829ء میں یونان آزاد ہو کر خلافت کی عملداری سے نکل گیا۔ اسی تجربے کو خلافت کے ماتحت یورپ اور افریقہ کے دیگر ممالک میں بھی دہرایا گیا جس کے نتیجے میں خلافتِ عثمانیہ کی حدود سمٹتی چلی گئیں۔ 1830ء میں فرانس نے الجزائر پر اور 1882ء میں برطانیہ نے مصر پر قبضہ کرلیا۔ اس طرح انیسویں صدی کے اختتام تک سلطنتِ عثمانیہ مغربی طاقتوں کی سازشوں کے جال میں پھنس کر بے حد کمزور ہو چکی تھی۔ اس کے بیشتر علاقے چھن چکے تھے۔ یورپی ممالک کی سرپرستی میں ''انجمن اتحاد وترقی'' جیسی تنظیمیں وطن پرستی کے نام پر نوجوان ترکوں کے دلوں سے منصبِ خلافت اور اسلامی شعائر کا احترام زائل کر رہی تھیں اور مصطفیٰ کمال پاشا جیسے ایجنٹ استعماری طاقتوں کے منصوبے کو پایہ تکمیل تک پہنچانے کے لیے تیار تھے۔

1909ء میں نوجوان ترکوں نے بغاوت کر کے خلیفہ کے اختیارات کو سلب کرلیا اور وہاں مغربی طرز پر جمہوریت قائم کردی، سلطان عبدالحمید جو استعماری طاقتوں کی راہ میں حائل تھا معزول کر دیا گیا اور محمد خامس کو برائے نام خلیفہ بنا دیا گیا۔ اس انقلاب سے فائدہ اٹھاتے ہوئے بلغاریہ ترکوں سے آزاد ہو گیا اور آسٹریا نے بوسینا اور ہرزیگوینا پر قبضہ کرلیا۔ اُدھر 1911ء میں اٹلی نے لیبیا پر قبضہ جما لیا۔

1909ء سے 1918ء تک ترکی میں خلافت کا عہدہ صرف ایک رسم کے طور پر باقی تھا، تمام اختیارات نوجوان قوم پرست ترکوں کے ہاتھ میں تھے جن کا لیڈر مصطفیٰ کمال تھا۔ اس نئی قیادت نے ترکی سے عرب اثرات ختم کر دیے، ترکی کو سرکاری زبان قرار دیا اور خلافتِ عثمانیہ کو ہر اعتبار سے ترک بنا ڈالا۔

اس دوران اکتوبر 1912ء میں بلقان کی ریاستوں نے روس کے ابھارنے پر ترکی کے خلاف جنگ چھیڑ دی جس نے ترکی کو بالکل شکستہ کر ڈالا، 30 مئی 1913ء کو لندن میں بلقانی

ریاستوں اور ترکی کے درمیان ایک سمجھوتہ کرادیا گیا جس کے مطابق ترکی اپنے کئی جزائر اور علاقوں سے دست کش ہونے پر مجبور ہوگیا۔

جنگِ بلقان کے بعد 28 جولائی 1914ء کو پہلی جنگ عظیم چھڑ گئی جس میں ایک جانب برطانیہ، فرانس، امریکا، جاپان اور روس تھے اور دوسری طرف جرمنی، آسٹریا، ہنگری اور بلغاریہ تھے۔ حالات ایسے بن گئے کہ ترکی کو جرمنی کا ساتھ دینا پڑا، بدلے میں اس سے وعدہ کیا گیا کہ فتح کے بعد مصر، لیبیا، تیونس، الجزائر اور روسی ترکستان کے علاقے، ترکی میں شامل کردیے جائیں گے۔ ترکی کو یہ بھی امید تھی کہ ان علاقوں کے مسلمان خود بھی ترکی کا ساتھ دیں گے اور قابض مغربی طاقتوں کے خلاف اٹھ کھڑے ہوں گے مگر یہ محض سہانے سپنے تھے جو ترکی کو دکھا کر جنگ میں گھسیٹا گیا تھا تاکہ بعد میں اسے مجرم ثابت کرکے کڑی سزائیں دی جاسکیں۔

جو کچھ ہوا وہ ترکی کی توقع کے بالکل برعکس تھا۔ مغربی طاقتوں کے مقبوضات کے عوام ترکی کا ساتھ کیا دیتے، خود ترکی کے باقی ماندہ علاقوں میں بغاوت پھیل گئی جس میں برطانیہ کے جاسوس کرنل لارنس نے بھرپور کردار ادا کیا۔ برطانیہ کے یہ جاسوس عربی زبان اور لب ولہجے میں مہارت رکھتے تھے اور کیمیائی طریقے استعمال کرکے اپنی سفید رنگت کو گندمی بنالیتے تھے۔ یہ عربوں کی بستیوں بلکہ مدرسوں اور خانقاہوں تک میں رہائش پذیر تھے اور ان کی کمزوریاں معلوم کرکے انہیں ترک خلافت سے متنفر کرتے رہتے تھے۔ کرنل لارنس نے عربوں کو ترکوں کے خلاف اس قدر مشتعل کر رکھا تھا کہ جنگ عظیم اوّل کے دوران عرب اس کے کہنے پر ترک عملے کو قتل کرتے تھے اور وہ ہر ترک کے قتل پر عربوں کو انعام دیتا تھا۔ اسی نے حجاز کے گورنر اور شریف مکہ حسین اور اس کے بیٹوں امیر فیصل اور امیر عبداللہ کو ترکوں کے خلاف کھلی بغاوت پر ابھارا اور ان سے وعدہ کیا کہ ترک خلافت کے خاتمے پر حسین کو جزیرۃ العرب کا، فیصل کو شام کا اور عبداللہ کو فلسطین کا حکمران بنادیا جائے گا۔ چنانچہ لالچ میں آکر جون 1916ء میں شریف مکہ اور اس کے بیٹوں نے ترک خلافت کے خلاف علم بغاوت بلند کرکے جزیرۃ العرب پر خودمختار حکومت قائم کرلی۔ اسی طرح عراق، شام، فلسطین اور اردن بھی ترکوں کے ہاتھ سے نکل کر اتحادیوں کے

قبضے میں چلے گئے۔

آخر ترکی گھٹنے ٹیک کر صلح پر مجبور ہوا۔ 30 اکتوبر 1918ء کو مڈلاس میں جنگ بندی کی بات چیت ہوئی۔ جنگ ختم ہونے پر 10 اگست 1920ء کو معاہدۂ سیورے ہوا، جس کے مطابق فاتح استعماری قوتوں نے ترکی کو شام، فلسطین اور عراق سے بھی دست بردار ہونے پر مجبور کر دیا۔ درّۂ دانیال سمیت تمام اہم عسکری مقامات بین الاقوامی نگرانی میں دے دیے گئے۔ جزیرۃ العرب پر شریفِ مکہ حسین کی خودمختاری تسلیم کر لی گئی۔ ترکی کو صرف پندرہ ہزار بری فوج رکھنے کی اجازت دی گئی اور تمام فضائی اور بحری اڈوں سے محروم کر دیا گیا۔ عراق کو اس کے بیٹے امیر فیصل اور اردن کو عبداللہ کی قیادت میں الگ ممالک بنا دیا گیا۔

اس کے فوراً بعد یونان نے ترکی پر حملہ کر کے اس کے بچے کھچے حصے ہتھیانے کی ناکام کوشش کی۔ ان تمام جنگوں میں مصطفی کمال پاشا نے ایک نامور جرنیل کے طور پر شہرت پائی اور عالم اسلام میں اسے ایک عظیم قائد سمجھا جانے لگا مگر جب 1923ء میں برطانوی حکومت اور مصطفی کمال پاشا کے درمیان معاہدۂ لوزان میں ترکی سے خلافت کے مکمل خاتمے اور اس کی اسلامی شناخت کو مٹا ڈالنے کا فیصلہ ہوا تب حقیقت سامنے آئی۔ چنانچہ 1924ء میں مصطفی کمال نے اسلام دشمن طاقتوں کی صدیوں کی تمنائیں برلاتے ہوئے از خود خلافت کے خاتمے کا اعلان کر دیا۔

چاک کردی ترکِ ناداں نے خلافت کی قبا
سادگی اپنوں کی دیکھ، غیروں کی عیاری بھی دیکھ

## تصورِ احیائے خلافت کا خاتمہ:

ماضی میں احیائے خلافت کے تجربات کو دیکھ کر استعماری طاقتوں کو ڈر تھا کہ مسلمان کہیں ایک بار پھر خلافت کے احیاء کے درپے نہ ہو جائیں اور خلافت کے خاتمے کے لیے بارہ سو سال سے کی جانے والی تدریجی محنت پر پانی نہ پھر جائے اس لیے انہوں نے اس امر کو یقینی بنانے میں کوئی کسر نہ چھوڑی کہ مسلمان دوبارہ خلافت کے احیاء کی کوشش نہیں کریں گے۔ اس مقصد کے لیے انہوں نے خلافت کے خاتمے سے پہلے درج ذیل اقدامات کر ڈالے تھے:

(1) مسلمانوں سے، خاص کر ترکوں سے اسلام پسندی کا خاتمہ کرنے اور انہیں جدّت پسندی کی طرف مائل کرنے کی زبردست مہم چلائی گئی، ترکی میں ڈاڑھی مونڈنے، کوٹ پینٹ پہننے اور عورتوں کے بے پردہ پھرنے کی عادات کو خوب رواج دیا گیا، یورپی تہذیب وثقافت کو فروغ دے کر اسلامی شعائر کی اہمیت دلوں سے نکالی گئی۔ لوگوں کا اسلام سے رشتہ کمزور کر دیا گیا۔

(2) مسلمانوں میں قوم پرستی اور وطن پرستی کے جذبات ابھارے گئے، ایک طرف لارنس آف عربیا جیسے جاسوسوں کی مدد سے عربوں میں عربی حسب ونسب پر فخر کو فروغ دیا گیا۔ دوسری طرف مصطفیٰ کمال جیسے قائدین کے ذریعے ترکوں کو اسلام پسندی کی جگہ وطن پرستی کی تعلیم دی گئی۔ یہی صورتحال عالم اسلام کے دیگر خطوں میں تھی۔

ظاہر ہے اس کا نتیجہ اس کے سوا کیا نکل سکتا تھا کہ ہر خطے کے مسلمان اپنے سوا کسی اور کو دنیا کی امامت وسیادت کے قابل نہ سمجھیں اور خلافت سے ان کی دلی وابستگی ختم ہو جائے۔ مسلمانوں کی کوئی نسل کسی دوسری نسل کے فرد کو اپنا روحانی اور سیاسی قائد ماننے پر آمادہ نہ ہو سکے۔ عالم اسلام کے مختلف خطوں، مختلف زبانوں اور مختلف نسلوں کے لوگوں کا کسی ایک خلیفہ پر اتفاق محال ہو جائے اور امت لامرکزیت کا شکار ہو کر رہ جائے۔

(3) مسلم دنیا خصوصاً ترکوں میں یہ پرچار کیا گیا کہ خلافت ایک عضوِ معطل اور ایک غیر مفید ادارہ ہے جو عصرِ حاضر کے تقاضوں کا ساتھ نہیں دے سکتا، اس لیے اسے ختم کر دینا چاہیے۔

(4) مسلمانوں کی یہ ذہن سازی کی گئی کہ خلافت سے جان چھڑا کر اور یورپ کی جدید ریاستوں کی طرح جمہوری طرزِ حکومت اختیار کر کے وہ بھی مغرب کی طرح ترقی کر سکتے ہیں۔

(5) اسلامی خلافت اپنے دورِ زوال میں بھی ایک محترم ادارے کی حیثیت رکھتی تھی، ہر مسلم حکمران خلیفہ سے اپنی حکومت کی منظوری لیا کرتا تھا، اسلامی ممالک کسی نہ کسی طور پر ایک عالمی رابطے میں منسلک تھے، خلافت کے توسط سے ان کے سرحدی تنازعات اور دیگر اختلافات ومعاملات حل ہو جاتے تھے۔ اس لیے استعماری طاقتوں نے خلافت کے خاتمے سے قبل 1917ء ایک متبادل عالمی ادارے ''لیگ آف نیشنز'' کی بنیاد رکھ دی۔ اس کا

ڈھانچہ امریکی صدر ''ولسن'' کے سیاسی مشیر ''کرنل مانڈیل ہاؤس'' نے اپنے رفقا کی مدد سے تیار کیا۔ اس ادارے کے قیام کا بنیادی مقصد یہ تھا کہ دنیا کے تمام ممالک جن میں مسلم دنیا بھی شامل ہے، اپنے جملہ تنازعات کے حل کے لیے اس ادارے کی طرف رجوع کریں اور انہیں کسی وقت یہ احساس نہ ہو کہ وہ کسی عالمی مرکزی ادارے کی سرپرستی سے محروم ہیں۔ اس طرح خلافت کے ادارے کی ضرورت پس منظر میں چلی گئی۔ (بعد میں لیگ اوف نیشنز کی جگہ یو این او یعنی اقوام متحدہ نے لے لی)

⑥ اگر خلافت کے خاتمے کی کارروائی یہود و نصاریٰ کے ہاتھوں انجام پاتی تو مسلمان اس کے ردِعمل میں جلد ہی کہیں نہ کہیں، خلافت کے احیاء کی کوشش شروع کر دیتے، اس لیے یہ طے کر لیا گیا کہ یہ کارروائی خود ترکی کے مسلمانوں میں سے ایک ایسے شخص سے کروائی جائے گی جسے پوری اسلامی دنیا غازی اور مجاہد کے طور پر جانتی ہے تاکہ مسلمانوں میں کوئی غیر معمولی ردِعمل پیدا نہ ہو اور استعماری قوتوں کے پاس یہ بہانہ ہو کہ جب ترک خود خلافت سے جان چھڑانا چاہتے ہیں تو کوئی دوسرا کیا کر سکتا ہے۔

چنانچہ ان اقدامات کی وجہ سے واقعتاً ایسا ہی ہوا کہ مسلمان خلافت کے ازسرِنو احیاء کے تصور تک سے عاری ہوتے چلے گئے اور ان کے ہاں رسمی طور پر بھی خلافت کی بقا کی کوئی اہمیت نہ رہی۔ یہ صورتحال خلافت کے سقوط سے زیادہ افسوس ناک تھی۔

**چھٹا مرحلہ: عالم اسلام کو ٹکڑے ٹکڑے کرنا:**

سقوطِ خلافت کے بعد استعماری طاقتوں نے چھٹے مرحلے کا آغاز کر دیا اور اسلامی دنیا کے حصے بخرے کر کے خود واپسی کی تیاریاں شروع کر دیں۔ واپسی کی کئی وجوہ تھیں:

- اسلامی دنیا اور مشرقی ممالک سے جس قدر دولت اور وسائل لوٹے جا سکتے تھے وہ لوٹ لیے گئے تھے۔ اسلامی دنیا کی مثال اب اس کھیت کی سی تھی جسے جنگلی جانوروں نے اچھی طرح چر لیا ہو حتیٰ کہ وہاں اناج کا ایک دانہ اور بھوسے کا ایک تنکا تک نہ بچا ہو۔ اس لیے ضروری تھا کہ اگلی فصل تیار ہونے تک کھیت کو اس کے مالکان کے پاس چھوڑ دیا جاتا۔

- دنیائے اسلام میں آزادی کی تحریکیں مسلسل چل رہی تھیں جنہیں دبانے کے لیے زر کثیر کی ضرورت تھی۔ استعماری طاقتیں ایک غیر پیداواری دنیا پر تسلط برقرار رکھنے کے لیے اتنی بڑی سرمایہ کاری کرنا فضول سمجھتی تھیں اور اس کی بجائے ان کے نزدیک واپسی بہتر تھی۔
- زمانے کی تبدیلیوں نے مضبوط مملکت اور بڑی طاقت کا مفہوم بدل دیا تھا۔ اب کوئی ملک رقبے اور آبادی کے اضافے سے دنیا پر زیادہ اثر انداز نہیں ہوسکتا تھا بلکہ اب بڑی طاقت وہ تھی جس کی معیشت مستحکم ہو اور جو تعلیم، ٹیکنالوجی، اسلحہ سازی اور صنعت و تجارت میں غالب ہو۔ اس لیے استعماری طاقتوں کے نزدیک محض رقبے کی وسعت کے کوئی خاص اہمیت نہیں رہی تھی۔
- اسلامی دنیا اور مشرقی ممالک میں استعماریوں کے نظام تعلیم اور ثقافتی مہم نے مغرب پسند لوگوں کی ایک کھیپ پیدا کردی تھی۔ استعماری طاقتیں مشرق کی سیاسی باگ ڈور انہی کے ہاتھوں میں دے کر جارہی تھیں۔ اس بات کی پوری تسلی کرلی گئی تھی کہ یہ نئی قیادت مغربی طاقتوں کی غیر موجودگی میں ان کے سیاسی و اقتصادی مفادات کی پوری رعایت رکھے گی۔
- ذرائع آمدورفت اور مواصلات کی ترقی نے دنیا کو سمیٹ دیا تھا، اب ہزاروں میل دور رہ کر بھی کسی ملک کے حالات پر اثر انداز ہونا مشکل نہ تھا۔ استعماری طاقتیں اپنی حدود کو سمیٹ کر بھی مسلم دنیا اور مشرق پر مسلط رہ سکتی تھیں۔
- خلافت ختم ہوچکی تھی اور مسلمانوں کو متحد رکھنے والا کوئی رسمی پلیٹ فارم بھی نہیں رہا تھا، مسلم دنیا میں وطن پرستی، علاقائیت اور لسانیت کے جذبات خلافت کے خاتمے سے پہلے ہی بیدار کردیے گئے تھے۔ اس لیے مسلم دنیا کے اتحاد کا کوئی خطرہ نہیں تھا۔
- ایسے عالمی اداروں کے قیام کی پوری تیاریاں کرلی گئی تھیں جن کے ذریعے مسلم دنیا کو سیاسی، معاشی اور قانونی طور پر جکڑا جاسکے۔ یہ نکتہ بہت اہم ہے کہ جب تک اقوام متحدہ قائم نہیں ہوئی کسی اسلامی ملک کو آزادی نہیں ملی۔ 1945ء میں اقوام متحدہ کے قیام کے بعد ہی مسلم ملکوں سے استعماری فوجوں کی واپسی کا سلسلہ شروع ہوا۔ یعنی مسلم ممالک کو مختلف ضابطوں

اور معاہدوں میں جکڑنے کی تیاری کرنے کے بعد ہی وہاں سے فوجی مداخلت ختم کی گئی۔

❁ مذکورہ بالا عوامل میں سے اکثر منصوبہ بندی کے تحت طے تھے مگر ان پر عمل درآمد کا وقت طے نہیں ہوا تھا۔ اس اثناء میں ایک ایسا قضیہ پیش آ گیا جس کی وجہ سے عالمی طاقتیں سارے کام چھوڑ کر فوری طور پر عالم اسلام اور مشرقی ممالک کی نئی حد بندیاں کرنے اور جلد از جلد واپسی کا سفر شروع کرنے پر مجبور ہو گئیں۔

ہوا یہ کہ مشرقی دنیا کے وسائل کی بندر بانٹ کی انتہاء پر آ کر خود چوروں کے ٹولے میں ہاتھا پائی شروع ہو گئی اور 1939ء میں دوسری جنگ عظیم کا آغاز ہو گیا، استعماری طاقتوں کے وسائل کا بڑا حصہ اس جنگ میں خرچ ہو گیا اور اس کے بعد یہ ممالک مجبور ہو گئے کہ اپنے اخراجات کم کریں۔ ادھر مختلف اسلامی ممالک میں آزادی کی تحریکیں بھی زور پکڑ گئیں جس کے بعد استعماری قوتوں کو یہی مناسب لگا کہ اب عالم اسلام کو مختلف حصوں میں بانٹ کر خود واپسی اختیار کرنے میں مزید دیر نہ کی جائے۔

چنانچہ جنگ کے بعد یکے بعد دیگرے مختلف اسلامی ممالک کو سیاسی آزادی ملی۔ 1946ء میں فلپائن کو امریکا سے آزادی ملی، 1947ء میں انگریزوں نے برصغیر کو چھوڑا۔ 1956ء میں فرانس، مراکش اور تیونس سے نکل گیا۔ 1962ء میں الجزائر کو فرانس سے آزادی نصیب ہوئی۔

آزادی دینے کے باوجود استعماریوں نے مسلم دنیا کی سیاسی قیادتوں، عوامی ذہنوں، مستقبل میں وہاں دریافت ہونے والے وسائل اور ہر ممکنہ پیداوار کو اپنی دسترس میں رکھنے کی سوچ ترک نہیں کی۔

اسلامی ممالک اس طرح آزاد ہوئے کہ جہاں پہلے کوئی ایک مملکت تھی وہاں اب کئی کئی ممالک وجود میں آ گئے، بعض علاقے جہاں استعمار سے پہلے مسلمانوں کی اکثریت تھی، سالہا سال تک نصرانیت کی تبلیغ اور اب نئی سرحدی تقسیمات کے ذریعے غیر مسلم اکثریتی علاقے بنا دیے گئے۔ فلپائن اس کی ایک واضح مثال ہے۔

سرحدات کی تقسیم میں زبردست فریب کاریاں کی گئیں۔ برصغیر میں پاکستان کے ساتھ کھلی

بے انصافی ہوئی۔ کشمیر کو بھارت کے ساتھ ملحق کر دیا گیا۔ حیدر آباد دکن اور جونا گڑھ بھارت کے پاس چلے گئے۔ ڈیورنڈ لائن کو برقرار رکھ کر نہ صرف پختونوں کو دو حصوں میں بانٹ دیا گیا بلکہ افغانستان اور پاکستان میں مستقل دشمنی کی بنیاد رکھ دی گئی۔ بلوچستان کو افغانستان، ایران اور پاکستان میں تقسیم کر دیا گیا۔

مشرق وسطیٰ میں شام، لبنان، اردن اور فلسطین کو الگ الگ کر دیا گیا اور فلسطین کی جگہ اسرائیل کی ناجائز بنیاد رکھ دی گئی۔ افریقہ میں درجنوں چھوٹے چھوٹے ممالک کی اس بے ڈھنگے انداز میں حد بندی کی گئی کہ نقشے میں نظر آنے والی سیدھی لائنوں ہی سے اس کا غیر معقول ہونا واضح ہو جاتا ہے۔

اس کے علاوہ آزاد ہونے والے مسلم ممالک کی سیاسی پارٹیوں میں اپنے تربیت یافتہ ایجنٹ بھی داخل کر دیے گئے۔ جیسے مسلم لیگ میں ظفر اللہ قادیانی ایک اہم رکن کی حیثیت سے شامل تھا اور قیام پاکستان کے بعد ملک کا پہلا وزیر خارجہ وہی بنا۔

## استعمار نے مسلم دنیا کو کیا دیا؟

یہاں از خود یہ سوال پیدا ہوتا ہے کہ جب استعماری طاقتیں آئی تھیں تب مسلم دنیا کے سیاسی و اقتصادی حالات کیا تھے اور ان کی واپسی کے وقت ان کی حالت کیا تھی۔

جب استعماری قوتوں نے تاجروں کے بھیس میں مسلم دنیا میں قدم رکھا تب پورا عالم اسلام سیاسی طور اور اقتصادی لحاظ سے بے حد مستحکم تھا۔

سیاسی قوت کا یہ عالم تھا کہ مشرق تا مغرب مسلمانوں کی بڑی بڑی مملکتیں تھیں۔ مراکش سے دریائے دجلہ تک اور یمن سے بلقان تک خلافتِ عثمانیہ کی عملداری تھی، الجزائر، لیبیا، تیونس، مصر، شام، لبنان، اردن، فلسطین، جزیرۃ العرب، عراق اور ایشیائے کوچک اسی کا حصہ تھے۔ یورپ کے ملکوں یونان، مقدونیہ، رومانیہ، البانیہ، بلقان، بوسینیا، کوسووا اور بلغاریہ پر بھی ترکوں کا ہلالی پرچم لہراتا تھا۔

پاکستان، بھارت، کشمیر، نیپال، بنگال اور برما مغل حکومت کے تحت یکجا تھے۔ افغانستان کا

رقبہ دریائے آموسے لے کر دریائے سندھ اور حب ندی تک وسیع تھا جہاں ابدالیوں کی مستحکم سلطنت تھی۔ وسطِ ایشیا میں بخارا، سمرقند، ازبکستان، داغستان اور قزاقستان پر آزاد و خوشحال ازبک امراء کی حکومت تھی۔

اقتصادی ترقی کی حالت یہ تھی کہ مسلم دنیا کی خوشحالی پر شاہانِ یورپ رشک کرتے تھے۔ یہ دولت وثروت دیکھ کر ہی یورپی اقوام اس پر ٹوٹ پڑی تھیں۔ برصغیر جو آج دنیا میں صرف ایک زرعی خطے کے طور پر جانا جاتا ہے، اس وقت دنیا کا سب سے بڑا صنعتی زون تھا۔ اس کے نسبتاً کم ترقی یافتہ صوبے ''سندھ'' کی صنعتی ترقی کا یہ عالم تھا کہ یورپ کے امراء یہاں کی مصنوعات فخر سے استعمال کرتے تھے۔ ٹھٹھہ کی بنی ہوئی پلنگ کی چادریں برطانیہ، فرانس، جرمنی اور اٹلی کے نواب اپنی امارت جتانے کے لیے استعمال کرتے تھے۔ ہندوستان کا ''چکن'' اور سنہرا ململ بڑی قیمتی سوغات شمار کیا جاتا تھا۔ لندن کی بیگمات ڈھاکا کی نفیس ململ پر جان چھڑکتی تھیں جس کا پورا تھان ایک انگوٹھی سے گزر جاتا تھا۔ پورے ہندوستان میں جگہ جگہ مکاتب اور مدارس قائم تھے، شرحِ خواندگی ستر فی صد سے زائد تھی۔

مگر جب انگریز برصغیر کو چھوڑ کر جا رہا تھا تو اس خطے کی حالت کیا تھی، یہ خود انگریزوں کی زبانی سنیے۔

مغربی مؤرخ میگڈانلڈ ریمزے کا بیان ہے:

''ہندوستان مفلسوں کی بستی ہو کر رہ گیا ہے۔'' (Awaking of India.p 14)

امریکی سیاح جیمز میڈس نے ہندوستان کا دورہ کرتے ہوئے دیکھا کہ انگریز حکام کلکتہ کی ریس کے لیے گھوڑوں کے انتظام میں مصروف ہیں اور شہر کی سڑکوں پر ہزاروں افراد بھوک سے دم توڑ رہے ہیں۔ (نیویارک ٹائمز 14 مئی 1944ء)

صرف بنگال میں قحط سے مرنے والوں کی تعداد 18 لاکھ تک پہنچ گئی۔ ساری دنیا کو کپڑا فراہم کرنے والے بنگال کی یہ حالت ہوئی کہ وہاں زندہ انسانوں کو پہننے اور مردوں کو کفن دینے کے لیے کپڑا میسر نہ تھا۔ (روزنامہ اجمل: 6 مارچ 1944ء)

دوسری جنگِ عظیم میں برطانیہ نے ہندوستان کی ساری پیداوار لوٹ لی تھی۔ اناج، کپڑے اور دیگر اشیائے ضرورت کے اکثر ذخائر اتحادیوں کی ضروریات پوری کرنے کے لیے ملک سے باہر بھیج دیے گئے جس سے ہندوستان میں قحط پیدا ہو گیا۔

اتحادی افواج کی ضروریات پوری کرنے کے لیے کئی علاقوں سے ریلوے لائنیں اکھاڑ لی گئیں۔ لوہے کی ضرورت پوری کرنے کے لیے بجلی اور ٹیلی فون کے کھمبے اکھاڑ کر باہر بھیج دیے گئے، زمینداروں کے گھروں میں گھس کر ان سے اناج کے ذخیرے چھینے گئے۔ یہ تھی وہ ناگفتہ بہ حالت جس میں انگریز برصغیر کو چھوڑ کر گئے۔ یہی حال دیگر اسلامی خطوں کا تھا جہاں سے فرانس، اٹلی اور دوسری استعماری طاقتوں نے واپسی اختیار کی۔

## اِنتشار باقی رکھنے کے حربے:

استعماری طاقتیں مسلم ممالک کو ٹکڑوں میں بانٹ کر چلی گئیں مگر مسلمانوں کے اس انتشار کو باقی رکھنے اور انہیں تقسیم در تقسیم کی راہ پر ڈالنے کے لیے درج ذیل اقدامات بھی کر گئیں:

## اقوامِ متحدہ کا شکنجہ:

اقوام متحدہ کے قیام کے بنیادی مقاصد دو تھے:

① مسلمانوں کو اپنا کوئی الگ مؤثر پلیٹ فارم بنانے سے روکنا۔

② عالمی طاقتوں کے آپس میں ٹکراؤ کے امکانات کو حتی الامکان کم کرنا۔

دراصل استعماری ڈاکو جو تین صدیوں سے اسلامی دنیا کو الگ الگ لُوٹ رہے تھے، اب ایک ادارے کی شکل میں لوٹ مار کرنا چاہتے تھے، تاکہ جنگِ عظیم اوّل اور دوم جیسے سانحے پھر رونما نہ ہوں۔

UNO کے ذریعے استعماری ڈاکو پہلی بار مل بیٹھے اور یہ طے کر لیا کہ ہم آپس میں لڑے بغیر مل بانٹ کر دنیا کو لوٹیں گے۔ اس ادارے کے جو اعلیٰ وارفع مقاصد بتائے جاتے ہیں، اس کا طرزِ عمل ان کی مکمل نفی کرتا ہے۔ اس ادارے کی اصل قوتِ فیصلہ پانچ بڑی قوتوں: امریکا، برطانیہ، فرانس، روس اور چین کے ہاتھ میں ہے جنہیں سلامتی کونسل کے مستقل ممبر کہا جاتا ہے اور

جنہیں ویٹو پاور حاصل ہے۔ اس کے بل بوتے پر استعماری قوتوں نے عالم اسلام کے مسائل کو لاینحل بنا رکھا ہے۔ اسلامی ملکوں کی باہمی چپقلشوں، خانہ جنگیوں اور دیگر المیوں کا سبب بھی اس ادارے کا غیر معقول رویہ ہے۔

## بین الاقوامی قوانین:

اقوام متحدہ کے ذریعے مسلم دنیا پر ایسے قوانین مسلط کیے گئے ہیں جو کہنے کو تو بین الاقوامی ہیں لیکن ان کا عملی اطلاق صرف مسلم ممالک پر کیا جاتا ہے۔ مثلاً پاکستان میں توہین رسالت کے کسی مرتکب کو قتل کر دیا جائے تو اسے انسانی حقوق کے عالمی چارٹر کی خلاف ورزی کہہ کر پاکستان کا ناطقہ بند کرنے کی کوشش کی جاتی ہے مگر فلسطین میں ہزاروں مسلمانوں کے قتل عام پر بھی اقوام متحدہ حرکت میں نہیں آتی اور اس کے قوانین معطل رہتے ہیں۔ درحقیقت ایسے قوانین کا مقصد صرف مسلم ممالک کی جکڑ بندی ہے، یہ چارٹر مسلم ممالک کو اسلام کی عطا کردہ آزادی و خودمختاری سے محروم رکھنے کے لیے بنایا گیا ہے۔

## معاہدے:

استعماری طاقتیں کبھی اقوام متحدہ کے توسط سے اور کبھی براہ راست مسلم ممالک سے مختلف معاہدے کرتی ہیں جن کے ذریعے ان کے تنازعات الجھتے چلے جاتے ہیں اور مسلمان سیاسی، عسکری اور معاشی طور پر کمزور ہوتے چلے جاتے ہیں۔ جیسے مسئلہ کشمیر میں اقوام متحدہ کی قراردادوں نے مسئلے کو حل کرنے کی بجائے اسے لاینحل بنا دیا ہے۔ اسی طرح ڈیورنڈ لائن کا مسئلہ آج تک پاکستان اور افغانستان کے مابین اعتماد کی فضا قائم نہیں ہونے دے رہا۔

## استعماری طاقتوں کی طرف سے مسلمانوں پر مسلط کردہ جنگیں:

مسلم دنیا کی توڑ پھوڑ اور شکستگی کے لیے وقتاً فوقتاً ان پر جنگیں مسلط کر دی جاتی ہیں۔ اسرائیل کا مصر پر حملہ ہو یا بھارت کا پاکستان پر۔ ان کے پس پردہ استعماری قوتوں کی سازشیں صاف نظر آتی ہیں۔ ایسی کئی جنگوں میں مسلم دنیا کے اہم عسکری مقامات ہمسایہ کافر ممالک کے قبضے میں جا چکے ہیں۔

## بلاکس:

عالمی طاقتوں نے مختلف بلاکس بنا کر مسلم ملکوں کو آپس میں تقسیم کیا ہوا ہے، جس کی وجہ سے ایک بلاک کا مسلم ملک دوسرے بلاک کے مسلم ملک کو اپنا حریف تصور کرتا ہے اور اس کے مقابلے میں اپنے بلاک کے کفار پر زیادہ اعتماد کرتا ہے۔ جیسے امریکن بلاک اور روسی بلاک تقریباً نصف صدی تک قائم رہے اور مسلم ممالک ان میں سے کسی ایک میں شامل ہو کر دوسرے سے الجھتے رہے۔

## اسلامی دنیا میں بھڑکائی گئی جنگیں:

استعماری طاقتیں خود مسلم ممالک کو بھی باہم لڑانے کا کوئی موقع ہاتھ سے جانے نہیں دیتیں، اس طرح ایک طرف تو مسلم دنیا میں ضعف وانتشار بڑھتا ہے، دوسری طرف استعماری طاقتوں کے کئی اہم وقتی اہداف پورے ہو جاتے ہیں۔ ان سازشوں کے نتیجے میں الجزائر اور مراکش صحرائے ''تندوف'' پر جھگڑتے رہے، مصر اور سوڈان کے درمیان ''حلایب'' اور شلاتین'' کے علاقے پر کشمکش ہوتی رہی۔ عمان اور عرب امارات صحرائے ''بوریمی'' کے مسئلے پر ٹکرا گئے، سعودی عرب اور یمن 'نجران' اور 'عسیر' کے علاقے پر لڑ پڑے۔ شام اور اردن میں 'وادی حمہ'' کی وجہ سے کشیدگی پیدا ہو گئی۔ واقعاتی شہادتوں کو دیکھا جائے تو ایسی اکثر جنگوں کے پس پردہ استعماری قوتوں کا ہاتھ ملے گا۔

جب ایران اور عراق شط العرب کی وجہ سے دست وگریباں ہو گئے، تو امریکا نے عراق کو اور روس نے ایران کو اسلحہ دے دے کر آٹھ برس تک اس جنگ کے شعلوں کو ہوا دی۔ 1990ء میں امریکا نے عرب دنیا کو اپنا فاضل اسلحہ فروخت کرنے اور خلیج میں اڈے بنانے کے لیے ایک طرف عراق کو کویت پر چڑھائی کے لیے ابھارا اور دوسری طرف عربوں کو عراق سے ڈرا کر اپنے اسلحے کے دام کھرے کر لیے۔

پھر یہ جنگیں ملکوں کے درمیان ہی محدود نہیں رہیں بلکہ ممالک کے اندر بھی خانہ جنگی کی آگ بھڑکائی گئی۔ لبنان میں شیعہ سنی فرقہ واریت کو فروغ دے کر خانہ جنگی کرا دی گئی۔ عراق میں ایک طرف شیعہ اور سنی، اور دوسری طرف عرب اور کرد لڑتے چلے آ رہے ہیں۔ مراکش

میں عرب اور بربروں کی خانہ جنگی ہوتی رہی۔ یمن شمالی اور جنوبی حصوں میں بٹ کر اپنے آپ کو تباہ کرتا رہا۔ مصر میں مسلمانوں اور قبطیوں کا جھگڑا چلتا رہتا ہے۔ سوڈان میں مسلمان اور مسیحیوں کے فساد تھمنے میں نہیں آتے۔ چاڈ اور مالی میں عرب اور افریقیوں کی کشاکشی جاری رہتی ہے۔ بحرین، عراق اور شام میں بھی شیعہ سنی کشیدگی عروج پر ہے، ہزاروں لوگ اس میں قتل ہو چکے ہیں۔

برصغیر میں ایک ہی خطے کے مسلمان پاکستان اور بھارت میں بٹ کر کمزور تر پڑ گئے۔ پھر پاکستان کو زبان کے مسئلے پر دو ٹکڑے کر دیا گیا، بنگلہ دیش اور مغربی پاکستان الگ الگ ہو گئے۔ بچے کھچے پاکستان میں مہاجر، پٹھان، سندھی اور پنجابیوں کی کشمکش خطرناک شکل اختیار کیے ہوئے ہے۔ ہزارہ اور سرائیکی اپنے الگ تشخص کے لیے کھڑے ہو رہے ہیں۔ بلوچ خود مختاری کی تحریک چلا رہے ہیں۔

ادھر افغانستان اور عراق کو نسلی بنیادوں پر تقسیم کرنے کے منصوبے بن رہے ہیں۔ جون 2002ء میں بعض امریکی سیاستدانوں نے سعودی عرب کو بھی چھوٹے چھوٹے ٹکڑوں میں تقسیم کر دینے کی تجویز پیش کی تھی۔

غرض اغیار کی سازشوں کے سبب پورے عالم اسلام میں افتراق کا دور دورہ ہے اور تقسیم در تقسیم کا عمل جاری ہے۔

## سیکورٹی:

استعماری طاقتیں بعض مسلم ملکوں میں سیکورٹی کے نام پر افواج تعینات کر دیتی ہیں۔ یہ دوستی کے نام پر درحقیقت دشمنی ہوتی ہے، جو اس ملک پر غیر اعلانیہ قبضے سے کم نہیں ہوتی جیسے سعودی عرب سے 1975ء میں یہ معاہدہ کیا گیا کہ آل سعود کی سیادت و حکومت کی حفاظت امریکا کی ذمہ داری ہے، اس کے بدلے امریکا نے سعودی عرب کو پابند کیا ہے کہ وہ کبھی بھی اسے اپنا تیل دینا بند نہیں کرے گا۔ 1990ء امریکا نے اپنے اسی دوست کی حفاظت کے نام پر وہاں اڈے قائم کر لیے جو عالم اسلام کے لیے سخت پریشانی کا باعث بن گئے۔

## کٹھ پتلی حکمرانوں کی اجارہ داری:

استعماری قوتوں کے لیے مسلم ممالک پر اپنے ایجنٹوں اور کٹھ پتلی حکمرانوں کو مسلط کرنا بہت آسان ہوگیا ہے۔ کوئی بھی غیر ملکی ایجنٹ دھاندلی کے ذریعے راتوں رات الیکشن جیت کر اسمبلی اور وزیر بن جاتا ہے اور پھر اپنی وفاداریاں اسی بیرونی طاقت کے نام کر دیتا ہے جس کی کرشمہ سازی سے اسے اقتدار ملتا ہے۔ یہ کٹھ پتلی حکمران مسلم ممالک سے مؤثر اتحاد اور تعاون کے لیے کبھی سنجیدگی سے کوشش نہیں کرتے چنانچہ مسلم دنیا کا انتشار ختم ہونے میں نہیں آتا۔

## سیاسی ولسانی پارٹیوں کا فروغ:

مسلم دنیا میں نئی نئی سیاسی اور لسانی پارٹیوں کی ریل پیل بھی استعماری قوتوں کے ایجنڈے کے عین مطابق اسلامی دنیا میں انتشار پھیلانے کا ایک بڑا سبب ہے۔ آج ہر مسلم ملک میں دو چار نہیں درجنوں چھوٹی بڑی سیاسی اور لسانی پارٹیاں سرگرم ہیں اور عوام الگ الگ گروہ بن کر اندھا دھند ان کے پیچھے دوڑ رہے ہیں۔ ایسے میں قومی وحدت کے پیدا ہونے کا کوئی سوال ہی پیدا نہیں ہوتا۔

## لسانیت وصوبائیت:

ہر مسلم ملک کو لسانی اور صوبائی بنیاد پر مزید تقسیم کرنے کی کوششیں کی جاتی ہیں۔ خصوصاً وہ ممالک جہاں ہر صوبے کی زبان مختلف ہے، ایسی سرگرمیاں عروج پر ہیں۔ ہر ملک میں ایسی جماعتیں کھڑی کی گئی جو لسانیت اور صوبائیت کا پرچار کرتی ہیں۔

## مذہبی فرقہ بندی کا فروغ:

مسلم دنیا میں اپنے ایجنٹوں کے ذریعے جدید اور انوکھے نظریات متعارف کرا کے نت نئے فرقے پیدا کیے جا رہے ہیں۔ نئے نظریات کے ساتھ اٹھنے والے ہر فرقہ کی حمایت کی جاتی ہے؛ مرزا غلام قادیانی، منکرینِ حدیث، نیچری، غامدی اور گوہر شاہی وغیرہ اس کی چند مثالیں ہیں۔

## جعلی لیڈر شپ تیار کرنا:

استعماری طاقتیں مسلم دنیا کی لیڈر شپ اپنے ہاتھ میں رکھنے کے لیے اپنے منظورِ نظر افراد کو تیار رکھتی ہیں اور عین موقع پر اسے قوم کے نجات دہندہ کے روپ میں سامنے لے آتی ہیں۔

خصوصاً ایسے وقت میں جب کسی ملک میں افراتفری اور انتشار کی فضاء قائم ہو اور قوم اپنی سابقہ لیڈرشپ سے مایوس ہو کر نئی قیادت کی تلاش میں ہو تو ایسے حالات کے لیے اسلام دشمن طاقتوں کے پاس پہلے سے کچھ مہرے تیار ہوتے ہیں جنہیں بوقتِ ضرورت متبادل قیادت کے طور پر آگے لایا جاتا ہے عالم اسلام کے مختلف ممالک میں ایسی کئی مثالیں ماضی قریب کے انقلابات کے تناظر میں دیکھی جاسکتی ہیں۔ ان داخلی اور خارجی اختلافات کی وجہ سے عالم اسلام اب تک اپنے حقوق کے لیے کوئی مؤثر بلاک بنانے، یا کسی مسئلے پر اتحاد و اتفاق کا مظاہرہ کرنے سے قاصر ہے۔

## ساتواں مرحلہ.....استعماریوں کا آخری ہدف عالم اسلام کے تشخص کا خاتمہ کر دینا:

عالم اسلام کو ٹکڑے ٹکڑے کر دینے کے بعد اس کے تشخص کے خاتمے یا بالفاظِ دیگر مسلمانوں کو بحیثیت ایک قوم کے فنا کر دینے کے مرحلے پر کام ہو رہا ہے۔ اس مقصد کے لیے درج ذیل ہتھکنڈے استعمال کیے جا رہے ہیں:

## گمراہ کن مفکرین کی تیاری:

ایسے مفکرین کو کھڑا کیا جا رہا ہے جن کے ذریعے سے اسلام کی روح کو ختم کر دیا جائے۔ جو دین کے نام پر دین سے دور لے کر جائیں۔

مغربی سیاست دان جانتے ہیں کہ فحاشی و عریانی، ہوسِ زر اور مادہ پرستی سے مسلم معاشرے کو ایک حد تک بگاڑا جاسکتا ہے، لیکن ہر شخص کی فطرت مسخ نہیں کی جاسکتی۔ بہت سے بگڑے ہوئے لوگ کسی نہ کسی وقت اپنے اندر کی روحانی پیاس کو محسوس کر لیتے ہیں اور مذہب کی طرف مائل ہونے لگتے ہیں۔ ان کا ضمیر روحانی تسکین حاصل کرنا چاہتا ہے، ایسے وقت میں اگر اسے خالص اسلام کی طرف رہنمائی مل جائے تو وہ مغرب کے شیطانی نظام کے لیے خطرہ بن سکتا ہے لیکن اگر اس موقع پر دین کے عنوان سے اس کا رخ کسی اور جانب پھیر دیا جائے تو وہ عمر بھر اسلام کی طرف نہیں پلٹ سکے گا۔ لہٰذا زندگی کے رخ بدلنے کی تبدیلی کے فیصلہ کن مواقع پر لوگوں کو گمراہ کرنے کے لیے وہ پہلے سے نام نہاد اسلامی مفکرین کا اسٹیج تیار رکھتے ہیں۔ اسلام کی طرف پلٹنے والے ان کی شہرت سے متاثر ہو کر انہی کی طرف رجوع کرتے ہیں اور درحقیقت استعمار کے

ایجنٹوں کے پھندے میں پھنس جاتے ہیں۔

## استعمار کی اطاعت کی تلقین:

یہی نام نہاد اسلامی مفکرین ومجتہدین اپنی تحقیقات اور فتاویٰ میں استعماری طاقتوں کی اطاعت کا درس دیتے ہیں۔ جس دور میں شیخ الاسلام مولانا حسین احمد مدنی رحمہ اللہ نے ترکوں کے خلاف لڑنے والی انگریز فوج میں بھرتی کی حرمت کا فتویٰ دیا تھا، بریلی کے مفتیان کرام اس کے جواز کا فتویٰ صادر فرمارہے تھے۔ شاہ عبدالعزیز دہلوی رحمہ اللہ انیسویں صدی عیسوی میں ہندوستان کے دارالحرب ہونے کا فتویٰ دے چکے تھے مگر بیسویں صدی عیسوی میں جب کہ انگریزوں کے اقتدار کا سورج نصف النہار پر تھا، بریلی کے مفتیان عظام برطانوی حکومت کے زیرِ سایہ ہندوستان کو ''دارالاسلام'' قرار دے رہے تھے۔ علامہ اقبال نے اسی طرح کے لوگوں کو مخاطب کر کے کہا ہے:

ملا کو ہے جو ہند میں سجدے کی اجازت
ناداں یہ سمجھتا ہے کہ اسلام ہے آزاد

اسی طرح مرزا غلام قادیانی انگریز حکومت کی اطاعت کو واجب کہتا رہا تھا۔ موجودہ دور میں استعمار کے منظورِ نظر مفکرین کے پاس غیر ملکی اداروں کی اعلیٰ تعلیمی اسناد ہوتی ہیں اور وہ عموماً میڈیا پر نمایاں رہتے ہیں۔ انہیں گفتگو اور خطابت کے فن میں مہارت ہوتی ہے، اس لیے مخاطب کے ذہن میں اپنی بات بٹھا دیتے ہیں۔ بعض دیسی اداروں کی اسناد رکھنے والی شخصیات بھی استعماری مقاصد کے لیے استعمال ہوجاتی ہیں۔ استعمار کی اطاعت کو عام طور پر عالمی دھارے کا ساتھ دینے، مصلحت وقت کا لحاظ کرنے یا بین الاقوامی برادری سے خوش گوار تعلقات رکھنے کا نام دیا جاتا ہے۔

## فاسد اور غلط تاویلات کے ذریعے جہاد کے تصور کو ختم کرنا:

چوں کہ جہاد استعمار کے زہر کے لیے تریاق کی حیثیت رکھتا ہے اس لیے استعمار کے علمی وفکری ایجنٹ جہاد کے تصور کو مٹانے کی پوری کوشش کر رہے ہیں۔ کبھی جہاد کو دہشت گردی اور مجاہدین کو دہشت گرد قرار دیا جاتا ہے، کبھی جہاد کے لیے ایسی شرائط کو لازمی کہا جاتا ہے جن

کا پورا ہونا ممکن نہیں۔ پہلے اقدامی جہاد کی مخالفت کی جاتی تھی مگر اب دفاعی جہاد کو بھی تاویلات کے ذریعے متنازعہ بنایا جا رہا ہے۔

## اسلامی عقائد کو بدل کر استعمار کی اغراض کے مطابق بنانا:

انہی مفکرین کے ذریعے استعمار اسلام کی حقیقی شکل کو مسخ کرنا چاہتا ہے تاکہ اسلام، اسلام نہ رہے ایک تغیر پذیر چیز بن جائے۔ ایسی تبدیلیوں کی مہم اسلام کی وکالت اور اصلاح امت کے عنوان سے چلائی جاتی ہے اور عام مسلمان اس سے بڑے متاثر ہوتے ہیں۔ جیسا کہ سرسید احمد خان نے بظاہر مسلمانوں کی اصلاح کی مہم شروع کی مگر اس ضمن میں جو نیچری عقائد و نظریات پیش کیے وہ بالکل ایک نیا اسلام پیش کرتے تھے۔

اسی طرح غلام احمد پرویز اور دیگر مفکرین نے انکارِ حدیث کے راستے اسلامی عقائد کو بدل کر ایک نیا دین اختراع کرنے کی پوری کوشش کی۔ اب جاوید غامدی اور ان کے کچھ ہمنوا بھی اسی سلسلے کو جاری رکھے ہوئے ہیں۔ ان سرگرمیوں کو "هَدمُ بُنيانِ الإسلام باسم الإسلام" "اسلام کی عمارت کو اسلام کے نام پر تباہ کرنا" کا نام دیا جائے تو بے جا نہیں۔

## مسلمانوں کی ثقافت کو مجروح کرنا:

استعماریوں نے مسلمانوں کا تشخص مجروح کرنے کے لیے ان کی تہذیب و ثقافت اور بود و باش سمیت ہر چیز کو تبدیل کر دیا۔ افریقی مسلم ممالک فرانسیسی تہذیب اختیار کرنے پر مجبور ہو گئے۔ مراکش میں اسپینی اور پرتگالی زبانیں عام ہو گئیں۔ فلپائن اور انڈونیشیا میں اسپینش اور ڈچ زبانیں تعلیم یافتہ ہونے کا معیار بن گئیں۔ ہندوستان، پاکستان، افغانستان، بنگلہ دیش، ایران اور عرب دنیا میں انگریزی کو سر پر بٹھا لیا گیا۔

## جمہوری فلسفے کا فروغ:

اسلامی قانون کو ختم کرنے اور عوام کو محض مادی زندگی کا عادی بنانے کے لیے مسلم ممالک میں جمہوری فلسفے کو عام کیا گیا۔ اس میں شک نہیں کہ مسلم دنیا کو مطلق العنان حکمرانوں کی اجارہ داری سے بہت نقصان پہنچا یا مگر اب تعلیم یافتہ طبقے میں جس جمہوری فلسفے کو عام کرنے کی کوشش کی

جارہی ہے وہ ایک بنیادی فکری گمراہی ہے جو انسان کو اسلام ہی سے دور لے جاتی ہے۔ کیوں کہ اس فلسفے کے مطابق انسان آزاد پیدا ہوا ہے اور عوام کسی بھی قسم کا قانون بنانے اور نافذ کرنے کا مکمل حق رکھتے ہیں۔ ظاہر ہے یہ فلسفہ اسلام سے کوئی مطابقت نہیں رکھتا۔ مسلم ممالک میں بے دینی اور الحاد کے اکثر اہداف اس فلسفے کے پیروکاروں ہی کے ذریعے حاصل کیے گئے ہیں۔

# مراجع


- اساليب الغزو الفكري۔ ڈاکٹر علی محمد جریشہ، استاذ محمد شریف الزیبق
- ماذا خسر العالم بانحطاط المسلمين: مولانا سید ابوالحسن علی ندوی رحمہ اللہ
- الدولة العثمانية: محمد بن علی الصلابی
- بحث الاستعمار الحديث: منقذ السقار
- الاستعمار احقاد واطماع: محمد الغزالی
- اجنحة المكر الثلثة: عبدالرحمن بن حسن الدمشقی
- التاريخ الاوربی الحديث من عصر النهضة الی الحرب العالمية الاولی: عبدالعزیز نوار، محمود محمد جمال الدین
- اسیران مالٹا: مولانا سید محمد میاں مرحوم
- برطانوی سامراج نے ہمیں کیسے لوٹا: حضرت مولانا سید حسین احمد مدنی رحمہ اللہ
- انگریز کے باغی مسلمان: جانباز مرزا
- ہوئے تم دوست جن کے: حقی حق

# 4.3- تیسرا محاذ (الساحۃ الثالثۃ)

## عالمگیریت (العولمۃ)

### گلوبلائزیشن (Globalization)

### 4.3.1- امریکی و یہودی استعمار و استشراق:

اس دور میں استعمار اور استشراق کی باگ ڈور امریکی اور یہودی لابی کے ہاتھ میں آچکی ہے، اور اسلام کی دشمن یہ دونوں طاقتیں استعماری اور استشراقی اہداف کو ایک مختصر اور جامع راستے کے ذریعے انتہاء تک پہنچانے کی تگ و دو میں ہیں جسے عالمگیریت (گلوبلائزیشن) کہا جاتا ہے۔

1973ء میں پیرس میں منعقد ہونے والی مستشرقین کی انیسویں عالمی کانفرنس میں امریکا کے نامور یہودی مستشرق ''برنارڈ لوئیس'' کی تجویز پر ''استشراق'' کی اصطلاح کو ترک کر کے ایک نئی اصطلاح استعمال کرنے پر اتفاق کیا گیا تھا۔ یہ نئی اصطلاح ''عالمگیریت'' یا ''گلوبلائزیشن'' کے نام سے عالمی حلقوں میں مشہور ہوئی۔

مگر عالمگیریت صرف استشراق کا ہی نہیں استعمار اور علمانیۃ (لادینیت) کا بھی نیا ایڈیشن ہے جس کی قیادت سابقہ بڑی طاقتوں برطانیہ، فرانس اور روس کی بجائے امریکا اور یہودی لابی کے ہاتھ میں ہے۔

### 4.3.2- عالمگیریت کا مفہوم، اہلِ مغرب کی زبان میں:

❁ کیمبرج ڈکشنری میں عالمگیریت (Globalization) کی تعریف یوں کی گئی ہے:

> **Globalization**: the increase of trade around the world, especially by large companies producing and trading goods in many different countries:

''عالمگیریت کا مطلب تجارت کو پوری دنیا میں فروغ دینا ہے خاص کر مختلف ممالک میں بڑی کمپنیوں کے قیام اور نقل وحمل کے اداروں کے ذریعے۔''

''عالمگیریت'' کی سب سے بڑی نقیب ورلڈ ٹریڈ اور گنائزیشن (عالمی تجارتی تنظیم) نے اس کی تعریف اس طرح کی ہے:

''عالمگیریت سے مراد دنیا کے ممالک کے درمیان وہ اقتصادی تعاون ہے، جو مصنوعات اور خدمات (پروڈکٹس اور سروسز) کے تبادلے میں اضافے کی وجہ سے فروغ پاتا ہے۔ اس کی وجہ سے ملکوں کے رأس المال میں بھی اضافہ ہوتا ہے، پوری دنیا میں ٹیکنالوجی کو فروغ ملتا ہے۔ اس تحریک کا مقصد کسٹم اور جغرافیائی حدود کو ختم کرنا اور پوری دنیا کو ایک عالمی منڈی میں تبدیل کرنا ہے۔''

ان تعریفوں کے لحاظ سے عالمگیریت (Globalization) کی اصطلاح عام ذہنوں میں ایک مثبت مفہوم رکھتی ہے۔ اس کا معنی یہ سمجھا جاتا ہے کہ جدید ایجادات کی بدولت دنیا سمٹ کر ایک بستی کی شکل اختیار کر گئی ہے۔

بعض لوگ ''عالمگیریت'' کو مختصراً ''حدود کے اختتام'' کے معنوں میں لیتے ہیں اور خوش ہوتے ہیں کہ شاید عن قریب ساری دنیا ایک ملک کی طرح ہو جائے گی اور سب بھائی بھائی بن کر رہیں گے۔ مگر اس لفظ کے پیچھے اصل حقیقت اتنی سادہ اور مثبت نہیں ہے۔ اگرچہ امریکا اور یہودی اسے مثبت باور کرانے کے لیے پورا زور لگا رہے ہیں۔

## 4.3.3- دوسرا پہلو، منفی مفہوم:

مگر کیا گلوبلائزیشن اتنا ہی سادہ مسئلہ ہے۔ یہ بات ریکارڈ پر ہے کہ اس اصطلاح کو سب سے پہلے عالمی شہرت اس وقت ملی جب سابق امریکی صدر جارج بش سینئر نے اسے اپنی ایک تقریر میں استعمال کیا۔ یہ تقریر خلیجی جنگ کے اختتام پر خلیج میں مقیم امریکی فوجیوں کو مخاطب کر کے کی گئی تھی جس میں بش نے دہشت گردی سے پاک ایک ایسا عالمی نظام قائم کرنے کا خیال پیش کیا جو دنیا کو امن وسلامتی فراہم کرے اور لوگوں کو عیش وعشرت کے ساتھ زندگی بسر کرنے کا موقع دے۔ اس کو نئے عالمی نظام (New World Order) سے بھی تعبیر کیا گیا ہے اور

مبصرین کے نزدیک گلوبلائزیشن کا اصل مقصد بھی اسی عالمی نظام کی راہ ہموار کرنا ہے۔

عالمگیریت نہ صرف مغرب کی اقتصادی بالادستی کا ایک ہتھیار ہے بلکہ اس کا مقصد یہ بھی ہے کہ دنیا کو ایک مخصوص تہذیب وتمدن میں رنگ دیا جائے۔ اب یہ بات بھی کسی سے مخفی نہیں رہی کہ وہ مخصوص تہذیب وتمدن امریکی کلچر کے سوا کوئی اور نہیں جس کی طرف پوری دنیا کو ہانکا جارہا ہے۔

خود عالمی تجارتی انسائیکلوپیڈیا (The International Encyclopedia of Business & Management) میں عالمگیریت کی تعریف یوں کی گئی ہے:

''یہ ایک عالمگیر تہذیب کو فروغ اور وسعت دینے کے راستے کا نقشہ ہے۔''

سابق امریکی صدر بل کلنٹن نے بھی ایک موقع پر اعتراف کیا ہے کہ عالمگیریت محض اقتصادی مسئلہ نہیں ہے، بلکہ یہ ماحول، تہذیب اور صحت جیسے مسائل سے بھی تعلق رکھتا ہے۔

درحقیقت عالمگیریت ایک ایسا نظام اور ایسا معاملہ ہے جس میں ایک طرف ایک طاقتور، ذہین اور خوشحال آدمی ہو اور دوسری طرف ایک مفلس، کند ذہن اور کمزور انسان۔ ایک کے پاس سب کچھ ہو اور دوسرے کے پاس کچھ بھی نہ ہو۔ ایسے معاملے کا نتیجہ یہی ہوسکتا ہے کہ کمزور آدمی اپنی شخصی آزادی سے بھی دست بردار ہوکر طاقتور کا غلام بن جائے۔

ان شواہد کی موجودگی میں عالمگیریت کی صحیح تعریف یوں کی جانی چاہیے:

''عالمگیریت ایک ایسی تحریک ہے، جس کا مقصد اقتصادی، ثقافتی، معاشرتی، دینی، قومی اور وطنی امتیازات کو ختم کرکے پوری دنیا کو یہودی اہداف اور امریکی نظریے کے مطابق جدید سرمایہ دارانہ نظام کے دائرے میں لانا ہے۔'' (العولمۃ، از صالح الرقب، ص:6)

عالمگیریت کے اس صحیح مفہوم کی عکاسی خود امریکی مفکرین کی تحریروں سے بھی ہوتی ہے۔ مشہور امریکی مصنف ''ولیم گریڈر'' لکھتے ہیں:

''عالمگیریت عالمی صنعت وتجارت میں برپا شدہ انقلاب کے نتیجے میں سامنے آنے والا ایک ایسا طریقہ کار ہے جو ترقی اور تباہی دونوں پر یکساں قدرت رکھتا ہے اور عالمی سرحدوں سے ماوراء ہو کر اپنی ڈگر پر چلتا رہتا ہے۔ یہ ترقی بڑا سبب ہونے کے ساتھ ساتھ اسی قدر خطرناک بھی ہے۔''

One World Reedy Or NO?)، بحوالہ مع العولمۃ از صالح الرقب: صفحہ:5)

ملائیشیا کے سابق وزیراعظم ڈاکٹر مہاتیر محمد نے عالمگیریت کے خطرات کو بروقت بھانپتے ہوئے اسلامک کانفرنس کے اجلاس میں کہا تھا:

''عالمی تجارتی تنظیم، عالمگیریت کی آلہ کار ہے۔ یہ ترقی یافتہ ممالک کو اجازت دیتی ہے کہ وہ ترقی پذیر ملکوں کو پوری طرح نگل لیں۔'' (مع العولمۃ، از صالح الرقب: صفحہ:14)

ڈاکٹر ''مصطفی النشار'' عالمگیریت کے اصل مقصد کو واضح کرتے ہوئے لکھتے ہیں:

''عالمگیریت کا مطلب مختلف تہذیبوں کو ایک دوسرے کے قریب کرنا ہرگز نہیں ہے، بلکہ اس کا مطلب تمام مقامی اور قومی تہذیبوں کو مٹا کر پوری دنیا کو مغربی رنگ میں رنگ دینا ہے۔''

(رسالہ المنتدی، عدد:193، اگست 1999ء)

قاہرہ یونی ورسٹی میں شعبۂ کمپیوٹر کے ڈائریکٹر ڈاکٹر محمد حسن رسمی کا کہنا ہے:

''عالمگیریت ایک اندھا طوفان ہے جو اپنے راستے میں کسی بھی چیز کو برداشت نہیں کرتا۔ یہ نظام طاقتور لوگوں کا مددگار ہے اور کمزوروں کے لیے مہلک۔''

(مع العولمۃ۔ اخبار الہرام، 16 ستمبر 2001ء)

## 4.3.4- عالم اسلام عالمگیریت کا اصل نشانہ کیوں:

اگرچہ عالمگیریت تمام دنیا پر مسلط کی جارہی ہے مگر اس کا اصل ہدف عالم اسلام اور مسلمان ہیں۔ اس کی چار وجوہ ہیں:

① پوری دنیا میں اسلامی ممالک جغرافیائی لحاظ سے بہترین خطوں میں واقع ہیں۔

② اسلامی دنیا بے پناہ مادّی وسائل سے مالا مال ہے جن میں سے اکثر وسائل ابھی تک زیرِ زمین محفوظ ہیں۔

③ تین بڑے مذاہب: اسلام، نصرانیت اور یہودیت کے مقاماتِ مقدسہ اسلامی دنیا میں واقع ہیں، عالمگیریت کے بانیوں کی صہیونی ریاست بھی اسلامی دنیا میں ہے۔ جس کی توسیع عالمگیریت کا اہم ترین ہدف ہے۔

④ مغرب جانتا ہے کہ عالمگیریت کے معاشی اور ثقافتی حملوں کا جواب صرف اسلامی نظام ہی دے سکتا ہے، اس لیے عالمگیریت کا خواب اس وقت تک پورا نہیں ہوسکتا جب تک اسلام کو نہ مٹا دیا جائے اور اسلامی نظام کے احیاء کے تمام امکانات کو ختم نہ کر دیا جائے۔

## 4.3.5- عالمگیریت (Globalization) کے چار میدان:

عالمگیریت (Globalization) بنیادی طور پر یہودیوں کا خواب ہے، وہ صدیوں سے ایک ایسی عالمگیر ریاست کے قیام کے لیے کوشاں ہیں جس کا پایہ تخت یروشلم ہو اور اس کے تخت پر بنی اسرائیل کا عالمگیر بادشاہ (مسیح دجال) براجمان ہو۔ اس مقصد کے لیے چار میدانوں میں عالمگیریت (Globalization) کے فروغ کی کوشش جاری ہے جو یہ ہیں:

① سیاسی عالمگیریت
② اقتصادی عالمگیریت
③ تہذیبی عالمگیریت
④ معاشرتی عالمگیریت

### پہلا میدان، سیاسی عالمگیریت:

سیاسی عالمگیریت کی تاریخ کا آغاز غالباً اسی وقت سے ہو جاتا ہے جب عالمگیر ریاست کے قیام کے لیے یہودیوں نے امریکا کی طاقت کو استعمال کیا۔ امریکا کے استعماری عزائم، اس کے بے پناہ وسائل اور اقوام عالم میں اس کے ابھرتے ہوئے مقام کو دیکھ کر انیسویں صدی کے وسط میں یہودیوں نے امریکا میں اپنے قدم مضبوط کرنے شروع کر دیے تھے۔

امریکا یورپین اقوام کی نوآبادی ہے۔ یہاں کے اصل قدیم باشندے ریڈ انڈینز تھے جو ہزاروں سال سے آباد تھے۔ کولمبس کے امریکا کو دریافت کرنے کے بعد سولہویں صدی عیسوی میں یہاں اسپینش، پرتگیزی اور برطانوی تارکین وطن کی آبادیاں بننے لگیں جو اپنے اپنے ملکوں کے زیر انتظام تھیں۔ بعد میں ان تارکین وطن نے الگ معاشرے کی شکل اختیار کر لی تو امریکی ریاست ''ورجینیا'' میں ایک نئے ملک کی بنیاد رکھی گئی، نوآبادکاروں نے جارج واشنگٹن کی قیادت

میں یورپی ملکوں کے خلاف تحریک چلا کر 1772ء میں امریکا کو آزاد کرالیا۔

امریکی باشندوں کی بڑی تعداد ان جرائم پیشہ لوگوں کی اولاد ہے جنہیں ان کی حکومتوں نے تنگ آ کر جلاوطن کر دیا تھا، اس لیے ان میں غرور، تعصب اور خود پسندی کوٹ کوٹ کر بھری ہوئی ہے۔ اس غرور و تکبر کا اندازہ چند امریکی مفکرین کے درج ذیل بیانات سے لگایا جا سکتا ہے:

- امریکن قوم خدا کی محبوب ترین قوم ہے۔ ایک دن ہم ہی اقوام عالم کا قبلہ ہوں گے۔ (ولیم بیرڈ)
- ہم سے غلطی ہو ہی نہیں سکتی، کیوں کہ خدا ہماری تائید کرتا ہے۔ (فرانسیس ہینکسن)
- خدا سارے عالم پر امریکا کی برتری سے راضی ہے۔ (جان بیرنجا)
- امریکا کے لیے ضروری ہے کہ وہ تمام اقوام کی قیادت کرے۔ (امریکی صدر جیفرسن)

اسی تعصب اور تکبر کی وجہ سے امریکیوں نے اس براعظم کے حقیقی باشندوں (ریڈ انڈینز) سے ان کے علاقے چھیننے کی مہم شروع کر دی اور ان کو چن چن کر قتل کیا گیا، انہیں قحط زدہ علاقوں اور ریگستانوں میں زندگی گزارنے پر مجبور کر دیا گیا۔ اس کے ساتھ ہی امریکا کی استعماری تاریخ کا آغاز ہو گیا۔

1803ء میں ''لوزیانا'' اور 1810ء میں مغربی فلوریڈا پر قبضہ کیا گیا، 1848ء میکسیکو، کیلیفورنیا، نیو میکسیکو، نویڈا، اور ایریزونا فتح کیے گئے۔

امریکا کے قیام کے وقت ریڈ انڈینز 6 لاکھ تھے، مگر بیس ویں صدی کے آغاز میں ان کی تعداد صرف 2 لاکھ 20 ہزار رہ گئی، 1924ء میں انہیں اس شرط پر امریکی قومیت دی گئی کہ وہ اپنے ماضی کو بھول کر ہر ایسی رسم اور عادت سے دستبردار ہو جائیں جو ان کے ''سرخ ہندی'' ہونے کی علامت ہو۔''

یہ نسلی تعصب اور تفاخر جو امریکیوں کی طبیعت میں شامل ہے، دراصل یہودیوں کی سرشت ہے جو انہیں عالمگیر بننے کے خبط میں مبتلا کیے ہوئے ہے۔ چنانچہ یہودی سرمایہ داروں نے امریکا کے اس تکبر، تعصب اور استعماری جنون کو اپنی عالمگیر حکومت کے قیام کے لیے بہت مفید محسوس کیا اور امریکا کے کاندھوں پر بیٹھ کر سیاسی عالمگیریت کا سفر شروع کر دیا تھا۔ اس مقصد کے لیے

انہوں نے امریکا کے علمی اور ابلاغی منابع پر تسلط حاصل کیا اور اس طرح امریکی قوم اور حکومت کے دل و دماغ پر قابض ہو گئے۔

یہودی لابی امریکا کے سیاسی معاملات پر کس حد تک اثر انداز ہے اس کا اندازہ پادری پال فنڈلے کی چشم کشا تصنیف ''They dare to speak out'' کے انکشافات سے لگایا جا سکتا ہے جس میں بتایا گیا ہے کہ امریکن یہودیوں کی تنظیم ''AIPAC'' (امریکا اسرائیل پبلک افیرز کمیٹی) امریکن کانگریس اور سینٹ کے اعصاب پر بری طرح سوار ہے۔

پادری بتاتا ہے کہ واشنگٹن کی یہودی لابی ہی یہ فیصلہ کرتی ہے کہ امریکی صدر کو کیا، کب اور کیسے کرنا ہوگا۔ امریکی وزارتِ دفاع پینٹا گون کی تمام مہمات یہودی لابی کی مرضی کے مطابق طے پاتی ہیں۔ نیویارک ٹائمز کی رائے یہ ہے کہ امریکن یہودی لابی واشنگٹن کی سب سے مؤثر، سب سے مضبوط اور سب سے منظم لابی ہے جو امریکا کی خارجہ پالیسی پر اثر انداز رہتی ہے۔

امریکا میں اس اثر و رسوخ کے ذریعے یہودی تین اہداف کو پورا کرنے کی کوشش کرتے آرہے ہیں:

(اوّل) دنیا کے بڑے بڑے سیاسی اور تہذیبی حلقوں کو توڑ کر کمزور تر کر دیا جائے۔

(دوم) امریکا کو اتنا طاقتور کر دیا جائے کہ اس کے آگے کوئی طاقت سر نہ اٹھا سکے۔

(سوئم) ایک عالمگیر سیاسی ادارہ قائم کیا جائے جو تمام دنیا کا حکمران ہو۔

چنانچہ ہم دیکھتے ہیں کہ انیسویں صدی کے وسط میں امریکا نے اپنی حدود سے باہر جارحیت کا نہ ختم ہونے والا سلسلہ شروع کر دیا۔ چوں کہ اس وقت مسلم دنیا پہلے سے چند بڑی استعماری طاقتوں برطانیہ، روس، فرانس اور اٹلی کے زیرِ نگین تھی اس لیے امریکا نے اسلامی دنیا کی بجائے نئی شکارگاہیں تلاش کیں۔ 1854ء میں امریکا نے جاپان پر حملہ کر کے جاپانیوں کو ان کے علاقوں ''اوو'' سے نکل جائے پر مجبور کر دیا۔ 1898ء میں فلپائن پر قبضہ کیا اور اسی سال کیوبا پر حملہ کیا۔ 1900ء میں چین کے خلاف جنگ میں حصہ لیا، 1903ء میں جنوبی امریکا کے ملک ''پاناما'' میں مداخلت کی۔ 1906ء میں ''کیوبا'' پر دوسرا حملہ کیا۔ 1909ء میں ہیٹی کو نشانہ بنایا۔ 1917ء میں

پہلی جنگ عظیم میں محتاط حصہ لیا۔ 1934ء میں ہیٹی پر دوبارہ حملہ کیا۔ دوسری جنگ عظیم کے دوران 1945ء میں ''ہیروشیما'' اور ''ناگاساکی'' کو ایٹم بم سے تباہ کیا، 1947ء میں ''سی آئی اے'' قائم کر کے پوری دنیا میں دہشت ناک کارروائیاں شروع کیں۔ 1950ء میں ''کوریا'' کو نشانہ بنایا۔ 1954ء میں امریکی فوج نے ''سی آئی اے'' کی مدد سے ''گوائیمالا'' پر حملہ کیا۔ 1958ء میں ''لبنان'' میں مداخلت کی۔ 1961ء میں ''کیوبا'' پر تیسرا حملہ کیا، اسی سال ویت نام کی جنگ شروع کی، 1970ء میں ''کمبوڈیا'' پر حملہ کیا۔

1982ء میں اسرائیل کی مدد کے لیے لبنان میں دوبارہ مداخلت کی اور پھر مسلم دنیا پر مسلسل ضربیں لگانا شروع کیں۔ 1986ء میں لیبیا پر حملہ کیا، 1991ء میں نیو ورلڈ آرڈر کا اعلان کرنے کے بعد خلیج کی جنگ چھیڑ کر عراق کو تہس نہس کیا، 2001ء میں ورلڈ ٹریڈ سینٹر کی تباہی کے بہانے افغانستان پر حملہ کیا۔ 19 مارچ 2003ء میں ایک بار پھر عراق پر حملہ کر کے ملک پر قبضہ کر لیا۔

ان میں سے کئی بڑے حملوں خصوصاً مشرق وسطیٰ اور عالم اسلام میں مداخلت کی مہمات کے پس پردہ یہودی لابی کا ہاتھ صاف نظر آتا ہے۔

یہاں یہ بات جان لینا بھی مفید ہوگا کہ 1817ء سے 1825ء تک حکومت کرنے والے امریکا کے پانچویں صدر منرو نے 1823ء میں عالمی سیاست میں کامل غیر جانبداری کا اعلان کیا تھا۔ مگر پہلی عالمگیر جنگ (18-1914ء) میں امریکا نے اپنی غیر جانبدار حیثیت ختم کرتے ہوئے یورپی ممالک کو بھرپور اسلحہ فراہم کیا تھا البتہ جنگ میں اپنی فوج کو شریک کرنے سے گریز کیا۔

7 دسمبر 1941ء کو پرل ہاربر پر جاپان کے حملے کو امریکا نے اپنی بے لگام طاقت کے اظہار کا بہانہ بنالیا اور دوسری جنگ عظیم میں اس قدر نمایاں حصہ لیا کہ یورپ کے محاذ پر تمام اتحادی افواج کی کمان امریکی جنرل آئزن ہاور کے ہاتھ میں تھی۔ جنگ کے دوران 1945ء میں امریکی صدر روز ویلٹ کا اچانک حرکت قلب بند ہوجانے سے انتقال ہوگیا جس کے بعد ٹرومین کو صدارت ملی، اس کے ساتھ ہی امریکی انتظامیہ پر عالمی صہیونیت بری طرح غالب آگئی۔ ٹرومین نے ان کا ایجنٹ بن کر انسانی تاریخ کے دو ناقابل معافی جرائم کا ارتکاب کیا:

① ''جنگ کی طوالت'' کے عذر سے بچنے کا بہانہ بنا کر 1945ء میں جاپان کے شہروں ہیروشیما اور ناگاساکی پر ایٹم بموں کا تجربہ کیا جس کی وجہ سے 5 اور 4 لاکھ آبادی کے یہ دونوں شہر چند لمحوں میں راکھ کا ڈھیر بن گئے۔ 6 سے 7 لاکھ تک افراد ہلاک ہوئے اور تین لاکھ اپاہج اور معذور ہو گئے۔

② اسی شخص نے 1948ء میں دوسری بار عہدۂ صدارت سنبھالتے ہی اسرائیل کے قیام کی حمایت کر کے عالم اسلام کے قلب میں خنجر گھونپا اور مسلسل امداد جاری رکھی۔

یہ تو ذکر تھا امریکا کی استعماری مہمات کا۔ مگر اس کے ساتھ ساتھ سیاسی عالمگیریت کی طرف بھی سفر جاری تھا۔ گزشتہ صدی کے آغاز تک یہودی سرمایہ دار امریکا کا سب سے مؤثر طبقہ بن چکے تھے جن کے پاس سرمایے کے علاوہ میڈیا کی طاقت بھی تھی۔ اس دوران 1897ء میں صہیونیوں کی پہلی عالمی کانفرنس میں پیش کردہ پروٹوکولز میں ایک عالمی حکومت کا نقشہ پیش کر دیا گیا تھا۔ آگے چل کر یہودی برطانیہ، امریکا اور عالمی اداروں کے سہارے اسی عالمی حکومت کی طرف پیش قدمی کرتے دکھائی دیتے ہیں۔ عالمی اداروں کا قیام تب ہی ہو سکتا تھا جب دنیا کے اکثر ممالک خصوصاً بڑی طاقتیں ان کی ضرورت محسوس کریں۔ اس ضرورت کو پیدا کرنے کے لیے 1914ء میں پہلی اور 1939ء میں دوسری جنگ عظیم کے شعلے بھڑکائے گئے، ان جنگوں سے پوری دنیا تباہ ہوئی مگر یہودی لابی اور امریکا کو فائدہ ہوا۔

امریکا نے پہلی عالمی جنگ میں اپنی قوت کو بڑی حد تک محفوظ رکھا اور جب یورپی دنیا لڑتے لڑتے تباہ ہو گئی تو وہ دنیا کی ایک بڑی طاقت کے طور پر نمایاں ہو گیا۔ دوسری جنگ عظیم میں اس نے جاپان کے خلاف ایٹم بم استعمال کر کے اتحادیوں کو فتح دلوائی اور روس کے بعد دنیا کی سب سے بڑی قوت کے طور پر سامنے آیا۔ انہی دونوں جنگوں کے بہانے یہودی لابی نے دنیا کو عالمی اداروں کی ضرورت کا یقین دلایا اور یوں عالمی سیاسی اداروں لیگ آف نیشنز اور اقوام متحدہ کا قیام عمل میں آیا جن کی باگ ڈور دراصل امریکا اور امریکا کے یہودی سرمایہ داروں کے ہاتھ میں تھی۔ دونوں کے قیام اور کارکردگی کا مختصراً جائزہ درج ذیل ہے۔

## لیگ آف نیشنز:

صہیونی لابی اور امریکی سیاستدانوں نے پہلی جنگ عظیم سے پھیلنے والی عالمگیر بدامنی کو بہانہ بنا کر جنگ عظیم کے دوران ایک عالمی سیاسی ادارے کے قیام کے لیے بھاگ دوڑ شروع کی اور لیگ آف نیشنز نامی ادارہ کی داغ بیل رکھ دی۔ اس مجوزہ ادارے کے بنیادی مقاصد قیام امن، تخفیفِ اسلحہ، آزادنہ تجارت، نوآبادیاتی ملکوں کے مسائل کو عوام کی خواہشات کے مطابق حل کرنا اور جمہوری اصولوں کی بنیاد پر ایک مثالی عالمی نظام کا قیام بتائے جارہے تھے۔ اس کا ڈھانچہ امریکی صدر ولسن کے سیاسی مشیر ''کرنل مانڈیل ہاؤس'' نے تیار کیا تھا۔ جنوری 1918ء میں اسے امریکی کانگریس کے سامنے پیش کیا، یہ خاکہ کانگریس میں قرارداد 14 کے نام سے مشہور ہوا۔

لیگ آف نیشنز کے منشور میں جنگ اور استعمار کو جرائم کی فہرست میں شامل کر کے بہت سے نوآبادیاتی علاقوں کو حقوق دینے کی امید دلائی گئی مگر جہاں تک امریکی استعمار کا تعلق ہے اس پر کوئی روک ٹوک نہیں کی گئی۔ اسی طرح تخفیف اسلحہ کا اطلاق بھی عملاً امریکا کے علاوہ دیگر ممالک پر کیا گیا۔ کیونکہ امریکی اور یہودی لابی کا مقصد یہی تھا کہ کسی بھی ملک کو امریکا کے مقابلے میں اپنا دفاع کرنے کی صلاحیت حاصل نہ رہے۔

آزاد تجارت کو فروغ دینے کا مقصد بھی یہی تھا کہ امریکا اور یہودیوں کے معاشی حریفوں کو اقتصادی لڑائی میں شکست دی جائے۔ امریکا کو یہ صلاحیت اس لیے بھی حاصل تھی کہ اس کا بحری تجارتی بیڑہ سب سے بڑا تھا، آزادانہ تجارت کے ذریعے وہ عالمی منڈیوں پر تسلط حاصل کرسکتا تھا۔

لیگ آف نیشنز کے ان قوانین کے نتیجے میں امریکا اور اس کے یہودی سرمایہ دار دن دوگنی رات چوگنی ترقی کرنے لگے حتیٰ کہ 1929ء میں امریکا کے پاس محفوظ سونے کے ذخائر پوری دنیا کے سونے کے 60 فی صد تک جا پہنچے۔

## اقوام متحدہ:

امریکی اور صہیونی لابی جس رفتار سے اپنے مقاصد کو پانا چاہتی تھیں، لیگ آف نیشنز کا منشور اس کے لیے بہت زیادہ کارآمد ثابت نہ ہوا۔ چنانچہ امریکی اور صہیونی اغراض کی جلد تکمیل کے

لیے لیگ آف نیشنز کو ختم کر دیا گیا اور یکم جنوری 1942ء کو 26 ممالک کے اتفاق سے اسے ''اقوام متحدہ'' میں تبدیل کر دیا گیا۔ 24 اکتوبر 1945ء میں امریکی شہر ''سان فرانسسکو'' میں اقوام متحدہ کے منشور کا اعلان ہوا، جسے امریکی صدر ''روز ویلٹ'' کی نگرانی میں دوسری جنگ عظیم کے دوران ہی مرتب کر لیا گیا تھا۔ یہی ادارہ اس وقت سیاسی عالمگیریت کا مرکزی محور ہے۔ اس بارے میں خود اقوام متحدہ کے سابق سیکرٹری جنرل، بطروس غالی کی گواہی موجود ہے جو کہتے ہیں:

''اقوام متحدہ کا ادارہ عالمی نظامِ حکومت کے قیام میں پہلی اینٹ کی حیثیت رکھتا ہے۔''

(عالمی حکومت، از بطرس غالی، بہ حوالہ مغربی میڈیا، ص:85)

اقوام متحدہ کی سلامتی کونسل میں صرف پانچ بڑی طاقتوں کو ویٹو پاور دی گئی ہے یعنی ان ممالک کو کسی بھی قرارداد کو منسوخ کرنے کا حق ہے۔ کوئی بھی عالمی مسئلہ ان پانچوں کے اتفاق کے بغیر حل نہیں ہو سکتا۔

اس ناروا اختیار سے امریکا نے سب سے زیادہ فائدہ اٹھایا ہے۔ صرف 1970ء سے 1990ء کے درمیان اس نے 60 مرتبہ ''ویٹو'' پاور استعمال کر کے دنیا پر اپنی رائے مسلط کی ہے۔ برطانیہ نے 26 مرتبہ، فرانس نے 11 مرتبہ اور روس نے 8 مرتبہ اسے استعمال کر کے تمام دنیا کی ہنسی اڑائی ہے۔ یہ سیاسی عالمگیریت کا ایک الم ناک منظر ہے کہ مسلم دنیا اقوام متحدہ کی رکنیت اختیار کرنے کے بعد ایسے غیر منصفانہ ضابطوں کو تسلیم کر چکی ہے۔

اقوام متحدہ کے منشور کی شق نمبر 7 کے مطابق ''سلامتی کونسل'' ضرورت پڑنے پر اپنی نگرانی میں فوج تشکیل دے سکتی ہے تاکہ جب سلامتی کونسل کسی ملک کے خلاف جنگ کا اعلان کرے تو یہ فوج اپنا کردار ادا کرے۔

39 میں وضاحت کی گئی ہے کہ دنیا میں قیام امن کی ذمہ داری ''سلامتی کونسل'' پر عائد ہوتی ہے، اسی کو یہ حق ہے کہ وہ ہر اس ملک میں دخل اندازی کرے جہاں امن کو تہہ و بالا کیا جا رہا ہو۔ دخل اندازی میں طاقت کا استعمال کرنے یا نہ کرنے کا فیصلہ بھی سلامتی کونسل کے ہاتھ میں ہے۔

اقوام متحدہ کے اس منشور نے بڑی طاقتوں خصوصاً امریکا کو مختلف ممالک میں مداخلت کے

قانونی راستے فراہم کردیے ہیں۔جس کی چند مثالیں درج ذیل ہیں:

- 1960ء میں افریقی ملک کانگو میں سیاسی ابتری کے دوران اقوام متحدہ کی طرف سے پہلی بار کسی ملک میں فوج بھیجی گئی جس نے ہزاروں بے قصور شہریوں کو ہلاک کیا۔
- 7دسمبر 1975ء کو امریکی صدر فورڈ اور ان کے مشیر ہنری کسنجر نے انڈونیشیا کے جزیرے تیمور کا دورہ کیا۔اس کے 3 گھنٹے کے بعد انڈونیشیا کی امریکا نواز حکومت نے تیمور پر حملہ کردیا جس کے نتیجے میں 2لاکھ کے لگ بھگ افراد ہلاک ہوئے۔جب اقوام متحدہ میں انڈونیشین حکومت کے خلاف پابندی لگانے پر ووٹنگ ہوئی تو امریکا نے انڈونیشین حکومت کے حق میں ووٹ ڈالا جس سے انڈونیشیا کے حوصلے بڑھے اور اس نے جزیرے کے باشندوں پر بموں کی بارش کردی۔

پچیس برس بعد انڈونیشین حکومت کے ساتھ امریکا کے تعلقات بگڑ گئے، چنانچہ ''تیمور'' جزیرے پر انڈونیشیا کے قبضے کو سلامتی کونسل کے ذریعے ناجائز قرار دیا گیا اور ''تیمور'' کے عیسائی باشندوں کی بھرپور امداد کرکے اقوام متحدہ کے ذریعے ''تیمور'' میں ریفرنڈم کرایا گیا اور اسے ایک عیسائی اکثریتی ریاست کے طور پر آزاد کرالیا گیا۔

امریکی وزارتِ خارجہ نے ستمبر 1961ء میں سیاسی عالمگیریت کا ایک خاکہ مرتب کرتے ہوئے اعلان کیا تھا کہ اقوام متحدہ کی نگرانی میں پہلے درجہ بدرجہ ایک بین الاقوامی فورس تیار کی جائے گی اور ایک مرحلے میں منظم طور پر بڑی تیزی سے تمام ملکوں کو ایٹمی اسلحے سے محروم کردیا جائے گا، تاکہ کسی بھی ملک کے لیے اقوام متحدہ کی طاقتور فوج کو چیلنج کرنا ممکن نہ ہوسکے۔

**نیو ورلڈ آرڈر:**

ان تیاریوں اور منصوبہ بندیوں کے بعد سیاسی عالمگیریت کی طرف سب سے بڑا قدم اس وقت اٹھایا گیا جب سوویت یونین افغانستان میں شکستِ فاش سے دوچار ہوا اور نظریہ کمیونزم کی ناکامی عیاں ہونے پر یورپ میں کمیونسٹ حکومتوں کے تختے الٹ گئے۔چوں کہ سوویت یونین اور کمیونزم کو مسلمانوں کی ایمانی قوت اور نظریہ جہاد نے شکست دی تھی اس لیے مغرب کو یہ خطرہ

لاحق ہوگیا کہ دنیا اب کیمونزم پر غالب آنے والے اسلام کے عادلانہ نظام ہی میں اپنے سماجی اور معاشی مسائل کا حل تلاش کرنے لگے گی۔اس لیے امریکا نے تمام اسلام دشمن طاقتوں کو عالمگیریت کے نفاذ کے لیے مجتمع کرلیا۔اس نے اپنے روایتی حریف روس کو قائل کرلیا کہ باہمی دشمنی بھول کر اسلام کے مقابلے میں ایک عالمگیر نظام کی بالادستی کی تیاری کا آغاز کردینا چاہیے۔ اس نکتے پر اتفاق کے بعد کیمونزم کی شکست کو اسلام کی کامیابی کی بجائے سرمایہ دارانہ نظام کی فتح باور کرایا گیا اور دنیا کو مکمل طور پر سرمایہ دارانہ نظام کی ترقی یافتہ شکل عالمگیریت (Globalization) کا اسیر بنانے کی تیاریاں شروع ہوگئیں۔

1991ء میں امریکا کی جانب سے نیو ورلڈ آرڈر اس کا آغاز تھا۔سابق امریکی صدر جارج بش سینئر کا جنگ خلیج کے موقع پر یہ بیان بھی سیاسی عالمگیریت کے عزائم کی پوری وضاحت کرتا ہے:

"ہمارے سامنے اس وقت نئے عالمی نظام کی تشکیل کا قیمتی موقع ہے، ہمارے لیے بھی اور ہماری آیندہ کی نسلوں کے لیے بھی۔ہمیں واقعی یہ موقع مل گیا ہے کہ نئے عالمی نظام کی عملی تشکیل کرلیں۔"

## عالمگیریت (Globalization) کا باقاعدہ اعلان:

1995ء میں امریکی شہر "سان فرانسسکو" میں منعقدہ ایک اجلاس میں گلوبلائزیشن کے آغاز کا باقاعدہ اعلان ہوا۔اس اجلاس میں سابق امریکی صدر جارج بش سینئر، سابق روسی صدر گورباچوف، سابق برطانوی وزیراعظم مارگیٹ تھیچر اور سابق امریکی وزیر خارجہ شولٹز سمیت دنیا بھر کے 5 سو سیاسی قائدین، سماجی مفکرین، سائنسدانوں اور اکنامکس کے ماہرین نے شرکت کی۔اجلاس کا ایجنڈا بظاہر اکیس ویں صدی میں داخل ہونے کے لیے نقشہ راہ متعین کرنا تھا مگر درحقیقت یہ عالمگیریت کے آغاز کی طرف پہلا قدم تھا۔(العولمۃ، از صالح الرقب، ص:8)

اس طرح صہیونی لابی اور یہودی سرمایہ داروں کی مزعومہ عالمگیر سلطنت کی راہ ہموار کرنے کے لیے عالمگیریت (Globalization) کا باقاعدہ آغاز ہوگیا۔

سیاسی گلوبلائزیشن نے امریکا کو کس طرح دنیا کا ظالم وڈیرا بنادیا ہے اس کا اندازہ اس بات سے لگائیے کہ اس وقت دنیا کے 140 ممالک میں امریکی فوجی تعینات ہیں۔ان میں سے بہت

سے ملکوں سے امریکا یہ منوا چکا ہے کہ ان کے عوام یا حکومتیں امریکی شہریوں کے کسی جنگی جرم کے خلاف احتجاج نہیں کریں گے۔

2003ء میں امریکا نے غریب ممالک کو دھمکیاں دیں کہ وہ اس معاہدے پر دستخط کریں کہ انسانی حقوق کی خلاف ورزی کرنے پر وہ کسی بھی امریکی سپاہی، شہری اور سرکاری ملازم کے خلاف جنگی جرائم کی عالمی عدالت میں مقدمہ دائر نہیں کریں گے۔ امریکا نے دھمکی دی کہ اگر 30 جون 2003ء تک اس معاہدے پر دستخط نہ کیے گئے تو ان ممالک کی فوجی و اقتصادی امداد مسدود کر دی جائے گی۔ چنانچہ 43 غریب ملکوں نے اس معاہدے پر دستخط کر دیے۔ (روزنامہ راشٹریہ، سہارا اردو، نئی دہلی، 30 جولائی 2003ء)

اس وقت مسلمانوں کا روحانی مرکز سعودی عرب بھی بری طرح سیاسی عالمگیریت کا نشانہ بنا ہوا ہے۔ یہ مملکت جو 1932ء میں شاہ عبدالعزیز السعود نے قائم کی تھی، تیل کی دریافت کے بعد تیزی سے عروج پذیر ہوئی اور خوشحالی کا ایک نمونہ بن گئی مگر شاہ فیصل کی شہادت کے بعد امریکا نے یہاں اپنی ثقافت پھیلا کر بڑے بڑے امراء کو اپنے زیر اثر کر لیا۔ سعودی حکام سے وعدہ لیا گیا کہ وہ کبھی بھی امریکا کو تیل کی فراہمی بند نہیں کریں گے، اس کے بدلے امریکا ان کے اقتدار کا ہمیشہ تحفظ کرے گا۔ تب سے امریکا سعودی عرب کا تیل تقریباً مفت استعمال کر رہا ہے جس کی وجہ سے سعودی عرب اپنی امارت کے باوجود مالی ابتری کا شکار ہو رہا ہے اور مہنگائی بڑھ رہی ہے۔ سعودی عوام جانتے ہیں کہ ان کے تمام مسائل کی بنیاد امریکا کا سیاسی تسلط اور نیو ورلڈ آرڈر ہے مگر انہیں نجات کا کوئی راستہ نہیں ملتا۔

پاکستان، افغانستان، بنگلہ دیش، ترکی، عراق، مصر اور دوسرے اسلامی ممالک کے حالات اس سے زیادہ بدتر ہیں جہاں حکومتوں کے ٹوٹنے اور تشکیل پانے سے لے کر دوسرے ملکوں سے جنگوں اور معاہدوں تک تمام امور امریکا کی منشا سامنے رکھ کر طے پاتے ہیں۔

## دوسرا میدان۔ اقتصادی عالمگیریت:

عالمگیریت (Globalization) کا دوسرا میدان اقتصادی ہے۔ اور اس میدان کا بنیادی

ہدف دنیا کی اقتصادیات پر قابو پا کر اسے چند سرمایہ داروں کے ہاتھوں میں مرکوز کر دینا ہے۔

اقتصادی گلوبلائزیشن چاہتی ہے کہ اقتصادی مسائل میں دنیا کی تمام مقامی حکومتوں کے اختیارات کو اس طرح ختم کر دیا جائے کہ کسی ملک کی حکومت اپنی اقتصادیات کو ترقی دینے میں کوئی کردار ادا نہ کر سکے، پوری دنیا کی اقتصادیات پر صرف امریکا کی بالادستی قائم کر دی جائے، اور ساری دنیا کی اقتصادیات امریکن یہودی سرمایہ داروں کی مٹھی میں آجائیں۔ اس مقصد کے لیے پانچ اہم اقدامات کیے گئے:

① سونے کے ذخائر پر قبضہ ② عالمی تجارتی اداروں کا قیام
③ تجارت سے متعلقہ عالمی معاہدے ④ ملٹی نیشنل کمپنیوں کا فروغ
⑤ پبلک ریلیشنز انڈسٹری کا پھیلاؤ

## (پہلا اقدام) سونے کے ذخائر پر قبضہ:

سونے کے ذخائر پر قبضہ یہود کا قدیم خواب تھا۔ یہ خواب تب ہی پورا ہو سکا جب سونے چاندی کے سکوں کی جگہ نوٹوں نے لے لی۔ قدیم دور میں لوگ سامان کے بدلے سامان بیچتے اور خریدتے تھے جسے (Barter) یا ''بیع مقایضہ'' کہا جاتا ہے۔ پھر اس طریقے میں بہت سی الجھنوں کے پیش نظر سونے اور چاندی کے سکوں کے ذریعے خرید و فروخت ہونے لگی۔

چند صدیاں قبل یہ رواج بھی شروع ہو گیا کہ لوگ صراف (کیشئر) کے پاس سونے، چاندی کے سکے امانتاً رکھوا دیتے اور صراف انہیں ایک رسید لکھ دیتے جسے دکھا کر صراف سے سونا چاندی واپس لیا جا سکتا تھا۔ کچھ زمانہ گزرنے پر اہل یورپ صرف ان رسیدوں کے ذریعے لین دین کے عادی ہو گئے اور رسیدوں نے نوٹ کی شکل اختیار کر لی۔ ہر ملک میں گردش کرنے والے نوٹوں کی مجموعی قیمت کے برابر ''سونا'' بینکوں میں محفوظ ہوا کرتا تھا۔ امریکا کے یہودی سرمایہ داروں اور بینکاروں نے اس صورتحال سے خوب فائدہ اٹھایا اور نوٹوں کو رواج دے دے کر امریکن بینکوں میں سونے کے زیادہ سے زیادہ ذخائر جمع کرتے رہے۔

پہلی جنگ عظیم میں یورپ کا اقتصادی نظام تباہ ہو گیا اور کئی ممالک کے ہاتھوں سے سونے کے

بیشتر ذخائر نکل گئے، مجبوراً نوٹوں کے بدلے سونا دینا بند کر دیا گیا۔ پھر دوسری جنگ عظیم کے بعد یورپی ممالک کی اقتصادی حالت مزید دگرگوں ہوگئی لیکن امریکا اقتصادی اعتبار سے اس وقت اتنا مستحکم تھا کہ اس کے پاس محفوظ ''سونے'' کے ذخائر پوری دنیا کے سونے کی مجموعی مقدار سے زیادہ تھے۔

اس موقع پر امریکی سرمایہ داروں نے امریکا کے شہر ''بریٹن ووڈز' (Braetton Woods) میں 1944ء میں ایک کانفرنس منعقد کر کے عالمی تجارت کا ایک نیا نظام تشکیل دیا جس کے مطابق کسی بھی ملک کا مرکزی بینک امریکا کو ڈالر دے کر، اس سے سونا لے سکتا تھا۔ اس طرح امریکا کے یہودی سرمایہ داروں کا سونا پوری دنیا کی کرنسی کے لیے معیار بن گیا۔ تمام ممالک کی کرنسیاں ڈالر سے وابستہ ہوگئیں جبکہ ڈالر سونے سے وابستہ تھا۔ اگرچہ عملی طور پر کوئی ملک ڈالر دے کر امریکا سے سونا نہیں لیتا تھا اور تمام ممالک ڈالر ہی میں لین دین کرتے تھے لیکن سب کو یقین تھا کہ مطالبے کے وقت سونا مل جائے گا۔

جب 1971ء میں امریکا نے مطالبے کے موقع پر ''سونا'' دینے سے صاف انکار کر دیا تو ''بریٹن ووڈز'' میں تشکیل دیا جانے والا نظام ختم ہوگیا۔ ساتھ ہی یہ حقیقت بھی عیاں ہوگئی کہ اب سونے کے اکثر ذخائر کے حقیقی مالک صرف یہودی ہیں۔

## (دوسرا اقدام) عالمی مالیاتی ادارے:

امریکی اور صہیونی لابی نے اقتصادی عالمگیریت کے لیے دوسرے بڑے قدم کے طور پر عالمی مالیاتی ادارے انٹرنیشنل مانیٹری فنڈ (I.M.F)، عالمی بنک اور ورلڈ ٹریڈ آرگنائزیشن قائم کیے۔ ان تینوں اداروں کا تعارف حسبِ ذیل ہے۔

## انٹرنیشنل مانیٹری فنڈ: International Monetary Fund (I.M.F)

1947ء میں قائم ہونے والا یہ ادارہ پوری دنیا کا ایک مرکزی بینک ہے جو ضرورت مند ملکوں کو 3 سے 5 سال تک کی مختصر مدت کے لیے قرضے دیتا ہے۔ اس کے تقریباً 140 ممبر ہیں۔ کسی بھی ملک کو قرضہ تب ہی دیا جاتا ہے جب اس سے امریکی مفادات متاثر نہ ہوتے ہوں۔ قرضے کے لیے ہر ملک کا ایک ''کوٹہ'' ہوتا ہے جو عالمی تجارت میں اس ملک کی تجارت کے

تناسب سے طے کیا جاتا ہے، مثلاً عالمی تجارت دس ارب ڈالر کی ہورہی ہے جس میں کسی ملک کی شراکت ایک ارب ڈالر کی ہے تو اس ملک کا کوٹہ دس فیصد ہوگا اور ضرورت کے وقت وہ عالمی بینک سے اپنے کوٹے کے مطابق ہی مدد لے سکے گا۔ چوں کہ عالمی تجارت میں سب زیادہ حصہ امریکا اور اس کے یہودی سرمایہ داروں کا ہے اس لیے سب سے زیادہ قرضے بھی انہی کو ملتے ہیں۔

اس ادارے کی پالیسیاں ووٹنگ سے طے ہوتی ہیں لیکن ووٹنگ بھی ''کوٹے'' کی بنیاد پر ہوتی ہے یعنی عالمی تجارت میں کسی ملک کا جتنے فیصد سرمایہ لگا ہوگا اسے اسی قدر ووٹ ڈالنے کا حق ہوگا۔ مثلاً کسی ملک کا دنیا کی تجارت میں بیس فیصد حصہ ہے تو وہ رائے شماری کے وقت 20 ووٹ ڈال سکتا ہے۔ اس اصول کا فائدہ بھی امریکا اور چند بڑی طاقتوں ہی کو ہے، کیوں کہ عالمی تجارت میں انہی کا سرمایہ زیادہ لگا ہوا ہے، انہی کے ووٹ زیادہ ہیں لہٰذا وہی اس ادارے کی پالیسیاں طے کرتے ہیں۔

آئی ایم ایف ترقی پذیر ممالک کو قرضے فراہم کرتے وقت ایسی شرائط ضرور لگاتا ہے جن سے امریکی ملٹی نیشنل کمپنیوں کا اثر ورسوخ بڑھ جائے اور ملک کی معیشت امریکا کے رحم وکرم پر رہ جائے۔

## عالمی بینک: (World Bank)

''عالمی بینک'' اقتصادی ترقی کے مواقع دینے کے نام پر ممبر ممالک کو طویل مدت کے لیے قرضے دیتا ہے۔ قرضے کی میعاد 15 سے 30 سال تک ہوتی ہے۔

اس ادارے کی پالیسیاں بھی ''ووٹنگ'' سے طے ہوتی ہیں مگر یہاں بھی ووٹنگ ممبران کی تعداد کے اعتبار سے نہیں بلکہ تجارت میں حصہ داری کے لحاظ سے ہوتی ہے۔ آئی ایم ایف کی طرح ''ورلڈ بینک'' میں بھی سب سے زیادہ امریکا کا ''کوٹہ'' ہے۔ لہٰذا ادارے کی پالیسیاں بھی پوری طرح امریکا اور صہیونی سرمایہ داروں کے مفادات کے مطابق ہیں۔

## ورلڈ ٹریڈ آرگنائزیشن: (W.T.O)

ورلڈ ٹریڈ آرگنائزیشن (عالمی تجارتی تنظیم) کی داغ بیل اپریل 1995ء میں مراکش کے دارالحکومت رباط میں ڈالی گئی۔ اس تنظیم کا اصل مقصد آئی ایم ایف اور عالمی بنک کے تعاون سے عالمگیریت کا فروغ ہے۔ بظاہر اس کے دو بنیادی اہداف ہیں:

① عالمی تجارت کے لیے آزاد فضا اور پرامن ماحول تیار کرنا۔

② ہر قسم کی پابندیوں سے مستثنیٰ تجارت کو رواج دینا۔

یہ تنظیم عالمی تجارتی نظام کے لیے بنیادی اور قانونی دائرہ کار تشکیل دیتی ہے۔ مثلاً اسے اس بات کی تعیین کا حق ہے کہ کوئی حکومت اپنی صنعت وتجارت کو کس طرح چلائے؟ مقامی مصنوعات اور پیداوار پر ٹیکس کی شرح کتنی رکھے؟ غیر ملکی مصنوعات کے مقابلے میں مقامی اشیاء کی قیمتیں کتنی مقرر کرے۔ یہ تنظیم ان عالمی تجارتی معاہدوں پر عمل درآمد کو یقینی بھی بناتی ہے جن میں حکومتوں کے لیے مقامی صنعت وتجارت کا نظام چلانے کی حدود مقرر کی جاتی ہیں۔ ورلڈ ٹریڈ آرگنائزیشن نے ایسے قوانین بھی وضع کیے ہیں جن سے غریب اور ترقی پذیر ملکوں کی کمپنیوں کی مصنوعات کا مغربی ممالک اور امریکا میں داخلہ مشکل ہو گیا ہے۔

## پس پردہ کام کرنے والی تنظیمیں:

اقتصادی گلوبلائزیشن کو فروغ دینے کے لیے کچھ تنظیمیں پس پردہ بھی سرگرم رہی ہیں۔ ان میں سے دو کا تعارف درج ذیل ہے:

## بلڈر برج (Bilderberg):

اسے 1954ء میں ''سوئیڈن'' کے ایک سرمایہ دار ''جوزف رٹنگر'' (Joseph H Retinger) نے قائم کیا تھا۔ یہ دنیا کی انتہائی مضبوط اور خفیہ عالمی اقتصادی تنظیم ہے۔

## راکفلر فاؤنڈیشن:

یہ تنظیم دراصل امریکا کی سب سے بڑی تجارتی کمپنی ہے۔ یورپ اور امریکا میں یہودی منصوبوں خصوصاً عالمگیریت کو فروغ دینے کے لیے سرگرم ہے، اس کی کئی ذیلی تنظیمیں بھی ہیں، جو بظاہر ایک دوسرے سے لاتعلق ہیں، لیکن درحقیقت ایک خاص منصوبہ بندی کے ساتھ مخصوص مقاصد کے لیے اپنے اپنے میدان میں کام کر رہی ہیں۔

## (تیسرا اقدام) عالمی تجارتی معاہدوں کا قیام:

اقوام متحدہ اور عالمی مالیاتی اداروں کی مدد سے امریکا اور یہودی سرمایہ داروں نے کثیر الملکی

معاہدوں کو فروغ دیا ہے جن کے ذریعے بین الاقوامی آزادانہ تجارت کی بنیاد رکھی گئی۔

آزادانہ تجارت کے تصور نے درحقیقت سرمایہ دارانہ نظام کے نظریات سے جنم لیا ہے۔

سرمایہ دارانہ نظام کے بنیادی اصول تین ہیں:

① ذاتی ملکیت (Private Property): یعنی کوئی بھی شخص مصنوعات اور پیداوار کے وسائل بھی ذاتی ملکیت میں رکھ سکتا ہے۔

② ذاتی منافع کا محرک (Profit Motive): یعنی کسی بھی پیداوار کا اصل محرک ذاتی منافع کا حصول ہوتا ہے۔

③ حکومت کی عدم مداخلت (Laissez Faire): یعنی حکومتوں کو تاجروں کی سرگرمیوں میں دخل نہیں دینا چاہیے۔

ان نظریات نے مزید وسعت اختیار کر کے عالمگیر طور پر آزاد تجارت کے نظریے کو منوایا۔ آزاد عالمی تجارت کا مطلب یہ ہے کہ ترقی یافتہ اور ترقی پذیر ممالک بیرونی ممالک سے تجارت کے میدان میں پوری آزادی سے سرگرم ہوں، تمام ملکوں کی منڈیوں کے دروازے پوری دنیا کے تجارتی اداروں کے لیے کھلے ہوئے ہوں، مال کی درآمد و برآمد پر کوئی کسٹم ڈیوٹی نہ ہو۔ کوئی حکومت کسی غیر ملکی کمپنی پر کوئی پابندی عائد نہ کر سکے۔ ایک غیر ملکی کمپنی کسی بھی ملک میں ان تمام آزادیوں اور مراعات کے ساتھ تجارت کر سکے جو اس ملک کے مقامی تاجروں اور صنعت کاروں کو میسر ہیں۔ اس طرح دنیا کے ہر بازار میں مقامی تاجروں اور غیر ملکی تاجروں کے درمیان کھلا مقابلہ ہو۔

## غیر ملکی سرمایہ داری (F.D.I):

آزاد تجارت کی ایک اہم شاخ براہِ راست غیر ملکی سرمایہ داری ہے، غیر ملکی کمپنیوں کا کسی ملک میں تجارت کرنا، وہاں سرمایہ لگانا اور اپنے کارخانے کھول لینا "براہِ راست غیر ملکی سرمایہ داری" کہلاتا ہے، جسے اقتصادیات کی اصطلاح میں (Forcign Direct Investement) یا "F.D.I" کہتے ہیں۔ کئی برسوں تک "ایف ڈی آئی" صرف سرمایہ دار ممالک ہی میں منحصر رہا۔ براہِ راست غیر ملکی سرمایہ کاری اور آزاد تجارت کے تصورات کے ساتھ عالمی طاقتوں نے ترقی

پذیر ممالک سے معاہدے کر کے دوسرے ممالک میں سرمایہ کاری کو قانونی حیثیت دے دی جس کے بعد کسی بھی کمپنی کے لیے کسی بھی ملک میں تجارت کرنے کے دروازے کھل گئے۔

**گاٹ معاہدہ:**

آزاد عالمی تجارت کے لیے کیے جانے والے معاہدوں میں 1947ء میں ہونے والا گاٹ معاہدہ خاص طور پر قابل ذکر ہے جس کا مقصد بظاہر عالمی تجارت کو دوسری جنگ عظیم کے بعد عائد کی جانے والی تجارتی پابندیوں سے آزاد کرانا تھا۔ اس معاہدے کے چار بنیادی اصول تھے:

① معاہدے میں شامل تمام ممالک، ایک دوسرے کے بنائے ہوئے سامان کو وہی حیثیت دیں جو اپنی مقامی مصنوعات کو دیتے ہیں، لہٰذا غیر ملکی مصنوعات پر اتنا ہی ٹیکس عائد کیا جائے گا جتنا مقامی مصنوعات پر لگتا ہے۔

② معاہدے میں شامل کسی بھی ملک کو دوسرے ملک سے آنے والی مصنوعات کی مقدار متعین کرنے کا اختیار نہیں ہوگا۔

③ رکن ممالک غیر ملکی مصنوعات پر لگنے والی کسٹم ڈیوٹی میں کمی لائیں گے۔

④ رکن ممالک برآمد ہونے والی مصنوعات کی مالی امداد نہ کریں۔

گاٹ معاہدے کا بڑا مقصد یہ تھا کہ مصنوعات کے سلسلے میں ہونے والا مقابلہ نہ تو چند حکومتوں کے درمیان ہو، اور نہ ہی کسی حکومت اور کمپنی کے درمیان ہو بلکہ مقابلہ صرف مختلف کمپنیوں کے درمیان ہو۔

اس معاہدے کے تحت کسٹم ڈیوٹی بہت کم کر دی گئی۔ 1948ء میں کسی بھی سامان کو بیرون ملک فروخت کرنے کے لیے اس کی قیمت کا 48 فیصد بطور ٹیکس دینا پڑتا تھا۔ بعد میں یہ ٹیکس کم ہوتے ہوتے صرف 4 سے 6 فیصد رہ گیا۔ اس طرح غیر ملکی کمپنیاں کم ٹیکس دے کر بیرون ملک اپنا سامان سستے داموں فروخت کرنے کے قابل ہو گئیں۔ گاٹ معاہدے میں ابتداءً 23 ممالک شریک ہوئے تھے مگر 1993ء تک 117 ممالک اس میں شامل ہو چکے تھے۔

بظاہر آزادانہ تجارت کی پیش کش بڑی دلفریب معلوم ہوتی ہے مگر اس کا لازمی نتیجہ کیا نکلتا

ہے؟ جب بڑے تاجروں اور ترقی یافتہ ملکوں کی کمپنیوں کا مال کمزور اور غریب ممالک میں آتا تو مقامی کمپنیاں اس کے سامنے ٹک نہیں پاتیں اور تجارتی مقابلہ آرائی میں پیچھے رہ جاتی ہیں۔ کیوں کہ ترقی یافتہ ملکوں کی کمپنیوں کے مال کا معیار اتنا اعلیٰ ہوتا کہ کہ مقامی کمپنیاں اس کا مقابلہ نہیں کرسکتیں۔ اسی طرح وہ اپنے مال کی جس طرح تشہیر کرتی ہیں مقامی کمپنیاں نہیں کرسکتیں۔ بعض اوقات ایک بڑی غیر ملکی کمپنی کے صرف اشتہارات کا بجٹ کسی غریب ملک کی تمام سالانہ تجارت سے زائد ہوتا ہے۔ اس کے ساتھ ساتھ انہیں جدید ٹیکنالوجی، آلات، مزدور، توانائی اور ترسیل کے شعبوں میں اپنی ترقی یافتہ حکومتوں کی طرف سے اتنی سہولیات میسر ہوتی ہیں کہ وہ ایک بہتر چیز کم خرچے میں تیار کر کے کم لاگت میں بیچ سکتی ہیں جب کہ غریب اور ترقی پذیر ملکوں میں توانائی کی گرانی، صنعتی و تجارتی مراعات کی کمی اور ٹیکسوں کی سختی کی وجہ سے وہ چیز مناسب خرچے میں تیار ہوسکتی ہے نہ بک سکتی ہے۔ نتیجہ یہ نکلتا ہے کہ لوگ مقامی مصنوعات پر غیر ملکی چیزوں کو ترجیح دیتے ہیں۔ اس طرح مقامی کارخانے بند ہونے لگتے ہیں۔

## تجارتی و اقتصادی پابندیاں:

عالمی مالیاتی اداروں کے توسط سے ترقی یافتہ ممالک ترقی پذیر ممالک پر ایسی اقتصادی اور زرعی پالیسیاں مسلط کر رہے ہیں جن کا مقصد صرف یہ ہے کہ یہ ممالک زرعی و اقتصادی ترقی نہ کرسکیں۔ مثلاً زراعت کے لیے مغربی دنیا سے خاص قسم کا بیج اور کھاد درآمد کرنے کی پابندی لگائی جاتی ہے۔ یہ بیج اور کھاد فوری طور پر زیادہ فصل اگاتے ہیں مگر انجام کار زمین کو بانجھ کر دیتے ہیں۔ اس فصل کو لگنے والے حشرات کو تلف کرنے کے لیے خاص قسم کی ادویات کی ضرورت بھی پڑتی ہے، جو صرف مغرب فراہم کرسکتا ہے۔

مغربی دنیا اب ترقی پذیر ملکوں سے زرعی پیداوار درآمد کرنا بھی ترک کر رہی ہے اس طرح ترقی پذیر ممالک عالمی تجارت میں کوئی قابل ذکر نفع حاصل کر پاتے۔

## ویزا پالیسیوں کے ذریعے غریب ملکوں کا استحصال:

انہی پابندیوں کی ایک شکل یہ ہے کہ ترقی یافتہ ممالک نے ترقی پذیر ممالک کے لیے ویزا

پالیسیاں نہایت سخت کردی ہیں۔ انہوں نے ''ویزا'' کے لیے ایسے قوانین بنادیے ہیں کہ بس گنے چنے نہایت باصلاحیت اور متمول افراد ہی ان ممالک میں داخل ہوسکتے ہیں۔ ملازمت کے لیے آنے والے افراد کے لیے مشکلات پیدا ہونے کی وجہ سے ان ملکوں میں بیروزگاری بڑھ رہی ہیں۔

اسی طرح بڑی طاقتیں اپنی ایمیگریشن (ترک وطن) پالیسی کو بھی اس انداز سے تیار کررہے ہیں جن سے ترقی پذیر ممالک کے ترقیاتی منصوبے دھرے کے دھرے رہ جاتے ہیں۔ وہ ترقی پذیر ممالک کے ذہین اور قابل ترین افراد کو ترغیبات دے کر اپنے ہاں بلالیتے ہیں، جس کی وجہ سے مشرقی اور اسلامی دنیا میں لائق نوجوانوں اور فعال عملے کی سخت کمی محسوس ہورہی ہے۔

اس صورتحال پر تبصرہ کرتے ہوئے باب سٹکلف لکھتا ہے:

''غریب اور ترقی پذیر ممالک اپنے معیار کو بلند کرنے کے لیے ترقی یافتہ ممالک کی ایمیگریشن پالیسی کے محتاج ہوگئے، ان کے یہاں کا فعال اور متحرک طبقہ دولت مند ممالک کا رخ کرتا ہے اور معاش کے آسان ذرائع تلاش کرتا ہے۔''

(Freedom to Man in the Age of Globalization)

بھارت کے سابق وزیرخزانہ یشونت سنہا نے ورلڈ اکنامک فورم کے اجلاس میں اظہارِ افسوس کرتے ہوئے کہا تھا:

''گلوبلائیزیشن ہمارے لیے ایک غیر منصفانہ عمل ہے جس کا مقصد ترقی یافتہ ممالک کے بازاروں کی حفاظت ہے۔ وہ گلوبلائزیشن کو ایک ہتھیار کے طور پر استعمال کررہے ہیں۔ وہ اپنا ایمیگریشن پالیسی بھی اس انداز سے تیار کررہے ہیں کہ جس سے ترقی پذیر ممالک کے منصوبوں پر ضربِ کاری لگ رہی ہے۔ آئندہ سالوں میں یہاں فعال نوجوانوں کی سخت کمی محسوس کی جائے گی۔'' (ٹائمز اوف انڈیا، 16 جنوری 2001ء)

## (چوتھا اقدام) ملٹی نیشنل کمپنیوں کا فروغ:

عالمگیریت (Globalization) کے خواب کو حقیقت میں بدلنے اور مذکورہ تمام اقدامات کا ثمر پانے کے لیے کثیر القومی تجارتی تنظیمیں (ملٹی نیشنل کمپنیاں) قائم کی گئیں جن کے دائرہ کار

نے پوری دنیا کو اپنی لپیٹ میں لے لیا اور مقامی تجارتوں کا اثر ورسوخ محدود سے محدود تر ہوتا گیا۔

ملٹی نیشنل کمپنیاں اس وقت مسلم دنیا کی اقتصادی ترقی میں بری طرح حائل ہیں۔ انڈونیشیا'' اور ''ملیشیا'' کی مثال سامنے ہے، ان ملکوں نے اپنی اقتصادی ترقی کے لیے سنجیدہ کوششیں شروع کیں اور کئی کارگر اقدامات کیے مگر ملٹی نیشنل کمپنیوں کی جڑیں وہاں مضبوط ہو چکی تھیں۔ انہوں نے راتوں رات اسٹاک ایکس چینجز میں ایسے داؤ پیچ آزمائے کہ ان کی حکومتوں کو ملٹی نیشنل کمپنیوں کے سامنے گھٹنے ٹیکنے پڑے۔

ملٹی نیشنل کمپنیوں کے قیام اور پھیلاؤ کے لیے درج ذیل طریقے اپنائے جاتے ہیں:

① عموماً چند چھوٹی کمپنیاں ایک دوسرے میں ضم ہو کر ایک بڑی ملٹی نیشنل کمپنی کی شکل اختیار کر لیتی ہیں، ان کے مالکان تجارت میں باہم شریک بن جاتے ہیں۔ بعض اوقات کچھ بڑی کمپنیاں بھی انضمام کر کے ایک بہت بڑی ملٹی نیشنل کمپنی کی شکل اختیار کر لیتی ہیں۔ اس کے بعد وہ دنیا کے ہر حصے میں اپنی مصنوعات پہنچا سکتی ہیں۔

② بعض اوقات دو یا زائد کمپنیاں کسی خاص چیز کی تیاری یا کسی اہم منصوبے کی تکمیل کے لیے عارضی طور پر انضمام کر لیتی ہیں جیسا کہ ''مائیکروسوفٹ'' کے ایک منصوبے کے لیے 15 مواصلاتی کمپنیوں کا اشتراک عمل آیا۔

③ بعض ملٹی نیشنل کمپنیاں کسی دوسری کمپنی کا نام اور مارکہ استعمال کرنے کا حق خرید لیتی ہے اور اپنی مصنوعات وخدمات کو اُسی نام سے پیش کر کے اپنا دائرہ کار بڑھا لیتی ہیں۔

④ کبھی کوئی کمپنی بازار میں اپنی حریف کمپنیوں کی تعداد میں کمی کرنے اور تن تنہا زیادہ سے زیادہ دولت کمانے کے لیے بھی کسی دوسری کمپنی کو خرید لیتی یا اس کے ساتھ انضمام کر لیتی ہے۔

⑤ بعض اوقات کوئی چھوٹی کمپنی عالمی منڈی میں مقابلے سے عاجز آجاتی ہے، تب اس کے مالکان کمپنی کو زوال سے بچانے کے لیے کسی بڑی کمپنی کے ساتھ اشتراک کر لیتے ہیں، اس اشتراک سے چھوٹی کمپنی کو تحفظ اور بڑی کمپنی کو مزید وسعت مل جاتی ہے۔

خلاصہ یہ ہے کہ آزادنہ تجارت، مقابلے کی فضا اور زیادہ سے زیادہ وسعت پذیری کی خواہش ملٹی

نیشنل کمپنیوں کے قیام، ان کے باہمی اشتراک وانضمام اوران کے مزید برمزید پھیلاؤ کا سبب ہیں۔

## ملٹی نیشنل کمپنیاں اور میڈیا:

ملٹی نیشنل کمپنیوں کی مقبولیت اور اثر اندازی میں میڈیا نے بہت بڑا کردار ادا کیا ہے۔ میڈیا کی باگ ڈور امریکا کے یہودی سرمایہ کاروں کے ہاتھ میں ہے جو دنیا کے مقبول ترین اخبار وجرائد، ریڈیو ٹی وی چینل چلا رہے ہیں۔ یہ لوگ ملٹی نیشنل کمپنیوں کی مصنوعات کی تشہیر باقاعدہ ایک قومی جذبے کے ساتھ کرتے ہیں کیوں کہ یہی سرمایہ دار ملٹی نیشنل کمپنیوں کے سب سے بڑے حصہ دار ہیں۔ وہ میڈیا کے ذریعے نہایت پرکشش انداز میں یہ ترغیبات دیتے ہیں کہ لوگ مقامی مصنوعات پر غیر ملکی مصنوعات کو ترجیح دیں۔ ٹی وی کے پرکشش اشتہارات کے ذریعے یہ ترغیب بھی دی جاتی ہے کہ غیر ملکی سامان چھوٹے تاجروں کی ذاتی دکانوں کی بجائے کمپنی کی اصل برانچوں سے خوش تہذیبی اور اچھے معیارِ زندگی کی علامت ہے۔

اس کا نتیجہ یہی نکلتا ہے کہ مقامی تاجر اور صنعت کار اپنے ملکی خریدار کی شکل دیکھنے کو ترسنے لگتے ہیں۔ بعض مقامی مصنوعات کا گاہک دوسرے ملک میں تو موجود ہوتا ہے مگر مقامی مال اپنے دیس میں اجنبی ہوجاتا ہے، چنانچہ مقامی مصنوعات تدریجاً ختم ہوجاتی ہیں، اور غیر ملکی سامان ساری دنیا میں پھیل جاتا ہے۔

## ایک اعتراض کا جواب:

یہاں ایک اعتراض پیدا ہوتا ہے اور وہ یہ کہ آزادانہ تجارت کے اصولوں میں کہیں بھی ایسی کوئی قید نہیں لگائی گئی ہے جس سے مشرقی اور ایشیائی کمپنیوں کو مغرب اور دیگر ممالک میں تجارت کرنے کی ممانعت ہو، اس کے بعد اگر مشرق مغرب سے اس آزادانہ مقابلے میں مار کھا رہا ہے تو کیا یہ اس کی اپنی کمزوری نہیں؟

یہ اعتراض اپنی جگہ درست مانا جاسکتا ہے، لیکن اصل بات یہ ہے کہ مغربی دنیا خصوصاً امریکا اور اس کے یہودی سرمایہ داروں نے اس ''آزادانہ تجارتی مقابلے'' کا انعقاد ایسے وقت میں کیا ہے جب مغربی استعمار مشرق کو لوٹ چکا ہے۔ مشرقی کے سونے کے ذخائر یہودی بینکوں میں جمع ہوچکے

ہیں، معاشی طور پر مغرب انتہائی مستحکم اور مشرق نہایت ضعیف ہے۔اس پر جان بوجھ کر سیاسی بحران بھی مسلط کیے جاتے رہے ہیں تا کہ وہ کبھی معاشی واقتصادی لحاظ سے مضبوط نہ ہو سکے۔مشرقی دنیا خصوصاً عالم اسلام کو ایسی شرائط پر قرضے دیے جاتے ہیں جو ان کو معاشی طور پر ہمیشہ کے لیے مغرب کا محتاج بنا دیں۔پھر ترقی پذیر ممالک پر مغرب میں تجارت کے لیے جو شرائط عائد کی جاتی ہیں وہ دراصل ایک قسم کی پابندی ہی ہے کیونکہ ان سخت شرائط کو پورا کرنا بہت مشکل ہوتا ہے۔

ایسی حالت میں تجارت کے آزادانہ مقابلے کا نعرہ محض ایک ڈھونگ ہے۔اس مقابلے کا اکھاڑا اس یقین دہانی کے بعد سجایا گیا ہے کہ کوئی مسلم، مشرقی یا ایشیائی کمپنی کبھی بھی عالمی سطح پر کاروبار کرنے اور مغربی کمپنیوں کے لیے چیلنج ثابت ہونے کی سطح پر نہیں آسکے گی۔

## ملٹی نیشنل کمپنیوں کی وسعت:

ملٹی نیشنل کمپنیوں کی عالمگیریت کا اندازہ اس بات سے لگائیں کہ صرف ایک چیز کو بازار میں لانے کے لیے کئی ممالک کے مزدوروں اور ملازموں کو شریک کیا جاتا ہے۔سامان کسی ایسے غریب ملک میں بنتا ہے جہاں مزدور تھوڑی اجرت پر مل جاتے ہیں۔کسی دوسرے ملک میں اس کی پیکنگ ہوتی ہے، تیسرے ملک میں اسے فروخت کیا جاتا ہے، اس طرح ایک ایک چیز کے لیے کئی ممالک میں کارخانے کھولے جاتے ہیں۔مصنوعات کی تیاری کے سلسلے کو کئی ملکوں میں پھیلا کر یہ کمپنیاں دو بڑے فوائد حاصل کرتی ہیں۔

① اگر کسی ملک میں ان کمپنیوں کی کوئی بدعنوانی یا کوئی مذموم سرگرمی ثابت ہو جائے تو ان کی مصنوعات کو بند نہیں کیا جا سکتا کیوں کہ ان کے کارخانے اور منڈیاں پوری دنیا میں ہیں۔ نیز ایسی کسی سرگرمی کی وجہ سے کسی ملک یا حکومت سے احتجاج نہیں کیا جا سکتا کیوں کہ ملٹی نیشنل کمپنیوں کو کسی ملک یا وطن کی طرف منسوب کرنا ممکن نہیں۔

② یہ کمپنیاں جہاں کارخانے لگاتی اور تجارت کرتی ہیں وہاں کی حکومتوں کو ٹیکس دیتی ہیں، جو اگرچہ آزادانہ تجارت کے معاہدوں کی وجہ سے معمولی سا ہوتا ہے مگر غریب اور بدحال ملکوں کی حکومتیں اسی ٹیکس کو اپنے گزارے کا سہارا سمجھتی ہیں، اس لیے ملٹی نیشنل کمپنیاں ان

حکومتوں کو بلیک میل کر کے بڑی آسانی سے اپنے اشاروں پر چلا سکتی ہیں۔ ملٹی نیشنل کمپنیاں کے ذریعے مغربی دنیا عرب ممالک کی دولت بٹور کر اسے اپنی سرمایہ کاری میں لگا رہی ہے۔ عرب ممالک مغربی دنیا سے اوسطاً ہر روز 4 ارب ڈالر سے زائد رقم قرض لیتے ہیں اور مغربی دنیا روزانہ اتنی ہی رقم سرمایہ کاری پر لگاتی ہے۔

## ایک اور حربہ:

ملٹی نیشنل کمپنیوں کا ایک حربہ یہ بھی ہے کہ وہ دوسرے ملکوں کا خام مال بہت سستے داموں خریدتی ہیں، پھر اسے اپنے کارخانوں میں تیار کر کے انہی ممالک میں کئی گنا مہنگے نرخ پر فروخت کرتی ہیں، مثلاً عرب دنیا میں پیٹرول نکالنے، صفائی کرنے اور اسے کارآمد بنانے والی تمام کمپنیاں غیر ملکی ہیں۔ جب یہ اپنی خدمات کا معاوضہ وصول کرتی ہیں تو عرب دنیا کا نفع بہت تھوڑا رہ جاتا ہے۔ پھر مسلمانوں کے اس تیل کو برآمد کرنے پر مغربی حکومتوں کی طرف سے عرب ملکوں پر ٹیکس بھی عائد کیا جاتا ہے۔

غرض اس طرح مسلم اور مشرقی ممالک اپنے معدنی و قدرتی وسائل، زرعی پیداوار اور خام مال کا کوئی خاص فائدہ نہیں اٹھا پا رہے، ان کی حیثیت بس کھیتوں کی کسانوں کی سی رہ گئی ہے جنہیں سب کچھ باہر سے خریدنا پڑتا ہے اور جنہیں دو وقت کی روٹی اور تن ڈھانپنے کا کپڑا بمشکل مل پاتا ہے۔

## ملٹی نیشنلز کا تسلط:

اس وقت 500 بڑی ملٹی نیشنل کمپنیاں دنیا کی 76 فیصد اقتصادیات پر مسلط ہیں۔ امریکا کی 80 فیصد تجارت یہی ملٹی نیشنل کمپنیاں کر رہی ہیں۔ ملٹی نیشنل کمپنیوں کے دم سے براہِ راست غیر ملکی سرمایہ کاری (ایف ڈی آئی) پر امریکا، یورپ اور جاپان کی مکمل اجارہ داری قائم ہے۔ امریکا، یورپ اور جاپان پوری دنیا کی 74.9 فیصد پیداوار پر مسلط ہیں۔ اس طرح دنیا کی صرف 30 فیصد آبادی پوری دنیا کی 84 فیصد دولت سے مزے لے رہی ہے، ایشیاء اور افریقہ میں بسنے والی دنیا کی 70 فیصد آبادی کو عالمی دولت میں سے صرف 16 فیصد حصہ ملتا ہے۔

40 فیصد عالمی تجارت پر امریکا، جاپان، فرانس، جرمنی اور برطانیہ کی 350 بڑی کمپنیاں قابض

ہیں، عام فون اور موبائل کے میدان میں عالمی سطح پر 86 فیصد حصہ انہی ممالک کی 10 بڑی کمپنیوں کا ہے، انہی 5 ممالک کی کمپنیاں اسلحے میں 85 فیصد، اور کمپیوٹر میں 70 فیصد حصص کی مالک ہیں۔

تیل کمپنی ''شیل'' کی سالانہ تجارت ترکی، ایران اور وینزویلا کے بجٹ سے بڑھ گئی ہے، جنرل موٹرز کی سالانہ تجارت پاکستان، جنوبی افریقہ اور سوئٹزر لینڈ کے بجٹ سے متجاوز ہے، امریکی کمپنی ''گڈیر'' (Goodyear) کی سالانہ تجارت سعودی عرب جیسے خوشحال مسلم ملک کے بجٹ سے بھی زیادہ ہے۔

## (پانچواں اقدام) پبلک ریلیشنز انڈسٹری کا پھیلاؤ:

اقتصادی عالمگیریت میں پبلک ریلیشنز یعنی پی آر (PR) بہت بڑا کردار ادا کر رہی ہے۔ یہ ابلاغ عامہ کی ایک ایسی انڈسٹری ہے جس کا مقصد لوگوں کی سوچ کو تبدیل کر کے اپنے مطلوبہ سانچے میں ڈھالنا ہے اور ان پر اثر انداز ہو کر اپنا مقصد حاصل کرنا ہے۔ امریکا میں اس انڈسٹری کے تحت درجنوں کمپنیاں یہی کام کر رہی ہیں اور ان کا دائرہ کار پوری دنیا میں پھیلا ہوا ہے۔

پبلک ریلیشنز انڈسٹری کا بانی ایڈورڈ برنیز (Edward Bernays) کو کہا جاتا ہے۔ فلسفے اور نفسیات کے اس ماہر نے پبلک ریلیشنز انڈسٹری کو ایسی بنیادیں فراہم کی ہیں جن کے ذریعے سرمایہ دار طبقہ اپنی بدکرداری، بدعنوانی اور گھناؤنے عزائم کو چھپا کر لوگوں کا اعتماد حاصل کرنے میں کامیاب ہو سکتا ہے۔

پی آر انڈسٹری ''اچھائی اور برائی سے بالاتر'' ٹیکنالوجی ہے جسے دنیا کے بڑے بڑے سرمایہ دار اور عالمگیریت کے لیے کوشاں ملٹی نیشنل کمپنیاں پوری اعتماد سے استعمال کر رہی ہیں۔

پبلک ریلیشنز انڈسٹری نے یہ ممکن بنا دیا ہے کہ عام اشیاء کی طرح جھوٹ اور پروپیگنڈے کو بھی ایک قابل فروخت چیز کے طور پر عالمی مارکیٹ میں فروخت کیا جائے۔ یہ فرمیں دنیا کے اذہان کو چند سرمایہ داروں اور چند بڑی کمپنیوں کے لیے مسخر کر رہی ہیں، اس فن کے ماہرین کو اب پوری دنیا میں بڑے بڑے صنعتی و تجارتی ادارے، سیاسی پارٹیاں اور حکومتیں لاکھوں ڈالر تنخواہیں دے کر اپنے ہاں ملازم رکھتی ہیں تاکہ یہ ان کے سیاہ کرتوتوں کو سفید کر کے دکھا سکیں۔

کویت کے حکمرانوں نے 91-1990ء کی خلیجی جنگ کے دوران اپنے حق میں پروپیگنڈا کرانے کے لیے امریکا کی پی آر فرم ''ہل اینڈ نولٹن'' کی خدمات حاصل کی تھیں۔ انڈونیشیا کی حکومت کو ''ہل اینڈ نولٹن'' کے ساتھ دنیا کی سب سے مہنگی پی آر فرم ''برسن مارس ٹیلر'' کی خدمات بھی حاصل ہیں جس کی سالانہ فیس 25 کروڑ ڈالر سے زائد ہے۔ سعودی حکمران اور شہزادے بھی ان کمپنیوں کے گاہک ہیں۔ دنیا بھر میں سالانہ دو ارب ڈالر صرف ''پبلک ریلیشنز انڈسٹری'' پر خرچ کیے جا رہے ہیں۔

پی آر فرمیں معلومات اور تحقیق کی طاقت سے بخوبی آگاہ ہیں اسی لیے وہ کسی مسئلے یا ہدف کے لیے پوری باریک بینی اور محنت سے رائے شماری، سروے، یا انٹرویوز کرتی ہیں اور رائے عامہ کا رخ بھانپتی رہتی ہیں۔ وہ لوگوں کی مختلف آراء پر مبنی اعداد و شمار کو جانچ کر اپنا مقصد حاصل کرنے کے لیے ٹھوس لائحہ عمل اپناتی ہیں۔ اپنے مقاصد کے لیے وہ مخبروں اور ایجنٹوں کی خدمات بھی حاصل کرتی ہیں۔ کسی ملک میں عالمی سرمایہ داروں کے منصوبوں کو نافذ کرنے کے لیے مقامی سرکاری افسران اور منصب داروں کو قابو میں لانے کا کام بھی یہی فرمیں کیا کرتی ہیں۔

برنیز کہتا تھا: ''جو لوگ معاشرے کی عادات اور آراء کا احاطہ کر کے اپنا مقصد نکال سکتے ہیں، وہی افراد پس پردہ رہ کر حکومت کرتے ہیں۔''

پی آر انڈسٹری سرمایہ داروں کے لیے جو عالمگیر خدمات انجام دے رہی ہے ان کی ایک ہولناک جھلک یہ ہے:

- خوراک اور ادویہ کی صنعتوں کا معیار چیک کرنے (کوالٹی کنٹرول) کی حوصلہ شکنی کرنا، اور اس کے مفروضہ مسائل کو بڑھا چڑھا کر پیش کرنا۔
- دنیا بھر میں سادہ لوح کسانوں کو مہلک کیمیکلز اور گندگیوں سے تیار کردہ کیمیکل کھاد اور مصنوعی بیج اس طرح فروخت کرنا کہ وہ اسے اصلی کھاد اور اصلی بیج پر ترجیح دیں۔
- بڑے بڑے سرمایہ دار اداروں کی حرص و ہوس کی پردہ پوشی کرنا اور عام صارف کو ان سے خوش گمان رکھنا۔

- اہم اقتصادی اور سیاسی مسائل پر رائے عامہ کے غم و غصے کو ٹھنڈا کرنا یا ایسی شکل دینا کہ وہ عملاً کچھ نہ کر سکیں۔

اس انڈسٹری کے کارناموں کو سمجھنے کے لیے ایک مثال کافی ہوگی۔ چند عشرے قبل جب سگریٹ ساز کمپنیوں نے سگریٹ نوشی کو خواتین میں مقبول بنانے کا کام پبلک ریلیشن انڈسٹری کو سونپا تو بظاہر یہ مہم ناممکن نظر آتی تھی کیوں کہ مغرب کی ماڈرن خواتین بھی سگریٹ نوشی سے سخت نفرت کرتی تھیں لیکن پی آر انڈسٹری کے بانی ایڈورڈ برنیز نے اپنے ہدف کو پانے کے لیے سگریٹ نوشی کو آزادیٔ نسواں کی علامت قرار دیا۔ اشتہارات میں یہ پرچار کیا گیا سگریٹ نوشی خواتین کی شمعِ آزادی کو روشن رکھتی ہے۔ یہ بھی مشہور کیا گیا کہ سگریٹ نوشی حیرت انگیز طور پر بھاری بھر کم عورتوں کا مٹاپا دور کرتی اور دبلی پتلی خواتین کا وزن بڑھاتی ہے۔

یہ بھی پی آر انڈسٹری کا کارنامہ تھا کہ جب لبنان پر اسرائیل نے حملہ کر کے تباہ کاریوں کی ایک نئی تاریخ کو جنم دیا تو اس بارے میں امریکن ٹی وی پر سکوت طاری رہا حالانکہ امریکی ٹی وی کا اناؤنسر اس وقت بیروت میں بذاتِ خود موجود تھا۔

## اقتصادی گلوبلائزیشن کے اثرات اور خطرات:

گزشتہ صفحات کے مطالعے سے یہ بات کھل کر سامنے آگئی کہ عالمی مالیاتی اداروں، آزادانہ تجارت، ملٹی نیشنل کمپنیوں اور پی آر انڈسٹری کے توسط سے دنیا پر اقتصادی گلوبلائزیشن کا حملہ پوری طرح کامیاب ہو چکا ہے۔ اس حملے سے جو تباہی سامنے نظر آ رہی ہے اس کا ایک اجمالی خاکہ یہ ہے:

① دنیا بھر میں چھوٹی کمپنیوں، مقامی صنعتوں اور چھوٹے تاجروں کے گرد گھیرا انتہائی تنگ ہو گیا ہے۔

② بیروزگاری کے تناسب میں خطرناک حد تک اضافہ ہو رہا ہے کیوں کہ ملٹی نیشنل کمپنیاں اوسطاً ہر سال 4 سے 5 لاکھ تک ملازموں اور مزدوروں کو فارغ کر رہی ہیں حالانکہ ان کمپنیوں کا منافع روز افزوں ہے۔ بیروزگاری کی وجہ سے پیدا ہونے والی فاقہ کشی جرائم پیشہ افراد کو جنم دے رہی ہے حتیٰ کہ تعلیم یافتہ لوگ بھی جرائم کی راہ اپنا رہے ہیں۔

(3) نئے صنعتکاروں کے سامنے ترقی کے تمام دروازے بند ہو چکے ہیں۔

(4) کسی خاص سامان کو بنانے والی اب چند کمپنیاں ہی میدان میں رہ گئی ہیں اور جلد ہی یہ صورتحال ہوگی کہ پوری دنیا میں ہر خاص چیز کسی ایک کمپنی کے نام رجسٹرڈ ہوگی۔ وہی تنہا اسے تیار کر کے پوری دنیا کو فراہم کرے گی اور منہ مانگی قیمت لگائے گی۔

(5) دولت اور آمدنی کی تقسیم میں زبردست فرق پیدا ہو گیا ہے جس سے دولت کا توازن درہم برہم ہو چکا ہے۔ امیر امیر سے امیر تر اور غریب غریب سے غریب تر ہوتا جا رہا ہے۔ پوری دنیا کی دولت سمٹ کر چند افراد کے پاس آ گئی۔ دنیا میں لگ بھگ تین سو ایسے افراد ہیں جن کی دولت دنیا کی نصف آبادی کی دولت سے زائد ہے۔

## نیا وار، کریڈٹ کارڈز:

اقتصادی گلوبلائزیشن کا ایک ہدف یہ بھی ہے کہ دنیا میں خرید و فروخت اور لین دین کے تمام معاملات انہی کی وساطت سے انجام دیے جائیں، اس کے لیے کریڈٹ کارڈز کو متعارف کرا دیا گیا ہے۔ اب خریدار اپنی جیب میں کرنسی کی بجائے، کریڈٹ کارڈز رکھتا ہے، اب وہ مارکیٹ سے کچھ بھی خرید سکتا ہے اور دکاندار اس کے کارڈز کے ذریعے مطلوبہ رقم اپنے ''بینک اکاؤنٹ'' میں منتقل کر دیتا ہے۔ غیر ملکی کمپنیاں ان کارڈز کے ذریعے جی بھر کر دولت لوٹ رہی ہیں۔ پوری دنیا میں جہاں بھی کسی قسم کا لین دین ہوتا ہے اس کا نفع ان کمپنیوں کو لازماً پہنچتا ہے۔

کریڈٹ کارڈز لینے کے لیے آدمی کے پاس روپیہ ہونا ضروری نہیں بلکہ وہ اپنے گھر، گاڑی اور جائداد کی بنیاد پر ان کی قیمت کے بقدر رقم کا کریڈٹ کارڈ لے کر مزے سے بڑی بڑی چیزیں خرید سکتا ہے۔ مگر اس مصنوعی قوتِ خرید کا ایک تباہ کن اثر یہ سامنے آ رہا ہے کہ لوگ دیوالیہ ہونے لگے ہیں۔ کریڈٹ کارڈ کمپنیاں اور بینک ان کی قرقی کر کے ان گنت اچھے خاصے کھاتے پیتے گھرانوں کو فٹ پاتھ پر لا چکے ہیں۔

## سود در سود کا چکر:

اقتصادی گلوبلائزیشن کے نفاذ کے بعد اسلامی دنیا اور مشرقی ممالک کا یہ حال ہے کہ ان کے نقطہ

وہ باشندے جو بڑی بڑی صنعتوں میں حصے دار ہیں یا سرکاری اداروں یا ملٹی نیشنل کمپنیوں میں اچھے عہدوں پر فائز ہیں، وہ تو نسبتاً خوشحال زندگی گزار رہے ہیں لیکن ان کے سوا عام مالدار طبقے سے لے کر غریب لوگوں تک ہر شخص کسی نہ کسی سرمایہ دار، کسی ادارے یا کسی بینک کا مقروض ہے اور سود کے بوجھ تلے دبا جا رہا ہے۔ یہ لوگ شادی بیاہ، تجارت یا مکان کی تعمیر کے لیے قرض تو لے لیتے ہیں مگر ان کی بقیہ عمر قرض اتارنے ہی میں گزر جاتی ہے۔ اب ہر فرد کسی بینک کو، وہ بینک کسی مرکزی بینک کو اور وہ مرکزی بینک کسی ملٹی نیشنل کمپنی یا عالمی مالیاتی ادارے کو قرض ادا کرتا رہتا ہے۔ قرض در قرض اور سود در سود کے اس سلسلے کا اختتام جس ادارے یا جس شخص پر ہوتا ہے وہی دراصل دنیا بھر کے کروڑوں افراد کی کمائی کا اصل مالک ہوتا ہے اور اس میں کوئی شک نہیں کہ یہ افراد امریکا کے یہودی سرمایہ دار ہی ہیں جو بیٹھے بٹھائے سودی چکر کے ذریعے پوری دنیا کی کمائی اکیلے ہڑپ کرتے جا رہے ہیں۔ اقتصادی گلوبلائزیشن کی منزل یہی ہے کہ چند سود خور تمام دنیا کے اموال اور وسائل کے بلاشرکتِ غیرے مالک ہوں اور ان کی مرضی کے بغیر کسی کو ایک لقمہ تک نہ ملے۔

## حکومتیں کیوں خاموش ہیں؟

سوال یہ پیدا ہوتا ہے کہ عالمگیریت کی یہ تباہ کاریاں دیکھ کر بھی استحصال کا شکار ہونے والی مملکتیں اور حکومتیں کیوں خاموش ہیں؟ اس کی دو وجوہ ہیں:

اوّل یہ کہ خود کمزور ملکوں کی حکومتوں پر سرمایہ داروں کے ایجنٹ مسلط ہیں جنہیں باقاعدہ ان معاہدوں کے ساتھ برسرِ اقتدار لایا گیا ہے کہ وہ زبان بند رکھیں گے اور ان کی پالیسیوں کو آگے بڑھائیں گے۔ دوسری وجہ یہ ہے کہ بعض حکومتیں اقتصادی گلوبلائزیشن سے نفرت کے باوجود اپنی معاشی مجبوریوں کے تحت خاموشی اختیار کیے ہوئے ہیں۔ کیوں کہ اگر وہ احتجاج کریں گی تو ملٹی نیشنل کمپنیاں وہاں کاروبار بند کر دیں گی اور عالمی مالیاتی ادارے انہیں قرض دینے سے انکار کر دیں گے جب کہ ان غریب حکومتوں کا سارا نظام ملٹی نیشنلز سے ملنے والے ٹیکس اور بیرونی قرضوں پر چلتا ہے، اس لیے کہ مقامی صنعت و تجارت کو تو یہ طاقتیں پہلے ہی تباہ کر چکی ہیں، چنانچہ اس صورتحال میں غریب اور ترقی پذیر ممالک کی حکومتیں ملٹی نیشنلز اور عالمی مالیاتی اداروں سے

موافقت کر کے چلنے میں ہی عافیت سمجھتی ہیں۔اس سے بھی بڑھ کر یہ ہوتا ہے بعض اوقات یہ کمزور حکومتیں اپنے ملک کو چلانے یا اپنی عیاشیوں کو بڑھانے کے لیے غیر ملکی کمپنیوں اور عالمی بینک سے قرضے مانگنے لگتی ہیں اور یوں یہودی سرمایہ داروں کے زیر تسلط آ کر پوری طرح ان کی نوکر بن جاتی ہیں۔اس طرح کسی بھی ملک کی دولت اور وسائل اس کی ترقی کے بجائے اس کی تخریب اور تنزل میں استعمال ہوتے رہتے ہیں۔

## 4.3.6- تیسرا میدان، تہذیبی وثقافتی عالمگیریت:

عالمگیریت (Globalization) کا تیسرا بڑا میدان تہذیبی وثقافتی عالمگیریت ہے۔ جب سے اس میدان میں پیش رفت تیز ہوئی ہے، دو عنوانات پر مباحثوں کو شہرت مل رہی ہے:

① تہذیبوں کا تصادم

② تہذیبوں کے درمیان مذاکرات

## تہذیبوں کا تصادم:

تہذیبوں کے درمیان تصادم سے مراد یہ ہے کہ اسلام، نصرانیت، ہندومت وغیرہ اپنی اپنی الگ تہذیبوں کے ساتھ اب ایک دوسرے کو متاثر کر رہے ہیں اور ان کی ایک دوسرے پر غالب آنے کی کوشش تصادم کی طرف بڑھ رہی ہے۔

مسٹر ہنٹنگڈن رسالہ ''فارن آفیئرز'' میں شایع شدہ اپنے مضمون The Coming clash of civilizations (مستقبل میں تہذیبی تصادم) میں لکھتے ہیں کہ مستقبل کی جنگیں ملکوں میں نہیں ہوں گی بلکہ بڑی اکائیاں (Large Units) یعنی ایک کلچر اور تہذیب کی حامل طاقتیں جو کئی ممالک کے گروپوں پر مشتمل ہوں گی، ایک دوسرے کے مقابل ہوں گی اور اس طرح یہ جنات کی محاذ آرائی (Contest of giants) ہوگی۔وہ لکھتے ہیں کہ آخری دین (Last Ideology) اب آگے بڑھ رہا ہے اور اس کا نشان ''ہلال'' یورپ کی جنوبی اور مشرقی سرحدوں پر منڈلاتا جا رہا ہے۔یورپ کی اس سوچ اور فکر سے ایک سرد جنگ سامنے نظر آتی ہے جو آخر محض سرد جنگ تک نہ رہے گی۔

## تہذیبوں کے درمیان مذاکرات:

تہذیبی تصادم کے خطرات کا نہایت سرگرمی سے پرچار کرکے عالمگیریت (Globalization) کے علمبردار اس سوچ کو عام کررہے ہیں کہ تہذیبوں کے نمایندے مستقبل کے خطرات سے بچنے کے لیے باہمی مذاکرات کا راستہ اپنائیں اور ہر تہذیب کی قابل قبول باتوں پر اتفاق کرلیں۔

بظاہر یہ بات بڑی پرکشش نظر آتی ہے کہ تہذیبی ٹکراؤ کے خطرات ختم ہوجائیں اور دنیا بہترین چیزوں پر مشتمل ایک مشترکہ ثقافت اپنالے۔ ہمارے بعض سادہ لوح مسلمان یہ بھی سمجھتے ہیں کہ اس طرح دنیا اسلام کے قریب آجائے گی مگر یہ سراسر خوش فہمی ہے۔ تہذیبوں کے مابین مذاکرات کا مقصد درحقیقت اسلام سمیت دنیا کی تمام تہذیبوں کو ختم کرکے صرف مغربی تہذیب کو مسلط کرنا ہے۔ گلوبلائزیشن کا سرخیل امریکا چاہتا ہے کہ پوری دنیا میں امریکی اقدار پر مبنی یکساں تہذیب رائج کردی جائے اور دنیا اس تہذیب کو اپنا کر امریکا کے مفادات کی راہ میں کوئی رکاوٹ کھڑی کرنے کے قابل ہ نہ رہے۔

ہمیں یہ یاد رکھنا چاہیے کہ ہر مذہب کی ایک تہذیب ہوتی ہے اور ہر دین ایک الگ تمدن کا حامل ہوا کرتا ہے۔ کسی قوم کے لیے اپنی تہذیب وتمدن کو ترک کردینا، دراصل اپنے مذہب کو پس پشت ڈالنے کے مترادف ہوتا ہے۔ ایک نئی تہذیب اپنانے کے بعد مذہبی معتقدات اور عبادات کی حیثیت محض ایک بے جان رسم کی سی رہ جاتی ہے اور رفتہ رفتہ ایسی برائے نام رسمیں بھی مٹ ہی جاتی ہیں۔ تہذیبی عالمگیریت کے علمبرداروں کو سب سے زیادہ خطرہ اسلامی تہذیب سے ہے جو اپنے دامن میں فرد کی عزت، خاندان کی حفاظت اور شرافت ووقار کی اعلیٰ ترین خوبیاں لیے ہوئے ہے۔ اس لیے تہذیبی عالمگیریت میں اسلامی تہذیب وتمدن کو سب سے پہلے نشانہ بنایا گیا ہے اور اسلامی حضارۃ وثقافت کو دقیانوسی قرار دے کر اسے ترک کرنے کی ترغیب دی جارہی ہے۔ یہ ایسے اسلامی شعائر کو مٹانے کے درپے ہے جو شریعت میں فرض اور واجب کا درجہ رکھتے ہیں، اس لیے یہ کہنا بالکل درست ہے کہ تہذیبی عالمگیریت براہِ راست مذہبِ اسلام پر حملہ

ہے۔ یہ سمجھنا بہت بڑی نادانی ہے کہ یہ زمانے کی تیز رفتاری اور میڈیا کی ترقی سے پیدا ہونے والی اتفاقی اور قدرتی تبدیلی ہے۔

سابق امریکی صدر بل کلنٹن کی انتظامیہ کے ایک افسر ''ڈیوڈ روشکوف'' نے کہا تھا:

''امریکا کو اپنی تہذیب واقدار کی ترویج ورد یگر ثقافتوں کو ختم کرنے کے لیے عالمی انفارمیشن اینڈ ٹیکنالوجی پر مکمل کنٹرول کر لینا چاہیے اور یہ امریکن قوم کا حق بھی ہے کیوں کہ امریکی قوم ہی دنیا کی قیادت کے لیے سب سے زیادہ لائق اور بہترین نمونہ ہے۔ (الاسلام والعولمۃ، ص:13)

معروف امریکی مفکر ''نوم چومسکی'' کا کہنا ہے: ''ثقافتی عالمگیریت پوری دنیا پر امریکی تسلط کے سلسلے میں ایک بڑھتا قدم ہے۔'' (العولمۃ، رسالہ، البیان، عدد 29، ص:126)

## تہذیبی عالمگیریت کی دو بنیادیں:

تہذیبی عالمگیریت دو بنیادوں پر آگے بڑھ رہی ہے:

(1) انفارمیشن ٹیکنالوجی کا فروغ۔

(2) ذرائع ابلاغ پر امریکی یہودی سرمایہ داروں کا کنٹرول۔

انفارمیشن ٹیکنالوجی میں آنے والے انقلابات نے تہذیبی عالمگیریت کی رفتار کو تیز کرنے میں بڑی مدد دی ہے۔ پہلے جو بات کئی مہینوں میں ایک جگہ سے دوسری جگہ پہنچتی تھی اب ایک لمحے میں ساری دنیا میں پھیل جاتی ہے۔ گزشتہ ڈیڑھ سو سال میں انفارمیشن ٹیکنالوجی میں آنے والے بڑے بڑے انقلابات نے اس ناممکن کو ممکن کر دکھایا ہے۔ ٹیلی فون، کیمرہ، مووی کیمرہ، فیکس، ریڈیو، ٹیپ ریکارڈر، ٹی وی، سنیما، سیٹلائٹ، وی سی آر، ویڈیو کیسٹز، کمپیوٹر، سی ڈی، ڈی وی ڈی، ڈش انٹینا، ایف ایم ریڈیو چینلز، کیبل، انٹرنیٹ اور موبائل فون جیسی ایجادات نے دنیا کو سمیٹ کر رکھ دیا ہے۔ ریڈیو پروگرام، موسیقی کی کیسٹیں، ٹی وی چینلز، فلمیں اور ویب سائٹز آناً فاناً لوگوں کے دل ودماغ کو متاثر کرتی ہیں۔

میڈیا کی اس ساری طاقت کی لگام عالمگیریت (Globalization) کے نقیبوں کے ہاتھ میں ہیں۔ الیکٹرونک اور پرنٹ میڈیا دونوں پر یہودی سرمایہ داروں کا راج ہے۔ خبر رساں

ایجنسیوں اور اخبار و جرائد سے لے کر ٹی وی چینلز اور فلموں پر میڈیا پر وہی چھائے ہوئے ہیں۔ دنیا کا اکثر میڈیا معلومات واطلاعات سے تفریحی پروگراموں تک میں انہی کی اقتداء کر رہا ہے۔

میڈیا کی اس زبردست طاقت کے ساتھ پوری دنیا میں امریکی ثقافت کی بھرپور تشہیر کی جارہی ہے۔ آج کوئی ملک ایسا نہیں جہاں امریکی تہذیب وثقافت پنجے نہ گاڑ رہی ہو، نوجوان نسل کے نزدیک یہی ثقافت ترقی کی علامت ہے۔

اس تہذیبی حملے نے امریکی لباس کو ترقی اور بلند معیارِ زندگی کی سند بنا دیا۔ اب وہی شخص تعلیم یافتہ اور مہذب مانا جاتا ہے جو تھری پیس میں ملبوس ہو۔ وہی روشن خیال سمجھا جاتا ہے جو پینٹ شرٹ پہنے ہو۔ جینز اور ٹی شرٹ پہن کر انسان زندہ دل اور ترقی پسند ثابت ہوجاتا ہے۔ دوسری طرف علاقائی لباس پہننا جہالت، غربت اور دقیانوسی پن کی دلیل مانا جاتا ہے۔ اسکولوں میں بچوں اور بچیوں تک کو وہی لباس پہنا دیا گیا ہے جو امریکن اسکولوں کے بچے پہنتے ہیں۔ اردن، شام، مصر اور لیبیا سمیت کئی اسلامی ملکوں میں یورپی لباس ہی قومی لباس بن چکا ہے۔

اسی طرح امریکی پکوان اور مشروبات بھی دنیا بھر میں عام ہو چکے ہیں۔ ''فاسٹ فوڈ (Fast Food)'' ''ہاٹ ڈوگ'' (Hol Dog) ہیمبرگر (Hamburger) اور (Pizza) ''پیزا'' اچھے معیارِ زندگی کی نشانی بن گئے ہیں، امریکن کھانے پیش کرنے والے ریسٹورنٹ مکڈانلڈ، کے ایف سی، برگر کنگ اور ''پیزا ہٹ'' (Pizza Hut) دنیا کے ہر شہر میں نظر آتے ہیں۔ کوکا کولا (Coca Cola) اور ''پیپسی'' جیسے امریکن برانڈ مشروب آج ہر بستی اور ہر گاؤں میں روایتی مشروبات کی جگہ لے چکے ہیں۔

تہذیبی عالمگیریت نے عورتوں کو مغربی انداز میں میک اپ کا عادی بنا دیا ہے۔ دنداسے، مسواک، عطر، مہندی، اُبٹن، سرمے اور کاجل پر اکتفا کرنے کا زمانہ چلا گیا۔ اب خواتین لپ اسٹک، ناخن پالش، نیل پالش ریموور، آئی لاز (مسکارا) خضاب، پرفیوم، لوشن اور کاسمیٹکس کے دیگر سامان پر دل کھول کر خرچ کرتی ہیں۔ ایک ایک ملک میں یہ چیزیں سالانہ سینکڑوں ٹن کے

حساب سے درآمد کی جاتی ہیں۔ سعودی خواتین ہر سال اوسطاً ایک ارب ریال غیر ملکی "پرفیومز" پر خرچ کر دیتی ہیں۔ عرب دنیا کی متمول خواتین شادی کے موقع پر صرف اپنے بناؤ سنگار کے لیے 25 سے 30 ہزار ریال اڑا دیتی ہیں۔ خلیجی ممالک کی عورتیں سالانہ 60 لاکھ ڈالر مختلف رنگوں کے خضاب پر صرف کر رہی ہیں تاکہ وہ کسی طرح بھی مغربی عورت سے کم خوبصورت محسوس نہ ہوں۔

ہالی وڈ کی رومانوی فلموں کی وجہ سے اکثر لڑکے لڑکیاں کم عمری ہی میں معاشقہ بازی کے عادی بن رہے ہیں اور اسے عین شرافت سمجھا جا رہا ہے۔ شرم و حیا رخصت ہو گئی ہے۔ نوجوان نسل مائیکل جیکسن کے رقص اور موسیقی پر مرتی ہے، میڈونا کی آواز انہیں مدہوش کر دیتی ہے، ایکشن فلموں کی وجہ سے مار دھاڑ اور قتل و غارت نوجوانوں کا مشغلہ بن گیا ہے۔ ریمبو، اسپائڈرمین اور ہیری پوٹر نسل نو کے ہیرو ہیں۔

اس کے ساتھ ساتھ، انٹرنیٹ، وڈیو کیسٹوں، سی ڈیز اور ڈی وی ڈیز کے ذریعے بہت بڑے پیمانے پر عریاں فلمیں بھی پھیلائی جا رہی ہیں جن میں مردوں اور عورتوں کو کھلم کھلا جنسی عمل کرتے ہوئے دکھایا جاتا ہے۔ انٹرنیٹ جو تہذیبی عالمگیریت کا سب سے بڑا ہتھیار ہے، جنسی انارکی اور فحاشی کو حد سے زیادہ فروغ دے رہا ہے۔ ایسی فحش ویب سائٹوں کی تعداد گنی نہیں جا سکتی جو صرف ایک کلک کرنے پر عریاں تصاویر اور برہنہ فلمیں فراہم کرتی ہیں۔ انٹرنیٹ پر چیٹنگ نے مردوں اور عورتوں کے درمیان شرمناک تعلقات کے راستے بہت آسان کر دیے ہیں۔ موبائل فون بھی اس سلسلے میں بہت بڑا کردار ادا کر رہا ہے۔

سوشل میڈیا یعنی فیس بک، ٹوئٹر اور اسکائپ بھی اباحیت پسندی، آزادی، بے حیائی اور اخلاق باختگی کو حد سے زیادہ فروغ دے رہے ہیں۔ ان ذرائع سے اجنبی مرد و زن کے مابین تعارف اور دلچسپیوں کے تبادلے سے گفتگو شروع ہوتی ہے اور بہت جلد فحش مکالمہ بازی تک پہنچ جاتی ہے۔ پھر ملنے کا مقام طے کیا جاتا ہے اور شرم و حیا کی تمام دیواریں زمیں بوس کر کے جنسی تعلقات قائم کر لیے جاتے ہیں۔ اس طرح مغربی دنیا کی طرح مشرق میں بھی بدکاری اس قدر عام ہو رہی ہے جس کا دو تین عشرے پہلے تصور تک نہیں کیا جا سکتا تھا۔

## 4.3.5- چوتھا میدان، لسانی عالمگیریت:

عالمگیریت (Globalization) کے تہذیبی وثقافتی اہداف اس وقت تک حاصل نہیں ہوسکتے جب تک مسلم ممالک میں ایک عالمگیر زبان کو رائج نہ کر دیا جائے، اس لیے اس وقت دو بڑے اہداف پر کام ہو رہا ہے:

① امریکن انگلش کو عالمی سطح پر فروغ دینا

② عربی زبان کو بالخصوص اور دوسری علاقائی وقومی زبانوں کو بالعموم متروک بنانا

### امریکن انگلش کو عالمی سطح پر فروغ دینا:

امریکن انگلش ہی ایک ایسی زبان ہے جس کی عالم گیر پیمانے پر تشہیر اور اشاعت ہو رہی ہے۔ اسے چند ملکوں کی جغرافیائی حدود سے نکال کر لامحدود بنایا جا رہا ہے۔ ہر ملک کی آبادی کا پڑھا لکھا طبقہ اسے اپنا چکا ہے، عرب ممالک سمیت دنیا کے بیش تر ممالک میں انگلش دوسری زبان کی حیثیت اختیار کر گئی ہے۔ پاکستان سمیت اکثر مسلم ممالک میں سرکاری زبان انگلش ہی ہے۔ یہ ایک ابتدائی قدم ہے، اصل مقصد اس دن پورا ہوگا جب ہر ملک کی قومی زبان امریکن انگلش ہوگی۔

اسکولوں اور یونیورسٹیوں میں پڑھائے جانے والے مواد، شروحات، انسائکلو پیڈیاز اور حوالہ جاتی کتب میں آج کل یہی زبان استعمال ہو رہی ہے۔ دو تہائی سے زائد سائنسی مواد انگلش سیکھے بغیر نہیں پڑھا جا سکتا۔ امریکی کالجوں اور یونیورسٹیوں نے دنیا بھر میں اپنے ادارے قائم کر دیے، جہاں انگلش زبان کی تعلیم دی جاتی ہے۔ ان اداروں میں تعلیمی معیار بہت بہتر رکھا گیا ہے اس لیے مقامی متمول طبقہ اپنے بچوں کو وہیں داخل کراتا ہے۔ ان اداروں سے فارغ ہونے والے طلبہ کو بڑی بڑی کمپنیوں میں بہت جلد اچھی ملازمتیں مل جاتی ہیں جس سے ان اداروں کی مقبولیت بڑھتی چلی جا رہی ہے۔ اس کے علاوہ نجی طور پر بھی امریکن انگلش سکھانے کے ادارے شہر شہر اور قریہ قریہ قائم ہو رہے ہیں کیوں کہ یہ پیسے بٹورنے کا ایک اچھا حیلہ بھی ہے۔

عوامی سطح پر انگلش زبان کو عام کرنے میں انگلش فلموں، ٹی وی پروگراموں اور ٹی وی کے

اشتہارات کا بہت بڑا کردار ہے۔اس طرح لوگ اگرچہ مکمل زبان نہیں سیکھ سکتے لیکن انگلش کے بہت سے الفاظ ان کی زبانوں پر چڑھ جاتے ہیں۔آج کل دکانوں،اداروں اور سڑکوں کے سائن بورڈوں میں بھی امریکن انگلش والی اسپیلنگ کا استعمال ہورہا ہے۔

پوری دنیا میں ہونے والے اکثر تجارتی معاملات،انگلش ہی میں طے پاتے ہیں،سیاحتی سطح پر رابطے کا اہم ترین ذریعہ بھی یہی زبان ہے۔انٹرنیٹ پر 82 فیصد صفحات انگلش میں ہیں جبکہ دنیا کی بقیہ تمام زبانیں صرف 18 فیصد صفحات استعمال کرتی ہیں۔

دنیا کی آبادی کا پانچواں حصہ کسی نہ کسی درجے میں انگلش زبان بول رہا ہے،جبکہ ایک بہت بڑی تعداد اس زبان کو سیکھنے کی شدید ضرورت محسوس کررہی ہے،2020ء تک انگلش سیکھنے والوں کی تعداد ڈیڑھ ارب سے زائد ہوجائے گی اور شاید 2050ء تک انگلش ہی زندگی کے تمام شعبوں کی زبان بن جائے۔(دیکھئے:http://www.krysstal.com/english/html)

## عربی زبان کو بالخصوص اور دوسری علاقائی وقومی زبانوں کو بالعموم متروک بنانا:

لسانی عالمگیریت اب سب سے پہلے عربی زبان اور پھر دوسری بڑی زبانوں کو مٹانے کے لیے کوشاں ہے کیوں کہ انگلش کی عالمگیریت کی راہ میں اگر کوئی رکاوٹ ہے تو وہ عربی زبان ہی ہے،اس لیے مغربی تھنک ٹینکس عربی زبان پر حملوں کے منصوبے بنانے اور انہیں عمل میں لانے کے لیے سرگرم ہیں۔

کبھی وہ فصیح عربی کے بجائے عامی عربی ہی کو اصل عربی قرار دینے کا نعرہ بلند کرتے ہیں اور کبھی عربی زبان کے رسم الخط کو تبدیل کرنے پر زور دیتے ہیں۔اگرچہ ان کی کوششوں کے باوجود اب تک عربی زبان مفردات اور کلمات میں انگلش سے زیادہ متاثر نہیں ہوئی لیکن اُسلوب،اور طرزِ تعبیر میں جدید عربی پر انگلش کے اثرات واضح نظر آتے ہیں۔افسوس کہ عرب حکمران محض مغربی دنیا کو خوش رکھنے کے لیے کوئی ایسا قانون پاس کرنے سے احتراز کررہے ہیں جو عربی زبان کی مکمل حفاظت کا ضامن ہو۔

انگلش کی یہ عالمگیریت دیگر زبانوں کو بھی نگل رہی ہے۔اقوام متحدہ کے پروگرام برائے ماحولیات

سے متعلق ایک ٹیم کی رپورٹ یہ ہے کہ پوری دنیا میں نصف مقامی زبانیں زوال پذیر ہیں۔ 234 معاصر زبانیں مکمل طور پر ختم ہوچکی ہیں، یہ رپورٹ بتاتی ہے کہ اکیسویں صدی کے اختتام تک پوری دنیا کی 90 فیصد مقامی زبانیں ختم ہوجائیں گی۔ (العولمۃ اللغویۃ مجلۃ البیان، عدد 170)

## امریکی ثقافت میں اتنی کشش کیسے؟

یہاں یہ بات ذہن نشین کرلینا ضروری ہے کہ امریکن کلچر کے فروغ کا سبب یہ نہیں کہ اس میں انسانیت کی کوئی بھلائی، کوئی معاشرتی مفاد یا کوئی فطری کشش ہے۔ بلکہ حقیقت یہ ہے کہ اس کی شکل بے حد مکروہ ہے جس ملمع سازی کے ساتھ پرکشش دکھایا جارہا ہے اور چند خارجی عوامل کے ذریعے قابل قبول بنایا جارہا ہے۔ وہ عوامل چار ہیں:

① دنیا اپنی معیشت میں امریکی اقتصادیات پر انحصار کرتی ہے۔

② جدید مواصلات اور انفارمیشن سے متعلق مصنوعات جیسے کمپیوٹر وغیرہ کی صنعت زیادہ تر امریکا کی مٹھی میں ہے۔ علم، معلومات اور سائنس سے متعلقہ اکثر ساز وسامان حتیٰ کہ کاغذ، اور آلاتِ طباعت وغیرہ کی صنعت بھی بڑی حد تک امریکا کے پاس ہے۔

③ میڈیا کی لگام امریکا کے ہاتھ میں ہے۔

④ امریکی ثقافت آزادی، عیاشی، مادّہ پرستی، نفس پروری اور جسمانی تلذذ کی غماز ہے اور یہ وہ خواہشات ہیں جن کی بھوک میڈیا کے ذریعے پہلے ہی بھڑکا دی گئی ہے اور اب دنیا اس بھوک پر قابو پانے سے عاجز ہورہی ہے۔

ایسے میں امریکا اپنی بے ہودہ اور حیاباختہ تہذیب کو جب پوری قوت کے ساتھ پیش کرتا ہے تو دنیا کا اسے جوق در جوق قبول کرنا کوئی تعجب کی بات نہیں۔

غرض تہذیبی وثقافتی عالمگیریت کے ذریعے پوری دنیا میں ایک ہی تہذیب وتمدن کو مسلط کیا جارہا ہے۔ اس تہذیب کو اپنانے والے لوگ، ٹیلی ویژن، موبائل فون اور انٹرنیٹ کے ذریعے ایک دوسرے سے منسلک ہیں اور عالمگیریت (Globalization) کا علمبردار طبقہ اپنے نظریات وخیالات کو ان کے اذہان میں منتقل کرکے ان کے درمیان سے ذہنی فاصلے بھی ختم کرتا جارہا ہے۔

## پانچواں میدان، معاشرتی عالمگیریت:

تہذیب وثقافت کے ساتھ ساتھ عالمگیریت (Globalization) ہماری معاشرت پر بھی اثر انداز ہورہی ہے۔ معاشرے کی تبدیلی کے لیے ''خاندان'' کو بدلنا ضروری ہے اور خاندان کی تبدیلی اس کی اکائی یعنی فرد کو بدلنے ہی سے ممکن ہے۔ عالمگیریت نے خاندان کو بدلنے کے لیے اس کی ایسی اکائی کو استعمال کیا جو انفعالیت اور اثر پذیری کی زیادہ صلاحیت رکھتی ہے، یہ اکائی ''عورت'' ہے جسے استعمال کرکے پہلے ''خاندان'' اور پھر پورے معاشرے کی اخلاقی اقدار تبدیل کرنے کی کوششیں کی جارہی ہیں۔

ایک فرانسیسی ماہر عمرانیات ''روجیہ موینیہ'' نے ''الجزائر'' پر فرانس کے قبضے کے زمانے میں اپنی حکومت کے ایماء پر الجزائر کے حالات کا اس نظر سے تفصیلی جائزہ لیا کہ کوشش کے باوجود وہاں اسلام کی چنگاریاں کیوں سرد نہیں ہورہیں۔ طویل جائزے کے بعد اس نے حکومت فرانس کو رپورٹ پیش کرتے ہوئے کہا:

''الجزائر کو ختم کرنے کا واحد ذریعہ عورت ہے، عورت اسلامی اقدار کی محافظ ہے، اگر ہم اسے اسلام سے دور کرنے میں کامیاب ہوجائیں تو ہمارے مقاصد حاصل ہوجائیں گے۔''

## معاشرتی عالمگیریت اور اقوام متحدہ:

معاشرتی عالمگیریت کے فروغ اور عورت کو اس کا آلہ کار بنانے کے لیے خاصا کام آزادی نسواں کی تحریک نے کیا جبکہ اسے عالمی سطح پر ایک قانونی حیثیت دینے کے لیے اقوام متحدہ اور اس کے ذیلی اداروں، نیز عالمی کانفرنسوں نے بڑا کردار ادا کیا۔ اقوام متحدہ کا دستور اور چارٹر جو 26 جون 1945ء کو تیار ہوا، جنسیت کی بنیاد پر انسانوں میں عدم تفریق پر زور دیتا ہے اور مرد وزن کو یکساں حقوق دینے کی سفارش کرتا ہے۔

(ملاحظہ ہو: www.un.org/arabic/aboutum/charter)

اقوام متحدہ کے میثاق کی شق نمبر 8 میں صراحت ہے:

''اقوام متحدہ ایسی پابندیاں لاگو نہیں کرے گی جس سے مرد وعورت کے درمیان مساوات کا

کوئی بھی پہلو متاثر ہو۔''

1966ء میں اقوام متحدہ کی طرف سے اقتصادی، معاشرتی اور سیاسی حقوق سے متعلق ایک عالمی معاہدہ منظر عام پر لایا گیا، جس میں شریک ممالک نے تمام حقوق میں مرد وزن کے درمیان مساوات قائم کرنے کا عہد کیا۔

1968ء میں اقوام متحدہ کی زیر نگرانی تہران میں ''انسانی حقوق'' کے موضوع پر ''تہران منشور 1968ء'' کے نام سے ایک عالمی کانفرنس منعقد ہوئی جس کے منشور کی شق نمبر 15 میں کہا گیا کہ انسانی ترقی کے لیے عورت کے ساتھ ہونے والے امتیازی سلوک کو جڑ سے اکھاڑ پھینکنا از حد ضروری ہے۔

اقوام متحدہ نے عورت کے مسئلے پر غیر معمولی توجہ دینے کے لیے بہت سے ذیلی ادارے قائم کیے ہیں، جو معاشرتی عالمگیریت کی راہ میں آنے والی ہر رکاوٹ کو دور کرنے کے لیے کوشاں ہیں۔ یہ ادارے مختلف ممالک میں عورت سے متعلقہ مسائل پر کانفرنسیں بھی منعقد کراتے ہیں۔ ایسے چند ادارے یہ ہیں:

- اقوام متحدہ کی کونسل برائے خواتین
- اقوام متحدہ ترقی فنڈ برائے خواتین
- عالمی ریسرچ ایڈ ٹریننگ سینٹر برائے ترقی خواتین
- اقوام متحدہ کا ریسرچ سینٹر برائے معاشرتی ترقی
- عورت کے خلاف امتیازی سلوک کے خاتمے سے متعلق کمیٹی
- تنظیم اقوام متحدہ برائے اطفال

1975ء میں عورت، مساوات اور امن کے موضوع پر میکسیکو میں پہلی کانفرنس منعقد ہوئی، جس میں فیملی پلاننگ پر بھی زور دیا گیا۔

1979ء میں اقوام متحدہ کی جنرل اسمبلی نے ''عورت کے خلاف ہر قسم کے امتیازی سلوک کے خاتمے'' کے موضوع پر ایک کانفرنس منعقد کر کے تمام دنیا کی حمایت حاصل کی۔ ایسی دوسری

کانفرنس 1980 میں ''ڈنمارک'' کے دارالحکومت کوپن ہیگن میں منعقد ہوئی۔

1985ء میں نیروبی میں اقوام متحدہ کے زیر اہتمام خواتین سے متعلق تیسری کانفرنس ہوئی جو نیروبی کی مجوزہ حکمت عملی برائے ترقی خواتین کے نام سے مشہور ہوئی۔

1984ء میں میکسیکو میں آبادی کے موضوع پر منعقد ہونے والی عالمی کانفرنس میں، زندگی کے ہر میدان میں عورت کو مرد کے مساوی حقوق دینے، شادی میں تاخیر اور حمل میں جلدی نہ کرنے، مرد کو گھر کے کاموں اور عورت کو خارجی ذمے داریوں میں شریک رکھنے، کم سن لڑکے اور لڑکیوں کو جنسی تعلیم دینے، خاندان سے باہر جنسی تعلقات کو رواج دینے اور زنا کار مردوں اور عورتوں سے مالی تعاون کرتے ہوئے انہیں مناسب رہائش فراہم کرنے پر زور دیا گیا۔

## قاہرہ کانفرنس:

ستمبر 1994ء میں مصر کے دارالحکومت قاہرہ میں آبادی اور ترقی کے موضوع پر عالمی کانفرنس منعقد ہوئی جس کے دستور کا خلاصہ یہ تھا:

(1) فرد کے مفادات اور اس کی خواہشات اصل معیار ہیں۔ مذہب، قوم، خاندان، رسوم ورواج اور عرف وعادات معیار نہیں ہیں۔ لہٰذا فرد کا یہ حق ہے کہ وہ ان رسمی پابندیوں سے نجات حاصل کرے۔

(2) عقد نکاح کے بغیر ہی جنسیت کا عمل ہونا چاہیے، ہم جنس پرستی کو بری نگاہ سے دیکھنے کے بجائے اس کو فروغ دینا چاہیے، البتہ اتنا ملحوظ رہے کہ یہ عادت کسی مرض میں مبتلا نہ کردے۔ نوعمروں کو جنس پرستی اور مانع حمل اشیاء سے متعلق معلومات فراہم کی جائیں اور اس سلسلے میں ان کو مکمل راز داری کا یقین دلایا جائے، ایسے کاموں کے حوالے سے ان کے حقوق کا احترام کیا جائے۔

(3) جلد شادی نہایت غلط ہے، کیوں کہ یہ شرح پیدائش میں اضافے کا سبب ہے۔

(4) اقساط حمل مذموم نہیں اگرچہ اس سے ماں کی صحت کو ہی خطرہ کیوں نہ ہو البتہ ماں کی زندگی کو کوئی خطرہ لاحق نہیں ہونا چاہیے۔

⑤ جلد ماں بننا غلط ہے، چاہے عورت جائز طریقے سے ماں بنی ہو یا ناجائز طریقے سے۔ جلد ماں بننے سے شرح پیدائش میں اضافہ ہوتا ہے اور عورت مرد کے شانہ بہ شانہ خارجی کاموں میں شرکت نہیں کر پاتی۔

قاہرہ کانفرنس کے اس دستور میں جنسی تعلقات رکھنے والے جوڑے کو ''میاں بیوی'' کے بجائے ''ساتھی'' کہا گیا ہے کیونکہ اس لفظ میں باضابطہ جنسی تعلقات رکھنے والے بھی شامل ہوجاتے ہیں اور بے ضابطہ جنسی تعلقات رکھنے والے بھی۔ نکاح کرنے والے بھی اس میں شامل ہیں اور زانی وہم جنس پرست بھی۔ دستور سازوں کے خیال میں ''ساتھی'' ایک غیر جانبدار لفظ ہے جس سے جنسی تعلقات کی کسی خاص قسم کی طرف اشارہ نہیں ہوتا بلکہ یہ لفظ بغیر نکاح کے جنسی و جسمانی تعلقات کے قابل قبول ہونے کی طرف اشارہ کرتا ہے۔

عجیب بات یہ ہے کہ قاہرہ کانفرنس کے اعلامیے پر خود امریکا میں احتجاج ہوا۔ امریکن نوعمر ماؤں کی تنظیم کی صدر نے مسلمانوں کو قاہرہ کانفرنس کے خطرے سے خبردار کرتے ہوئے کہا کہ جن لوگوں نے امریکی معاشرے کو تباہ کیا ہے اب وہ اپنے گندے افکار وخیالات لے کر اسلامی معاشرے کی طرف بڑھ رہے ہیں تاکہ اسے بھی برباد کرڈالیں اور اپنی طرح مسلمان عورت اور معاشرے کو بھی پامال کردیں۔ (سقوط الاحضارۃ الغربیۃ، احمد منصور)

قاہرہ میں آبادی کانفرنس کے انعقاد کے بعد مصر، اردن اور تیونس میں خواتین کی آزادی کا نعرہ بلند کرنے والی کئی تنظیمیں قائم ہوئیں، جنہیں اپنے پروگرام چلانے کے لیے اقوام متحدہ کی جانب سے 200 ملین ڈالر ملے۔ یہ امداد صنعتی اور زراعتی میدان میں دی جانے والی امداد سے دوگنا زیادہ تھی۔

## بکین کانفرنس:

1995ء میں ''بکین'' میں خواتین سے متعلق اقوام متحدہ کی چوتھی کانفرنس منعقد ہوئی، جس میں جنسی آزادی کی اجازت دینے، نوجوانی کی عمر میں شادی سے گریز کرنے، مانع حمل ذرائع اور وسائل کو عام کرنے، کم اولاد پر اکتفا کرنے، محفوظ طریقے سے اسقاط حمل کی اجازت دینے، مرد وزن کے درمیان مخلوط تعلیم کی حوصلہ افزائی کرنے، کم عمر لڑکے لڑکیوں کو جنسی ثقافت کی تعلیم دینے،

والدین کو بچوں کی ذمے داری سے آزاد کرنے، مرد کو عورت کی کفالت کے بوجھ سے نجات دینے اور ان مقاصد کے لیے میڈیا کو آزادانہ استعمال کرنے کی سفارش کی گئی۔

یہ بھی کہا گیا کہ جب لڑکی بالغ ہو جائے تو اس کو جنسی عمل کے ارتکاب کی مکمل اجازت ہے، والدین کو یا کسی سرپرست کو یہ حق نہیں ہے کہ وہ لڑکی کو اس سے روکے۔

اس کانفرنس میں یہ اعلان بھی کیا گیا کہ جدت پسند معاشرہ اب تمام روایتی پابندیوں کو ترک کر کے اباحیت کی راہ اختیار کرے گا اور اسلام سمیت کسی بھی مذہب کو اس کی سمت تبدیل کرنے کا کوئی حق نہیں ہوگا، یہ اعلانات اسلامی شریعت بلکہ فطرتِ انسانی کے بھی خلاف تھے۔

اس کانفرنس میں پاس کردہ دستور کی چند شقیں یہ ہیں:

- کم سن لڑکے اور لڑکیوں کو جنسی آزادی دینے کی سفارش کی جائے اور انہیں کم عمری میں جنسی عمل انجام دینے اور شادی تاخیر کرنے کی ترغیب دی جائے۔
- خاندان کی تعمیر میں شادی کا کوئی دخل نہ ہو۔ خاندانی دائرے سے باہر، مرد و عورت کے درمیان ہر قسم کے جنسی تعلقات کی حوصلہ افزائی کی جائے۔
- خاندان کا یہ مفہوم رائج کیا جائے کہ ایک خاندان دو انسانوں سے مل کر بنتا ہے، چاہے وہ دو مرد ہوں یا دو عورتیں۔
- گھریلو کام کاج ترک کرنے پر عورت کی حوصلہ افزائی کی جائے کیونکہ گھر کے کاموں پر معاوضہ نہیں ملتا۔
- شوہر پر اپنی بیوی کے حقوق غصب کرنے کے مقدمات چلانے اور مناسب سزا دینے کے لیے خصوصی خاندانی عدالتیں قائم کی جائیں۔
- اغلام بازی کو جائز قرار دیا جائے۔ لوگوں کو ایسے قوانین توڑنے پر آمادہ کیا جائے جن کے مطابق ایسا جنسی عمل جرم قرار پاتا ہے۔
- مرد اور عورت کے درمیان مکمل مساوات قائم کرنے کے لیے دونوں کو کام کاج، بچوں کی دیکھ بھال اور وراثت میں برابر کا شریک مانا جائے۔

- بعض مسلم ممالک کی جانب سے کیے گئے احتجاج کو بالکل نظر انداز کر دیا جائے۔

## عالمگیریت (Globalization) کا مقابلہ کیسے؟

اب تک کی گفتگو سے عالمگیریت (Globalization) کے خطرات بہت وضاحت سے سامنے آچکے ہیں اور اس کا مردانہ وار مقابلہ کرنے کی ضرورت کسی سے مخفی نہیں رہی۔ اس کے لیے غور وخوض، منصوبہ بندی اور عملی جدوجہد کرنا ہماری بقا کا مسئلہ بن گیا ہے۔ ذیل میں سیاسی، اقتصادی، ثقافتی اور معاشرتی عالمگیریت کی روک تھام کے لیے چند سفارشات پیش کی جاتی ہیں۔ مگر یہ کام عملی طور پر بالعکس ترتیب سے ہوگا۔ یعنی معاشرت اور ثقافت میں اپنے کامیاب دفاع کے بعد ہم اقتصادی اور سیاسی میدان میں اس طوفان کا رخ پھیرنے کے قابل ہو سکیں گے۔

### معاشرتی عالمگیریت کا مقابلہ:

- امت مسلمہ کا اللہ اور اسکے رسول ﷺ سے رشتہ از سرِ نو استوار کرنے کی بھرپور محنت کی جائے۔
- عورتوں اور بچوں کو مغربی اور لادینی اثرات سے بچانے کے لیے مستقل کوشش کی جائے۔ تعلیمی اداروں، اخبار و جرائد اور میڈیا کی جائز شکلوں سے ایمانیات، اسلامی معاشرت اور اسلامی شعائر کی افادیت واہمیت عام کی جائے۔
- اسلام کو ایک آئیڈیل اور قابل تقلید نظام حیات کے طور پر پیش کیا جائے۔
- ''مسلم خاندان'' سے متعلق ایسا مواد عام کیا جائے جس سے اسلام میں عورت کے مقام اور حقوق کا تفصیلی ذکر ہو۔
- عالمی اور ملکی سطح پر منعقد ہونے والی کانفرنسوں پر نگاہ رکھی جائے۔ ان کے اسلام دشمن منصوبوں سے مسلمانوں کو آگاہ کیا جائے، اقوام متحدہ کی سرپرستی میں ہونے والی اسلام مخالف کانفرنسوں کے مضرات کو بیان کیا جائے اور مؤثر احتجاج بھی کیا جائے۔
- اسکولوں، کالجوں اور یونیورسٹیوں میں اسلامی معاشرت اور ثقافت کو فروغ دینے کے لیے دینی تقاریب کا اہتمام کیا جائے۔ درسِ قرآن وحدیث کے پروگرام رکھے جائیں۔
- میڈیا پر عوامی دباؤ بڑھایا جائے تاکہ غیر اخلاقی مواد کی اشاعت کو مزید آزادی نہ مل

سکے اور صحافی یہ محسوس کریں کہ یہ چیزیں معاشرے میں اتنی آسانی سے قابل قبول نہیں بنائی جاسکتیں۔

- نصابِ تعلیم میں خاندان کی اہمیت، اسلام میں عورت کے مقام، مرد وعورت کے درمیان تعلقات کا شرعی مفہوم، ازدواجی حقوق، بچوں کی تربیت میں مؤثر ذرائع جیسے موضوعات پر روشنی ڈالی جائے۔
- مغربی رجحانات کا جائزہ لینے اور ان کے ازالے کے لیے باضابطہ مراکز قائم کیے جائیں، ان مراکز میں پختہ فکر اسلامی محققین کام کریں۔
- علمائے کرام، ائمہ مساجد اور خطباء اس سلسلے میں امت کی رہنمائی کریں۔

## ثقافتی عالمگیریت کا مقابلہ:

ثقافتی عالمگیریت کی روک تھام کے لیے درج ذیل اقدامات کرنا ضروری ہیں:

- مغربی زبانوں کے مقابلے میں عربی کو فروغ دیا جائے۔ جن ملکوں میں عربی زبان نہیں پہنچی، وہاں اس کی اشاعت کی جائے۔ پاکستان، افغانستان اور ترکی کی طرح ان تمام مسلم ممالک میں جہاں عربی زبان نہیں بولی جاتی اس زبان کو رواج دیا جائے۔ مغربی دنیا میں بھی عربی زبان کی ترویج کی کوشش کی جائے اور اس کا آغاز وہاں آباد مسلم کمیونٹی سے کیا جائے۔
- عرب ممالک میں عامی زبان کی جگہ فصیح عربی کو عام کیا جائے۔
- عربی کی اس اشاعت سے قرآن وسنت کی تبلیغ واشاعت کی راہ ہموار کی جائے۔
- غیر ملکی زبانوں خصوصاً انگلش کے دائرے کو محدود کیا جائے۔ ضرورت کے بغیر اسے استعمال نہ کیا جائے۔ خصوصاً اپنی زبان میں انگلش کے الفاظ ٹھونسنے سے گریز کیا جائے۔ عرب مسلمان اور اردو دان طبقے کے افراد اس بارے میں اپنی ذمے داری کا خیال کریں۔ ان زبانوں کو غیر ملکی اثرات سے پاک رکھیں۔
- جدید اصطلاحات کو انگلش سے مقامی زبانوں میں ڈھالا جائے۔
- مغربی زبانوں میں شایع ہونے والی ہر مفید علمی کتاب اور تازہ تصنیف کا بلا تاخیر اسلامی

دنیا کی زبانوں میں ترجمہ کرایا جائے۔

## اقتصادی عالمگیریت کا مقابلہ:

اقتصادی عالمگیریت کے خلاف جنگ دو اصول اپنا کر لڑی جائے گی:

### پہلا اصول: خطرے کا احساس دلانا:

عوام کو عالمگیریت (Globalization) کے خطرات سے آگاہ کر کے انہیں یہ احساس دلایا جائے کہ وہ اقتصادی میدان میں حالتِ جنگ میں ہیں، اور فنا و بقا کا معرکہ درپیش ہے۔

### دوسرا اصول: غیر ملکی مصنوعات کا حتی الامکان بائیکاٹ:

عوام کے جذبات کو ابھار کر انہیں اس قربانی پر آمادہ کیا جائے کہ جو چیزیں دیسی طور پر تیار ہوتی ہیں، ان میں دیسی مال پر اکتفا کیا جائے۔ غیر ملکی چیزیں صرف وہ خریدی جائیں جو ناگزیر ہوں اور ان کا متبادل دستیاب نہ ہو جیسے جان بچانے والی ادویات۔ کمپیوٹر کے پرزے وغیرہ۔

آرائش وزیبائش کی اشیاء، فاسٹ فوڈز، کولا مشروبات، کھلونے، ملبوسات اور زیورات وغیرہ غیر ملکی برانڈ میں ہرگز نہ خریدے جائیں۔ چاہے ان کا معیار کتنا ہی اعلیٰ کیوں نہ ہو، اور چاہے ان کا متبادل بھی دستیاب نہ ہو۔

یہ کام بہت دشوار ہوگا، نفس پر بہت گراں ہوگا، غیر ملکی کمپنیاں ایسے ایسے دلکش حربے آزمائیں گی کہ اچھے اچھے ثابت قدموں کے قدم ڈگمگانے لگیں گے۔ وہ اشتہارات کو زیادہ پرکشش بنادیں گی۔ فلمی ہیروئنوں اور کھلاڑیوں ہی کو نہیں بلکہ سیاست دانوں حتیٰ کہ سربراہان مملکت کو بھی اپنے مصنوعات کا شائق ثابت کریں گی۔ انعامی اسکیموں کی قطاریں لگادیں گی۔ قیمت انتہائی کم کردیں گی، وقتی طور پر نفع نہ نقصان کے اصول پر تجارت کرنے پر بھی آمادہ ہوجائیں گی۔ ملک میں رفاہی کام شروع کردیں گی۔ مفت روٹی اور مفت تعلیم جیسے پروگرام آزمائیں گی۔ دینی اداروں کو سرعام امداد دے کر بھی لوگوں کی ہمدردیاں حاصل کرنے سے گریز نہیں کریں گی۔ اہل علم ودانش، علماء وفضلاء تک کو تقاریب میں اپنی مصنوعات فخر سے استعمال کرتا ہوا دکھا کر عوام کو قائل کریں گی کہ ہم دشمن نہیں دوست ہیں۔

مگر عوام کو عالمگیریت (Globalization) کی تباہ کاریوں کو سامنے رکھتے ہوئے ان تمام پھندوں سے بچنا ہوگا۔ اپنی مٹھی میں موجود روپے کو صرف مقامی مصنوعات کے لیے محفوظ رکھنا ہوگا۔

اس مقصد کے لیے سب سے اہم اور مددگار شے یہ ہوگی کہ غیر ملکی مصنوعات کے اشتہارات کو یکسر نظر انداز کر دیا جائے۔ اخباری اشتہارات اور سائن بورڈز پر نگاہ نہ ڈالی جائے۔ ریڈیو اور ٹی وی پر بھی ان کے اشتہارات، دیکھے سنے نہ جائیں۔ اس طرح دل میں حرص پیدا ہوگی نہ کچھ خریدنے کا خیال آئے گا۔

مذکورہ اصولوں کا اہتمام کر لیا گیا تو اقتصادی محاصرہ ٹوٹنے لگے گا اور خود کفالت کی راہیں کھلنے لگیں گی۔ مقامی صنعت و تجارت مضبوط ہونے لگے گی۔ تب دوسرے مرحلے میں صنعت کار یہ کر سکتے ہیں کہ جو چیزیں صرف غیر ملکی برانڈ میں آ رہی ہیں آہستہ آہستہ ان سب کا بہتر متبادل پیش کریں۔

پہلے اصول کو بہر صورت نہ چھوڑا جائے اس طرح رفتہ رفتہ غیر ملکی مصنوعات کی منڈیاں ختم ہو جائیں گی اور اقتصادی عالمگیریت کی یلغار رک جائے گی۔

## سیاسی عالمگیریت کا مقابلہ:

معاشرتی اور اقتصادی عالمگیریت کے سامنے قدم جمانے کے بعد ہم سیاسی عالمگیریت کا مقابلہ بھی کر سکیں گے۔ اس کے لیے:

- مسلمانوں کو وطنی، علاقائی اور لسانی مفادات پس پشت ڈال کر متحد ہونا ہوگا۔
- اسلام کے سیاسی نظام کی تعلیم کو عام کرنا ہوگا۔ نظام خلافت اور شورائیت کو سمجھنا اور سمجھانا ہوگا۔
- ایسی جماعتیں وجود میں لانا ہوں گی جو مروجہ سیاست کی آلودگیوں سے پاک رہ کر عوام کو اعتماد میں لیں۔ نہ صرف ان کی دینی رہنمائی کریں بلکہ ان کے دنیوی و معاشی مسائل کا حل بھی پیش کریں۔
- احیائے خلافت کو اصل ہدف بنا کر کام کرنا ہوگا۔
- جب تک خلافت قائم نہیں ہوتی کوئی ایسا آزاد اور مؤثر پلیٹ فارم بنایا جائے جو مسلمانوں کے سیاسی حقوق کے لیے عملی کام کر سکے اور مغربی دنیا پر قرار واقعی دباؤ ڈال سکے۔

- مثالی تعلیمی ادارے تشکیل دے کر جدید تعلیم سے آراستہ پختہ فکر نوجوانوں کی کھیپ کو اسلامی ملکوں کی پیشہ ور افواج، سیاسی پارٹیوں، قانون کے محافظ اداروں، پولیس، عدلیہ اور بیورو کریسی میں اچھے عہدوں تک پہنچایا جائے۔ یہ کام مسلسل تین پانچ چھ عشروں تک ہونا چاہیے تاکہ مستقبل میں ہر حکومت میں مغربی ایجنٹوں کی جگہ اسلام کے سچے جانثار وافر تعداد میں موجود ہوں۔

### 4.3.7- آخری بات:

عالمگیریت (Globalization) کے نظریے، فلسفے اور اس کے تمام حملوں کا سدباب اسلام کے نظریے، عقیدے، قانون، تہذیب وتمدن اور اس کے اخلاقی ومعاشری نظام میں موجود ہے۔ اس نظام کے فروغ کی کوششیں جس قدر تیز ہوں گی اتنی ہی جلدی عالمگیریت کا سحر ٹوٹے گا۔

# مراجع


- العولمۃ: صالح الرقب
- العلمانیۃ والعولمۃ والازہر: ڈاکٹر کمال الدین عبدالغنی المرسی
- الموسوعۃ الرد علی المذاہب: علی بن نایف الشحوذ
- المسلمون والعولمۃ: استاذ محمد قطب
- موسوعۃ الرد علی المذاہب: علی بن نایف الشحوذ
- موسوعۃ الغزو الفکری: علی بن نایف الشحوذ
- الاعلام والتیارات الفکریہ المعاصرۃ: سعید عبداللہ حارب
- گلوبلائزیشن اور اسلام: مولانا یاسر ندیم
- مغربی میڈیا اور اس کے اثرات: مولانا نذر الحفیظ ندوی
- ہلال وصلیب کا معرکہ: شفیق الاسلام فاروقی
- اسلام اور جدید تجارت ومعیشت: حضرت مفتی محمد تقی عثمانی مدظلہ

# 4.4- چوتھا محاذ (الساحۃ الرابعۃ)

## (التنصیر، التبشیر، الردّۃ)

## (Christianity Mission)

اہلِ باطل کا آخری ہدف الردّۃ ہے، یعنی وہ مسلمانوں کو مرتد بنانا اور اسلام سے خارج کرنا چاہتے ہیں۔ ویسے تو باطل عقائد ونظریات کی حامل کئی اقوام اپنے اپنے طور پر مسلمانوں کو ان کے عقائد سے برگشتہ کرنے اور اپنا ہم خیال بنانے کے لیے سرگرم ہیں جیسا کہ کیمونزم کے داعی اپنے نظریات کی تبلیغ کرتے چلے آئے ہیں اور ہندو مسلمانوں کو مرتد بنانے کے لیے شدھی جیسی تحریکیں چلاتے رہے ہیں مگر اس سلسلے میں سب سے وسیع پیمانے پر نصرانیت کی تبلیغ کا کام ہو رہا ہے اور عالم اسلام کو سب سے زیادہ خطرہ بھی اسی سے ہے اس لیے اس موضوع پر سردست ہم نصرانیت کی تبلیغ کا جائزہ لیں گے جسے التنصیر یا التبشیر (Christianity Mission) کہتے ہیں۔ الغزوالفکری کے موضوع پر تحریر کردہ اکثر کتب میں بھی اس مقام پر التنصیر ہی سے بحث کی گئی ہے۔

### 4.4.1 (التنصیر کی تعریف:)

(''التنصیر سے مراد وہ تحریک ہے جس کا مقصد غیر نصرانی اقوام کو باضابطہ طور پر نصرانیت میں داخل کرنا ہے۔'')

اس تحریک کے تحت دنیا بھر میں بڑے وسیع پیمانے پر نصرانیت کی تبلیغ کا کام ہو رہا ہے۔ اگرچہ اس مہم کا ہدف ساری دنیا اور تمام مذاہب کے افراد ہیں مگر مسلمان اور عالم اسلام ان کا خاص نشانہ ہیں۔ اس تحریک سے وابستہ لوگ مشنری کہلاتے ہیں۔

اسلامی دنیا میں کام کرتے وقت نصرانی مبلغین حکومتی پابندیوں یا عوامی نفرت سے بچنے کے لیے اپنی مہم کو التنصیر کی بجائے التبشیر کا نام دیتے ہیں۔ التبشیر کا معنیٰ بشارت دینا ہے۔ نصرانی

مبلغین اپنی دعوت قبول کرنے والوں کو گناہوں سے پاک ہونے کی خوشخبری دیتے ہیں۔ وہ یہ ظاہر کرتے ہیں ہم انسانوں کو مایوسی اور اندھیرے سے نکالتے اور نجات کی بشارت دیتے ہیں۔

## 4.4.2- تاریخ التنصیر:

تحریکِ تنصیر کی داغ بیل تقریباً پانچ صدیاں قبل پڑی تھی۔ اس کی کارگزاری کو ہم دو حصوں میں تقسیم کر کے دیکھ سکتے ہیں:

① جبراً نصرانی بنانے کا دور

② تبلیغ اور ترغیب کے ذریعے نصرانیت کی اشاعت

### جبراً نصرانی بنانے کا دور:

جبراً نصرانی بنانے کی مہم سب سے پہلے اسپین میں شروع ہوئی۔ 2 ربیع الاول 897ء (2 جنوری 1492ء) کو سقوطِ غرناطہ کے ساتھ اسلامی اندلس کا خاتمہ ہوا تو ساتھ ہی اسپین کے بادشاہ فرڈی ننڈ نے وہاں کے مسلمانوں کو سرکاری طور پر زبردستی نصرانی بنانا شروع کر دیا۔ پرتگال میں شاہ منوئیل نے بھی یہی کچھ کیا۔ یہ نصرانیوں کی طرف سے اپنے مذہب کو پھیلانے کی ایک بھونڈی اور مذموم کوشش تھی جس کے پیچھے صدیوں کا جذبۂ انتقام کام کر رہا تھا۔

اسی زمانے میں اہل یورپ نے اقتصادی اور استعماری فتوحات کے لیے مشرق کے نئے راستوں کی تلاش شروع کی۔ اس مہم میں دولت اور زمین کی ہوس کے ساتھ ساتھ اپنے مذہب کو دوسروں پر تھوپنے اور منوانے کا جنون بھی کارفرما تھا۔ پوپ کی طرف سے ان مہم جوؤں کی باقاعدہ حوصلہ افزائی کی گئی تھی تاکہ وہ اپنے مذہب کو بلاتردد پھیلا سکیں۔ کلیسا نے انہیں اس مقصد کے لیے ہر جائز اور ناجائز حربہ آزمانے حتیٰ کہ خونریزی تک کی اجازت دی تھی۔

ان مہم جوؤں میں سے بہت سوں کا تعلق متعصب اور جنونی مسلح مذہبی تنظیموں سے تھا جیسا کہ ہندوستان کا راستہ دریافت کرنے والا پرتگیزی سیاح واسکوڈے گاما ''آرڈر آف کرائسٹ'' کا عہدے دار تھا۔ اس نے ہندوستان کے ساحلی علاقوں میں اپنے مذہب کو منوانے کی کوششیں کیں۔ افریقہ کی کئی ساحلی ریاستوں کو بھی اس تجربے کی بھینٹ چڑھایا گیا۔ اسی زمانے میں

اسپین کے جہاز ران بحرالکاہل کو عبور کر کے فلپائن پہنچے اور وہاں بھی مقامی لوگوں کو بزور شمشیر مذہب تبدیل کرنے پر مجبور کیا گیا۔ دنیا کے مختلف خطوں میں یہ کوششیں ایک صدی تک جاری رہیں جس کی وجہ سے پرتگال اور اسپین سے مسلمانوں کا نام ونشان تک مٹ گیا اور افریقہ سے فلپائن تک بہت سی مقبوضہ ریاستوں میں نصرانیت قبول کرنے والوں کی اکثریت نظر آنے لگی۔

## تبلیغ اور ترغیب کے ذریعے نصرانیت کی اشاعت:

مذہب کو عسکری طاقت کے ساتھ جبری طور پر وہیں پھیلایا جاسکتا تھا جہاں زمینی قبضہ مکمل ہو چکا ہو۔ چنانچہ نصرانیت کے پھیلاؤ کی رفتار اسپین اور فلپائن جیسے دو چار مقبوضہ اسلامی ملکوں کو چھوڑ کر بقیہ دنیا میں نہ ہونے کے برابر رہی۔ آخر کار اپنے دائرہ کار کو بڑھانے کے لیے عسکریت سے ہٹ کر مذہب کی تبلیغ کے بارے میں سوچا جانے لگا۔ اس سوچ کو عملی جامہ پہنانے کا آغاز پیرس کے سینٹ میری کلیسا کے سات عیسائی طلبہ نے کیا۔

اس مہم کی ابتداء سولہویں صدی عیسوی کے چوتھے عشرے میں اس وقت ہوئی جب ہیومزم (انسانیت پرستی) اور عقلیت پسندی کی تحریکوں نے یورپی کلیسا کے ایوانوں میں زلزلہ برپا کر دیا تھا۔ مارٹن لوتھر کی تحریکِ اصلاحِ مذہب اور فرقہ احتجاجیہ (پروٹسٹنٹ فرقہ) نے کیتھولک چرچ کے اثر ورسوخ کو بہت کم کر دیا تھا، اس صورتحال میں روایت پسند نصرانیوں نے اپنے قدیم عقیدے کی حفاظت کی فکر شروع کر دی اور اس کی اشاعت وتبلیغ کے لیے نئے میدان ڈھونڈنے لگے۔

پیرس کے سینٹ میری کلیسا کا ایک ہسپانوی طالب علم اگنیشس لائیلا عیسائیت کی اس بدحالی سے غیر معمولی طور پر فکر مند تھا۔ اس نے سات ہم فکر طلبہ کے ساتھ 15 اگست 1537ء کو مسیحیت کی تبلیغ کا حلف اٹھایا اور یسوعی فرقے (Jesuit) کی بنیاد رکھی۔ یہ پرجوش طلبہ روم گئے اور پوپ سے مل کر رومن کیتھولک کلیسا کے لیے زندگی وقف کرنے کا عہد کیا۔ 1540ء میں پوپ پال سوئم نے اس فرقے کی باقاعدہ منظوری دی۔ اس فرقے کے مقاصد درج ذیل تھے:

① رومن کیتھولک چرچ کے عقائد کے مطابق تبلیغِ نصرانیت۔

② تقدس کلیسا بحال رکھنے کے لیے اشاعتِ فقر وزہد۔

③ تعلیمی ادارے کھول کر انہیں کیتھولک مذہب کی تعلیم وتربیت کا مرکز بنانا۔

اس طرح نصرانی مذہب کی باقاعدہ تبلیغ شروع ہوئی۔ اس کا آغاز پرتگال اور اسپین سے کیا گیا جہاں مسلمانوں کو زبردستی عیسائی بنانے کی مہم جاری تھی۔ یسوعی فرقے کے مبلغین نے ان علاقوں میں تعلیمی مراکز قائم کیے۔ ان کی دیکھا دیکھی اور بھی کئی عیسائی فرقوں نے تبلیغ کے لیے کمر کس لی، ان کے سامنے میدان بے حد وسیع تھا اس لیے ایک دوسرے کے کام میں مداخلت کیے بغیر یہ اپنے عقائد کی اشاعت میں منہمک رہے۔

بہترین نظم وضبط اور مسلسل محنت کی وجہ سے یہ پچاس ساٹھ سال میں اس قابل ہو گئے کہ یورپ کے بیشتر ممالک کے تعلیمی اداروں پر کنٹرول پانے کے ساتھ ساتھ سیاسی اداروں میں بھی دخیل ہونے لگے۔ نئی دنیا امریکا میں بھی ان کا اثر ورسوخ بڑھ گیا۔

پھر یورپی استعمار کے ساتھ ساتھ ان کے مبلغین کی ٹولیاں بھی اسلامی ملکوں میں قدم رکھنے لگیں۔ ان مبلغین کو ''مشنری'' کہا جاتا تھا۔ ابتداء میں ان کا طریقہ کار یہ تھا کہ مقامی حکمرانوں کو متاثر کر کے ان پر اپنے علم وفضل کی دھاک بٹھاتے اور پھر ان کے تعاون سے مختلف علاقوں میں چرچ قائم کر کے نصرانیت کی تعلیم اور تبلیغ کا سلسلہ شروع کر دیتے۔

### 4.4.3- ہندوستان میں مشنری سرگرمیوں کا تاریخی جائزہ:

ہندوستان میں مشنریوں کی آمد مغل بادشاہوں کے دور میں شروع ہوئی تھی۔ 3 دسمبر 1567ء کو (974ھ) میں پرتگال کے پہلے مشنری وفد کا جہاز ہندوستان کی بندرگاہ سورت پر لنگر انداز ہوا۔ اگرچہ یہ مغلوں کے عروج کا زمانہ تھا اور یورپی حکومتوں پر ان کا رعب چھایا ہوا تھا مگر پرتگیزی مشنریوں نے ہر خطرہ مول لیتے ہوئے مغل دربار میں تبلیغ کرنے کی ٹھان لی تھی۔ ان مشنریوں کی خوش قسمتی تھی کہ اس وقت مغل بادشاہ اکبر کی حکومت تھی جو نوعمر، اَن پڑھ اور نہایت آزاد خیال تھا۔ جب اسے پرتگال سے آئے ہوئے قافلے کا پتا چلا تو حکم دیا کہ وہ اپنے مبلغین کو اپنی شریعت کی کتاب سمیت دہلی بھیج دیں۔

## 4.4.4- اکبر کے دربار میں

پرتگیزی مبلغین اکبر کے دربار میں آئے اور تثلیث کے بارے میں دلائل سنا کر نصرانیت کو برحق ثابت کرنے کی کوشش کی اور حضرت عیسیٰ علیہ السلام کی تصویر دکھائی، اکبر نے تصویر کے آگے کہنیوں کو ٹیک کر سجدہ کیا۔ وہ وفد سے اتنا متاثر ہوا کہ ان کے ایک فرد کو شہزادوں کا استاد مقرر کر دیا۔ انہیں گرجے بنانے کی اجازت بھی مل گئی۔

اس دوران علمائے کرام نے دربار سے نصرانیوں کے اثرات زائل کرنے کے لیے اپنے طور پر کوششیں کیں۔ اکبر کے دربار میں ایک بار مسلمان علماء اور پادریوں کا مباہلہ بھی ہوا جس میں شیخ قطب الدین جانسری مسلمانوں کے نمائندے تھے، آگ دہکا کر دونوں فریقوں کو اس میں کودنے کی دعوت دی گئی کہ جو بچ گیا وہ برحق مانا جائے گا۔

شیخ نے پادری کی کمر میں ہاتھ ڈال کر کہا: ''ہاں! بسم اللہ''

مگر پادری ہمت نہ کر سکا۔ اس نے یہ کہہ کر جان چھڑائی کہ آگ میں کودنا خلافِ عقل بات ہے۔

اکبر نے اس واقعے کو عیسائیوں کی کھلی شکست تو نہ سمجھا مگر اتنا ضرور ہوا کہ اس نے باقاعدہ عیسائیت قبول بھی نہ کی۔ اس کے سوانح نگاروں کا کہنا ہے کہ وہ کسی مذہب کا پابند نہیں تھا۔ بعد میں اکبر نے جب دین الٰہی ایجاد کیا تو ہندو مذہب اور اسلام کے ساتھ ساتھ نصرانیت سے بھی کچھ چیزیں لے کر اس میں شامل کیں۔ (دربارِ اکبری، ص:83، تاریخ ہند، ذکاء اللہ ج:5 ص:825)

بظاہر اکبر کسی بھی طرح ہندوؤں اور عیسائیوں دونوں کو خوش رکھنا چاہتا تھا۔ منوچی اپنے سفرنامے میں لکھتا ہے کہ اکبر نے اپنے لیے ایک مقبرہ بنانے کا ارادہ کیا، جس کا نام سکندرہ رکھا۔ باغ کے دروازے پر حضرت عیسیٰ علیہ السلام کے صلیب دیے جانے والی تصویر تھی۔ اس کے دائیں طرف حضرت مریم کی تصویر تھی جس میں وہ حضرت عیسیٰ علیہ السلام کو شیر خوارگی کے دنوں میں اپنی گود میں لیے ہوئے تھیں۔ یہ اکبر کے عیسائیت سے متاثر ہونے کا واضح ثبوت ہے۔

قریب تھا کہ فرنگی اپنے مقاصد میں غیر معمولی کامیابی حاصل کر لیتے مگر حضرت مجدد الف ثانی رحمہ اللہ کی تحریک نے حالات کا رخ تبدیل کر دیا۔ اگر اس نازک موقع پر وہ میدان میں نہ

اترتے تو سارے ہندوستان کے ایک نصرانی مملکت بن جانے کے خطرات سر پر آچکے تھے، حضرت مجدد رحمۃ اللہ نے عیسائیوں کی تبلیغی مہم کے ان اثرات کو جو دین الٰہی کی شکل میں اہل ہند پر مسلط کیے گئے تھے، بڑی بصیرت اور عزیمت کے ساتھ روکا۔ (اس کی تفصیل تاریخ دعوت وعزیمت کی پانچویں جلد میں ملاحظہ کی جاسکتی ہے۔)

## 4.4.5- جہانگیر کے دور میں:

جہانگیر کے عہدِ حکومت میں برطانوی تاجروں کو ہندوستان میں قدم رکھنے کا موقع ملا۔ ہاکنس نامی ایک انگریز افسر نے مغل دربار میں بڑی حیثیت حاصل کرلی۔ ایسے غیر ملکیوں سے متاثر ہوکر جہانگیر نے آگرہ اور لاہور میں گرجوں کو زمین فراہم کی اور مراعات کے لیے فرمان جاری کیے۔ (تاریخ جھجھر، ص:465)

برطانوی ممبر پارلیمنٹ سر ٹامس رو اپنے بادشاہ کے سفیر کی حیثیت سے 1615ء میں ہندوستان میں تھا۔ وہ لکھتا ہے:

''جہانگیر بظاہر اکبر سے زیادہ عیسائی مذہب کی طرف مائل تھا، اس نے باپ کی طرح پرتگیزیوں کو حکم دیا کہ وہ اپنے چرچ اور اسکول قائم کرلیں اور جہاں چاہیں وعظ کہیں اور جو لوگ عیسائی مذہب میں داخل ہونا چاہیں ان کو عیسائی بنالیں۔''

ٹامس رو کے ساتھ ایک پادری پیٹری جین بھی تھا۔ اس نے ہندوستانی مسلمانوں میں عیسائیت کی تبلیغ کے امکانات پر تبصرہ کرتے ہوئے لکھا ہے:

''مسلمانوں میں کم ذات طبقے کے سوا کوئی ایسا نہیں ہے کہ ہمارے شفیع عیسیٰ مسیح کا نام ادب وتعظیم سے نہ لیتا ہو، وہ ان کو نیک یقین کرتے ہیں۔ ان کو روح اللہ کہتے ہیں، مگر نا معلوم وہ ان کو خدا بیٹا کیوں نہیں مانتے۔ اکثر مسلمان عیسائیوں کو نجس جانتے ہیں، نہ وہ ہمارے ساتھ کھاتے ہیں اور نہ ان برتنوں میں کھاتے ہیں جن میں ہم کھاتے ہیں۔''

ٹامس رو نے جہانگیر کے بیٹوں شہزادہ خسرو اور شہزادہ خرم کے مزاج ومیلانات پر گہری نظر رکھی تھی۔ اس نے اپنی حکومت کو لکھا تھا:

''اگر (آئندہ اقتدار کی کشمکش میں) خسرو کامیاب ہوا تو انگریزوں کو فائدہ ہوگا اور ہندوستان عیسائی سلطنت کے واسطے ایک مامن بن جائے گا کیوں کہ خسرو عیسائیوں سے محبت رکھتا ہے۔ اگر خرم فتح یاب ہوگیا تو انگریزوں کو بے حد نقصان ہوگا، وہ عیسائیوں سے نفرت کرتا ہے۔''

ان مشنریوں کی پوری کوشش تھی کہ مغلیہ خاندان کے شہزادے ان کا مذہب قبول کرلیں۔ اس مقصد کے لیے وہ فرنگی حسیناؤں سے بھی کام لیتے تھے۔ انہیں اس مہم میں کامیابی بھی ہوئی۔ جہانگیر کے بھائی دانیال کے دو بیٹے نصرانی ہوگئے تھے اور آگرہ میں ان کا اصطباغ ہوا تھا۔

(تاریخ ہند، ذکاء اللہ، ج:5، ص:250)

## 4.4.6- شاہ جہاں کے دربار میں مناظرہ:

مسلمانوں کی خوش قسمتی تھی کہ جہانگیر کے بعد شہزادہ خرم (شاہ جہان) حکمران بنا جو مجدد الف ثانی رحمہ اللہ کی تحریک سے بے حد متاثر تھا چنانچہ اکبر نے جس بے دینی کا بیج بویا تھا جہانگیر کے بعد اس کا شجرِ خبیثہ کاٹ دیا گیا۔ شاہ جہان نے اسلامی اقدار کو از سرِ نو پروان چڑھایا اور مشنریوں پر قدغن لگادی۔

اس دور میں پادری ڈوم میتھیوس سلطنت مغلیہ میں تبلیغ کا کام شروع کرنا چاہتا تھا۔ اس نے ان پابندیوں کے خاتمے کے لیے شاہ جہان کے دربار میں مسلمانوں کو مناظرے کی دعوت دی۔ طے پایا کہ اگر مشنری مناظرے میں جیت گئے تو انہیں کھلم کھلا تبلیغ کی اجازت مل جائے گی۔

پادری نے حاضرین دربار کو مخاطب کر کے کہا:

''ایک شخص کسی جنگل بیابان میں راستہ بھٹک جاتا ہے۔ اسے دو آدمی نظر آتے ہیں، ایک سویا ہوا، دوسرا جاگا ہوا۔ اب وہ کس سے راستہ پوچھے گا۔''

پادری کا مقصد یہ تھا کہ رہنمائی سوئے ہوئے سے نہیں جاگے ہوئے سے لی جاتی ہے۔ حضور نبی اکرم ﷺ کی وفات ہوگئی ہے، وہ سوئے ہوئے کی مانند ہیں، عیسیٰ علیہ السلام مسلمانوں کے عقیدے کے مطابق بھی زندہ ہیں، گویا جاگے ہوئے ہیں لہٰذا انہی کی شریعت پر چلنا ہوگا۔

پادری کے اس سوال کے جواب میں ایک عالم فاضل امیر سعد اللہ خان نے برجستہ کہا:

''بھٹکا ہوا مسافر اور جاگا ہوا شخص دونوں سوئے ہوئے آدمی کے جاگنے کا انتظار کریں گے اور اس کے جاگنے پر اسی سے راستہ پوچھیں گے کیوں کہ جاگا ہوا شخص بھی بیابان میں اسی لیے نظر آرہا ہے کہ اسے راستہ معلوم نہیں، وہ کسی کی رہنمائی کا محتاج ہے۔''

یہ جواب سن کر پادری مبہوت رہ گیا اور مناظرے میں اسے شکست ہوگئی۔ اس طرح مشنریوں کی سرگرمیاں رک گئیں۔

## 4.4.7- مشنری اور شہزادہ داراشکوہ:

مشنریوں کو شاہ جہاں کے بعد اس کے بیٹے شہزادہ داراشکوہ کی وجہ سے مستقبل میں کامیابی کی کچھ امید تھی۔ دارشکوہ کو صوفی منش کہا جاتا ہے مگر وہ اسلامی صوفی نہیں، شریعت سے آزاد ملحد انسان تھا۔ اس کے عیسائیوں سے گہرے تعلقات تھے۔ اسے مزید قابو میں لانے کے لیے'' گوا'' کے پادریوں نے اس کی دعوت کی جس میں سولہ، سترہ برس کی ایک یورپین لیڈی کو'' مسیح النساء'' کا نام دے کر اس کے پاس لایا گیا۔ لیڈی اپنے ہاتھ سے جام بھر بھر کر داراشکوہ کو پلاتی رہی۔ آخر وہ اس لڑکی پر عاشق ہوگیا اور اس سے مسیحی طریقہ پر شادی کرلی۔ یہ لڑکی اس کے مزاج بلکہ عقیدے پر اس قدر حاوی ہوئی کہ وہ آخر دم تک صحیح اسلامی فکر ونظر سے دور رہا۔

شاہ جہاں کے بعد اس کے قابل اور دین دار بیٹے اورنگ زیب عالمگیر نے تخت سنبھالا۔ ہندو اور عیسائی چاہتے تھے کہ داراشکوہ بغاوت کر کے عالمگیر سے تخت چھین لے۔ داراشکوہ نے ان کے بھڑکانے پر علم بغاوت بلند کر دیا اور نتیجتاً نامراد مارا گیا۔ یورپی مؤرخین کے مطابق مرتے وقت داراشکوہ کی زبان پر یہ الفاظ تھے:

''محمد مرا کشند وابن اللہ ومریم مرا می بخشند۔''

''محمد نے مجھے مار ڈالا۔ اللہ کے بیٹے اور مریم نے مجھے بخش دیا۔'' نعوذ باللہ

اگر اس روایت کو مان لیا جائے تو اس کا صاف مطلب یہ ہے کہ یہ مغل شہزادہ عیسائی ہو چکا تھا۔

آج کل کے لبرل دانشور اور مؤرخ داراشکوہ کو انسانی حقوق کا شہید اور انسان دوستی کا نقیب کہتے ہیں جبکہ عالمگیر کی بڑے پیمانے پر کردار کشی کی جارہی ہے۔ صرف اس لیے کہ داراشکوہ

شریعتِ اسلامیہ کا باغی تھا اور اورنگ زیب اس کا محافظ۔ اورنگ زیب کی انہی مومنانہ صفات کی وجہ سے اس کے دور میں مشنریوں کی سرگرمیاں بند رہیں مگر اس کے بعد وہ پھر متحرک ہو گئے۔

## 4.4.8- مشنریوں کے خیالات وافکار کی ایک جھلک:

مشنری کارکن اسلام اور پیغمبرِ اسلام ﷺ کے بارے میں نہایت گھناؤنا، زہر آلود اور خلافِ حقیقت ذہن رکھتے تھے، اگرچہ بظاہر بھیڑ کا روپ دھارے ہوئے یہ بھیڑیے مسلمانوں سے بہت خوش گوار روّیہ رکھتے تھے مگر ان کے باطن میں بغض ہی بغض بھرا ہوا تھا۔ انہیں معلوم تھا کہ مسلمان حضرت عیسیٰ علیہ السلام کی بے حد عزت کرتے ہیں اور ان کے احترام کو اپنا جزوِ ایمان تصور کرتے ہیں مگر اس کے باوجود وہ اسلام کے بارے میں بغض وعناد کی انتہاء پر تھے۔ ان کے جذبات کا کچھ اندازہ لگانے کے لیے اس دور کے انگریز دانشور ڈاکٹر برنیر کے سفرنامے کا ایک اور اقتباس ملاحظہ کیجیے۔ وہ ہندوستان میں سرگرم مشنریوں اور اسلام کے بارے میں اپنے تاثرات ظاہر کرتے ہوئے لکھتا ہے:

"یقین نہیں کہ دس برس میں بھی ایک مسلمان عیسائی ہو جائے مگر ان سب باتوں کے باوجود پھر بھی فرنگستان کے عیسائیوں کو چاہیے کہ مشنری لوگوں کی ہر ایک طرح سے مدد کریں۔ یہ کام ہر ایک عیسائی ملک پر واجب ہے، مگر کسی طرح لغو اور بے بنیاد باتوں پر یقین کر کے یہ نہیں سمجھ لینا چاہیے کہ تبدیلی مذہب کا کام ایک آسان کام ہے، کیونکہ (معاذ اللہ) محمد کے مذہب باطل نے جو ایک ایسا مذہب ہے کہ جن نفسانی خواہشوں کو ہمارا مذہب روکتا یا ایک قاعدہ کا پابند کرتا ہے، یہ اپنے مقلدوں کو اس کی بلا قید اجازت دیتا ہے۔ اس نے اپنے پیروؤں کے دل پر جس مضبوطی سے قبضہ کیا ہوا ہے، ہم لوگ اس کا اندازہ نہیں کر سکتے۔ یہ مذہب خونریز اور تباہ کن احکام کا مجموعہ ہے اور بزورِ شمشیر قائم ہوا ہے اور اب تک دنیا میں اسی وحشیانہ ظلم وستم کے ساتھ قائم ہے۔ اس کی زہر آلود اور تباہ کن ترقی کو روکنے کے لیے عیسائیوں کو وہ جوش اور ذرائع عمل میں لانے چاہیں جو میں نے بیان کیے ہیں۔"

## 4.4.9- ایسٹ انڈیا کمپنی کے تسلط کے بعد مشنری مہم کا فروغ:

مغل حکومت کے زوال اور ایسٹ انڈیا کمپنی کے عروج کے ساتھ ساتھ مشنریوں کا دائرہ کار پھیلتا چلا گیا۔ ان کے مختلف مشن اور درجنوں فرقوں کی تبلیغی پارٹیاں پوری دنیا میں گشت کرنے

لگیں۔ اس دور کے مشنری مبلغین کو یورپ میں بہت بڑا مقام دیا جاتا رہا۔ ڈاکٹر برنیر ان مشنریوں کو خراج تحسین پیش کرتے ہوئے اپنے سفرنامے میں لکھتا ہے:

''اس کام کے لیے جو یہ ایسے عظیم ملک میں آئے ہیں بیشک قابل تعریف ہیں۔''

1834ء ''ویسٹرن فارن مشن'' کا نمائندہ جان لارے پنجاب کے سکھ راجا رنجیت سنگھ سے ملا اور پنجاب میں تبلیغ کی اجازت طلب کی۔ رنجیت سنگھ نے یہ سوچ کر اجازت دے دی کہ مسلمانوں کے مرتد ہونے سے پنجاب میں ان کی اکثریت کم ہوسکتی ہے جس سے سکھ اقلیت مضبوط ہوگی۔

1835ء میں چرچ آف سکاٹ لینڈ نے پنجاب میں کام شروع کیا اور سیالکوٹ کو اپنا مرکز بنایا۔ 1845ء میں امریکی پادری بھی اس ''کارِ خیر'' میں شریک ہوگئے، چرچ آف امریکا نے وسطی پنجاب کے شہر لدھیانہ میں گرجا بنالیا۔ 1851ء میں ''چرچ مشنری سوسائٹی'' نامی جماعت بھی سرگرم ہوگئی۔

اکثر مشنری اداروں نے پنجاب کو مرکز بنایا کیوں کہ یہاں سے بیک وقت دہلی اور یوپی سمیت مسلم اکثریتی علاقوں خصوصاً سندھ اور صوبہ سرحد پر اثر انداز ہونا آسان تھا۔

اس زمانے میں پادریوں کی سرگرمیاں اتنی بڑھ گئی تھیں کہ وہ سرعام چوراہوں پر عقیدۂ تثلیث کی تبلیغ کرتے اور مناظروں کا چیلنج دیتے۔ برطانوی دارالعوام کے ایک رکن میگلس نے 1857ء کے آغاز میں اپنی تقریر میں کہا تھا:

''ہر شخص کو اپنی تمام تر قوت ہندوستان کو عیسائی بنانے کے عظیم الشان کام کی تکمیل میں صرف کرنی چاہیے۔'' (پنجاب اینڈ سندھ مشن، ص:294)

پادریوں کی دریدہ دہنی، ان کی اشتعال انگیز سرگرمیوں اور انگریز افسران کی زیادتیوں کے ردعمل میں 1857ء کی جنگ آزادی برپا ہوئی۔ اس کی ناکامی کے بعد رسمی مغل حکومت کا بھی خاتمہ ہوگیا اور دہلی سمیت پورا برصغیر برطانیہ کے سامنے سرنگوں ہوگیا۔

اب عیسائی پادریوں کو کھلی چھوٹ مل گئی اور وہ مسلمانوں کو کھلم کھلا عیسائی بنانے پر تل گئے۔ اس مشن کی تکمیل کے لیے پورے ہندوستان میں جگہ جگہ عیسائیت کی تبلیغ شروع ہوگئی۔ اس سے

پہلے یہ کام اتنا منظم نہیں تھا۔ مگر اب ان کے اداروں میں اضافہ ہوتا چلا گیا اور باقاعدہ برطانوی حکومت ان کی سرپرستی کرنے لگی۔

مغل حکومت کے خاتمے کے بعد لارڈ لارنس (وائسرے ہند 1866ء 1869ء) نے کہا تھا: ''کوئی چیز بھی ہماری سلطنت کے استحکام کا اس سے بڑھ کر سبب نہیں ہوسکتی کہ ہم نصرانیت کو ہندوستان میں پھیلا دیں۔''

اس دور میں مسلمان نوابوں سے چھینی ہوئی بڑی بڑی جاگیریں مشنری اداروں کو دی جانے لگیں اور نصرانیت قبول کرنے والوں کو سرکاری مراعات اور تحفظ سے نوازا جانے لگا۔

## 4.4.10- علمائے کرام کی دفاعی کوششیں:

انیسویں صدی عیسوی کے اواخر اور بیسویں صدی عیسوی کے اوائل میں مشنریوں کا کام پورے ہندوستان میں پھیل چکا تھا اور پادری بڑے بڑے مناظرے منعقد کر رہے تھے تاہم مسلمان علماء کرام اس کا بھرپور دفاع کر رہے تھے۔ مشنریوں کی یورش کے اس خطرناک دور میں حضرت شاہ عبدالعزیز محدث دہلوی، حضرت مولانا رحمت اللہ کیرانوی، حضرت مولانا محمد قاسم نانوتوی اور مولانا محمد علی مونگیری رحمہم اللہ نے بڑی قربانیاں دیں اور ردِ نصرانیت کے لیے بھرپور مساعی کا مظاہرہ کرتے ہوئے پادریوں کے دلائل کا منہ توڑ جواب دیا۔

حضرت نانوتوی رحمہ اللہ کے شاگرد مولانا ابوالمنصور اور حضرت گنگوہی رحمہ اللہ کے شاگرد مولانا شرف الحق نے بھی متعدد مقامات پر پادریوں کو مناظروں میں شکست دی۔

## 4.4.11- عیسائی گرجے اور ان کی جاگیریں:

عیسائیوں نے اس دور میں جگہ جگہ عالی شان چرچ تعمیر کیے جن میں سے پاکستان میں شامل علاقوں کے چند مشہور چرچ یہ ہیں:

- سینٹ جیمز چرچ، گورڈن میموریل چرچ، سینٹ میری چرچ۔ لاہور۔
- سینٹ جان چرچ، جہلم۔
- ہولی ٹرینٹی چرچ، سیالکوٹ۔

- کرائسٹ چرچ۔سینٹ پال چرچ،سینٹ اینڈریوز چرچ،راولپنڈی۔
- ہولی ٹرینٹی چرچ،مری۔
- سینٹ لوکا چرچ،ایبٹ آباد۔
- سینٹ پیٹرس چرچ،آل سینٹس اٹک۔
- کرائسٹ چرچ،نوشہرہ۔
- سینٹ البانز چرچ،مردان۔
- سینٹ جان چرچ،کرائسٹ چرچ،پشاور۔
- سینٹ جان چرچ،بنوں۔

حکومتِ برطانیہ نے اس دور میں مختلف چرچوں اور مشنری اداروں کے لیے دل کھول کر جاگیریں الاٹ کیں، ہر جاگیر کو مشنری ناموں سے آباد کیا گیا۔یوں عیسائیوں کی مستقل کالونیاں وجود میں آگئیں۔

ضلع قصور میں ڈھائی ہزار ایکڑ اراضی پر مشتمل کلارک آباد کو بسایا گیا۔ملتان میں 1000 ایکڑ پر سٹینئس آباد کی بنیاد پڑی جو میتھوڈسٹ چرچ کی نگرانی میں دے دیا گیا۔

خانیوال کے نزدیک 2000 ایکڑ زمین سالویشن آرمی کو دی گئی جس نے وہاں شانتی نگر آباد کیا۔سیالکوٹ میں مشنریوں کی بستی ینگسن آباد تعمیر ہوئی۔

ساہیوال میں پریس بائی ٹیرین فرقے کو رونسن آباد اور ایسوسی ایٹڈ پریس بائیرین ہملٹن آباد کی جاگیر دے دی گئی۔شیخوپورہ میں مارٹن آباد کی جاگیر یونائیٹڈ پریس بائی ٹیرین کے حوالے کردی گئی۔سکھوکے میں مریم آباد نامی عیسائی بستی وجود میں آگئی۔مختلف اضلاع میں کئی چک مشنریوں کے لیے مخصوص کردیے گئے۔

ایک برصغیر ہی نہیں بلکہ جس ملک میں بھی برطانوی، فرانسیسی اور اطالوی استعمار نے پنجے گاڑے تھے وہاں مشنریوں نے اسی طرح تبلیغی مہمات شروع کر رکھی تھیں اور ان کی کوششوں کے ابتدائی اثرات بیسویں صدی کے اوائل میں واضح طور پر سامنے آنے لگے تھے جس کا پہلا درجہ یہ

تھا کہ مسلمان اپنے دین سے برگشتہ ہو رہے تھے۔ پادری فلپ جس نے مصر میں مشنریوں کے اسکول قائم کیے اور ایک نظامِ تعلیم مرتب کر کے دیا اپنے مضمون میں لکھتا ہے:

''اس قسم کے نوجوانوں کی بڑی تعداد مشکک (Skeptical) اور دہریہ نیچرسٹ (Naturist) ہوئی جا رہی ہے جو پیغمبرِ عرب کی جگہ اسپنسر کی تقلید کر رہی ہے، تمام قومیتوں میں ان کی تعداد (فی الحال) تقریباً 2 تا 3 ہزار ہے جو کم نہیں ہے۔''

## 4.4.12- چند سرگرم عیسائی مشن:

برصغیر میں سرگرم مشنز کی تعداد درجنوں میں تھی جن میں سے چند کا مختصر تعارف درج ذیل ہے:

### پریس بائی ٹیرین فرقہ:

یہ بہت قدیم مشن ہے۔ اس کا بانی جان ناکس رومن کیتھولک پادری تھا جو 1505ء میں پیدا ہوا تھا۔ پنجاب پر ایسٹ انڈیا کمپنی کے تسلط کے بعد اس مشن نے لاہور میں اپنے مراکز کھولے۔ اس کا پہلا اسکول سابق قصر شاہی ''رنگ محل'' میں قائم ہوا۔ اس کلیسا میں حکومت اور چرچ دونوں شامل ہوتے ہیں جس سے عوام کے حقوق محفوظ رہتے ہیں، حکام کو خادم اور عوام کو مخدوم سمجھا جاتا ہے۔ 1891ء میں راولپنڈی اور مری کا علاقہ اس مشن کے حوالے کر دیا گیا۔ 1925ء تک اس کے مبلغین 19 ہزار افراد کو بپتسمہ دے چکے تھے جن میں 12 ہزار یعنی 63 فیصد صرف ضلع قصور کے رہائشی تھے۔

### دی ایسوسی ایٹ ریفارمڈ پریس بائی ٹیرین چرچ (اے۔آر۔پی):

اس مشن نے بھنگیوں اور چوڑھوں پر توجہ مرکوز رکھی۔ 1921ء تک یہ 41 ہزار سے زائد افراد کو مرتد بنا چکا تھا، اس وقت پاکستان کے دیہی علاقوں میں زبردست انداز میں کام کر رہا ہے۔

### سالویشن آرمی یا مکتی فوج:

سالویشن آرمی نے 1883ء میں پنجاب میں کام شروع کیا۔ اس کا ہیڈ کوارٹر جھنگ میں ہے۔ اس مشن نے غریب اور مفلس لوگوں کو اپنا خاص ہدف بنایا اور چوڑھوں میں تبلیغ کر کے ہزاروں افراد کو بپتسمہ دیا۔ یہی چوڑھے آج پاکستان کی عیسائی آبادی کا غالب حصہ ہیں۔ انگریز

سرکار نے 1916ء میں اسے شانتی نگر (نزد خانیوال) کی جاگیر دے کر بھرپور کام کرنے کے مواقع فراہم کیے۔ 1967ء میں اس فرقہ کی آبادی 31 ہزار سے زیادہ تھی۔

سالویشن آرمی کے مبلغین کئی چیزوں میں موجودہ نصرانیت سے اختلاف کرتے ہیں اور قدیم نصرانیت کا عقیدہ رکھتے ہیں۔ ان کا عقیدہ ہے کہ ایک وقت تھا جب خدا بالکل اکیلا تھا اور یسوع مسیح خدا کی سب سے پہلی مخلوق ہے، دنیا کی باقی چیزیں بنانے میں وہ خدا کا رفیق کار رہا ہے۔ ان کے نزدیک حضرت مریم کو خدا کی ماں کہنا بڑی گستاخانہ بات ہے۔ بہرحال ان کے بیشتر عقائد عام عیسائیوں ہی کی طرح کفریہ ہیں۔

## دی افغان بارڈر کروسیڈ (اے بی سی):

پٹھانوں میں عیسائیت کی تبلیغ میں اس مشن کا سب سے زیادہ ہاتھ ہے۔ پٹھانوں کی مذہبی غیرت کے پیش نظر یہ کام نہایت مشکل تھا مگر اس فرقے کے مشنری باز نہ آئے۔ ان کی کوششوں سے چند برسوں بعد تاریخ میں پہلی بار پٹھان عیسائیوں کا ظہور ہوا جنہوں نے 66 خاندانوں پر مشتمل اپنی برادری کی تشکیل کی، ان میں سے نصف سے زائد مردان میں رہتے ہیں۔ یہ عیسائی برادری مختصر مگر باصلاحیت ہے، ایئر فورس کے عیسائی افسران اکثر اسی برادری کے ہیں۔ یاد رہے کہ سب سے پہلے 1928ء میں سرحد کا ایک پٹھان عیسائیت کے چنگل میں پھنسا تھا۔ اسے ایک عیسائی مشنری خاتون (نرس) نے متاثر کیا تھا۔

## دی ایونجیلیکل الائینز مشن (ٹی۔ای۔اے۔ایم) سابقہ نام اسکینڈنیوین الائینز مشن:

یہ مشن 1946ء میں امریکا سے آیا تھا۔ اس نے پنجاب اور سرحد کو اپنا اصل ہدف بنایا۔ ضلع ہزارہ میں بھرپور کام کیا۔ 1957ء میں اس نے کیمبل پور (اٹک) اور ایبٹ آباد کے علاقے میں بھی کام شروع کر دیا۔ یہ پاکستان میں مستقبل کے عیسائی لیڈر تیار کرنے پر خاص توجہ دے رہا ہے۔ اس کے کارکن "ہندکو" (ضلع ہزارہ اور اٹک کی مقامی بولی) میں اچھی مہارت حاصل کرتے ہیں۔

اسی مشن نے ایبٹ آباد اور قلندر آباد کے ہسپتالوں میں دارالمطالعے اور کتاب گھر بنائے ہیں

جہاں عیسائیت کا لٹریچر فراہم کیا جاتا ہے۔ ٹیکسلا اور قلندر آباد کے مشن ہسپتال اس کے خاص مراکز ہیں۔ ان ہسپتالوں میں تبلیغ عیسائیت کا پروگرام بہت پرکشش ہے۔

## دی انڈس کرسچن فیلوشپ:

اس مشن نے 1954ء میں پاکستان میں کام کا آغاز کیا، اس کے کارکن سندھ کے بالائی اور مغربی حصے میں پھیل گئے۔ وہ میلوں، مذہبی تہواروں اور بزرگان دین کے عرسوں وغیرہ میں شریک ہوکر لوگوں سے ملتے ہیں اور انہیں اپنی طرف راغب کرتے ہیں۔ اس مشن نے بائبل خط وکتابت اسکول بھی قائم کیا ہے جس سے لوگوں کو گھر بیٹھے عیسائیت کی تعلیم دی جاتی ہے۔ اس کے مشنریوں میں سے نصف افراد سندھی کو پہلی زبان کی حیثیت سے اور نصف اردو کو پہلی زبان کی حیثیت سے سیکھتے ہیں۔ پاک بھارت سرحد پر آباد ہندو قبائل اس کی تبلیغ کا خاص نشانہ بنے ہیں۔

1966ء کے آخر تک سینکڑوں ماروڑی ان کے جال میں پھنس چکے تھے۔ 1965ء اور 1971ء کے درمیان ان کی کوششوں سے ہندوؤں نے بڑی تعداد میں نصرانیت قبول کی۔ 1971ء میں اس نے شکارپور میں کرسچین ہاسپٹل قائم کیا جو سندھ میں تبلیغ عیسائیت کا بہت بڑا مرکز ہے۔

## دی پاکستان مشن آف انٹرنیشنل فارن مشنز ایسوسی ایشن:

یہ مشن 1954ء میں امریکا سے پاکستان آیا۔ اس نے مظفر گڑھ اور ڈیرہ غازی خان کے اضلاع میں کام سنبھالا اور یہاں اب تک ہزاروں افراد کو مرتد بنا چکا ہے۔

## دی پاکستان کرسچین فیلوشپ آف دی انٹرنیشنل کرسچین فیلوشپ، سابقہ نام دی سیون اینڈ انڈیا جنرل مشن:

اس مشن نے 1955ء میں رحیم یار خان اور بہاولپور کو ہدف بنا کر اپنی مہم کا آغاز کیا۔ اس کے کارکن 1965ء سے بھیلوں میں تبلیغ کر رہے ہیں اور اب تک ہزاروں افراد کو بپتسمہ دے چکے ہیں۔

## ورلڈ وائیڈ ایونجے لائیزیشن کروسیڈ:

یہ مشن سرحد، آزاد کشمیر اور بالائی پنجاب میں سرگرم ہے۔ اس کی خاص پہچان تعلیمی سرگرمیاں ہیں۔ اس نے ایبٹ آباد اور مظفر آباد میں کئی مشن اسکول کھولے ہیں۔ ایبٹ آباد میں

بچوں کا ایک ہاسٹل بھی ہے۔ پاکستانی امراء معیاری تعلیم کے لالچ میں اپنے بچوں کو ان اسکولوں میں داخل کرا کے ان کے ایمان کو خطرے میں ڈال دیتے ہیں۔

## دی چرچ آف کرائسٹ:

اس مشن کی خاص پہچان نشریاتی سرگرمیاں ہیں۔اس نے پاکستانی سرحد کے قریب بحیرۂ عرب کے جزیرہ ششلز میں اپنا مشنری ریڈیو اسٹیشن قائم کر رکھا ہے جس کے طاقت ریڈیو ٹرانسمیٹر کی نشریات پورے پاکستان سمیت کئی ممالک میں سنی جاتی ہیں۔اردو اور انگریزی کے علاوہ دنیا کی 24 زبانوں میں نشریات پیش کی جاتی ہیں۔روزانہ 5 گھنٹے اردو، انگریزی، پنجابی، پشتو اور فارسی پروگرام نشر ہوتے ہیں۔ پاکستان کی پانچ زبانوں میں مسیحیت کی تبلیغ کی جاتی ہے۔ تمام مقامی زبانوں میں عیسائیت کی تبلیغ اور تعلیم پر مشتمل دلچسپ ریڈیو پروگرام پیش کیے جاتے ہیں۔ ریڈیو اسٹیشن کا ایک انتظامی دفتر اسلام آباد میں ہے جس سے اپنے ریڈیو پروگرام کا خبر نامہ ہزاروں کی تعداد میں تقسیم کیا جاتا ہے۔

## دی پنٹیو کوسٹل چرچز:

یونائیٹڈ پینٹیو کوسٹل چرچ ان پاکستان بھی ایک مشنری فرقہ ہے۔اس کے ہاں صرف یسوع مسیح کے نام پر بپتسمہ دیا جاتا ہے۔

ان مشنوں کے علاوہ بھی کئی بیرونی مشن پاکستان میں سرگرم ہیں جن کی مجموعی تعداد تین درجن کے لگ بھگ ہے ان کا تعلق برطانیہ، امریکہ، سوئزرلینڈ، جرمنی، ہالینڈ، بلجیئم، اٹلی اور اسکاٹ لینڈ سے ہے۔ ان کے مرکزی دفاتر پاکستان سے باہر ہیں۔ مشنریوں نے اپنے تبلیغی مقاصد کے لیے پاکستان کو مندرجہ ذیل 5 حصوں میں تقسیم کیا ہوا ہے:

(1) کراچی ڈایوسس۔ (2) حیدرآباد ڈایوسس۔
(3) ملتان ڈایوسس۔ (4) لاہور ڈایوسس۔
(5) راولپنڈی ڈایوسس۔

چاروں صوبوں کے مختلف شہروں میں مختلف مشنوں کے ''بائبل خط وکتابت اسکول'' کام

کر رہے ہیں۔ بڑے پیمانے پر مسیحی لٹریچر تقسیم کیا جا رہا ہے۔ کراچی سے لے کر مری تک اسٹڈی سینٹر اور کتب خانے قائم کر دیے گئے ہیں۔ موسم گرما کی تعطیلات کے دوران مری میں بائبل اسکولوں کے تحت ایک سمر کیمپ لگایا جاتا ہے۔ مسلمان نوجوانوں کو دعوت دی جاتی ہے کہ وہ آ کر بائبل کے مطابق عملی زندگی دیکھیں۔ اس کیمپ میں تفریح اور دوستی کے نام پر نوجوانوں کو عیسائیت کی طرف مائل کیا جاتا ہے۔

چند سال قبل کے اعداد و شمار کے مطابق پاکستان میں مشنریوں کے 24 عام تعلیمی ادارے، 13 پیشہ ورانہ تعلیمی ادارے، 32 لڑکوں کے اور 30 لڑکیوں کے ہوسٹل، 35 کتب خانے، 18 نشریاتی و اشاعتی ادارے، 18 جرائد و رسائل، 36 سماجی ادارے، 154 انجمنیں اور 54 کلب موجود ہیں۔ ملک بھر میں 17 بڑے مشن ہسپتال کام کر رہے ہیں۔ اکثر و بیشتر مشنری اداروں کو حکومتِ پاکستان نے ٹیکس سے آزاد رکھا ہے۔

## 4.4.13- مشنریوں کی سرگرمیوں کے نتائج:

مشنریوں کی ان سرگرمیوں کے کیا نتائج پیدا ہو رہے ہیں۔ اس کا اندازہ اس بات سے لگایا جا سکتا ہے کہ قیامِ پاکستان کے وقت یہاں عیسائیوں کی تعداد 80 ہزار کے لگ بھگ تھی۔ مسیحی آبادی ہماری کل آبادی کا صرف ڈیڑھ فیصد (1.56) تھی مگر 1951ء میں پاکستان کی پہلی مردم شماری کے وقت عیسائی آبادی چار لاکھ چونتیس ہزار (434000) ہو چکی تھی۔

1981ء کی مردم شماری میں ان کی آبادی تیرہ لاکھ دس ہزار چار سو چھبیس (1310426) تھی۔ اس حساب سے مسیحی آبادی میں سالانہ اضافہ 202 فیصد ہو رہا ہے۔ جبکہ مسلم آبادی میں اضافے کی شرح 159 فیصد ہے۔

قیامِ پاکستان کے بعد ابتدائی دور میں پاک بھارت کے ملحقہ سرحدی اضلاع کے اندر مسیحی آبادی میں غیر معمولی اضافہ ہوا۔ 1971ء کے بعد بلوچستان اور سرحد پر خاص توجہ دی جا رہی ہے۔ 1971ء سے 1981ء تک صرف دس برس میں صوبہ سرحد میں مسیحی آبادی 12 ہزار سے ساڑھے 48 ہزار ہو چکی تھی۔

یہ بات خاص طور پر قابل ذکر ہے کہ جن علاقوں میں مسیحیت کی تبلیغ زیادہ زور و شور سے کی جاتی ہے وہاں ایک مدت گزرنے کے بعد سیاسی انقلابات آتے دیکھے گئے ہیں جن کا نشانہ مسلمانوں کے لیے الم ناک ہی ہوتا ہے۔ انڈونیشیا کے جزیرے تیمور کے حالات ہم دیکھ چکے ہیں کہ کس طرح تبلیغ کے ذریعے وہاں عیسائی اکثریت کو وجود بخشا گیا اور پھر مسلمانوں کا قتل عام کر کے جزیرے کو اقوام متحدہ کی نگرانی میں الگ ملک کی حیثیت دے دی گئی۔ سقوط ڈھاکا کا تجربہ تو ہمارے سامنے کی بات ہے۔

پاکستان کے سب سے بڑے شہر کراچی میں عیسائیت کی کھلے عام تبلیغ ہوتی ہے۔ ہر سال اکتوبر میں یہاں وائی ایم سی اے گراؤنڈ میں شفائیہ اجتماع منعقد کیا جاتا ہے۔ ملک بھر سے مفلس، بیمار اور مصیبت زدہ لوگوں کو یہاں جمع کیا جاتا ہے۔ ایک فارم پر کرا کے اگلے سال تک ان سے مسلسل رابطہ رکھا جاتا ہے۔ مشنری ان سے وقتاً فوقتاً ملاقاتیں کرتے ہیں اور حضرت عیسیٰ علیہ السلام کے معجزات سے آگاہ کرتے ہیں۔ متاثر ہونے والے لوگوں کو اگلے اجتماع میں آنے کی دعوت دی جاتی ہے اور کہا جاتا ہے کہ وہاں لنگڑے، اندھے اور فالج زدہ لوگ شفا پا جاتے ہیں، چاہے آپ ہمارا مذہب اختیار نہ کریں مگر معجزاتِ مسیح کو آنکھوں سے دیکھ لینے میں کیا حرج ہے۔

اس اجتماع میں کرائے کے اداکار معذور اور اپاہج بنا کر لائے جاتے ہیں۔ بڑے پادری کی دعا کے بعد یہ اداکار شفایابی کی ایکٹنگ کر کے نئے لوگوں کو حیران کر دیتے ہیں۔ اس طرح کتنے ہی لوگ عیسائیت کے جال میں پھنس جاتے ہیں۔ ایک رپورٹ کے مطابق کراچی میں سالانہ چار ہزار افراد اس طرح عیسائیت قبول کر رہے ہیں۔

### 4.4.14- مسلم اسکالر جناب احمد دیدات کا بیان:

پاکستان میں نصرانیت کی تبلیغ کا یہ زور دیکھ کر نامور مسلم مبلغ احمد دیدات مرحوم نے کہا تھا:

"پاکستان کے کئی شہروں میں عیسائیوں کی تعداد لاکھوں سے بھی زیادہ ہے اور پنجاب میں کئی دیہات کے دیہات عیسائی آبادی پر مشتمل ہیں جبکہ پاکستان ایک نظریاتی اسلامی مملکت ہے۔ مذہب سے لاپروائی کے باعث پاکستان کے مسلمان مذہب کے تحفظ اور اس کی تبلیغ و اشاعت پر

صحیح توجہ نہیں دے رہے جس سے ناقابل تلافی نقصان ہو رہا ہے۔ پاکستان میں عیسائی مسلمانوں جیسے نام رکھتے ہیں اور ان کا لباس پہنتے ہیں اور ایسا سوچی سمجھی اسکیم کے تحت کیا جا رہا ہے تاکہ اسلام کو نقصان پہنچایا جا سکے۔ عیسائی علماء کی توجہ ہی الگ ہے۔ عام عیسائی آدمی بھی اپنے مذہب کے ساتھ مخلص ہے اور اس کی توسیع کے لیے کام کرتا ہے مگر مسلمان اس کے برعکس ہیں۔"

(روزنامہ جنگ کراچی، صفحہ 5، 28 اکتوبر 1986ء)

## 4.4.15- دیگر ملکوں میں مشنری سرگرمیوں کی ایک جھلک:

ایک پاکستان ہی نہیں سوڈان، صومالیہ، برما، بنگلہ دیش، فلپائن، افغانستان، عراق، وسط ایشیائی ریاستیں اور ہر وہ ملک جہاں افلاس اور مصائب زیادہ ہیں ان کے لیے بہتر میدان ثابت ہو رہے ہیں۔

### بنگلہ دیش کا حال:

بنگلہ دیش اسلامی دنیا کا ایک پس ماندہ مگر آبادی کے لحاظ سے بہت بڑا ملک ہے۔ اس کی غربت سے فائدہ اٹھا کر یہاں 80 کے لگ بھگ مشنری ادارے پوری طرح سرگرم ہیں۔ ہندوستان میں فرنگیوں کے قدم سب سے پہلے بنگال ہی میں پڑے تھے۔ مشنری سرگرمیاں بھی تب سے جاری ہیں۔ مگر گزشتہ چالیس برس میں یہ سرگرمیاں عروج کو پہنچ چکی ہیں۔ یہاں طبی امداد، رفاہی کاموں، مشن ہسپتالوں اور مشن اسکولوں کے علاوہ چند نئے حربے بھی آزمائے جا رہے ہیں۔ جو درج ذیل ہیں:

### زراعتی اسکیم:

اس کے تحت مشنری ادارے زرعی علاقوں میں بڑی بڑی زمینیں خریدتے ہیں اور مفلوک الحال لوگوں کو نصرانی ہونے پر زمین اور گائے بیل پیش کرتے ہیں۔

### تمکینی اسکیم:

اس کے تحت بے گھر افراد کو جن میں سے بہت سے سیلاب زدگان ہوتے ہیں، مکان مہیا کیے جاتے ہیں۔ ساتھ ہی صنعت و حرفت سکھا کر برسرِ روزگار کرنے کا انتظام بھی ہوتا ہے۔

## یسوع کا اسلام اور عیسائی مسلم:

بعض علاقوں میں لوگوں کو مذہب سے ہٹانے کے لیے ''یسوع کا اسلام'' کے نام سے ایک نیا نظریہ پیش کیا جارہا ہے۔ اس حملے کا ہدف وہ لوگ ہیں جو اسلام پر قائم رہنا چاہتے ہیں مگر مشنریوں سے متاثر بھی ہوتے ہیں اور انہیں مالی تعاون کی ضرورت بھی ہوتی ہے۔

مشنری انہیں عیسائیت اور اسلام کی مشترکہ چیزوں پر مشتمل ایک نیا مذہب سکھا رہے ہیں جس کا نام ''یسوع کا اسلام'' ہے۔ یہ مذہب قبول کرنے والوں کو ''عیسائی مسلم'' کا نام دیا گیا ہے۔ انہیں کہا جاتا ہے کہ تم اسلام پر قائم رہو مگر اسے انجیل میں تلاش کرو۔ انہیں قرآن پاک کی بجائے صرف بائبل کا بنگالی ترجمہ پڑھنے کی تلقین کی جاتی ہے۔

ان کے چرچ میں مساجد کی طرح منبر ہوتے ہیں۔ ان کی عبادت ہر جمعہ کو ظہر کے بعد ہوتی ہے۔ عبادت سے پہلے اسلامی طریقے پر وضو کیا جاتا ہے۔ عبادت کے دو حصے ہوتے ہیں، پہلے حصے میں امام منبر پر بیٹھ کر بائبل پڑھتا ہے۔ دوسرا حصہ مناجات کا ہوتا ہے جس میں مسلمانوں کے طریقے پر ہاتھ اٹھائے جاتے ہیں اور اسی انداز میں ''یا اللہ'' کہہ کر دعا کی جاتی ہے مگر دعا میں حضورِ اکرم ﷺ کی جگہ یسوع کا نام لیا جاتا ہے۔

## جنگی تربیت:

ایک بہت ہی ہولناک سازش یہ ہو رہی ہے کہ چاٹگام اور پہاڑی علاقوں میں نصرانیت قبول کرنے والوں کو خفیہ طور پر جنگی تربیت دی جارہی ہے۔ یہ تربیت 'انٹرنیشنل چارج کمیٹی' کے تحت دی جارہی ہے۔ ان جنگ جوؤں کو جدید ترین اسلحہ اور ایسے حربی آلات مہیا کیے جارہے ہیں جو عالم اسلام کی کسی فوج کے پاس نہیں ہیں۔ واضح طور پر نظر آرہا ہے کہ یہاں وہی تجربہ کیا جانے والا ہے جو انڈونیشیا میں تیمور کو الگ مسیحی ریاست بنا کر کیا گیا۔ بلکہ یہ بھی ممکن ہے کہ جس طرح فلپائن کو مسلم اور مسیحی فلپائن میں تقسیم کیا گیا اسی طرح بنگلہ دیش بھی کل دو بڑے ٹکڑوں میں بانٹ دیا جائے۔

## افریقہ مشنریوں کا سب سے بڑا میدان:

سب سے زیادہ خطرناک صورتحال افریقہ میں ہے جو ''براعظم'' کہلاتا ہے مگر مشنری

اداروں نے 2000ء تک اسے کرسچن براعظم بنانے کا ہدف طے کر کے وہاں غیر معمولی حد تک کام کیا ہے، اگرچہ وہ اس پورے براعظم کو اب تک عیسائی اکثریتی خطہ نہیں بنا سکے مگر بعض ملکوں میں ان کی کامیابی حیران کن ہے۔

اس اندازہ اس بات سے لگایا جا سکتا ہے کہ مالوی جہاں پچاس سال قبل مسلمانوں کی آبادی 66 فیصد تھی اب صرف 17 فیصد رہ گئی ہے۔ مشنری اداروں نے وہاں چھے سو کنویں کھود کر مقامی لوگوں کو پانی مہیا کیا اور بیس ہسپتال بنا کر ان کو علاج معالجے کی سہولت دی اور اس طرح ان کے دل جیت لیے۔

اب وہاں دو سو گرجے اور پچاس مشنری اسکول بن چکے ہیں۔ روم کے سابق پوپ نے سات بار اس چھوٹے سے ملک کا دورہ کر کے وہاں مشنریوں کی ہمت افزائی کی جب کہ اس عرصے میں مسلم حکومتوں اور اداروں سے شاید ہی کوئی بڑی ہستی وہاں جائزہ لینے گئی ہو۔

صومالیہ میں مشنریوں کی کثرت کی وجہ سے صرف دارالحکومت موغادیشیو میں چار بڑے گرجے بن چکے ہیں حالانکہ شہر کی آبادی میں عیسائی ایک فیصد بھی نہیں۔ افریقہ کے چھوٹے چھوٹے ملکوں کی مقامی بولیوں میں مشنریوں کے ریڈیو، ٹی وی پروگرام نشر کیے جا رہے ہیں اور لوگ اپنے دین وایمان سے بے گانہ ہو رہے ہیں۔ پچاس فیصد کے لگ بھگ بچوں کو پڑھائی کے لیے صرف مشنری اسکول میسر آتے ہیں۔ زامبیا میں نصرانیوں کا تناسب پچیس فیصد بھی نہیں مگر وہاں کے حکام اپنے ملک کو عیسائی مملکت کہلوانا پسند کرتے ہیں۔

سوڈان کے دارالحکومت خرطوم میں جسے برطانوی پرچم یونین جیک کے نقشے پر بنایا گیا ہے، مقامی آبادی کی اکثریت مسلمان ہے لیکن شہر کا نقشہ دیکھ کر لگتا ہے کہ یہاں عیسائی زیادہ ہیں۔ جدید ایئر پورٹ کے بالکل قریب ایک لاکھ مربع میٹر کے قطعۂ اراضی پر کیتھولک چرچ تعمیر کیا گیا ہے۔ رہائشی علاقوں میں بکثرت گرجے تعمیر ہو رہے ہیں یہاں تک کہ پرانے علاقوں میں گرجوں کی تعداد مساجد سے زیادہ ہو چکی ہے۔

عیسائیت کا لٹریچر چھوٹے چھوٹے لڑکے جگہ جگہ بیچتے پھرتے ہیں جس میں بچوں کا ادب اور

بائبل کے مطابق انبیاء کے قصے اور کج فکری پھیلانے والی کتابیں بھی ہوتی ہیں اس طرح اسلام اور آنحضرت ﷺ کے بارے میں شکوک وشبہات پیدا کیے جاتے ہیں۔

مشنری رفاہی اور تعلیمی ادارے قائم کر کے افریقی مسلمانوں کا منہ بند کر چکے ہیں کیوں کہ وہ تو بظاہر مسلمانوں کے معاشرے میں اہم خدمات انجام دے رہے ہیں۔

## 4.4.16- امریکا اور مشنری مہمات:

امریکی مشنری ادارے اس وقت پوری دنیا میں سب سے بڑھ چڑھ کر کام کر رہے ہیں۔ ہر سال وہ صرف افریقہ میں عیسائیت کی تبلیغ پر لگ بھگ تین سے چار کھرب ڈالر خرچ کرتے ہیں۔اس رقم سے ہر سال 70 لاکھ کے لگ بھگ مشنری تبلیغ کے لیے تیار کیے جا رہے ہیں۔ 15 کروڑ کے قریب انجیل کے نسخے مفت تقسیم کیے جاتے ہیں۔اس وقت 1 ہزار 8 سو 96 ریڈیو اسٹیشن قائم کیے جا چکے ہیں جو عیسائیت کی تبلیغ کے لیے وقف ہیں۔

امریکا اس وقت افغانستان میں بھی امدادی اور رفاہی کاموں کی آڑ میں عیسائیت کی بھرپور تبلیغ کر رہا ہے اور ہزاروں مشنری اس مہم میں مصروف ہیں۔ان کے جال میں آ کر اب تک ایک لاکھ کے لگ بھگ افغان باشندے مرتد ہو چکے ہیں۔

طالبان کے دور میں مشنری سرگرمیوں پر پابندی عائد تھی اور مرتد کی شرعی سزا قتل کو قانونی طور پر اپنایا گیا تھا مگر امریکا نے افغانستان کے نئے آئین میں اقوام متحدہ کے چارٹر پر عملدرآمد کو لازمی قرار دلوایا ہے جس کی دفعہ 18 کے تحت کسی شخص کو عقیدے کی بنا پر سزا نہیں دی جا سکتی۔یہی وجہ ہے کہ مشنری پورے دھڑلے سے تبلیغ کر رہے ہیں اور کمزور ایمان والے لوگ عیسائیت قبول کر رہے ہیں۔امریکا نے کرزئی حکومت کے ذریعے ان نئے عیسائیوں کو افغانستان میں باقاعدہ اقلیتی حقوق بھی دلوا دیے ہیں۔

## 4.4.17- مشنریوں کی مہم کے تین مراحل:

مشنریوں کی مہم کے تین اہم مراحل ہیں:

① مسلمانوں کے عقائد واعمال کو کمزور کرنا۔

② مسلمانوں کو دائرہ اسلام سے خارج کرنا۔

③ مسلمانوں کو نصرانی بنانا۔

## مسلمانوں کے عقائد واعمال کو کمزور کرنا:

اس مرحلے کو پایۂ تکمیل تک پہنچانے کے لیے استعماری اور استشراقی قوتیں ایک دوسرے سے بھرپور تعاون کرتی ہیں اور ہر ممکن طریقے سے مسلمانوں کے عقائد ونظریات پر ضرب کاری لگانے کی کوشش کرتی ہیں۔ اس مقصد کے لیے فحاشی، عریانی، بے راہ روی اور دیگر غیر اخلاقی حرکات کو فروغ دیا جاتا ہے، تاکہ مسلمان لہو ولہب میں مبتلا ہو کر اپنے دین سے ہٹ جائیں اور صرف برائے نام مسلمان رہ جائیں۔ ایسے برائے نام مسلمانوں کو دین سے برگشتہ کرنا مشکل ثابت نہیں ہوتا۔

گریڈنر جو مصر کا پادری تھا، مسلم معاشرے میں مشنری اداروں کے اس ابتدائی اثر پر تبصرہ کرتے ہوئے لکھتا ہے:

''اس کے باوجود کہ براہِ راست تبدیلی مذہب کا کام سست رفتار ہے لیکن یہ کتنی بڑی بات ہے کہ ان لوگوں کی اخلاقی، سماجی اور قومی زندگی میں ''عیسائی افکار'' سرایت کر رہے ہیں۔ شادی بیاہ، کثرت ازدواج، عورتوں کی تعلیم، مذہبی آزادی اور رواداری، قومی اتحاد، باہمی اکرام وعزت کے مواقع ومسائل پر ہم مسلمانوں کی زبانوں سے عیسائی خیالات کو سنتے ہیں۔ اس طرح مسیح کی تعلیمات سے ان کے گھرانوں کو متاثر کرنے کے مواقع حاصل ہو گئے۔ یہ یقیناً بہت بڑا فائدہ ہے جس سے سخت زمین میں شگاف اور دراڑیں پڑ رہی ہیں، اب مسلمان کو مدافعت کرنی پڑ رہی ہے جبکہ قبل ازیں وہ مدافعت کو غیر ضروری خیال کرتے تھے۔''

## مسلمانوں کو دائرہ اسلام سے خارج کرنا:

اس مرحلے میں مشنری مسلمانوں میں ملحدانہ اور مادّہ پرستانہ عقائد ونظریات کو فروغ دیتے ہیں تاکہ مسلمان دائرہ اسلام سے خارج ہو جائیں۔ چاہے وہ عیسائی نہ بنیں اور خواہ ان کا نام مسلمانوں والا ہی رہے لیکن وہ اندر سے ملحد اور بے دین بن جائیں۔ اسلام سے انہیں کوئی رغبت

اور دلچسپی نہ رہے۔اس مقصد کے لیے مستشرقین کی پوری فوج مشنریوں کے شانہ بشانہ ہے۔

## مسلمانوں کو نصرانی بنانا:

دوسرے مرحلے کے بعد ایک مسلمان اور ایک عیسائی میں فرق بہت کم رہ جاتا ہے۔ایک نام نہاد مسلمان تھوڑی سی ترغیب، مادی مفاد یا بے راہ روی کے لالچ میں اپنے مذہب سے نکل کر نصرانیت میں داخل ہوجاتا ہے یوں مشنریوں کا آخری اور سب سے اہم ہدف پورا ہوجاتا ہے۔

## 4.4.18- مشنری مہم کے اسباب وذرائع (وسائل التنصیر):

ایک صدی قبل عیسائی مشنری گلی گلی گھوم پھر کر تبلیغ کرتے تھے، پادری کھلے عام اسٹیج پر مسلمانوں کو مناظرے کے لیے للکارتے تھے۔مگر اب وہ درجنوں جدید ترین طریقے استعمال کررہے ہیں جو زیادہ کامیاب اور مؤثر ہیں۔اسٹیج پر مناظروں کا سلسلہ بہت مدت ہوئی ختم کردیا گیا ہے کیوں کہ اس میں عیسائی مناظرین کا واسطہ اکثر وبیشتر علمائے کرام سے پڑتا تھا اور آمنے سامنے کی بحث میں وہ شکست کھاجاتے تھے۔لہٰذا ایک عرصے سے ان کی توجہ صرف خالی الذہن لوگوں کی طرف ہے۔وہ ان کو ایسے پلیٹ فارمز سے اپنی طرف بلارہے ہیں جہاں علماء کا عام طور پر گزر ہی نہیں ہوتا۔

ان سرگرمیوں کے لیے مشنری بہت سے وسائل اور ذرائع استعمال کرتے ہیں، جن کا ہمیں علم ہونا ضروری ہے۔ ذیل میں ایسے اہم وسائل ذکر کیے جاتے ہیں جن کو استعمال کرکے مسلمانوں کو عیسائی بنایا جاتا ہے۔ان کے اہم ترین وسائل وذرائع درج ذیل ہیں:

## اسکول، کالج اور یونیورسٹیاں:

مشنریوں کا بہت بڑا ہتھیار مشنری، اسکول، کالج اور یونی ورسٹیاں ہیں۔برطانوی استعمار کے دور میں راولپنڈی میں گارڈن کالج، لاہور میں کانونٹ سکول اور ایف سی کالج، سیالکوٹ میں مشن اسکول اور مری کالج وغیرہ سے مشنری تعلیمی اداروں کا آغاز ہوا تھا۔اب اسلامی ممالک کے ہر چھوٹے بڑے شہر میں مشن اسکول کھلے ہیں۔ذہین مسلم بچوں کی بہت بڑی تعداد کی تربیت یہی نصرانی اسکول کررہے ہیں۔مشن اسکولوں میں عیسائی طلبہ کی تعلیم مفت ہوتی ہے جب کہ مسلمان

طلبہ سے بہت بھاری فیسیں لی جاتی ہیں اس کے باوجود مشن اسکولوں میں اکثریت مسلم طلبہ ہی کی ہوتی ہے۔ دوسرا رخ یہ ہے کہ فنی تعلیم کے مشنری اداروں میں صرف مسیحی طلبہ کو لیا جاتا ہے۔

خوشحال مسلم گھرانے بڑے فخر سے اپنے بچوں کو ان اسکولوں میں داخل کراتے ہیں۔ بہترین فنی تعلیم کی وجہ سے یہی بچے آگے چل کر بڑے بڑے عہدوں پر جاتے ہیں۔ سول افسر، ڈاکٹر، انجینئر اور سائنس دان بنتے ہیں۔ مگر اس دوران ان کی بڑی تعداد دین سے بے گانہ ہو چکی ہوتی ہے۔

مسلم دنیا میں مشنری اداروں سے ذہنی ونظریاتی اہم آہنگی رکھنے والے کالج اور یونی ورسٹیاں بھی ہیں۔ مثلاً بیروت کی امریکن یونیورسٹی، قاہرہ کی امریکن یونیورسٹی۔ بہت سے مشن اسکول خود کالج اور یونی ورسٹی کے مقام تک پہنچ چکے ہیں۔ اس کے علاوہ مسلمانوں کے بے شمار تعلیمی ادارے اپنا نام چمکانے کے لیے عیسائی مشنری تعلیمی اداروں سے الحاق کر لیتے ہیں۔ وہ مشنریوں کی مرضی کا نصاب قبول کرتے ہیں جس سے طلبہ وطالبات غیر شعوری طور پر اسلام سے دور اور نصرانیت سے قریب ہوتے جاتے ہیں۔ اگرچہ ان تعلیمی اداروں میں بظاہر غیر جانبداری کا ثبوت دینے کے لیے مسلمان اساتذہ کے توسط سے اسلامیات بھی پڑھائی جاتی ہے مگر اس کے باوجود نظامِ تعلیم ایسا رکھا گیا ہے کہ طلبہ پر لادینی اثرات اسی طرح مرتب ہوتے ہیں جیسا کہ مشنری لوگ چاہتے ہیں۔

## پرنٹ میڈیا:

مشنری عیسائیوں کے سینکڑوں اخبارات وجرائد رسالے اسلامی ناموں سے شائع ہو رہے ہیں جیسے ''المجلۃ الاسلامیۃ'' اور ''مسلم ورلڈ''۔ ہر سال نت نئے بے شمار کتابچے طبع کیے جاتے ہیں۔ بچوں کے لیے الگ سے رنگین باتصویر کہانیاں شایع کی جاتی ہیں۔ یہ لٹریچر عموماً مفت تقسیم کیا جاتا ہے۔ اس میں سادہ اور سلیس زبان استعمال کی جاتی ہے، افکار کو بظاہر سادگی سے پیش کیا جاتا ہے۔ اکثر کتابیں، تصاویر اور رنگوں سے آراستہ ہوتی ہیں۔ ان کا مرکزی نکتہ یہی ہوتا ہے کہ مسیح کے بغیر نجات نہیں مل سکتی۔

بچوں کے لیے لکھی گئی کتابوں میں اس نظریے کو کہانیوں کے ذریعے ذہن نشین کرایا جاتا ہے۔ کچھ کتابیں بحث اور مناظرے سے متعلق ہوتی ہیں جن میں بتایا جاتا ہے کہ مسلمانوں سے

کس طرح گفتگو کی جائے۔ بعض کتابوں میں ابتداءً ان مسائل کا ذکر کیا جاتا ہے جو قرآنِ کریم اور انجیل میں مشترکہ طور پر آتے ہیں، اس اتفاق کے بعد اسلامی مفہوم کو مسخ کرنے اور اپنی بات ذہن میں اتارنے کا راستہ آسانی سے نکال لیا جاتا ہے۔

## الیکٹرونک میڈیا:

مشنریوں کے سینکڑوں ریڈیو، ٹی وی اسٹیشن اور ویب سائٹس ہیں جو اسلام کے نام سے کام کر رہی ہیں۔ ریڈیو پروگرام ان کا نہایت مؤثر ذریعہ ابلاغ ہیں۔ ان تمام نشریات کا انداز بڑا پرکشش ہوتا ہے۔ براہ راست مذہب تبدیل کرنے کی دعوت نہیں دی جاتی بلکہ مذہبی فرق اور امتیاز کو دبا دیا جاتا ہے اور پرکشش عنوانات کے ساتھ بات کی جاتی ہے۔ مثلاً.....

''نجات کا راستہ اختیار کیجئے۔''

''یسوع کی برکت سے روحانی وجسمانی شفا پایئے۔''

''اجتماعی دعائیہ محفل میں شرکت کیجئے۔ آپ کی مصیبت اور پریشانی دور ہوگی''

ایسے عنوانات سامعین اور ناظرین کا دل لبھا لیتے ہیں۔ ایسے پروگرام ہر آدمی کو بے حد متاثر کرتے ہیں۔

## تعلیمی وفود:

مختلف اسلامی ملکوں کے ذہین وفطین طلبہ کو یورپ اور امریکا کے تعلیمی سیمنارز میں مدعو کیا جاتا ہے جہاں وہ عیسائی مفکرین کے لیکچرز سن کر خاصے متاثر ہوتے ہیں۔ مسلم دنیا کی یونیورسٹیاں خود بھی اپنے طلبہ کے وفود کو غیر ملکی دورے کراتی ہیں جن میں طلبہ مسیحی فضلاء سے استفادہ کر کے ذہنی طور پر ان کے شاگرد بن جاتے ہیں۔

## مشن ہسپتال، طبی اور رفاہی خدمات:

مشنریوں کا کامیاب ترین ہتھیار مشن ہسپتال اور طبی خدمات ہیں۔ مشنری ادارے مختلف شہروں میں ہسپتال اور دواخانے قائم کرتے ہیں۔ دیہی علاقوں میں ڈسپنسریاں کھولتے ہیں، خواتین ہیلتھ ورکرز کا انتظام کرتے ہیں۔ ان کے گشتی شفاخانے گاؤں گاؤں متحرک نظر آتے ہیں۔

ریڈ کراس بھی ان کا بہت بڑا آلہ کار ادارہ ہے جو صلیب کا نشان لے کر جنگ زدہ اور قحط زدہ مسلم علاقوں اور تیسری دنیا کے ممالک میں سرگرم ہے۔ اس طرح مشنری مختلف شکلوں میں طبی اور رفاہی خدمات انجام دے کر لوگوں کے دلوں میں جگہ بناتے ہیں اور اس کے بعد نصرانیت کی طرف باقاعدہ دعوت دیتے ہیں۔

ایک پادری لکھتا ہے:

''جاہل (لاعلم) اور کٹر مسلمانوں تک پہنچنے کا بہترین وطاقتور ذریعہ سوائے طبی مشن کے اور کوئی نہیں ہے۔''

مشنریوں کا جریدہ ماہنامہ ''مسلم دنیا'' مشنریوں کو یاد دلاتا ہے:

''عیسائی ہسپتال میں تبلیغ نصرانیت بہتر طور پر براہِ راست ہوسکتی ہے، ہسپتال میں داخل شدہ مریض ہمارا مستقل سننے والا ہوتا ہے جس کو ہم ''مناسب ہدایات'' دے سکتے ہیں۔ یہ ذمہ داری طبی مشنری پر عائد ہوتی ہے کہ وہ ہمارے ہسپتالوں کے لیے مسلمانوں کی کثیر آبادی کے علاقوں میں سے مریضوں کو ''کھینچے'' اس طرح ہم لوگوں سے بہت قریبی رابطہ قائم کرسکتے ہیں۔

نیز تاکید کی گئی ہے: ''طبی مشنری کو ایک لمحہ کے لیے بھی یہ فراموش نہیں کرنا چاہیے کہ وہ پہلے ایک مسیحی مبلغ ہے بعد میں ڈاکٹر، اس کا فرض ہے کہ وہ ''سچائی'' کو پیش کرے۔''

پادری بیسٹپسٹ کہتا ہے:

''ہماری ہمیشہ یہ خواہش رہی ہے کہ طبی کام کو تبلیغی ایجنسی کی حیثیت سے استعمال کیا جائے، ہسپتالوں میں باقاعدہ ''سروسز'' کی جائیں۔ مسیحی لٹریچر تعلیم ہو۔ مریض پر ذاتی محنت ہو اور اچھے ہونے پر اس کے گھروں تک جایا جائے۔ طبی کام کے ذریعہ ہی بلاشبہ لوگوں کے دلوں کو جیتا جاسکتا ہے، ہر طبی مشنری کا قطعی مقصد (حضرت) مسیح کی عظمت کا اظہار اور اس کی بادشاہت کی ترقی ہونا چاہیے، یہ کام بہت سے بند دروازوں کو کھولتا ہے، حتی کہ عورتوں تک رسائی ہوسکتی ہے۔'' (مسلم ورلڈ: ص 105)

ان ہسپتالوں میں کمرہ انتظار میں میزوں پر عیسائیت کی تبلیغ پر مشتمل مختصر کتابچے رکھ دیے جاتے ہیں جو انتہائی موثر اسلوب میں تحریر ہوتے ہیں۔ آنے جانے یا انتظار کرنے والے لوگ

وقت گزاری کے لیے انہیں اٹھا کر پڑھتے ہیں تو متاثر ہوئے بغیر نہیں رہتے۔

بعض اوقات مریض کو دھوکہ دینے کے لیے قرآنی آیات یا بسم اللہ پڑھ کر غیر مؤثر بلکہ مضر دوا دی جاتی ہے۔ جب مریض کی حالت سنبھل نہیں پاتی تو پھر اسے یسوع مسیح کا نام لے کر اصل دوا دی جاتی ہے۔ یوں مریض شک میں پڑ جاتا ہے کہ قرآن کا اثر نہیں ہوا مگر مسیح کے نام کا اثر ہوا ہے۔ اس طرح بعض مریض ہسپتال ہی میں اور بعض بعد میں کسی وقت مرتد ہو جاتے ہیں۔

## کانفرنسیں، کلب اور جم خانے:

مشنری ادارے مختلف خوبصورت عنوانات کے تحت کانفرنسیں منعقد کرتے ہیں، مثلاً:

''آؤ امن قائم کریں۔''

''سب کی بھلائی چاہیں۔''

''یہ دنیا ہماری ہے۔''

ان کانفرنسوں کا ماحول اور ان میں پیش کیے جانے والا مواد مسلمانوں کے مذہبی تعصب کو گہری نیند سلانے کا کام دیتا ہے۔ کانفرنسوں کے آخر میں مسیحی لٹریچر مفت تقسیم کیا جاتا ہے جو ایک بھٹکے ہوئے ذہن کو مزید گمراہ کرنے کے لیے کافی ہوتا ہے۔

اسی طرح مشنریوں کے مختلف کلب اور جم خانے ہیں جہاں بظاہر نوجوان نسل تفریح اور کھیل کود کے نام پر جمع ہوتی ہے مگر وہاں کا ماحول مذہبی آزادی کے ساتھ ساتھ مذہبی بے گانگی کو بڑھاتا ہے۔ ان جم خانوں اور کلبوں کے ارکان کو لٹریچر بھی تقسیم کیا جاتا ہے اور ان کو گاہے گاہے مذکورہ قسم کی کانفرنسوں میں بھی شریک کیا جاتا ہے۔

## ثقافتی مراکز:

مشنری اداروں نے ماڈرن طبقے کی دل بستگی کے لیے مختلف ثقافتی مراکز قائم کر رکھے ہیں، جہاں تصاویر، خطاطی، قدیم سکوں اور دوسرے فنون کی نمائش کی جاتی ہے۔ ان مراکز کا ماحول بھی مغربیت زدہ افراد کو نصرانیت کی طرف مائل کرتا ہے۔ ثقافت کی آڑ میں در پردہ مسیحی مذہب کی تبلیغ جاری رہتی ہے۔

## لائبریریاں:

کتب خانے اور لائبریریاں قائم کی گئی ہیں جن میں عوام کو مطالعے کا موقع دیا جاتا ہے۔اس کے علاوہ مشنریوں کو مطالعے اور مباحثے اور مناظرے کی تیاری کے لیے کتب فراہم کی جاتی ہیں۔

## پریس:

مشنریوں کے اپنے پریس ہیں۔بائبل کی اشاعت کے لیے اعلیٰ معیار کا خاص کاغذ استعمال کیا جاتا ہے۔بائبل کے مکمل اور جزوی نسخے سینکڑوں زبانوں اور مقامی بولیوں میں لاکھوں کی تعداد میں طبع ہوتے ہیں۔دوسرا مذہبی لٹریچر بھی چھاپا جاتا ہے۔پاکستان میں مشنریوں کے کئی بڑے اور قدیم اشاعتی ادارے ہیں مثلاً.....''شاداب مرکز لاہور'' اور ''بائبل سوسائٹی لاہور''

## خواتین (Womens):

مشنری اپنے مقاصد کے لیے حسین وجمیل، خوبرو اور باصلاحیت خواتین کو استعمال کرتے ہیں جو باقاعدہ تربیت یافتہ اور مذہبی جذبے سے لیس ہوتی ہیں۔مشنری عورتیں مختلف طریقوں سے مسلمانوں کو قریب لاتی ہیں۔خصوصاً احساسِ جرم کے شکار نوجوانوں سے میل جول بڑھا کر انہیں نصرانیت کی جانب راغب کرتی ہیں۔ان کا اسٹائل براہِ راست دعوت کا نہیں ہوتا بلکہ وہ ترغیب کے ذریعے اپنا کام کرتی ہیں۔مشنری خواتین کا ایک اہم ہدف مقامی خواتین ہوتی ہیں کیوں کہ ایک عورت دوسری عورت کی باتوں سے بہت جلد متاثر ہوتی ہے۔

## طلبہ (Students):

مشنری اسکولوں اور کالجوں میں پڑھنے والے مسلمان طلبہ بھی عیسائیت کو آگے پھیلانے میں بڑے معاون ثابت ہوتے ہیں۔مشنری ادارے اعلیٰ تعلیم دلوا کر، ذہن سازی کر کے انہیں اعلیٰ عہدوں پر تعینات کرواتے ہیں اور پھر ان کے ذریعے اپنے مقاصد کی تکمیل کرتے ہیں۔اسی طرح طلبہ میں معروف اسکاؤٹ تحریک بھی ان کا مضبوط جال ہے۔اسکاؤٹ کا تین انگلیوں سے سیلوٹ کرنا درحقیقت عقیدۂ تثلیث کی طرف اشارہ ہے۔اگرچہ بظاہر اسے کچھ اور عنوان دیا جاتا ہے۔

تعلیمی دور میں یا تفریحی کیمپوں کے اختلاط کے دوران عیسائی لڑکیاں مسلمان طلبہ کو اسلامی

اقدار و مسلم معاشرے کی پابندیوں سے متنفر کر کے اپنے جال میں پھنسا لیتی ہیں اور رفتہ رفتہ نصرانیت کی طرف لے جاتی ہیں۔

## شفا کے لیے دعائیہ مجالس:

مختلف مقامات پر (عموماً چرچ میں) دعائیہ مجالس منعقد کی جاتی ہیں جن میں اخبار کے ذریعے شرکت کی عام دعوت دی جاتی ہے۔ مایوس اور لاعلاج مسلمانوں کی بڑی تعداد اس میں شریک ہوتی ہے۔ پادری یسوع سے حاضرین کے لیے شفا کی دعا کرتا ہے۔ دعا کے بعد اسٹریچر اور وہیل چیر پر آنے والے کئی افراد بھلے چنگے واپس جاتے دکھائی دیتے ہیں۔ حالانکہ یہ صرف ایک ڈرامہ ہوتا ہے مگر متعدد مسلمان یہ منظر دیکھ کر عیسائیت کے برحق ہونے کے قائل ہو جاتے ہیں۔

## بائبل خط و کتابت کورس:

اخباری اشتہارات کے ذریعے نوجوانوں کو گھر بیٹھے مذہبی معلومات میں مفت اضافے اور خوبصورت اسناد کے حصول کا شوق دلا کر بائبل خط و کتابت کورس کرایا جاتا ہے۔ بے شمار نوجوان یہ کورس کر کے گمراہ ہوئے ہیں۔

## این جی اوز:

این جی اوز یعنی غیر سرکاری تنظیمیں، مشنریوں کا خاص جال ہیں۔ ایسی بہت سی تنظیمیں عیسائی خود چلا رہے ہیں مگر ایک بڑی تعداد ایسی تنظیموں کی بھی ہے جن کے متولی مغرب زدہ مسلمان ہیں جو زیادہ سے زیادہ فنڈ اکٹھا کرنے کے لیے مشنری اداروں سے تعلقات مراسم قائم کرتے ہیں۔ مشنری ادارے اپنی حکومتوں کے ذریعے انہیں امداد فراہم کرتے ہیں اور اس کے بدلے ایسی این جی اوز کو اپنے مقاصد کے لیے استعمال کرتے ہیں۔ ان کے ذریعے اپنا لٹریچر تقسیم کرواتے ہیں۔ کسی علاقے میں تبلیغی پروگرام یا شفائیہ دعا کی محفل منعقد کرنی ہو تو مقامی این جی اوز اس کے لیے سازگار ماحول بناتی اور راہ ہموار کرتی ہیں۔

## متفرق ذرائع:

بدلتے ہوئے حالات کے تحت مشنری انوکھے اور نت نئے ذرائع استعمال کرتے رہتے ہیں۔

کبھی پھولوں کی نمائش ہوتی ہے۔ کبھی فیملی شو کا انعقاد ہوتا ہے اور کبھی تجریدی آرٹ کا مقابلہ رکھا جاتا ہے۔ ایسے پروگراموں کے بعد لٹریچر تقسیم کیا جاتا ہے۔ آج کل آڈیو/ وڈیو کیسٹ یا سی ڈی دینے کا سلسلہ عام ہے، یہ دلچسپ اور جاذبِ توجہ آڈیو، وڈیو مواد مذہبی مواعظ، عیسائیت قبول کرنے والے افراد کے اعترافی بیانات اور پیغمبروں کے حالات پر بنائی گئی فلموں پر مشتمل ہوتا ہے۔ کئی ائیرلائن کمپنیاں بھی یہ سی ڈیاں تحفے میں دیتی ہیں۔ پنجاب میں ایک مفت ریلوے سروس بھی چلائی جارہی ہے جس کے مسافروں کو مذہبی فلمیں دکھائی اور دی جاتی ہیں۔ خالی الذہن ہو کر یہ مواد پڑھنے، دیکھنے اور سننے سے بہت سے لوگ انجانے میں اسلامی عقائد سے ہاتھ دھو بیٹھتے ہیں۔

## 4.4.19- کرسچن کونسل آف پاکستان کا منشور:

پاکستان میں باقاعدہ کرسچن کونسل آف پاکستان ہے، اس نے کچھ عرصہ قبل اپنا منشور جاری کیا تھا۔ جس میں انہوں نے 5 نکاتی فارمولا پیش کیا تھا:

① تعلیمی اور تربیتی اداروں کو مزید پھیلایا جائے گا اور تعلیم بالغان کو بھی۔

② طبی خدمات میں اضافہ کیا جائے گا، بڑے شہروں میں مزید معیاری ہسپتال قائم کیے جائیں گے اور چھوٹے شہروں میں ڈسپنسریاں بنائی جائیں گی۔

③ بائبل کورسز کو عام کیا جائے گا۔ نوجوانوں کو خوبصورت اسناد کا شائق بنایا جائے گا۔

④ مقامی رفاہی اداروں یعنی این جی اوز کے تعاون سے کام کیا جائے گا، لوگوں کی ضروریات کو پورا کریں گے۔

⑤ مسلمانوں میں اسلامی انداز سے لٹریچر پھیلایا جائے گا۔

یعنی کتاب کا نام اسلامی ہوگا، مگر اندر عیسائی مذہب کا مواد ہوگا۔ مثلاً عنوان ''اللہ کا کلام'' ہوگا اور اندر بائبل ہوگی۔

## 4.4.20- مشنری کانفرنسیں:

مشنری ادارے ہر سال مل کر ایک عالمگیر کانفرنس منعقد کرتے ہیں جس میں تبلیغِ مسیحیت کی رفتار، اس میں درپیش مسائل، مختلف خطوں میں کامیابی کے امکانات اور نئے حربے آزمانے پر

غور کیا جاتا ہے۔ اس سلسلے کی ایک اہم کانفرنس کا خلاصہ پیش کیا جا رہا ہے تا کہ اندازہ ہو سکے کہ ان کانفرنسوں میں کیا ہوتا ہے۔ مشنری جریدے ''مسلم ورلڈ'' کا ایڈیٹر کانفرنس کے نتائج کا اظہار ان الفاظ میں کرتا ہے:

(1) اس کانفرنس سے مسلم ممالک میں مصروفِ عمل مشنریوں کے مسائل کا تفصیلاً علم حاصل ہوا۔ چرچ کو اس میدان کی وسعت اور اس کی بارآوری کی اتنی امید پیدا ہوئی کہ اس سے قبل کبھی بھی ایسا نہیں ہوا تھا۔

(2) مختلف مشنری کاموں میں یکسانیت کے طریقے ڈھونڈے گئے۔ بہت سی غلطیاں جو مسلمانوں میں کام کرنے کے تعلق سے لاعلمی اور ناتجربہ کاری پر مبنی تھیں واضح ہوئیں، ان کا ازالہ کیا گیا اور زیادہ ہمت و جرأت سے کام کرنے کے مواقع سامنے لائے گئے۔

(3) مسلمانوں کے لیے لٹریچر کی طباعت و اشاعت کے بہتر انتظامات کو تیز تر کرنے پر توجہ دی گئی اور عملاً اس سمت میں ''عالمگیر'' طور پر جدوجہد کا آغاز کیا گیا۔

(4) تمام عیسائی کلیساؤں کو بیدار کیا گیا کہ وہ اپنے فرائض کو ''اسلامی دنیا'' میں پہچانیں۔ وہ دیکھ لیں کہ تمام دنیا کو نصرانیت کے لیے فتح کرنے میں صرف اسلام ہی اکیلا رقیب و دشمن ہے۔ اس لیے تمام مشنری سوسائٹیاں معمول کے مطابق کام انجام دینے کے علاوہ مسلمانوں میں تبلیغ نصرانیت کو اوّلیت و فوقیت دیں۔ مرد ہو خواہ عورت، جو بھی اس کام کے لیے موزوں ہیں فوری طور پر بلا کسی تاخیر کے مسلمانوں کی سرزمین پر پہنچ جائیں اور اپنی شاطرانہ کوششوں سے مسلمانوں کو یسوع مسیح کا فرمانبردار بنائیں جو تمام دنیا کا نجات دہندہ ہے۔

ایڈیٹر اظہارِ اطمینان کے طور پر لکھتا ہے: ''اب مسلمان نسلیں ان خیالات کے ساتھ وجود میں آنے لگی ہیں کہ اسلام صرف اللہ اور بندے کے تعلق کا نام ہے۔ اس کو انسان کی عملی زندگی اور عملی معاشرہ کے معاملات سے کوئی تعلق نہیں۔''

### 4.4.21- مسلمانوں کی تین کمزوریاں: (Three Weak Points)

مشنری ادارے اپنے مقاصد کی تکمیل کے لیے مسلمانوں کی کمزوریوں پر نظر رکھتے ہیں۔ مسلم

دنیا کی تین بڑی کمزوریاں ہیں جن سے فائدہ اٹھا کر مشنری اپنے مقاصد میں کامیاب ہو رہے ہیں:

① غربت:(Poverty)

② جہالت:(Illiteracy)

③ امراض:(Diseases)

## غربت:(Poverty)

ایشیا اور افریقہ میں غربت عام ہے اور اکثر مسلم ممالک انہی براعظموں میں ہیں۔ مشنری ادارے ان غریب ملکوں کو اپنا ہدف بناتے ہیں۔ وہ مختلف رفاہی اداروں کی شکل میں غریب بستیوں اور دیہاتوں میں کام کرتے ہیں اور امداد کے ذریعے مقامی لوگوں کا اعتماد حاصل کر کے انہیں نصرانیت کی تبلیغ کرتے ہیں۔ انہیں کرسچن بن جانے پر رقم، روزگار اور بعض اوقات بیرونِ ملک ملازمت کا لالچ بھی دیا جاتا ہے۔ ایسے غریب لوگ جو دو وقت کی روٹی کے محتاج ہیں، پیسے اور روزی کے بدلے کچھ بھی کرنے کو تیار ہو جاتے ہیں۔ اس طرح مشنری ادارے ان کی غربت کا بھرپور فائدہ اٹھاتے ہیں۔

## جہالت:(Illiteracy)

مسلم ممالک میں غربت کے ساتھ ساتھ دوسری کمزوری جہالت ہے۔ ہماری نسل نو عصری تعلیم سے کسی حد تک واقف ہے مگر دین کے بنیادی اصول بھی نہیں جانتی۔ اس جہالت سے فائدہ اٹھا کر مشنری انہیں اسلام سے دور کرنے میں کامیاب ہو جاتے ہیں۔ اس مقصد کے لیے وہ کبھی یہ غلط فہمی پھیلاتے ہیں کہ اسلام اور نصرانیت الگ نہیں بلکہ ایک ہی دین ہے۔ وہ لوگوں کو سمجھاتے ہیں کہ یسوع مسیح کو نبی ماننے اور تورات و انجیل پر ایمان لانے کا حکم خود قرآن پاک نے دیا ہے۔ یہی تورات و انجیل ہم تمہیں بائبل کی شکل میں پیش کر رہے ہیں، اس پر ایمان لا کر تم قرآن پاک کے حکم کی تعمیل کرو گے۔

مشنری کارکن احساس جرم اور ضمیر کے بوجھ تلے دبے نوجوانوں کی مذہبی جہالت سے فائدہ اٹھا کر انہیں ورغلاتے ہیں کہ تمہارے گناہ کا کفارہ یسوع مسیح کی قربانی ہی سے ہو سکتا ہے مگر شرط یہ

ہے کہ عقیدۂ تثلیث پر ایمان لاؤ۔ جو شخص ان پر اعتماد کرنے لگتا ہے، اسے اسلام کے بارے میں ایسا گمراہ کن مواد دیا جاتا ہے جس کی وجہ سے وہ اسلام کو ایک ادھورا، عارضی، مایوس کن اور غیر منصفانہ مذہب سمجھ کر اس سے متنفر ہو جاتا ہے اور بڑی تیزی سے نصرانیت کے جال میں جا پھنستا ہے۔

## امراض: (Diseases)

مسلمانوں کی تیسری بڑی کمزوری امراض اور قدرتی آفات ہیں۔ اکثر غربت زدہ مسلم ممالک میں حفظان صحت کے اصول نظر انداز کر دیے گئے ہیں یا اس کے مناسب انتظامات نہیں ہیں۔ عوام کی بڑی تعداد کو صاف پانی تک میسر نہیں۔ ایسے میں امراض کی شرح لامحالہ بڑھ جاتی ہے۔ اس کے علاوہ جب کسی ملک پر وبائی امراض حملہ آور ہوتے ہیں یا کوئی اور قدرتی آفت وہاں تباہی مچاتی ہے تو مقامی حکومت غیر ملکی حکومتوں اور غیر مسلم رفاہی اداروں کی طرف دیکھنے پر مجبور ہو جاتی ہے۔ ایسے میں مشنری ادارے رفاہی کاموں کی آڑ میں پوری طرح سرگرم ہو جاتے ہیں۔

ایسے لوگ جو مہلک امراض میں مبتلا ہو کر زندگی سے مایوس ہو چکے ہوتے ہیں جب مشنری اداروں کے تعاون سے علاج کی سہولت پاتے ہیں تو وہ انہی مشنری ڈاکٹروں اور نرسوں کو مسیحا اور مشن ہسپتالوں کو ہدایت کا مرکز سمجھنے لگتے ہیں۔ اس محبت اور اعتماد کا فائدہ اٹھا کر مشنری انہیں نصرانیت کے دام میں لے آتے ہیں۔

## 4.4.22- مشنریوں کے اہم اہداف:

مشنریوں کا بنیادی ہدف لوگوں کو نصرانی بنانا ہے مگر چوں کہ مشنری ادارے استشراق و استعمار اور اب عالمگیریت (Globalization) کی تحریک کے ساتھ ہم آہنگ ہیں، اس لیے ان کی ابلاغی کوششوں میں درج ذیل موضوعات پر بہت زور دیا جاتا ہے:

① اسلامی عقائد کو مٹانا اور عقیدۂ تثلیث کو ثابت کرنا۔

② دین اسلام سے اعتماد ختم کرنا۔

③ قرآنِ مجید میں تحریف اور اس کے معانی میں تبدیلی لا کر مسلمانوں کو قرآنِ مجید سے دور کرنا۔

④ رسالت محمدیہ میں تشکیک پیدا کرنا۔

(5) شریعت اور سیاست یا اسلام اور حکومت میں لاتعلقی ثابت کرنا۔

(6) معاشرے سے اسلامی اخلاق واقدار کا خاتمہ کرنا۔

(7) مغربی معاشرے تک اسلام کی رسائی کو روکنا۔

(8) عالم اسلام پر غلبے کے لیے استشراق واستعمار سے تعاون کرنا۔

(9) مسلمانوں کی اقتصادیات کو کمزور کرنا اور اپنے استعمال میں لانا۔

(10) مسلمانوں کی دینی، دنیاوی، مادی، روحانی اور معاشی صلاحیتیں اپنے حق میں استعمال کرنا۔

## 4.4.23- مشنریوں کے لیے ہدایات اور تربیتی نصاب:

مشنری ادارے اپنے مبلغین اور کارکنوں کی تربیت پر زرِ کثیر صرف کرتے ہیں اور بڑی تحقیق ومنصوبہ بندی سے ان کا تربیتی نصاب تیار کیا جاتا ہے۔ ان کی دور اندیشی کا اندازہ اس بات سے لگایا جاسکتا ہے کہ ان کے تربیتی اسکولوں کے نصاب کے پہلے ہی سال میں مسلم فرقوں اور ان کے باہمی اختلافات کا تفصیل سے مطالعہ کرادیا جاتا ہے اور اسلامی تاریخ بھی مکمل پڑھادی جاتی ہے۔ جب کہ ہمارے ہاں آٹھ سالہ درس نظامی میں بھی ان چیزوں کو اب تک کوئی خاص اہمیت نہیں دی گئی۔

اب نصرانیت کی تبلیغ کے ذرائع واسالیب سے متعلقہ ایک مقالے کے چند ابواب کے عنوانات ملاحظہ ہوں:

(1) غیر تعلیم یافتہ مسلمانوں سے کس طرح رابطہ قائم کیا جاسکتا ہے اور انہیں کس طرح تعلیم دی جاسکتی ہے۔

(2) غیر تعلیم یافتہ مسلمانوں میں کس طرح ''کام'' کیا جائے۔

(3) تعلیم یافتہ مسلمانوں میں کس طرح کام کی جائے۔

(4) مسلمانوں کے لیے عیسائی لٹریچر۔

(5) طبی مشنز۔

(6) خواتین میں کام۔

⑦ مسلمان نسلوں کو کس طرح نصرانیت کے لیے چنا جائے۔

⑧ عیسائی عقائد کس طرح پیش کیے جائیں۔

⑨ مسلمانوں میں کام کرنے کے لیے کارکنوں کی تیاری۔

⑩ طلبہ تحریک اور اسلام۔

مقالے کے عنوانات ہی بتا رہے ہیں کہ مسلمانوں کو گمراہ کرنے اور اپنے عقائد پھیلانے کے لیے سرسری کام نہیں ہو رہا بلکہ ہر پہلو پر غور کر کے منصوبہ بندیاں کی جا رہی ہیں۔

## 4.4.24- مغربی زبانوں کی اشاعت اور مشنری اہداف:

مسلم دنیا میں استعمار کے قائم کردہ وہ عصری ادارے بھی نصرانیت کی تبلیغ کے لیے راہ ہموار کرتے آ رہے ہیں جہاں خالص عقل اور مادہ پرستی سکھائی جا رہی ہے۔ اسی طرح مغربی زبانوں کی اشاعت بھی اس میں معاون ثابت ہو رہی ہے۔ مشنری رسالے ''مسلم ورلڈ'' کا فرنچ ایڈیٹر ''لوشاطلیہ'' اپنے اداریے میں لکھتا ہے:

''مشرق میں اپنے کام کے لیے فرانس کی عقلی تربیت کے قواعد کو بنیاد بنانا چاہیے، یہ مقصد صرف فرانسیسی یونیورسٹیوں میں دی جانے والی تعلیم کے ذریعہ حل ہو سکتا ہے، کیونکہ اس تعلیم میں قوتِ ارادی پر مبنی علمی اور عقلی وسائل موجود ہیں، یہی چیز اسلام میں فرنچ یونیورسٹی کی تعلیمات کو سرایت کرا سکے گی۔''

مشنری کالجوں کے متعلق وہ لکھتا ہے: ''بیروت کا یسوعی اسکول اور مشنری جماعتیں جن کے اوپر زر کثیر صرف ہوتا ہے اور جنہیں بڑی حکمت وتدبیر سے کام کرنا ہوتا ہے اسلامی دنیا میں مغربی افکار کی اشاعت کا عظیم کام انجام دے رہی ہیں۔''

مغربی زبانوں کے اثرات کے بارے میں وہ تحریر کرتا ہے:

''مغربی زبانوں کی اشاعت کی ذریعہ مغربی افکار سرایت کرتے ہیں۔ اگر انگریزی، جرمنی، ڈچ اور فرنچ زبانوں کی ترویج کی جائے تو اسلام کا سابقہ مغربی لٹریچر سے پڑے گا اور اس لٹریچر کو ایک ''مادی اسلام'' پیش کرنے کا موقع مل جائے گا۔ اس طرح مسنری کارکن اسلامی فکر کو مسمار

کرنے کے مقصد میں کامیاب ہو جائیں گے۔''

ایڈیٹر مشنریوں کی سرگرمیوں کے بارے میں اپنے تاثرات کا یوں اظہار کرتا ہے:

''مشنریوں کے اعمال کے نتائج میں خواہ کتنا ہی اختلاف کیوں نہ ہو مگر حقیقت یہ ہے کہ اسلامی اعتقادات کا خاتمہ انہی کی کوششوں کا نتیجہ ہے جو نصرانیت کے لیے کی گئی ہیں۔ اسلامی دنیا کی سیاسی تقسیم نے بھی مغربی تمدن کے لیے راہیں ہموار کر دی ہیں کیونکہ جب اسلام سیاسی حیثیت سے کمزور ہو جائے گا تو کچھ وقت گزرنے کے بعد ہر ملک مغربی تہذیب کے جال میں پھنسا ہوا ہوگا۔''

## 4.4.25- مشنری اداروں میں دی جانے والی تربیت کی ایک جھلک:

اب مشنریوں کے تربیتی پروگراموں میں ذہن نشین کرائی جانے والی چند بنیادی اور اصولی ہدایات ملاحظہ ہوں:

① نصرانیت کی تبلیغ کے لیے ایسی پرجوش کتابیں اور مضامین لکھے جائیں جو انسانی ''قلب'' کو کشش کریں جن میں ''گناہ'' اور ''نجات'' کی اہمیت ثابت ہو۔

② اسلام سے اچھی چیزیں لی جائیں اور بتایا جائے کہ ان کی تکمیل کس طرح انجیل میں ہوئی۔

③ قرآن کے جو اچھے حوالے ہیں وہ لے کر ثابت کیا جائے کہ یہ باتیں انجیل کے ذریعہ سے پوری ہوتی ہیں۔

④ نصرانی ''دین'' اور ''ایمان'' کا خلاصہ تیار کیا جائے۔

⑤ گناہ کی حقیقت اور ''کفارہ'' کی ضرورت پر زور دیا جائے۔

⑥ یہ مشہور کیا جائے کہ ہمیں ''نجات'' کی ضرورت ہے جو صرف انجیل ہی مہیا کرتی ہے۔ انجیل کے ذریعہ ہی گناہ کو فتح کیا جا سکتا ہے، اس کے ذریعہ ہی سے ذہنی سکون، خدا کی رضامندی حاصل کی جا سکتی ہے۔

⑦ لوگوں کو سوچنے پر مجبور کیا جائے کہ صحیح مذہب کی بنیاد ''عبدیت'' ہو سکتی ہے یا ''فرزندیت'' !! یعنی کسی بادشاہ کا وہ پیغام زیادہ معتبر ہوگا جسے غلام اور بندہ لے کر آئے، یا اس کا وہ پیغام زیادہ سچا ہوگا جسے اس کا بیٹا لے کر آیا ہو۔

⑧ بتایا جائے کہ انسان ''معاشرتی ہستی'' (سوشل) ہے تو کیا اس کا خالق سوشل نہیں ہوسکتا؟ اسی لیے ایک سوشل خدا تین خداؤں میں ظاہر ہوا۔

⑨ پرچار کیا جائے کہ ایک ''زندہ بچانے والا'' بہتر ہے نہ کہ ایک ''مردہ پیغمبر'' (نعوذ باللہ)

⑩ گناہ اور اس کے علاج پر تقریریں کی جائیں۔

⑪ توبہ اور ایمان پر وعظ کہے جائیں۔

⑫ قرآن کی سورۂ فاتحہ اور بائبل کی ''لارڈز پریئر'' کا تقابل کر کے سورۃ فاتحہ کو کم تر ثابت کیا جائے۔

⑬ جاہل (غیر تعلیم یافتہ) مسلمانوں میں گھسنے کا بہتر ذریعہ ''اسکول'' ہیں۔ پہلے ان کو تعلیم دی جائے۔ اسکولوں کے ذریعہ مشنری کارکن مسلمانوں کے گھروں میں داخل ہوسکتے ہیں اور یسوع مسیح کا پیغام پہنچا سکتے ہیں۔

⑭ مسلمانوں میں اپنی بات کی ابتدا طے شدہ سچائیوں سے کریں، خدا کے بیٹے اور تثلیث کے نظریے کے ابتدا میں اظہار سے مخالفت پیدا ہوجاتی ہے، اس لیے ان کو اپنی بات سننے پر آمادہ کرنے کے لیے گفتگو کا آغاز یسوع مسیح کی معجزانہ پیدائش، نبوت اور مسیحائی سے کریں۔ یہ سچائیاں اسلام میں بھی مانی جاتی ہیں۔ اس کے بعد ''آہستہ آہستہ'' غیر محسوس طور پر ''ابنِ خدا'' یا ''خدا کا بیٹا'' کی طرف ان کے خیالات کو موڑ دیں۔

⑮ عیسیٰ کے ساتھ مسلمانوں کی طرح ''حضرت'' کا لفظ استعمال کیا کریں اور قرآن کو ''قرآن شریف'' کہا کریں، لوگوں کے سامنے قرآن کا ادب کیا کریں، اسے ایسی جگہ نہ رکھیں جو ناپاک ہو اور جس سے مسلمان برا مان جائیں۔

⑯ ہر مشنری کو چاہیے کہ قرآن شریف کی تیس سے پچاس تک آیتیں بالکل صحیح تلفظ کے ساتھ مع تفسیر کے زبانی یاد کرے اور موقع محل کے لحاظ سے مسلمان حاضرین کے سامنے پڑھا کرے۔

⑰ مسیحی کارکنوں کو مسلمانوں کے اختلافات کے اہم نکات پر مہارت ہونی چاہیے، نیز اسلامی

عقیدے کی کمزوری کی جڑوں سے خوب واقف ہونا چاہیے۔ ان کے علاوہ ان ذہنی دشواریوں اور اعتراضوں کا جواب بھی جاننا چاہیے جن کی وجہ سے مسلمان نصرانیت قبول کرنے سے ہچکچاتے ہیں۔

(18) مسلمانوں سے دوستانہ مراسم قائم کیے جائیں۔ یہ کام نہایت عظیم ہوگا کہ مشنری کارکن، مسلمانوں کے گھروں پر جایا کریں اور ان سے ''ملنساری کے ساتھ میل جول'' قائم کریں۔ مقصد یہ ہو کہ اس طرح ان سے نصرانیت پر گفتگو کا راستہ کھلے۔ یہ کام خاتون مشنری انجام دے تو زیادہ بہتر ہوگا۔

## 4.4.26- مشنریوں کے لیے اہم نصیحتیں:

❁ ایک مضمون میں مشنریوں کو چند نہایت اہم نصیحتیں کی گئی ہیں جو درج ذیل ہیں:

(1) تبلیغ کی تیاری نہایت فراست وذہانت کے ساتھ کی جانے چاہیے۔

(2) مشنری کارکن ذاتی زندگی میں روحانیت کی ضرورت محسوس کریں۔

(3) یسوع مسیح کا قرب حاصل کرنے کے لیے مسلسل محنت وجدوجہد کریں۔

(4) مختلف طبقوں کے لیے مختلف قسم کا لٹریچر الگ الگ انداز سے تیار کیا جائے۔

(5) اختلافی لٹریچر کو بہت احتیاط سے تیار کیا جائے۔

(6) پرانے لٹریچر کو از سر نو ترتیب دے کر جدید زندگی کی ضرورت کے مطابق بنانا چاہیے۔

(7) تقابل ادیان میں مہارت حاصل کی جائے۔ اس مضمون کے مطالعہ سے ہمیں دوسرے مذاہب کو مختلف طریقوں سے دیکھنے کا موقع ملے گا۔ اس طرح ہم ان کو بتلا سکیں گے وہ ''جاہلانہ عبادت'' کرتے ہیں۔ مسلمانوں کے مذہبی اختلافات جاننے کے فوائد بے شمار ہیں۔ یہ علم ان کے فرقوں کی کتب پڑھ کر حاصل ہوگا۔

(8) لوگوں سے صرف اسی نکتے پر بحث کریں جو صاف ہو اور ہمارے خلاف نہ جاتا ہو۔

(9) لٹریچر کے ذریعہ عیسائی عقائد اس طرح پیش کریں کہ اس پر مسلمان کو اپنی بھرپور توجہ دینی پڑے۔

## 4.4.27- مشنریوں کا سب سے بڑا ہدف:

## دنیا تک دعوت اسلام کی رسائی کو روکنا:

یہاں ایک بات ذہن نشین کر لینی چاہیے۔ گزشتہ دو صدیوں کی جدوجہد سے مشنری یہ سمجھ چکے ہیں کہ وہ مسلمانوں کو مجموعی طور پر نصرانی نہیں بنا سکتے۔ اس لیے اس وقت ان کی ساری سرگردانی کا سب سے بڑا اور اصل ہدف اس وقت یہ ہے کہ دنیا کو کسی طرح اسلام سے دور رکھا جائے۔ چاہے یہ کام لوگوں کو نصرانی بنا کر ہو یا کسی اور طریقے سے۔ یہی مشن اس وقت مستشرقین اور عالمگیریت کے علمبرداروں نے بھی سامنے رکھا ہوا ہے۔

اسلام چونکہ دین فطرت ہے اور ایک واضح سچائی ہے اس لیے جب بھی کوئی سلیم الفطرت انسان اس پر غور کرتا ہے اور ضد وعناد سے دور ہو کر ٹھنڈے دل سے اس کا مطالعہ کرتا ہے تو وہ اس کی حقانیت کا قائل ہو جاتا ہے، لہٰذا مشنریوں اور مستشرقین کی پوری کوشش یہ ہے کہ اسلام کی آواز کسی طرح مغربی دنیا تک نہ پہنچ سکے۔

یہ وہی صورتحال ہے جو مکہ میں تھی۔ کفارِ مکہ نے قرآن مجید کی آواز کو دبانے کے لیے شور وغل کا حربہ آزمایا تھا۔

﴿ وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَا تَسْمَعُوْا لِهٰذَا الْقُرْاٰنِ وَالْغَوْا فِيْهِ لَعَلَّكُمْ تَغْلِبُوْنَ ۝ ﴾

(حٰمٓ سجدة)

''اس قرآن کو نہ سنو اور اس کی تلاوت کے دوران شور مچا دیا کرو تا کہ تم غالب آ جاؤ۔''

صدیوں پہلے مشرکین کی اسی ذہنیت کا ظہور بیسویں صدی میں زیادہ زور وشور کے ساتھ ہوا جسے ''پروپیگنڈا'' کا نام دیا گیا۔ ''پروپیگنڈا'' کا مطلب ہے کسی جھوٹی اور بے حقیقت بات کو اس زور وشور سے مشہور کرنا کہ ہزاروں لوگ ہم آواز ہو کر اسے دہرانے لگیں اور ہر کوئی اسے سچ سمجھنے پر مجبور ہو جائے۔

کہا جاتا ہے کہ ایک یہودی دانشور اپنے ایک دوست سے ملنے گیا تھا۔ دونوں کی گفتگو کے درمیان آرا مشین چلنے کی آواز آنے لگی جس سے ان کی باتوں کی آواز دب گئی، یہودی نے اس پر

غور کیا کہ اس کی اہم باتوں کو ایک مشین کی بے معنیٰ آواز نے ختم کر دیا، اس نے یہاں سے ایک اصول اخذ کیا۔ وہ یہ کہ صداقت کے مقابلے میں دروغ گوئی زیادہ قوت سے پیش کی جائے تو صداقت دب جائے گی۔

چنانچہ اس نے یہ اصول پیش کیا: ''جھوٹ اتنا بولو کہ اسے لوگ سچ سمجھنے لگیں۔''

یہودی لابی نے پروپیگنڈا کے اس شیطانی اصول کو اپنالیا۔ یہی کام مشنری اور مستشرقین کر رہے ہیں۔ میڈیا اور دیگر ذرائع سے اسلام مخالف پروپیگنڈا کر کے اور باطل نظریات کا شور مچا کر وہ اسلام کی آواز کو دبا رہے ہیں، مگر اسلام اپنی سچائی منوا کر رہے گا:

نورِ خدا ہے کفر کی حرکت پہ خندہ زن
پھونکوں سے یہ چراغ بجھایا نہ جائے گا

## پادری اور توہین رسالت کی مہم:

کئی برسوں سے مغربی دنیا ''اظہارِ رائے کی آزادی'' کی آڑ میں حضور نبی اکرم ﷺ کی شانِ اقدس میں توہین کا ارتکاب کر رہی ہے۔ آپ ﷺ کے مضحکہ خیز خاکے شائع کرنے، گستاخانہ فلمیں بنانے اور ویب سائٹس پر روح فرسا مواد لانے کا سلسلہ کسی بڑے وقفے کے بغیر جاری ہے۔ یوٹیوب اور فیس بک پر گستاخانہ مواد نہ صرف کثرت سے موجود ہے بلکہ باقاعدہ دوسروں کو گستاخی کی مہم میں ایک دوسرے پر سبقت لے جانے کی دعوت دی گئی ہے۔ (نعوذ باللہ)

اس ناپاک مہم کے پیچھے متعصب یہودیوں اور جنونی پادریوں کا پورا پورا ہاتھ ہے۔ اندلس کے اموی حکمرانوں کے دور میں مسلمانوں کی شان وشوکت اور فتوحات سے جل بھن کر مقامی پادریوں نے نصرانی شہریوں کو حضور اکرم ﷺ کی شان میں گستاخی کرنے پر ابھارا تھا۔ جب کچھ بدبختوں نے یہ جسارت کی تو اموی حکمرانوں نے انہیں گرفتار کر کے قتل کر دیا۔ اس پر پادریوں نے نبی اکرم ﷺ کی گستاخی کو جنت کا راستہ قرار دے کر لوگوں کو اس فعل بد پر مزید اُبھارا۔ یوں گستاخیوں کا ایک سلسلہ شروع ہو گیا مگر اموی حکومت نے پوری سختی سے کام لیا۔ بہت سے بدبختوں کے کیفرِ کردار تک پہنچنے کے بعد عیسائی پادریوں نے چپ سادھنے میں عافیت سمجھی۔

بعد میں صلیبی جنگوں کے درمیان بھی توہینِ رسالت کا ایک واقعہ پیش آیا۔ ریجی نالڈ نامی ایک نصرانی حاکم نے عازمین حج کا قافلہ لوٹا اور رحمت عالم نبی اکرم ﷺ کی توہین کر کے پوری امت مسلمہ کی غیرت کو للکارا۔ سلطان صلاح الدین ایوبی نے اس حرکت کے جواب میں کہا:

''اللہ کی قسم! میں ریجی نالڈ کو اپنے ہاتھوں سے قتل کروں گا۔''

قبلۂ اول کی آزادی کے لیے سلطان کی شمشیر پہلے ہی بے نیام تھی مگر اس واقعے کے بعد ان کی یلغار رکنے میں نہ آئی۔ آخر کار حطین کے معرکے میں ریجی نالڈ گرفتار ہوا۔ سلطان نے ریجی نالڈ کو گرفتار کر کے اسے واصل جہنم کر دیا۔

مگر اب وہ حکمران کہاں جو ایسی دینی غیرت سے آراستہ ہوں۔ اس لیے دنیائے کفر کی بن آئی ہے اور کئی سالوں سے شاتمین رسالت، کسی روک ٹوک کے بغیر ابلاغ کا ہر ذریعہ استعمال کر کے عالمی پیمانے پر مسلمانوں کے جذبات کو مجروح کر رہے ہیں۔

## 4.4.28- مشنریوں کا مقابلہ کیسے کیا جائے؟

اب آخر میں سوال یہ پیدا ہوتا ہے کہ مشنریوں کی اس یلغار کا مقابلہ کیسے کیا جائے۔ اس بارے میں کچھ کام حکومتوں کے کرنے کے ہیں اور کچھ اسلامی اداروں اور اہل علم و دانش کے ذمے ہیں۔ عام مسلمان بھی اس سلسلے میں بہت کچھ کر سکتے ہیں۔ چند اہم سفارشات درج ذیل ہیں:

- مسلم حکومتوں پر واجب ہے کہ وہ نصرانیت کی تبلیغ پر پابندی عائد کریں اور مرتد کی شرعی سزا کو نافذ کریں۔
- علماء اور دانشوروں کو چاہیے کہ اپنے متعلقہ تعلیمی اداروں کے نصاب میں الغزو الفکری، مسیحیت و صہیونیت اور گمراہ کن تحریکاتِ جدیدہ کا تعارف شامل کریں۔
- علمائے کرام اسلام کی دعوت و تبلیغ کے لیے طریقہ کار مرتب کریں۔
- نصرانیت کے جوابی لٹریچر کی تیاری بھرپور انداز میں کی جائے۔
- نصرانیت کے مقابلے کے لیے رجالِ کار تیار کیے جائیں۔ دینی مدارس میں نصرانیت کی تردید پر کام کرنے والے علمائے کرام کو مدعو کر کے طلبہ کو تربیتی کورسز کرائے جائیں۔ یہی

کام اسکولوں، کالجوں اور یونی ورسٹیوں میں بھی کیا جائے۔

- ردِّ نصرانیت پر اکابر کی لکھی ہوئی اہم کتابوں کی ازسرِنو تسہیل، ترتیب اور اشاعت کی جائے۔
- غیر مسلموں کے عقائد ونظریات کو سمجھنے کے لیے مدارسِ عربیہ میں تقابل ادیان کا مضمون شاملِ نصاب ہونا چاہیے۔
- مبلغین کی تربیت کے مستقل ادارے اور دینی مدارس میں اس کے شعبے قائم ہونے چاہئیں۔
- دینی جامعات کے طلبہ مہینے میں کم از کم ایک دن اپنے قرب وجوار کے علاقوں میں دعوتِ حق کا فریضہ ادا کرنے کے لیے باہر نکلیں۔
- علماء اور ائمہ مساجد اس کے لیے ہفتہ وار ترتیب بنائیں۔
- غیر مسلموں خصوصاً کرسچنوں کی بستیوں میں جا کر بڑی حکمت سے انہیں اسلام کی تبلیغ کی جائے۔
- ڈاکٹر حضرات اور اطبائے کرام پر لازم ہے کہ وہ خود کو مشن ہسپتالوں کے معالجین سے بہتر ثابت کریں، غریبوں کے لیے فیس میں کچھ گنجائش رکھیں۔ علاج کے ساتھ ساتھ دعوتِ اسلام کو بھی مقصد بنائیں اور ملت کے نادار طبقے کے لیے رفاہی کاموں کی قیادت کریں۔
- تجار، زمیندار اور اہل ثروت لوگ اپنے وسائل سے ہسپتال، اسکول اور اسلامی مشن اسکول قائم کریں تاکہ مسلمان نصرانیوں کے اسکولوں اور ہسپتالوں کے محتاج نہ رہیں۔
- اہل ثروت اور مخیر حضرات ایسے دار الامان بنائیں جہاں نومسلموں کو پناہ مل سکے۔ انہیں اپنے رشتہ داروں اور این جی اوز کے شر سے محفوظ رہ کر حلال روزگار کے ساتھ چین کی زندگی بسر کرنے کا موقع ملے۔
- عام لوگ علمائے کرام کی مجالس، تبلیغی جماعت اور درس قرآن وحدیث کے حلقوں میں شریک ہو کر دین کی بنیادی باتوں کو سیکھیں اور دوسروں تک پہنچائیں تاکہ لوگ اپنا ایمان محفوظ رکھ سکیں۔
- اسلام کی تبلیغ کے لیے حسبِ توفیق مالی تعاون کر کے بھی وہ اپنی ذمہ داری بڑی حد تک نبھا سکتے ہیں۔
- اسلامی ویب سائٹس پر دائرہ کار کو بڑھایا جائے۔ سوشل میڈیا سے منسلک نوجوان اپنے حلقے

کے غیر مسلموں کو حکمت اور دلائل کے ذریعے اسلام کی دعوت دیں۔ اس کے لیے پہلے خود بنیادی اسلامی تعلیمات سیکھنا اور تقابلِ ادیان کا مضمون علمائے کرام سے پڑھنا ضروری ہوگا۔

### 4.4.29- مایوسی کی ضرورت نہیں:

دشمنوں کے بے پناہ وسائل اور منصوبہ بندیوں کو دیکھ کر ہمیں ناامید ہونے کی ضرورت نہیں۔ اطمینان کی بات یہ ہے کہ عالمگیر پیمانے پر نصرانیت کی تبلیغ کی ان تمام تر کوششوں کے باوجود دشمنانِ اسلام، اسلام کے پھیلاؤ سے خوفزدہ ہیں۔ اس بارے میں لندن کے ایک عیسائی مشنری ادارے ''کرسچن ریسرچ ایسوسی ایشن'' کے ایگزیکٹو ڈائیریکٹر پیٹر بریرے کے تاثرات قابل ملاحظہ ہیں، موصوف کہتے ہیں: ''مسلمانوں کی بڑھتی ہوئی تعداد اسلام کی طاقت کا مظہر ہے جو دنیا میں تیزی سے پھیلتا جارہا ہے۔''

یہ تاثر کسی بھی لحاظ سے غلط نہیں کیوں کہ 1995ء کے اعداد وشمار کے مطابق برطانیہ کی مساجد میں نمازیوں کی تعداد 5 لاکھ 36 ہزار تھی جبکہ چرچ آف انگلینڈ کے تحت گرجاؤں میں جانے والے عیسائیوں کی تعداد 8 لاکھ 54 ہزار تھی۔ 1992ء سے مساجد میں نمازیوں کی تعداد میں ہر سال 32 ہزار افراد کا اضافہ ہوتا رہا ہے، جبکہ اس عرصہ میں گرجاؤں میں جانے والے عیسائیوں کی تعداد میں ہر سال 14 ہزار افراد کی کمی ہوتی رہی ہے۔

گیارہ ستمبر 2001ء کے بعد جہاں یورپ اور امریکا میں مسلمانوں کی کردار کشی کی مہم عام ہوئی ہے، وہیں اسلام قبول کرنے والوں کی تعداد میں بھی بے حد اضافہ ہوا ہے۔ مغربی دنیا خصوصاً فرانس، برطانیہ اور امریکا میں ہر سال ہزاروں لوگ اسلام قبول کررہے ہیں اور مساجد کی تعداد میں تیزی سے اضافہ ہورہا ہے۔ اس کے علاوہ مسلمانوں کی شرح پیدائش بھی وہاں سب سے زیادہ ہے۔ مغربی ماہرین نے آگاہ کیا ہے کہ اگر یہ شرحِ افزائش اسی طرح بڑھتی رہی تو موجودہ صدی کے آخر تک یورپ اور امریکا میں مسلمانوں کی آبادی نصف سے زیادہ ہوسکتی ہے۔

اسلام کی فطرت میں قدرت نے لچک دی ہے
اتنا ہی یہ ابھرے گا جتنا کہ دباؤ گے

# مراجع


- التنصیر مفہومہ واہدافہ ووسائلہ: علی بن ابراہیم الحمد النملۃ
- المستشرقون والتنصیر: علی بن ابراہیم الحمد النملۃ
- التنصیر تعریفہ، اہدافہ ووسائلہ: عبدالرحمن بن عبداللہ الصالح
- مذکرۃ التنصیر: شیخ سلمان بن فہد العودۃ
- اسالیب الغزو الفکری: علی محمد جریشہ، محمد شریف الزبیق
- الاستشراق والتبشیر: ڈاکٹر محمد سید الجلیند
- آخری صلیبی جنگ حصہ دوئم: عبدالرشید ارشد
- عہدِ مغلیہ میں انگریزوں کا جال: علامہ انور صابری
- بنگلہ دیش میں عیسائی مشنری سرگرمیاں: مولانا امین الحق محمودی
- مسیحیت پاکستان میں: ڈاکٹر نادر رضا صدیقی
- پاکستان میں عیسائیت کا احوال: ڈاکٹر نادر رضا صدیقی
- پاکستان میں عیسائیت کا فروغ: ڈاکٹر نادر رضا صدیقی
- پاکستان میں عیسائیت کا عروج: ڈاکٹر نادر رضا صدیقی
- اسلام کے خلاف عیسائیوں کے منصوبے: ڈاکٹر نادر رضا صدیقی

پانچواں باب

5

# نظریاتی جنگ کے افکار

# أفكار الغزو الفكرى

# Concept *of* Idealogical War

اس باب میں ہم دو اہم فکری تحریکوں کا جائزہ لیں گے جو کہ مسلمانوں کی اعتقادی، نظریاتی اور عملی بیخ کنی کر رہی ہیں۔ یہ تحریکیں العلمانیہ (سیکولرازم) اور التغریب (ماڈرن ازم) ہیں۔

## 5.1- العلمانیۃ

## Secularism

العلمانیۃ یا سیکولرازم کی تعریف یہ ہے:

''فَصْلُ الدِّیْنِ عَنِ الدَّوْلِ وَ الْحَیَاۃِ.''

یعنی دین کو زندگیوں اور حکومت سے الگ کرنا۔ بالفاظِ دیگر اس کا مطلب ''لادینیت'' ہے۔

کیمبرج ڈکشنری میں سیکولرازم کی تعریف یوں کی گئی ہے:

**Secularism:**
***The belief that religion should not be involved with the ordinary social and political activities of a country.***

''سیکولرازم سے مراد ایسا طرزِ حیات ہے جس میں معاشرت اور ملکی سیاست میں مذہب کی کوئی مداخلت نہیں ہوتی۔''

عربی زبان میں سیکولر شخص کے لیے ''علمانی'' کا لفظ استعمال ہوتا ہے۔ سیکولرازم کو ''اللادینۃ'' اور سیکولرازم کے حامی کو ''لادین'' بھی کہا جاتا ہے۔ سیکولرازم کی دعوت دینے والے ابتداء میں یہ کہہ کر دھوکا دیتے ہیں کہ وہ مذہب کے مخالف نہیں بلکہ صرف اس بات کے قائل ہیں کہ مذہب کو علم، تحقیق، سیاست اور معاشرت کی ترقی میں حائل نہیں ہونا چاہیے۔ دنیا کے معاملات کا کسی مذہب سے کوئی تعلق نہیں ہے۔ دنیوی امور سائنس کے دائرہ کار میں آتے ہیں اور ان کو مذہب کے ساتھ جوڑنا غلط ہے۔ جو نوجوان ان کے دھوکے میں آجاتے ہیں، انہیں یہ لوگ دین سے مزید

متنفر کرتے رہتے ہیں۔ رفتہ رفتہ یہ نوجوان دین کو ایک فرسودہ شے سمجھ کر نہ صرف عملاً بلکہ اعتقاداً بھی ''لادین'' بن جاتے ہیں۔

## 5.1.1 سیکولرازم کی تاریخ:

سیکولرازم کی ابتداء یورپ میں اصلاح مذہب اور انسان پرستی کی تحریکوں کے بعد ہوئی۔ یورپ نے یہ دیکھ لیا کہ نصرانیت کی خلافِ عقل تعلیمات زندگی کے حقائق کا ساتھ نہیں دے سکتیں اس لیے انہوں نے دین اور دنیا کو الگ الگ کرلیا۔ چرچ اور ایوانِ سلطنت کے معاملات الگ الگ ہوگئے۔ پادریوں کا عام امورِ زندگی سے تعلق ختم کردیا گیا۔ یورپ میں قرونِ وسطیٰ کے دوران مملکتوں کا سارا نظام کلیسا کے ماتحت تھا۔ حکومتیں پوپ کے فرامین کے سامنے مجبور ہوا کرتی تھیں۔ سیکولرازم کے غلبے کے بعد یہ مملکتیں چرچ سے آزاد ہوگئی۔ طے کردیا گیا کہ کلیسا کا اختیار صرف چرچ تک محدود ہوگا۔ اس کے بعد یورپی استعماری طاقتیں جہاں بھی گئیں اسی ذہنیت کو عام کرتی گئیں کہ مذہب کا امورِ سیاست اور کاروبارِ حیات سے کوئی تعلق نہیں ہونا چاہیے۔ بدھ مت اور ہندومت سمیت ہر مذہب کے پیروکاروں پر صدیوں کے تجربات نے یہ ثابت کردیا تھا کہ ان کے مذاہب جیتی جاگتی زندگی کا ساتھ دینے سے قاصر ہیں، یورپی افکار کے چرچے سے ان کے ذہنوں میں یہ بات مزید پختہ ہوگئی۔ اس لیے ایسے تمام خطوں میں سیکولرازم کے راستے ہموار ہوتے گئے۔

مگر استعمار کی لہر کو اسلامی دنیا میں مختلف تجربے کا سامنا کرنا پڑا۔ مغربی مفکرین نے دیکھا کہ دیگر مذاہب کے برعکس اسلام، زندگی سے فرار نہیں چاہتا بلکہ زندگی کو ساتھ لے کر چلتا ہے۔ یہ گھر سے لے کر حکومت تک جہاں بھی داخل ہوتا ہے، وہاں تمام مسائل حل ہوجاتے ہیں۔ یہی نہیں بلکہ یہ نظام دنیا کے ہر خطے میں نافذ ہونے کی صلاحیت رکھتا ہے۔ یہ دیکھ کر اہل مغرب کو خطرہ محسوس ہوا کہ وہ مذہبی بکھیڑوں سے بچ کر نفس پرستی اور عیاشی کی جس راہ کو کشادہ کرنا چاہتے ہیں، اسلام اسے مسدود کرسکتا ہے اور اپنی اثر آفرینی کی وجہ سے ساری دنیا میں پھیل سکتا ہے۔ چنانچہ انہوں نے اسلامی دنیا میں سیکولرازم کو زیادہ شدت کے ساتھ پھیلانے کی کوشش کی اور ایڑی چوٹی کا زور لگادیا کہ جس طرح نصرانیت چرچ میں محصور ہے، اسلام کو بھی مسجد تک محدود کردیا جائے۔

سیکولرازم کا مقصد ہی یہ ہے کہ مسلمانوں کو دین سے الگ کر دیا جائے۔ اب اس رخ پر ایک صدی سے زائد عرصے کی محنت کے بعد واقعی حالات یہاں تک پہنچ چکے ہیں کہ اگر آپ ملکی پالیسی ترتیب دینے میں شریعت کو ملحوظ رکھنے کا مطالبہ کریں تو کہا جاتا ہے کہ دین کا سیاست سے کیا تعلق۔ حتیٰ کہ آپ کسی مسلمان کو نماز کا کہیں تو وہ جواب دے گا کہ مذہب انسان کا ذاتی معاملہ ہے، آپ میرے پرائیویٹ معاملات میں مداخلت کرنے والے کون ہوتے ہیں۔ حالانکہ مسلمانوں کو سمجھ لینا چاہیے کہ اسلام دوسرے ادیان سے الگ ہے، اس میں زندگی کے ہر شعبے کی تعلیم موجود ہے۔ دین درحقیقت اس طرزِ حیات اور نظامِ زندگی کا نام ہے جو خالق نے مخلوق کے لیے وضع کیا ہے۔ کہنے کو تو ہر مذہب کے پیروکار یہ دعویٰ کرتے ہیں کہ ان کا دین خالق نے وضع کیا ہے، لیکن اسلام کے سوا اس دعوے پر کوئی دین پورا نہیں اترتا۔ اس کی ناقابلِ تردید دلیل یہ ہے کہ جو دین اور دستورِ حیات خالق کا بنایا ہوا ہو، اس میں کوئی سقم اور کمزوری نہیں پائی جاسکتی۔ ایسا مضبوط اور محفوظ دین صرف اسلام ہے۔ یہ بات ثابت ہو چکی ہے کہ اسلام کے سوا تمام ادیان انسانی زندگی کے اکثر شعبوں میں رہنمائی سے بالکل قاصر ہیں، اس سے صاف پتا چلتا ہے کہ انہیں محدود عقل رکھنے والے ہم آپ جیسے انسانوں ہی نے ترتیب دیا ہے نہ کہ خالق کائنات نے۔ اگر خالق نے انہیں پیش کیا ہوتا تو ان میں یہ کمزوریاں نہ ہوتیں۔

چونکہ انسان کے بنائے ہوئے قوانین میں اس کے محدود تجربات، خاص جذبات اور ذاتی احساسات کا دخل ضرور ہوتا ہے اور چونکہ ہر انسان کا علم، تجربہ اور دانش محدود ہے، لہٰذا اس کا بنایا ہوا دین کبھی کامل نہیں ہوسکتا۔ نصرانیت، ہندومت، بدھ مت اور دوسرے ادیان اسی لیے معاشرتی مسائل کے حل سے قاصر اور سیاست و معاملاتِ زندگی میں رہنمائی سے عاجز ہیں کہ وہ خالق کی تخلیق نہیں۔ اسی مجبوری اور محرومی کی وجہ سے ان مذاہب کے پیروکاروں کو دین اور دنیا کے راستے الگ کرنے پڑے اور متبادل کے طور پر سیکولرازم کو قبول کرنا پڑا۔

مگر اسلام نے اپنی اکملیت کی وجہ سے ماضی میں بھی خانگی زندگی سے لے کر سیاست و عدلیہ تک ہر شعبے میں کامیاب رہنما کا کردار ادا کیا تھا اور آج بھی وہ سیکولرازم کو منہ توڑ جواب

دے سکتا ہے۔ اسلام سے منہ کی کھانے کا خطرہ اہل مغرب کو اب پہلے سے کہیں زیادہ محسوس ہو رہا ہے کیونکہ پہلے زمانے کی نسبت اب ذرائع ابلاغ بہت تیز ہو چکے ہیں۔ اسلامی تعلیمات کا جائزہ لینے والا ہر انسان چاہے وہ کسی بھی مذہب کا پیروکار ہو، یہ ماننے پر مجبور ہو جاتا ہے کہ اسلام انسان کی پوری زندگی کا احاطہ کرتا ہے۔ انسان اپنے ہر مسئلے میں میں اسلام کی رہنمائی سے فیض یاب ہو سکتا ہے۔ انسانوں کا ہر معاملہ، خواہ انفرادی ہو یا اجتماعی، وہ اسلامی احکام کے لحاظ سے جائز ہوگا یا ناجائز۔ جائز ہونے کی صورت میں بھی اسلام مزید وضاحت کرتا ہے کہ وہ ضروری ہے یا بے حد ضروری۔ اہم ہے یا مناسب۔ قابلِ تعریف ہے یا صرف جائز۔

ناجائز ہونے کی صورت میں بھی اسلام بتاتا ہے کہ یہ کام بالکل منع ہے یا نامناسب۔

زندگی کا ہر کام اسلامی احکام کی سات اقسام میں سے کسی ایک کے تحت زیرِ بحث آئے گا۔

(1) بہت ضروری.....(فرض)

(2) ضروری (واجب)

(3) اہم.....(سنت مؤکدہ)

(4) قابلِ تعریف (سنت غیر مؤکدہ، مستحب)

(5) بالکل ناجائز.....(حرام)

(6) ایک حد تک ناجائز.....(مکروہ تحریمی)

(7) نامناسب.....(مکروہ تنزیہی)

(8) مباح.....(جائز)

غرض نظام حیات کا ہر عنصر اسلام کے کسی نہ کسی خانے کے اندر منطبق ہو جاتا ہے۔ سیکولرازم کے داعی غلط طور پر مسلمانوں کے ذہن میں یہ بٹھاتے ہیں کہ دین اور دنیا دو الگ الگ چیزیں ہیں اور دیگر ادیان کی طرح اسلام بھی زندگی کے تقاضوں کو پورا نہیں کر سکتا۔

اس ذہنیت کو عام کرنے کے لیے مغرب نے مستشرقین کے شاگردوں کو بطورِ خاص استعمال کیا۔ جیسا کہ علی عبدالرزاق، جس نے اپنی کتاب ''الاسلام واصول الحکم'' میں اس طرح کے

دعوے کیے ہیں:

① شریعت محض ایک روحانی چیز ہے۔

② حضور ﷺ کا جہاد محض ہوس ملک گیری تھا۔ (العیاذ باللہ)

③ حضور ﷺ کے دور ہی میں مسلمانوں کا نظام غیر مربوط تھا۔

④ اجماعِ امت ناقابل اعتبار چیز ہے۔

⑤ خلافت راشدہ ایک لادینی نظام تھا، وہ اسی لیے مقبول ہوا کہ وہ ایک سیکولر نظام تھا۔

غرض ایسے گمراہ کن مواد سے بھرپور تصانیف کا انبار لگا دیا گیا ہے۔ شریعت، سیرت اور تاریخ سب کو مسخ کر کے سیکولرازم کو قابل قبول بنانے کی ناپاک کوششیں کی گئیں۔

## 5.1.2 سیکولرازم کے بنیادی اہداف:

عالم اسلام سے متعلق سیکولرازم کے بنیادی اہداف یہ ہیں:

① مسلمانوں کے عقائد میں شکوک و شبہات پیدا کر دیے جائیں تاکہ وہ مذہب سے دور ہو جائیں جو ان کے تحفظ کا سب سے مضبوط قلعہ ہے۔

② مغرب کے ملحدانہ افکار اور مادیت پرست خیالات کو زیادہ سے زیادہ رواج دیا جائے۔

③ اسلامی عقائد و نظریات کی جگہ مادّی فلسفے کو فروغ دیا جائے۔

④ اسلام کو حکومت، سیاست اور معاشرت سے خارج کر دیا جائے اور مغربی اقدار کے مطابق ''سیکولر'' حکومتیں تشکیل دی جائیں۔

## 5.1.3 سیکولرازم کے تین خطرناک حربے:

سیکولرازم کے فروغ کے لیے تین چیزیں بہت سازگار ماحول مہیا کرتی ہیں: ایک یہ کہ مسلمان منتشر اور متفرق رہیں، دوسرے یہ کہ ان کو کوئی مناسب قیادت نہ ملے، تیسرے یہ کہ عورت آزاد رہے تاکہ بداخلاقی بے راہ روی عام ہو جائے۔ ان اہداف کو حاصل کرنے کے لیے سیکولر طاقتیں تین اہم حربے استعمال کرتی ہیں جو درج ذیل ہیں:

① جاہلی عصبیت کو فروغ دینا

② مسلمانوں کو صالح قیادت سے متنفر کرنا

③ آزادیٔ نسواں

(ان تینوں حربوں کی تفصیل آگے نظریاتی جنگ کے وسائل (وسائل الغزو الفکری) کے تحت ملاحظہ کی جاسکتی ہے۔)

## 5.2- التغریب (Modernism):

''التغریب'' یا ''ماڈرن ازم'' کا مطلب مغربیت زدگی اور جدت پسندی ہے۔ جدت پسندی کی تحریک مسلمانوں کو یہ بتاتی ہے کہ ہر مذہب ایک فرسودہ اور بیکار چیز ہے، یہ دور سائنس اور عقلی علوم کا ہے۔ ہمیں وہی چیز فائدہ دے سکتی ہے جو حواس، مشاہدے، تجربے اور عقلیت کے زمرے میں آئے۔ ہمیں انہی چیزوں سے سروکار رکھنا چاہیے۔

جو چیزیں اس کے برخلاف ہوں وہ قابلِ ترک ہیں چاہے وہ قومی رسم ورواج ہوں یا مذہبی عقائد واقدار۔

چوں کہ مغرب خود اپنے ہاں سے مذہب، روایت پسندی اور قدامت پرستی کو دیس نکالا دے چکا ہے اور ایک جدت پسند معاشرے میں ڈھل کر خود کو پوری دنیا کے لیے آئیڈیل کی حیثیت دیتا ہے، اسی لیے وہ مسلم معاشرے کو جدت پسندی کی دعوت دیتے ہوئے بتاتا ہے کہ اب دنیا کو ترقی کرنے کے لیے مغربی معاشرے کی تقلید کرنا ہوگی جو پختہ علمیت، صحیح تجربے، آزادیٔ فکر، عدل، مساوات اور روشن خیالی کا مرقع ہے۔ اس طرح مسلم معاشرہ مغرب سے اس قدر متاثر ہوتا جارہا ہے کہ وہ مغرب کی سیاست، معیشت، معاشرت اور فنون لطیفہ سمیت ہر چیز کو آئیڈیل سمجھنے لگا ہے۔ ماڈرن ازم یا جدّت پسندی کے حامی اس وقت عالم اسلام میں کئی اہداف کو سامنے رکھ کر کام کررہے ہیں۔ اس مشن کے لیے رجالِ کار کے طور پر مستشرقین کے شاگرد استعمال ہورہے ہیں۔ ان دیسی جدت پسندوں کے اہم ترین اہداف یہ ہیں:

### 5.2.1- صورتِ اسلام کو مسخ کرنا، نیا اسلام تشکیل دینا:

سب سے زیادہ زور اسلام کی خالص تعلیمات کو بگاڑنے اور اس کی اصل صورت کو مسخ پر

ہے۔ اس مقصد کے لیے دو رخا کام ہو رہا ہے۔ ایک رخ یہ ہے کہ اسلام کو ایک دہشت گرد مذہب کے طور پر سامنے لایا جا رہا ہے۔ قرآنِ مجید، حدیث، سیرت، فقہ اور تاریخ اسلام سے مختلف حصوں کو غلط سیاق و سباق اور پر فریب تاویلات کے ساتھ سامنے لا کر اسلام کی ایک قابل نفرت شکل سامنے لائی جا رہی ہے۔

دوسری طرف ایسے مفکر کھڑے کیے جا رہے ہیں جو اسلام کی صحیح ترجمانی کے نام پر اسے ایسی جدید شکل دے رہے ہیں جو مغرب کے نزدیک قابلِ قبول ہو۔ اس طرح ایمان، عبادات، معاملات، سیاسیات اور دیگر تمام شعبوں میں چودہ سو سالہ اسلامی فقہ اور شریعت کو پس پشت ڈالا جا رہا ہے۔ اسلاف سے بداعتمادی پھیلانے کے لیے ان کی تحقیقات کو رد کیا جا رہا ہے، ان کے کردار پر کیچڑ اچھالا جا رہا ہے، اصل اسلامی ثقافت اور معاشرت کو تنقید کا نشانہ بنایا جا رہا ہے۔ حرام کو حلال کیا جا رہا ہے، جو چیزیں اسلام میں بالکل ممنوع ہیں انہیں اسلامی رنگ دیا جا رہا ہے۔ پختہ فکر مسلمانوں کو فرسودہ خیال اور بنیاد پرست ثابت کرنے کی کوشش کی جا رہی ہے۔

ایک نیا اسلام تشکیل دینے کی کوششوں میں امریکا اور یورپ میں آباد بعض نام نہاد مسلم مفکرین پیش پیش ہیں، مغربی جرائد میں ان کے مضامین شایع ہوتے رہتے ہیں۔ یہ میگزین خود بھی ایسے بحثیں چھیڑ کر ایک لبرل اسلام سامنے لانے کا عمل تدریجاً جاری رکھے ہوئے ہیں۔ 16 مارچ 1998ء کے ''نیوز ویک'' میں چھیڑی گئی بحث قابل غور ہے۔ کہا گیا ہے:

''آج (اسلام میں) اصلاح (Reformation) کا کام جاری ہے۔ جس دین کی بنیاد عرب میں رکھی گئی تھی، دنیا بھر میں مسلمان اس میں تجدد اور جدت (Modernity) کی راہیں استوار کر رہے ہیں۔ مسلمانوں میں یہ مباحث جاری ہیں:

(1) آیا کہ اسلام مغربی طرز کی جمہوریت کے ساتھ ہم آہنگی رکھتا ہے؟

(2) کیا اسلام سائنس کے ساتھ بھی ہم آہنگ ہے؟

(3) کیا اسلام نسوانی مسائل کے ساتھ بھی موافقت کر سکتا ہے؟

اس بحث کے جواب میں امریکا میں سیاسیات کے استاد مقتدر خان مثبت جواب دیتے

ہوئے کہتے ہیں:

''امریکی مسلمان جو دولت منداور اسلامی جذبہ سے مالا مال ہیں اور متضاد معاشروں کے سنگم پر ہیں، اس مضبوط پوزیشن میں ہیں کہ ایک تیرہ صدیاں پرانے دین کو اگلے ایک ہزار سال کے عرصہ میں مضبوط مقام دلا سکیں۔ یہ ایک وزنی حقیقت ہے کہ دنیا بھر میں امریکا مسلمان ہونے کے لیے بہترین جگہ (Best place) ہے۔ یہ ایک ایسی کثیر ثقافتی جمہوریت ہے جو لوگوں کو تقریر اور مذہبی آزادی کی ضمانت دیتی ہے اور مشرق وسطیٰ کے کئی اسلامی ممالک کے مقابلے میں مسلمانوں کے لیے زندگی زیادہ سہل اور آرام دہ بناتی ہے..... امریکی آئین کا اگر جائزہ لیا جائے تو یہ ایک مکمل اسلامی ریاست (Perfect Islamic State) ہے..... یہ ملک (امریکا) انسانی زندگی، آزادی اور ملکیت کا محافظ ہے۔''

یاد رہے کہ ''نیوز ویک'' وہ میگزین ہے جو سی آئی اے کے اشارے پر اسلام کی اس برانڈ کو فروغ دینے کے لیے خصوصی طور پر کوشاں ہے جسے مغرب کی سرپرستی اور تائید حاصل ہو۔

## 5.2.2- تاریخ اسلام میں تشکیک پیدا کر کے مسلمانوں کو اپنے ماضی سے بداعتماد کرنا:

جدت پسند مفکرین امت مسلمہ کو اپنے ماضی سے بداعتماد کر دینے کی تگ و دو کرتے رہتے ہیں تاکہ مسلمانوں کو کسی بھی موقع پر یہ احساس نہ ہو کہ وہ ایک شاندار تاریخ کے حامل ہیں۔ بلاشبہ مسلمانوں کی تاریخ میں ایسی اَن گنت ہستیاں گزری ہیں جو ایک روشن اور قابل رشک کردار کی حامل تھیں اور ان کی زندگیاں ہمارے لیے نمونۂ عمل ہیں۔ اسلام کی تاریخ کی تابناکیاں خود یورپی دانشوروں کے لیے باعثِ رشک و حسد ہیں مثلاً سلطان صلاح الدین ایوبی رحمہ اللہ نے طاقت کے باوجود القدس کے نصرانیوں کو جان و مال کی امان دی اور اپنے سپاہیوں کی بھی سخت نگرانی کی کہ کسی پر ہاتھ نہ اٹھائیں۔ یورپ کی تاریخ میں ایسی مثال ملنا مشکل ہے مگر تاریخ اسلام میں فتح مکہ سے لے کر فتح قسطنطنیہ تک ایسی سینکڑوں مثالیں موجود ہیں۔ خاص طور سے معاہدوں کی پابندی میں تو تیسرے درجے کے مسلمان حکمران بھی کمال کے باکردار نظر آئیں گے۔

اس کے برعکس یورپ میں بہادری کا پیمانہ مختلف ہے۔ وہاں جو مخالفین پر جتنا ظلم و ستم کرے

اتنا ہی بڑا بہادر سمجھا جاتا ہے۔ فلسطین میں عیسائیوں کے مظالم، دغابازیوں اور مکاریوں کا ذکر لین پول نے بھی اپنی کتاب ''صلاح الدین'' میں کیا ہے۔

بہرکیف عالم اسلام میں سرگرم مغرب زدہ جدت پسند مفکرین کو صرف یورپی ہیروز ہی آئیڈیل نظر آتے ہیں۔ ان کا مشن یہ ہے کہ جب مسلمان اپنی تاریخ کھول کر دیکھیں تو انہیں جگہ جگہ ایسے داغ دھبے نظر آئیں کہ وہ اپنے ماضی سے شرما جائیں۔ چنانچہ اسلامی تاریخ پر ان گنت کتابیں لکھ دی گئی ہیں جنہیں پڑھ کر نوجوان اسلاف سے متنفر ہونے لگتے ہیں۔

### 5.2.3 امت کو اپنی موجودہ حالت سے مایوس کرنا (التشکیک فی الحال):

جدت پسندوں اور مغرب پرست مفکرین کا دوسرا ہدف مسلمانوں کو موجودہ حالات کے صرف منفی پہلو دکھا کر ان میں مایوسی پھیلانا ہے۔ جو مسلمان ان کے دام میں آ کر اپنی تاریخ سے متنفر ہو چکے ہیں اور ماضی سے رشتہ کاٹ چکے ہیں اب انہیں امت کی موجودہ حالت سے دل گرفتہ کرنا بھی ماڈرن مفکرین کے مقاصد کے لیے مفید ہے۔

اس مقصد کے لیے مسلم نوجوانوں کو بار بار مختلف پیرایوں میں یہ سمجھایا جاتا ہے کہ مسلمان کم ہمت ہیں، مسلمان لاپرواہ ہیں۔ بار بار کہا جاتا ہے کہ یہ قوم ہے ہی کم عقل جوڈھنگ سے کوئی کام نہیں کر سکتی۔ اس مقصد کے لیے مسلمان حکمرانوں، لیڈروں اور مذہبی رہنماؤں کی کچھ سچی اور کچھ فرضی حماقتیں بار بار مشہور کی جاتی ہیں اور نتیجہ یہ نکالا جاتا ہے کہ پورے عالم اسلام کی ابتری کی وجہ یہی ہے کہ یہاں مسلمان بستے ہیں جو اندھی اور بہری قوم ہے۔ اگر یہاں جرمن، اطالوی یا فرانسیسی ہوتے تو ان ملکوں کو کیا سے کیا بنا دیتے۔ بار بار یاد دلایا جاتا ہے کہ مسلمانوں کے پاس مادی وسائل ہیں، نہ ٹیکنالوجی۔ وہ ذہنی طور پر پسماندہ اور مفلس ہیں۔

اس قسم کی سوچ کا حاصل یہ نکلتا ہے کہ مسلمان خود سے بداعتماد ہو جاتے ہیں۔ ان کا جذبۂ مقاومت سرد ہو جاتا ہے۔ ان میں جتنی صلاحیت اور قوت موجود ہے، وہ اس کو بھی نظرانداز کر دیتے ہیں۔ وہ اپنی قوم کو نکما اور بے کار یقین کر لیتے ہیں اور اپنے آپ سے مایوس ہو جاتے ہیں۔ ایک فرد کے بس میں جو کچھ ہوتا ہے وہ اسے بھی بروئے کار نہیں لاتا۔ ایک عمومی مایوسی چھا جاتی ہے اور

پوری قوم تعطل کا شکار ہو کر رہ جاتی ہے۔

اس ذہن کو کس کس طرح کے فقروں اور فلسفوں کے ذریعے پروان چڑھایا گیا ہے اس کی مثال میں جارج برنارڈ شا کا یہ مقولہ پڑھیے:

''اسلام دنیا کا بہترین مذہب ہے اور مسلمان دنیا کی بدترین قوم''

یہ بات بظاہر ہمدردانہ انداز میں کہی گئی ہے اس لیے کئی عشروں سے لاکھوں مسلمان اسے پڑھتے، سنتے اور آگے نقل کرتے آرہے ہیں لیکن درحقیقت اس میں مسلمانوں کی زبردست تذلیل کی گئی ہے۔ کسی شخص نے دارالعلوم دیوبند کے مفتیٔ اعظم حضرت مفتی محمود حسن رحمہ اللہ کے سامنے یہی مقولہ دہرا کر برنارڈ شا کی فکر کی داد چاہی تو انہوں نے ناراضی ظاہر کرتے ہوئے فرمایا:

''اس نے شہد میں زہر گھول کر پیش کیا ہے، پہلے اس نے یہ کہہ کر کہ اسلام بہترین مذہب ہے، آپ کو رشوت دی۔ پھر مسلمانوں کو بدترین کہہ دیا اور آپ نے چپ چاپ مان لیا۔ اس نے شروع میں اسلام کو بہترین اسی لیے کہا تا کہ آپ اسے انصاف پسند سمجھیں اور آگے دوسرے جملے میں اس کی گالی سن سکیں۔ اگر وہ دل سے اسلام کو بہترین مانتا تو اسلام قبول نہ کر لیتا۔''

### 5.2.4- مستقبل سے ناامید بنانا (التشکیک فی المستقبل):

ماضی سے کٹ جانے اور حال سے بداعتماد ہو چکنے کے بعد فطری طور پر ہر مسلمان اپنے مستقبل کے بارے میں شکوک وشبہات میں مبتلاء ہو جاتا ہے۔ جب وہ جدت پسند مفکرین کی نگاہ سے مسلمانوں کی موجودہ حالت پر نظر دوڑائے گا تو اسے محسوس ہوگا کہ علم کے سارے ذخائر اور منابع غیر مسلموں کے پاس ہیں اور مسلمانوں کے حصے میں نری جہالت آئی ہے۔ صحت کے سارے ذرائع اور سہولیات غیر مسلموں کے پاس ہیں اور تمام امراض مسلم ممالک میں ہیں۔ یورپ اور امریکا کی زمینیں مال ودولت کے انبار اگل رہی ہیں اور ہم مسلمان بنجر صحرا میں پیدا ہوئے ہیں۔ یہ دیکھ کر اسے خود بخود مستقبل سے مایوسی ہونے لگے گی۔

اب اگر وہ گھٹ گھٹ کے مرنے سے بچنا اور وہ زمانے کے ساتھ چلنا چاہے تو اس کا فیصلہ یہی ہوگا کہ مسلم ثقافت، تہذیب، اقدار اور طرزِ معاشرت کو بالکل خیر باد کہہ دیا جائے اور خود کو مکمل

طور پر مغرب کے رنگ میں رنگ لیا جائے۔ اپنے معاشرے کو مغرب کے لیے قابل قبول بنالیا جائے اور اس کی وہ امتیازی خصوصیات دور کردی جائیں جن پر مغرب چیں بہ جبیں ہے۔ سرسید احمد خان، غلام احمد پرویز، ڈاکٹر فضل الرحمن اور اب جاوید احمد غامدی اسی طرزِ فکر پر کام کرنے کی وجہ سے نامور ہوئے ہیں۔ اسی طرح نیویارک کی مسجد الفرح کے امام فیصل عبدالرؤف اسی مکتبِ فکر میں ایک نیا اضافہ ہیں جو سرمایہ داری، مغربی جمہوریت اور آزاد معاشرے کو قرآن وسنت اور سیرت کی مدد سے ثابت کرنے کی کوشش کررہے ہیں۔

سچ تو یہ ہے کہ جدّت پسندوں کے افکار، اعتراضات اور خالص مسلم معاشرے کے بارے میں ان کے اعتراضات وخیالات پڑھ کر بعض اوقات امت کے مخلص رہنما اور صحیح الفکر قائدین بھی مستقبل کے بارے میں اسی ناامیدی کا شکار ہونے لگتے ہیں۔ تجربات گواہ ہیں کہ ضمیر اور صداقت کے راستے سے بالکل مایوس ہونے کے بعد بسا اوقات اچھا خاصا شریف انسان بھی اپنے سابقہ کردار اور رویے سے منحرف ہوجاتا ہے۔ چنانچہ بعض مخلص مسلم رہنما بھی محض مایوسی کی انتہا کو پہنچنے کی وجہ سے اسلامیت کو کند ہتھیار تصور کرنے لگتے ہیں اور مغربیت میں نجات تلاش کرنا شروع کردیتے ہیں۔

## 5.2.5- امت کی شخصیت کو موم کی گڑیا بنادینا (تذويب شخصية الامة)

مغربیت، اہل ایمان کی شناخت کو بدل دینا اور ان کی شخصیت کو پگھلا کر موم کی گڑیا بنادینا چاہتی ہے تاکہ اسے اپنے حسب منشا سانچے میں ڈھال سکے۔ اس مقصد کے لیے امت پر ایسے فکری اور نظریاتی کیے حملے جارہے ہیں جن سے متاثر ہوکر ہم مغرب سے پوری طرح مرعوب ہوتے جارہے ہیں۔ مغرب سوشل سائنسز، عمرانیات، نفسیات، سیاسیات کے ہتھیاروں ذریعے ہماری اذہان کی زمین کھود رہا ہے۔ مسلم عوام ہی نہیں اہل علم اور خواص بھی بے سوچے سمجھے مغرب کے جدّت پسندانہ فلسفے اور خاص معنوں کی اصطلاحات کو اختیار کرتے جارہے ہیں۔ مغرب کے فکری حملے کا مقابلہ کرنے کی بجائے ہم خود سپردگی کا مظاہرہ کررہے ہیں اور صحیح معنوں میں موم کی گڑیا بنتے جارہے ہیں جسے حسبِ پسند کوئی بھی شکل دی جاسکتی ہے۔

### 5.2.6- ماڈرن ثقافت کا فروغ: طبیعاتی الدھریت یا

ہماری اسلامی شخصیت کو پگھلانے اور نرمانے کے بعد مغرب ہم سے مطالبہ کرتا ہے کہ ہم ایک آزاد معاشرہ تشکیل دیں جسے سول معاشرہ کہا جاتا ہے۔ چونکہ ہم مغربی افکار اور فلسفۂ حیات پر ایمان لے آئے ہیں اس لیے کسی تردد کے بغیر ہم معاشرے کو مغربی طرز پر ایک نئی ثقافت میں ڈھالنے کے لیے تیار ہو جاتے ہیں۔ پھر مسلمانوں جیسا چہرہ رہتا ہے نہ لباس۔ زبان اپنی رہتی ہے نہ رسم ورواج۔ دینی علوم کی طلب باقی رہتی ہے نہ شریعت کے نفاذ کا خیال۔ کیوں کہ سول معاشرے میں اسلام سمیت کسی مذہب کی بالادستی کا سوال پیدا نہیں ہوتا۔ یہ معاشرہ اباحیت، جنس پرستی، لذت طلبی، خودغرضی اور بخل وحسد جیسے جذبات کی پرورش کرتا ہے۔ اس میں شعائرِ اسلامیہ زندہ رہ سکتے ہیں نہ روح اسلامی۔

مغرب کی اندھی نقالی کرنے کے بعد مسلمانوں پر ''کوا چلا ہنس کی چال اپنی چال بھی بھول گیا'' کی کہاوت صادق آتی ہے۔ اہل مغرب کی وضع قطع اور چال ڈھال اپنا کر کوئی ذہین وفطین بن سکتا ہے نہ انگریزی فرفر بولنے سے کوئی علوم وفنون کا امام بن جاتا ہے۔ ہاں اس اندھا دھند نقالی سے ہم تین میں رہے نہ تیرہ میں۔ مغربی آقا اب بھی ہمیں مغربی ماننے سے انکاری ہیں، انہیں بہرحال ہر مسلمان میں ایک چھپا ہوا دہشت گرد نظر آتا ہے۔

### 5.2.7- اسلامی تحریکوں اور قیادتوں کو سبوتاژ کرنا:

چوں کہ اللہ کے دستور کے مطابق امت میں ایک طبقہ ایسا موجود چلا آرہا ہے جو کسی بھی حالت مایوس نہیں ہوتا اور ہر حال میں خالص اسلام کی سربلندی کے لیے پرعزم رہتا ہے اس لیے ماڈرن ازم کے نمائندے خالص اسلامی تحریکوں اور مخلص وبیدار قیادتوں کو ناکام کرنے کے لیے ایڑی چوٹی کا زور لگاتے ہیں۔ ان کے افکار کی تغلیط، لالچ یا دھمکیوں کے ذریعے انہیں جادۂ حق سے ہٹانے اور کردار کشی کر کے ان کی ساکھ خراب کرنے کا کوئی موقع ہاتھ سے جانے نہیں دیا جاتا۔ یہ کشمکش اس وقت پورے زوروں پر ہے اور ان شاء اللہ دشمن کو کبھی ایسی فتح نصیب نہیں ہوگی کہ امت رجال کار سے خالی ہو جائے، تا قیامت ایسے لوگ ہر دور میں رہیں گے جو دین حق کا علم

لیکر چلتے رہیں گے۔ نبی کریم ﷺ نے اس بارے میں پیش گوئی فرمائی ہے کہ:

''الجهاد ماضٍ الى يوم القيامة.''

امت کی تمام اُمیدیں اِس وقت اِنہی رجالِ کار پر مرکوز ہیں جو مدارس، مراکز سلوک واِحسان، دعوت وتبلیغ، ردِّ فتن، جہاد اور اسلامی صحافت کے مورچوں پر ڈٹے ہوئے ہیں اور زمانے کی سختیوں سے دلبرداشتہ ہوکر اپنے مشن سے پیچھے نہیں ہٹ رہے۔ ان کا مذاق ومزاج یہ ہے:

تندیٔ بادِ مخالف سے نہ گھبرا اے عقاب
یہ تو چلتی ہے تجھے اونچا اڑانے کے لیے

❀❀❀

# مراجع


- الغزو الفكري: دراسات في الثقافة الاسلامية، لجنة المناهج
- اساليب الغزو الفكري: علي محمد جريشه، محمد شريف الزبيق
- العلمانية: بندر بن محمد الرباح
- العلمانية: ڈاکٹر سفر بن عبد الرحمن الحوالی
- العلمانية نشاتها وتطورها: ڈاکٹر سفر بن عبد الرحمن الحوالی
- العلمانية وثمارها الخبيثة: محمد بن شاكر الشريف
- العلمانية والعولمة والازہر: ڈاکٹر کمال الدین عبد الغنی المرسی
- العلمانية في الاسلام: انعام احمد قدوح
- جذور العلمانية: ڈاکٹر سید احمد فرج
- مذاهب فكرية معاصرة: محمد بن قطب بن ابراهيم


❀❀❀

چھٹا باب

6

# نظریاتی جنگ کے وسائل وذرائع

# وسائل الغزو الفکری

# Resources *of* Ideological War

گزشتہ صفحات میں ہم نے پہلے باب میں الغزوالفکری کا تعارف اور دوسرے میں اس کی تاریخ پیش کی۔ تیسرے باب میں صلیبی جنگوں کا ذکر ہوا۔ چوتھے میں ان محاذوں کا جائزہ لیا گیا جن پر حق وباطل میں ''الغزوالفکری'' کے معرکے پوری شدت سے لڑے جارہے ہیں۔ یہ محاذ الاستشراق، الاستعمار، التنصیر، اور عالمگیریت کے ہیں۔ پانچویں باب میں دو فکری تحریکوں سیکولرازم اور ماڈرن ازم کے مکائد کا تجزیہ کیا گیا کیوں کہ یہ فکری تحریکیں تمام محاذوں پر لڑنے والی اسلام دشمن طاقتوں کا مشترکہ فلسفہ اور پیغام ہیں۔

اب ہم ان وسائل وذرائع اور ہتھیاروں کا جائزہ لیں گے جن کو ہمارے حریف مذکورہ تمام محاذوں پر استعمال کررہے ہیں، یہ اذہان کو تبدیل کرنے والی وہ لگامیں ہیں جو دشمن نے اپنے قبضے میں لے رکھی ہیں:

| | |
|---|---|
| ① نظام تعلیم | ② میڈیا |
| ③ معلومات کے ذرائع | ④ میدانِ سیاست |
| ⑤ قانون | ⑥ معیشت وتجارت |
| ⑦ رفاہی ادارے، این جی اوز | ⑧ جدت پسند اسلامی مفکرین |
| ⑨ فنون لطیفہ | ⑩ ادب |
| ⑪ کھیل کود اور تفریح | ⑫ ثقافتی ہیرو |
| ⑬ علاقائی تہذیب وثقافت | ⑭ جاہلی عصبیت کا فروغ |
| ⑮ مسلمانوں کو صالح قیادت سے متنفر کرنا | ⑯ آزادیٔ نسواں |

تعلیم کے ذریعے کس طرح مسلمانوں کے اذہان کو مسخر کیا جا رہا ہے؟

## 6.1- تعلیم

## (Education)

تعلیم اہل باطل کی فکری پیش قدمیوں کا سرچشمہ ہے۔ باطل نظریات کے فروغ میں نظام تعلیم اور نصابِ تعلیم کا بنیادی کردار ہے۔ اس وقت یہی نظام تعلیم تھوڑے بہت فرق کے ساتھ تمام مسلم ممالک میں رائج ہے۔

تعلیم کسی بھی قوم کی ترقی کی بنیاد ہوتی ہے، جس قوم کا نظام تعلیم قومی تقاضوں کے مطابق ہوگا وہ ترقی کرے گی اور جس قوم کے نظام تعلیم کو غیروں نے ترتیب دے کر اس سے قومی روح کو نکال دیا ہوگا وہ غیروں ہی کے تابع ہوگی۔ مغرب نے ہمارے تعلیمی نظام پر قبضہ کر کے اس روح کو نکال پھینکا ہے۔ عربی اور فارسی میں پڑھائے جانے والی دینی و عصری علوم کو دفن کر کے لارڈ میکالے کا نظام رائج کیا گیا اور آج تک وہی نظام ہم پر مسلط ہے۔

اسلام کا نظام تعلیم وحی کی بنیاد پر قائم ہوتا ہے۔ اسلامی معاشرے میں فکرِ آخرت کو فکرِ دنیا پر ترجیح دی جاتی ہے اس لیے آخرت کے لیے نفع بخش علوم ان علوم پر فوقیت رکھتے ہیں جو صرف دنیا میں فائدہ دیتے ہیں۔ اسی لیے اسلامی مملکت میں قرآن، حدیث اور فقہ کے ماہرین کا مقام سب بلند ہوتا ہے۔ مگر الغزو الفکری لڑنے والے ہمارے حریف ایسے نظام تعلیم متعارف کرا چکے ہیں جس میں اصل ترجیح دنیا کو دی گئی ہے۔ یہ نظامِ تعلیم اور اس کا نصاب، آخرت کی فکر اور وحی پر یقین سے خالی ہے۔ اس میں انہی علوم و فنون کی قدر و قیمت زیادہ ہے جو دنیوی مفادات، خدمات، سہولیات اور لذات کو ہمارے لیے زیادہ سے زیادہ مسخر کر سکیں اور ہمیں زیادہ سرمایہ فراہم کریں۔ اس لیے اس نظام تعلیم کے اثرات سے بے دین اذہان تیار ہو رہے ہیں جو دنیا سے آگے اور مرنے کے بعد کے بارے میں کچھ سوچنے کے قائل نہیں۔ یہی لوگ شعوری یا غیر شعوری طور پر دشمن کے خطرناک آلہ کار ثابت ہوتے ہیں۔

اس سلسلے میں انہوں نے تعلیم و نظام



## 6.1.1- اہم تبدیلیاں: میں کیا تبدیلیاں پیدا کی ہیں

اس نئے نظام تعلیم سے عالم اسلام کی درسگاہوں میں جو اہم تبدیلیاں سامنے آئیں وہ درج ذیل ہیں:

### تدریسی زبان کی تبدیلی:

تدریسی زبان (میڈیم) کو تبدیل کر دیا تا کہ مسلمان عربی یا مقامی زبان میں علم حاصل نہ کر سکیں حالانکہ یورپ کا ہر ملک اپنی زبان (جرمن، ڈچ، فرنچ وغیرہ) میں تعلیم دیتا ہے لیکن اسلامی ممالک میں استعماریوں نے اپنی اپنی زبانیں متعارف کرائیں اور مقامی زبان سے لوگوں کو دور کر دیا۔ جس کے نتیجے میں مسلمان طلبہ اپنے سابقہ علم و ادب کے خزانوں سے محروم ہو گئے۔

### رسم الخط کی تبدیلی:

مسلم دنیا کے کئی ملکوں میں رائج رسم الخط کو تبدیل کر دیا گیا مثلاً ترکی میں عربی رسم الخط تھا، اس کو تبدیل کر کے لاطینی رسم الخط کو رواج دیا گیا، جس کے نتیجہ میں ترکی کے مسلمان اپنے ماضی کے تمام لٹریچر سے منقطع ہو گئے اور لاکھوں انتہائی قیمتی اور مفید کتابیں جو عربی رسم الخط میں تھیں وہ بالکل بے وقعت ہو گئیں۔ یہ تجربہ کئی ممالک میں کیا گیا۔

### غیر ملکی زبانوں کو لازمی قرار دینا:

جدید تعلیم گاہوں میں غیر ملکی زبانوں خصوصاً انگلش کو لازمی قرار دے دیا گیا، جس کی وجہ سے مسلمان طلبہ کے وقت اور صلاحیتوں کا ایک بڑا حصہ زبان سیکھنے میں صرف ہو جاتا ہے اور وہ علمی اور فنی لحاظ سے زیادہ آگے نہیں بڑھ سکتے۔ اکثر طلبہ صرف الفاظ رٹ لیتے ہیں اور گہری علمیت سے محروم رہ جاتے ہیں۔ اس کے برعکس یورپی ممالک اور کئی ایشیائی ملکوں مثلاً جاپان اور چین وغیرہ میں شروع سے آخر تک ذریعہ تعلیم ان کی اپنی قومی زبان ہے۔ یہی وجہ ہے کہ جاپان کا ایک پانچ سالہ بچہ بھی ایک مشین کھول کر جوڑ سکتا ہے۔ ایسے بچے 18 سے 20 سال کی عمر میں پہنچ کر ایک ایک فن کے عملی ماہر ہو جاتے ہیں اور اپنے ملک اور قوم کی بہترین خدمت کر سکتے ہیں، جبکہ اسلامی ممالک میں ماسٹر ڈگریوں کے حامل بھی عموماً چند الفاظ رٹنے اور الٹی سیدھی انگلش بولنے

سے زیادہ کوئی قابلیت نہیں رکھتے۔ وہ سرکاری اداروں یا نجی کمپنیوں میں روبوٹ کی طرح کام تو کر سکتے ہیں مگر علم وفن میں کوئی اضافہ کرنے سے قاصر رہتے ہیں۔

### دین کا احترام ختم:

نظام تعلیم اور نصاب میں دین کے احترام کو نظر انداز کر دیا گیا ہے۔ دینی شعائر، شرعی احکام اور اسلامی معاشرت کو مذاق کا نشانہ بنا کر ان کی اہمیت دلوں سے نکال دی گئی ہے۔ اسلامی عقائد کی اہمیت کو اجاگر کرنے والا مواد خارج کر دیا گیا ہے۔

### لادینیت پر مبنی مواد کی شمولیت:

نصاب میں ایسا مواد شامل کیا گیا ہے جس سے اذہان میں لادینیت راسخ ہو جائے اور اسلامی معتقدات کی اہمیت دلوں سے ختم ہو جائے۔ لادینیت پر مبنی لٹریچر اور تعلیمات کی حوصلہ افزائی کی جاتی ہے۔

### علمائے دین اور طلبۂ دین کی تحقیر:

علمائے دین اور طلبۂ علوم دینیہ کی تحقیر کا کوئی موقع ہاتھ سے جانے نہیں دیا جاتا۔ اس طبقے کو ترقی کی راہ میں رکاوٹ اور تمام معاشرتی واقتصادی مسائل کی بنیاد باور کرایا جاتا ہے۔

### مدرسین کا چناؤ:

مدرسین میں ایسے لوگ منتخب کیے جاتے ہیں جو ان کے افکار ونظریات سے مطابقت رکھتے ہوں تاکہ ان کے عزائم مکروہ کی تکمیل میں معاون ثابت ہو سکیں۔ ایسے اساتذہ کو ترجیح دی جاتی ہے جن کا دینی ماحول سے کوئی تعلق نہ ہو۔

### مخلوط تعلیم:

مخلوط تعلیمی نظام کو فروغ دیا جاتا ہے (حالانکہ اس اختلاط سے تعلیمی سرگرمیوں میں کوئی اضافہ نہیں ہوتا بلکہ درجنوں مسائل پیدا ہوتے ہیں)

### دینی مدارس کے گرد گھیرا:

ماڈرن درسگاہوں کے فروغ کے ساتھ ساتھ حکومتی سطح پر دینی مدارس کے گرد گھیرا تنگ کیا

جاتا ہے، ان کی کردار کشی کی جاتی ہے، ان کے وسائلِ آمدن ختم کرنے کے لیے مخیر حضرات کو خوفزدہ اور بدنام کیا جاتا ہے۔ ان تمام امور میں میڈیا مغربی لابی کا بھرپور ساتھ دیتا ہے۔

## دینی مدارس اور عصری تعلیمی اداروں میں خلیج:

دینی اور عصری تعلیم گاہوں میں فاصلے بڑھانے کی کوشش کی جاتی ہے تاکہ دینی مدارس کے بارے میں پھیلائی گئی غلط فہمیاں دور نہ ہوسکیں اور جدید تعلیم یافتہ افراد کی علماء کرام سے اجنبیت باقی رہے۔ دین پڑھنے پڑھانے والوں کے بارے میں نسل نو کے دلوں میں پیدا کی گئی حقارت برقرار رہے۔

## 6.1.2- نئے نصاب تعلیم کی خصوصیات:

اسی طرح نصاب تعلیم کے اکثر مضامین کو اس انداز سے مرتب کیا جاتا ہے جس سے دینی ذہنیت کا صفایا ہوجائے۔ یہ خصوصیات مندرجہ ذیل ہیں:

## مغربی اقدار کا فروغ:

لسانیات، ادب، شاعری اور معاشرتی علوم میں ایسا تحریری وتصویری مواد شامل کیا گیا جس کے ذریعے مسلمان طلبہ مغربی کی بظاہر چمکدار تہذیب وثقافت کو اچھی طرح پڑھ اور سمجھ لیں اور اسی کو پسند کریں۔

## ملحدانہ ومادہ پرستانہ ذہن سازی:

یہ اہتمام کیا جاتا ہے کہ کسی لفظ سے خالق کا تصور نہ ابھرنے پائے اور کسی مسئلے سے مذہبی نقطۂ نظر کا اثبات نہ ہونے پائے۔ طلبہ سائنس ہی کو خیر وشر اور صدق وکذب کا معیار سمجھیں، مذہب ان کی نظر سے گر جائے اور ذہن مکمل طور پر مادہ پرست بن جائے۔

## تاریخ سے جاہل رکھنا، غلط تاریخ پڑھانا:

مسلمانوں کو ان کی شاندار تاریخ سے جاہل رکھا جاتا ہے۔ عظیم مسلم فاتحین، علماء، ادباء، شعراء اور سائنسدانوں کی جگہ مغربی شخصیات کو متعارف کرایا جاتا ہے۔ اسلامی تاریخ جیسے اہم مضمون کو اختیاری مضمون کی حیثیت دی گئی ہے۔ پھر جو اسلامی تاریخ پڑھائی جاتی ہے اسے غیر ملکی

داروں کے سند یافتہ، تلامذۂ مستشرقین نے مرتب کیا ہوتا ہے۔ یہ تاریخ اپنے موضوع سے نصاف نہیں کرتی۔ اس میں مسلم فاتحین تو کجا صحابہ کرام کو بھی تنقید کا نشانہ بنایا جاتا ہے جس سے لبہ اپنی تاریخ سے کچھ سیکھنے کی بجائے مزید گمراہ ہو جاتے ہیں۔ دنیا کی بڑی شخصیات کے تعارف یں یورپی مشاہیر کو خاص جگہ دی جاتی ہے اور انہیں پوری دنیا کے ہیرو بنا کر پیش کیا جاتا ہے تاکہ لبہ انہیں اپنا مقتدا اور آئیڈیل مان لیں۔ جارج واشنگٹن اور ایڈیسن کی عظمت کے ترانے گائے یا رہے ہیں۔ لنکن اور جناح کو ہم پلہ بنا دیا گیا ہے۔ ہمارے محترم شعراء بڑے پرسوز انداز میں وم کے نونہالوں کو نصیحت کرتے ہیں:

لنکن جیسے بن کے دکھاؤ تو جانیں ہم
کوئی چھپا ہو تم میں آخر قائدِ اعظم

## مغرب اور مغربی ایجنٹوں کے معائب اور زیادتیوں کو چھپانا:

تاریخ میں سے ہر ایسی بات کو حذف کر دیا جاتا ہے جس سے مغرب اور اس کے ایجنٹوں کا صل چہرہ سامنے آتا ہو۔ اہلِ مصر پر نپولین کے مظالم کو چھپا کر اسے فاتح اعظم بنا کر پیش کیا جا رہا ہے۔ ترک خلفاء کی ہنسی اڑائی گئی ہے اور کمال پاشا کو مسلمانوں کا نجات دہندہ بنا دیا گیا ہے۔ ندوستان پر انگریزوں کی زیادتیوں اور تقسیم ہند کے وقت ہندوؤں اور سکھوں کی غارت گری کو سابی کتب سے خارج کر کے انہیں مسلمانوں کا دوست بتایا جا رہا ہے۔

## سلامیات کو محض ایک نظری چیز بنا دینا:

پاکستان اور کئی مسلم ممالک بلکہ مغربی جامعات میں بھی اسلامیات ایک الگ مضمون کی حیثیت سے موجود ہے مگر درج ذیل حربوں کے ذریعے اس کو بے حیثیت کرنے میں کوئی کسر نہیں چھوڑی گئی:

الف) اسکولوں اور کالجوں کی سطح پر اسلامیات کا مضمون اتنا مختصر ہے کہ وہ ایک مسلمان کی ضرورت پوری نہیں کرتا۔

ب) جو نصاب ہے وہ بھی اکثر دلچسپی سے اور مکمل نہیں پڑھایا جاتا۔

ج) اسلامیات پڑھانے کے لیے اہل اور مناسب استاذ کی کوئی ضرورت نہیں سمجھی جاتی۔

اکثر غیر متدین بلکہ بے نمازی استاد یہ مضمون پڑھاتے ہیں۔ وہ سوائے عبارت پڑھا دینے کے اور کچھ نہیں کر سکتے۔ بعض اوقات ان کے عقائد تک پراگندہ ہوتے ہیں۔

(د) جو نصوصِ شرعیہ (آیات واحادیث) اسلام دشمن عناصر کے اہداف پر ضرب لگاتی اور ان کے خطرات سے مسلمانوں کو آگاہ کرتی ہیں، ان کو نصاب سے نکال دیا جاتا ہے۔ جہاد، اسلامی قانون، اسلامی سیاست اور کفار سے ترکِ دوستی کے شرعی احکام کو بالکل نہیں پڑھایا جاتا۔

(ہ) اگر نصاب میں ایسی نصوص باقی ہوں تو پڑھانے والے بدعقیدہ استاذ ان کی تاویل اپنی مرضی سے کرتے ہیں، مثلاً سورۂ توبہ کی آیات جہاد پڑھاتے ہوئے ان کی تاویل یوں کر دی جاتی ہے کہ یہ احکامات اُس زمانے کے لیے تھے، موجودہ زمانے سے اس کا کوئی تعلق نہیں ہے۔

ان حربوں کے ذریعے اسلامیات کو محض ایک نظری مضمون بنا دیا گیا ہے جس کا کوئی عملی نمونہ طلبہ کے سامنے نہیں ہوتا۔ اس طرح اسلامیات پڑھانے سے یہ نظریہ اور پختہ کر دیا جاتا ہے کہ دین کا کاروبارِ حیات اور عمل سے کوئی واسطہ نہیں۔

### جغرافیائی اور سیاسی تقسیمات پختہ تر:

طلبہ کے اذہان میں جغرافیائی اور سیاسی تقسیمات کو اتنا پختہ تر کر دیا جاتا ہے کہ وہ اپنے وطن سے باہر کے مسلمانوں کو اپنا سمجھنے اور ان پر اعتماد کرنے سے ہمیشہ کتراتے رہتے ہیں۔ حالاں کہ ایسی اکثر تقسیمات اور حد بندیاں گزشتہ ایک صدی کے اندر ہی وجود میں آئی ہیں۔ مگر اسلامی اخوت کے رشتوں کو کاٹنے کے لیے ہر مسلم ملک کی تہذیب کو الگ بتایا جاتا ہے اور باہمی فرق کو خوب نمایاں کیا جاتا ہے۔ اس طرح طلبہ کے ذہنوں میں چھوٹے چھوٹے ٹکڑوں اور علاقوں کی اہمیت ہر چیز سے زیادہ بیٹھ جاتی ہے۔

### 6.1.3- تعلیمی نظام کی باگ اپنے ہاتھ میں رکھنے کے لیے اقدامات:

مسلم دنیا کا تعلیمی نظام اپنے ہاتھ میں رکھنے اور اسے اپنی خواہشات کے مطابق بنانے کے

لیے بڑی طاقتوں اور اسلام دشمن عناصر نے مندرجہ ذیل اقدامات کیے ہیں:

## عالمی سطح پر علمی وثقافتی اداروں کا قیام:

عالمی سطح پر بڑے بڑے علمی وثقافتی ادارے قائم کر دیے گئے ہیں جن میں اقوام متحدہ کے ذیلی ادارے یونیسکو (Unesco) اور یونی سیف (Unicef) سب سے زیادہ مؤثر ہیں۔ یہ ادارے عالم اسلام میں نئے تعلیمی ادارے بنا کر، ان کے قیام میں بھرپور تعاون کر کے یا پہلے سے قائم شدہ اداروں کو مالی امداد دے کر مسلم دنیا کے تعلیمی شعبے میں اپنا اثر ورسوخ قائم کر لیتے ہیں۔ ان کے قائم کردہ یا ان سے مدد لینے والے تمام تعلیمی ادارے اپنی پالیسیوں میں ان کے محتاج ہوتے ہیں اور وہ ان پالیسیوں کے ذریعے ایسی ثقافت کو فروغ دیتے ہیں جن سے مسلمان مسلمان نہ رہیں۔

## ٹیچر ٹریننگ کورس:

مدرسین اور معلمین کو اپنے ڈھب پر لانے کے لیے تعلیمی تربیت دینے والے مشہور غیر ملکی اداروں اور مختلف این جی اوز کے تعاون سے اسلامی ممالک میں ٹیچر ٹریننگ کورس کروائے جاتے ہیں جن میں یہ بات ذہن نشین کرادی جاتی ہے کہ تعلیم میں مذہب کا کوئی دخل نہیں ہونا چاہیے۔ اس طرح انہیں سیکولرازم، ماڈرن ازم اور روشن خیالی کی تعلیم دے کر قوم کے نونہالوں کو دین سے برگشتہ کرنے کا اہل بنا دیا جاتا ہے۔

## تعلیمی شعبے میں غیر ملکی امداد:

تعلیمی شعبے پر اپنے اثرات کو برقرار رکھنے کا بنیادی حربہ تعلیمی امور میں غیر ملکی امداد ہے جو اقوام متحدہ کے ذیلی اداروں کے علاوہ ترقی یافتہ ملکوں کی طرف سے براہ راست بھی دے دی جاتی ہے۔ اس تعاون کو ایسی شرائط سے مشروط کیا جاتا ہے جن کے نفاذ سے تعلیمی شعبے میں مذہبی اور قومی اثرات ختم ہو جاتے ہیں۔

## غیر ملکی ماہرین تعلیم کی اجارہ داری:

غیر ملکی طاقتیں عالم اسلام کے اکثر وبیشتر ممالک کے ساتھ دوستی اور تعاون کے نام پر تعلیمی شعبے کی سرپرستی کا ڈھونگ رچاتی ہیں، مسلم ممالک کی وزارتِ تعلیم میں اپنے ماہرین تعلیم داخل

کر دیتی ہیں۔ عموماً ان کی حیثیت اعزازی مشیروں کی ہوتی ہے مگر وہ تعلیمی پالیسی پر کسی وزیر سے بھی زیادہ اثر انداز ہوتے ہیں۔

## غیر ملکی مدرسین اور دانشوروں کے اثرات:

مسلم ملکوں کی وزارتِ تعلیم سے بیرونی حکومتوں کے گہرے تعلقات قائم ہونے کے بعد مسلم جامعات کے منتظمین اور مدرسین کا بھی غیر ملکی تعلیمی شعبے کے غیر ملکی ماہرین اور مدرسین کے ساتھ بڑا گہرا تعلق ہو جاتا ہے۔ آپس میں روابط کے تحت نظام تعلیم اور نصاب میں زیادہ سے زیادہ یکسانیت اختیار کی جاتی ہے۔ مشترکہ پروگرام انجام پاتے ہیں۔ اکثر اداروں میں غیر ملکی مدرسین کو ملکی مدرسین پر ترجیح دی جاتی ہے۔ یہ غیر ملکی مدرسین یورپ اور امریکا کی بہترین تنخواہوں اور اعلیٰ مراعات کو چھوڑ کر صرف اس لیے یہاں آتے ہیں تاکہ مسلم قوم کی نسل نو کو اپنا بنا سکیں۔ وہ اپنی ثقافت اور عادات و اطوار مسلمان طلبہ میں منتقل کرتے ہیں جس کے بعد یہ بچے غیر شعوری طور پر اپنی صلاحیتیں عالم اسلام کے حق میں استعمال کرنے کی بجائے غیر مسلموں کے لیے استعمال کرنے لگتے ہیں۔

## تعلیمی اسکالرشپس:

اگرچہ مسلم ممالک میں رائج مغربی نظامِ تعلیم، طلبہ کو بگاڑنے میں کچھ کم ثابت نہیں ہوا ہے مگر اس کے باوجود زیادہ ذہین طلبہ کی ذہنی تخریب کے لیے اسے کافی نہیں سمجھا جاتا۔ کیوں کہ یہ احتمال باقی ہے کہ اپنے ملکی ماحول میں پڑھنے کی وجہ سے انہیں کچھ نہ کچھ اسلام کا درس ملتا رہا ہوگا۔ کم از کم وہ جمعہ اور عیدین کے مواقع پر مسلمانوں کے ساتھ اجتماعی عمل میں شریک ہو کر دینی ماحول کا کسی قدر اثر لیتے رہتے ہیں لہٰذا انہیں مکمل طور پر مغربی سانچے میں ڈھالنے کے لیے خالص بے دین ماحول دیا جاتا ہے اور اس مقصد کے لیے انہیں سکالرشپ دے کر یورپ اور امریکا کی درسگاہوں میں بھیج دیا جاتا ہے۔ وہاں سالہا سال پڑھنے کے بعد اکثر مسلم طلبہ دینی اور اخلاقی لحاظ سے بالکل خالی ہو جاتے ہیں۔ انہیں خود کو مسلمان کہلانے پر شرم آنے لگتی ہے۔

اس ذہنیت کے ساتھ بہت سے طلبہ مغرب ہی میں بس جاتے ہیں، اس طرح مسلم دنیا ان کی

فنی لیاقت اور صلاحیت سے محروم رہ جاتی ہے اور مغرب کو نئے قابل ملازم میسر آجاتے ہیں۔ جو طلبہ واپس آتے ہیں وہ معاشرے میں بے دینی کے اثرات پھیلانے میں کوئی کسر نہیں چھوڑتے۔ مغربی جامعات کی اسناد کی وجہ سے وہ بہت جلد اعلیٰ عہدوں پر تعینات ہوجاتے ہیں اور اپنے اثر ورسوخ کو سیکولر نظام کے فروغ میں صرف کرتے ہیں۔

### 6.1.4- سیکولر نظام تعلیم کے اثرات:

سیکولر نظام تعلیم نے درسگاہوں میں تیار ہونے والی نسل پر جو تباہ کن اثرات ڈالے ہیں ان کی ایک جھلک یہ ہے:

① ہمارے طلبہ برائے نام مسلمان رہ گئے۔ وہ اسلام کے بنیادی اصول اور عقائد تک نہیں جانتے۔

② نوجوان علم دین سے متنفر ہوگئے۔

③ علمِ دنیا اور علم دین کے راستے الگ الگ ہوگئے ہیں۔ ان کے درمیان اتنی گہری خلیج پیدا ہوگئی ہے کہ دونوں کو ایک دوسرے کا حریف تصور کیا جانے لگا ہے۔ (اگر نظام تعلیم دین دار افراد کے ہاتھ میں ہوتا تو یہ حریفانہ صورتحال پیدا نہ ہوتی۔)

④ مسلم ملکوں کے حکمران اور ارباب اقتدار دن بدن دینی مفکرین اور قائدین سے دور ہوتے جارہے ہیں۔

⑤ مسلمان اپنے ماضی سے بے خبر، اپنی تاریخ سے برگشتہ اور اپنے آباؤ واجداد کی علمی وراثت سے قطعاً بیگانہ ہوگئے ہیں۔

⑥ علمی، تمدنی اور سیاسی قیادت علمانیوں کے پاس چلی گئی ہے۔

⑦ دین اور اہل دین کا سرعام مذاق اڑانا معمول بن گیا ہے۔

⑧ نسلِ نو میں احساسِ کمتری گہرا ہورہا ہے اور وہ ذہنی طور پر مغرب کے غلام بنتے جارہے ہیں۔

## 6.2- میڈیا (Media):

میڈیا ہر محاذ پر حریف کا سب زیادہ خطرناک اور مؤثر ہتھیار ہے، کسی ملک کے باشندوں کا

ذہن وہی سوچتا ہے جو میڈیا چاہتا ہے۔ میڈیا پر جس نظریے کے لوگوں کا غلبہ ہوتا ہے، عوام اسی ذہن کو اختیار کر لیتے ہیں۔

صدیوں تک میڈیا صرف نظم و نثر اور تقاریر وغیرہ تک محدود رہا۔ اس وقت بھی دنیا میں وہی ذہنیت پھیلتی تھی جو اصحابِ قلم و اربابِ سخن کی ہوا کرتی تھی، البتہ اس میں کچھ وقت لگتا تھا۔

میڈیا کی اس ابتدائی شکل یعنی نظم و نثر کے دور میں مسلمان بھی باطل قوتوں کے ہم پلہ تھے اور ان ہتھیاروں کو مؤثر طور پر استعمال کرتے تھے، لیکن گزشتہ دو صدیوں سے مسلمان مسلسل پیچھے ہٹ رہے ہیں۔ پرنٹ میڈیا کا آغاز یورپ میں تقریباً چار سو سال قبل ہو چکا تھا۔ سترہویں صدی عیسوی کے دوران یورپ میں اخبار چھپنے لگا تھا، اس سے پہلے 1454 میں جرمنی میں پریس ایجاد ہو چکا تھا۔ انیسویں صدی میں لیتھو پر طباعت ہونے لگی۔ ہر ہر شہر سے اخبار، رسائل اور جرائد نکلنے لگے۔ اسی دوران ٹیلے گراف اور پھر ریڈیو ایجاد ہوا اور استعماری طاقتوں نے اپنی آواز گھر گھر پہنچانا شروع کر دی۔ بیسویں صدی کے آغاز میں سینما چل نکلا اور چند عشروں بعد ٹیلی وژن کی ایجاد نے ناظرین کو مسحور کرنا شروع کر دیا۔ ریڈیو سے صرف آواز سنائی دیتی تھی اس لیے تاثر اتنا قوی نہیں ہوتا تھا، مگر ٹی وی سچ مچ ایک جادو ثابت ہوا۔ اس کے بعد ویڈیو کیسٹز، وی سی آر، ڈش اور کیبل ایک بلا کی طرح پھیل گئے۔ اکیسویں صدی کے آغاز میں ایک طرف نجی ٹی وی چینلز کا طوفان آ گیا اور دوسری طرف سی ڈی، کمپیوٹر، موبائل اور انٹرنیٹ گویا ہر شخص کی ضرورت بن گئے۔

فی زمانہ 20 فیصد جنگ میدانوں میں لڑی جاتی ہے اور 80 فیصد میڈیا کے ذریعے۔ کیونکہ ہر جنگ مضبوط اعصاب کے بل بوتے پر لڑی جاتی ہے، جب اعصاب ہی ساتھ نہ دیں اور دل و دماغ شل ہو جائیں تو بڑی سے بڑی طاقتور فوج بھی میدان سے بھاگ جاتی ہے۔ ہمارا حریف میڈیا کے ذریعے ہمارے اعصاب پر حملہ آور ہے اور ہمیں عمومی طور پر مایوسی، کم ہمتی اور کج فکری کا شکار بنا رہا ہے۔

میڈیا کے ذریعے کوئی حملہ براہِ راست الزام تراشی اور کردار کشی کر کے نہیں کیا جاتا بلکہ عبارتی سمعی و بصری مواد بظاہر بالکل غیر جانبدارانہ اور معروضی انداز میں پیش کیا جاتا ہے مگر اس

مواد سے لوگوں کی عقلیں وہی نتیجہ نکالتی ہیں جو اہل باطل چاہتے ہیں۔ وہ اپنے پروگرام اس قدر پرکشش انداز میں پیش کرتے ہیں کہ انسان کی عقل ماؤف ہوکر رہ جاتی ہے اور اسی دوران اپنا مقصد اور پیغام غیر محسوس انداز میں ذہنوں میں منتقل کر دیتے ہیں۔

ایک رپورٹ کے مطابق آج کل ریڈیو اور ٹی وی پروگراموں میں 40 فیصد وقت ناچ گانے پر خرچ کیا جاتا ہے، ڈرامے، موسیقی اور کھیل کود کے لیے 30 فیصد وقت مختص ہے۔ 10 فیصد وقت خبروں کے لیے مختص ہے، 15 فی صد اشتہارات کے لیے اور پانچ فی صد دینی پروگراموں کے لیے۔ غرض ریڈیو اور ٹی وی وغیرہ پر تقریباً 85 فیصد وقت محض حرام، لغو اور فضول امور کے لیے مختص ہے۔

عورتوں میں بے حیائی عام کرنے کے لیے مقابلۂ حسن اور فینسی ڈریس شوز منعقد ہوتے ہیں تو دوسری طرف بچوں کے ذہنوں کو متاثر کرنے کے لیے کارٹون، کامک بکز، فلمیں اور وڈیو گیم ہیں۔ گمراہی کو فروغ دینے کے لیے فلم اسٹارز کو طرح طرح کے ایوارڈز دیے جاتے ہیں۔ فضول کھیل کود عام کرنے کے لیے کھلاڑیوں میں بڑی بڑی انعامی رقمیں، ایوارڈز اور تمغے تقسیم ہوتے ہیں۔ میڈیا ان تمام چیزوں کی تشہیر کر کے لوگوں کے لیے انہیں پرکشش بناتا اور انہیں اس طرف کھینچتا ہے۔

### 6.2.1- لوگوں کی دو قسمیں اور میڈیا کا شبہاتی اور شہوانی جال:

میڈیا نے لوگوں کو قابو میں رکھنے کے لیے ان کی نفسیات کا گہرا جائزہ لیا ہے جس سے یہ بات سامنے آئی ہے کہ لوگوں کی دو قسمیں ہیں:

(الف) ذمہ دار لوگ (ب) غیر ذمہ دار لوگ

ذمہ دار لوگوں کو شبہات کے ذریعے پھانسا جاتا ہے۔

غیر ذمہ دار افراد کو شہوات میں ڈبویا جاتا ہے۔

چونکہ ذمہ دار لوگ معاشرے کے دیے ہوئے اخلاقی ضابطوں کے قائل ہوتے ہیں، اپنی ذمہ داریاں محسوس کرتے ہیں اور ان کو پورا کرنے کے لیے گردوپیش اور حال و مستقبل سے باخبر

رہنا چاہتے ہیں اس لیے میڈیا نے ان کے لیے خبروں (News) کا شعبہ قائم کر رکھا ہے جس میں تازہ بتازہ خبریں، تبصرے، اداریے، کالم، مضامین اور فیچر دیے جاتے ہیں۔ ٹی وی چینلز کی آمد کے بعد ٹاک شوز کے اینکرز اور تجزیہ کاروں کی باتوں کو بڑے غور سے سنا جاتا ہے۔ مگر ان تمام خبروں اور تبصروں کا اگر حاصل دیکھا جائے تو امکانات اور ابہامات کے سوا کچھ نہیں۔ اخبار پڑھنے اور ٹی وی دیکھنے سے کوئی یقینی علم یا خبر کبھی حاصل نہیں ہوتی بلکہ شبہات اور وساوس میں اضافہ ہی ہوتا ہے۔ اگر خبروں سے واقعی کوئی یقینی شے اخذ کرنا چاہتا ہے تو اسے روزانہ درجنوں اموات کی خبروں سے اپنی موت کی تیاری کی فکر لاحق ہونی چاہیے اور حکمرانوں کے تخت الٹتے دیکھ کر جاہ و مناصب کی محبت سے دست کش ہو جانا چاہیے مگر نتیجہ اس کے الٹ ہی نکلتا ہے، کیوں کہ ایک خبر کے بعد دوسری خبر اس قدر سرعت اور کشش کے ساتھ سامنے آتی رہتی ہے کہ تفکر کا سوال ہی پیدا نہیں ہوتا۔ ذہن صرف پڑھتا، دیکھتا اور سنتا چلا جاتا ہے اور پہلے سے زیادہ سُن ہو جاتا ہے۔ اس طرح ذمہ دار اور بیدار لوگوں کو خبروں کے ذریعے شکی اور وہمی بنا دیا جاتا ہے۔

رہے غیر ذمہ دار لوگ جن کے سامنے زندگی کا کوئی مقصد نہیں ہوتا اور جو محض موج مستی میں وقت گزارنا چاہتے ہیں انہیں بہلانے کے لئے تفریحی شعبہ قائم کیا گیا ہے، جسے (Entertainment) کہا جاتا ہے۔ اس میں موسیقی، رقص، مزاح اور دیگر دلچسپیوں کے پروگرام ترتیب دیے جاتے ہیں۔ فلموں اور ڈراموں کا بھی اسی شعبے سے تعلق ہے۔ حقیقت میں یہ تفریح کے نام پر شہوتوں کا ایک سیلاب ہے جسے کنارے سے دیکھنے والا بھی اس میں ڈوب کر رہتا ہے اور دین تو کجا دنیا کے بھلے برے سے بھی غافل ہو جاتا ہے۔

آج کل فلموں سے خبروں کی مانند پروپیگنڈے کا کام بھی لیا جا رہا ہے۔ مثلاً "Escape from Taliban" (طالبان سے فرار) نامی ایک فلم بنائی گئی جس کی کہانی سراسر خلافِ حقیقت تھی مگر اس میں ایسے ایسے مناظر دکھائے گئے کہ دیکھنے والا طالبان سے نفرت کیے بغیر نہیں رہ سکتا۔ اسی طرح پاکستان میں ریلیز ہونے والی فلموں "خدا کے لیے" اور "بول" میں بھی دین دار مسلمانوں اور مجاہدین کی کردار کشی کرتے ہوئے مذہبی اقدار اور اسلامی احکام کا مذاق اڑایا گیا، لیکن فلموں کا انداز

ایسا مسحور کن تھا کہ لاکھوں افراد انہیں دیکھ کر گمراہ ہوئے۔ ہمیں اس صورتحال کا تدارک کرنا ہوگا۔

## 6.2.2- امریکی میڈیا:

امریکی میڈیا کتنی وسعت رکھتا ہے، اس کا اندازہ اخبار و جرائد کی تعدادِ اشاعت سے ہوسکتا ہے۔ روزناموں میں نیویارک ٹائمز 17 لاکھ، ڈیلی نیوز 10 لاکھ اور وال اسٹریٹ جنرل 7 لاکھ تک چھپتے ہیں۔ میگزینوں میں ریڈرز ڈائجسٹ کی اشاعت اڑھائی کروڑ اور نیشنل جیوگرافی کی ڈیڑھ کروڑ سے متجاوز ہے۔ اس کے علاوہ ''نیوز ویک'' بھی امریکہ کے مقبول ترین جرائد میں شامل ہے۔ ہالی وڈ کی فلمیں پوری دنیا میں سب سے زیادہ دیکھی جاتی ہیں۔ دنیا بھر کی اکثر انگریزی فلمیں یہاں تیار ہوتی ہیں۔

اس وقت امریکا میں 1100 ٹی وی چینل چل رہے ہیں۔ ٹی وی چینلوں میں ''این بی سی''، ''اے بی سی'' اور ''سی این این'' عالمی سطح پر مقبول ہیں۔ ''سی این این'' کے ایڈیٹر کا کہنا ہے:

''جب ناظرین ٹی وی اسکرین کے ایک کونے میں LIVE (براہِ راست) لکھا ہوا دیکھتے ہیں تو وہ تھوڑی دیر کے لیے چینل بدلنا روک دیتے ہیں اور غور سے ہمارے چینل پر پیش کی جانے والی رپورٹ دیکھنے لگتے ہیں، قبل اس کے انہیں سُستی آجائے ہم دوسری براہِ راست رپورٹ پیش کرنا شروع کر دیتے ہیں۔''

مسلسل ٹی وی دیکھنے والا شخص اپنی عقل و بصیرت کو پرے رکھ کر پروگراموں ہی کے تبصروں اور تجزیوں میں کھو جاتا ہے اور ان میں پیش کیے گئے ہر پیغام کو جذب کرتا چلا جاتا ہے۔

## 6.2.3- یہودی لابی اور میڈیا:

اس وقت دنیا میں سب سے مقبول اور معیاری سمجھی جانے والی اکثر خبر رساں ایجنسیاں یہودیوں کی ہیں، کوئی مسلم ملک ابھی تک بی بی سی (BBC) کی ٹکر کا نشریاتی ادارہ قائم نہیں کر سکا، چنانچہ ہم معلومات کے تمام ذرائع میں اغیار کے دست نگر ہیں۔ ان ہی کی دی ہوئی خبریں سنتے ہیں اور وہ جس خبر کو جس انداز میں چاہتے ہیں پیش کرتے ہیں۔ سچ کو جھوٹ اور جھوٹ کو سچ بنانا ان کا بائیں ہاتھ کا کام ہے۔

اس وقت دنیا میں میڈیا پر یہودیوں کی اجارہ داری قائم ہے۔ ان کے مشہورِ زمانہ پروٹوکولز میں سے بارہویں پروٹوکول میں یہ طے کرلیا گیا تھا کہ دنیا میں خبروں کے تمام ذرائع یہود کے پاس ہوں گے۔ میڈیا پر مکمل قبضے کے لیے انہوں نے مندرجہ ذیل اہداف مقرر کیے تھے:

① کوئی خبر ہماری نگاہوں سے گزرے بغیر دنیا تک نہ پہنچے۔

② ہم مختلف گروہوں کی حمایت یا مخالفت کریں گے۔

③ لوگوں کے جذبات ہمارے ہاتھ میں ہوں گے، ہم جس کو جس طرح چاہیں گے استعمال کریں گے اور ہماری انگلیاں رائے عامہ کی نبض پر ہوں گی۔

④ ہم بدکردار یا بکنے والے صحافیوں کی سرپرستی کریں گے۔

⑤ ہم جس لیڈر کو اوپر لانا چاہیں وہی آگے آئے گا اور جس کو ذلت میں مبتلاء کرنا چاہیں وہ ذلیل ہوگا۔

⑥ واقعہ خواہ کیسا ہی ہو دنیا اسے اس رنگ میں دیکھے گی جس رنگ میں ہم چاہیں گے۔

اس کام کی تکمیل کے لیے یہودیوں نے دنیا بھر کی خبر رساں ایجنسیاں اپنے ہاتھ میں لے لیں جن میں سے رائٹرز، ایسوسی ایٹڈ پریس، یونائیٹڈ پریس اور فرانسیسی نیوز ایجنسی زیادہ مشہور ہیں۔

## رائٹرز: (Reuters)

یہ یہودیوں کی سب سے مشہور خبر رساں ایجنسی ہے جس کا بانی جولیس رائٹر تھا۔ یہ 1816ء میں جرمنی کے ایک یہودی خاندان میں پیدا ہوا، اس نے ابتداء میں دنیا کی معاشی سرگرمیوں اور بینکوں کی مصروفیات کی خبریں حاصل کر کے بینکوں کو فروخت کرنے کا سلسلہ شروع کیا اور بھاری معاوضوں پر خبریں فروخت کرنے لگا۔ رفتہ رفتہ اس نے اقتصادیات کی خبروں کے علاوہ سیاست، جنگ، صحت، کھیل اور دیگر تمام شعبہائے زندگی کی خبریں حاصل کر کے اخبارات کو فروخت کرنا شروع کر دیں۔ کہا جاتا ہے کہ 1858ء میں اس ادارے نے اس وقت تیز ترین خبر رسانی کا عالمی ریکارڈ قائم کیا جب فرانس کے حکمران نپولین سوئم کی تقریر ایک گھنٹے کے اندر اندر ساری دنیا میں پہنچا دی گئی۔ ''رائٹر'' برطانیہ، آسٹریلیا اور نیوزلینڈ کے ذرائع ابلاغ کو سب سے زیادہ خبریں فراہم کرتی ہے۔

اس وقت ''رائٹرز'' کے 15 سو کے لگ بھگ ایڈیٹر ہیں۔ 100 کے قریب اخباری مراکز ہیں۔ 150 ملکوں کے اخبارات اس ایجنسی سے خبریں لیتے ہیں۔ یہ ایجنسی 48 زبانوں میں مواد فراہم کرتی ہے۔ روزانہ تقریباً 20 سے 25 لاکھ الفاظ اس ادارے کے ذریعے دنیا تک پہنچتے ہیں۔

## ایسوسی ایٹڈ پریس:

امریکا کے پانچ بڑے روزناموں نے یہ سوچا کہ ہم دوسروں سے خبریں خریدنے کی بجائے اپنی خبریں خود تلاش کر کے نشر کریں، لہٰذا اس مشن کی تکمیل کے لیے وہ یک جا ہو گئے اور یوں 1848ء میں ایسوسی ایٹڈ پریس نامی خبر رساں ایجنسی وجود میں آئی۔ اس وقت اس ایجنسی میں 90 فیصد یہودی ہیں جو 90 ممالک کو خبریں دیتے ہیں۔

3997 ریڈیو اور ٹی وی چینلز اس سے خبریں لیتے ہیں۔ امریکا سے باہر اس کے 9536 مراکز ہیں اور اس کے ذریعے دنیا کو روزانہ ایک کروڑ 17 لاکھ الفاظ پہنچتے ہیں۔

## یونائیٹڈ پریس انٹرنیشنل:

یہ 1907ء میں قائم ہوا۔ یہ بھی یہودی سرمایہ کاروں کے ماتحت چل رہا ہے۔ امریکا میں 11 سو 34 روزناموں، پبلشنگ اداروں اور 3 ہزار 6 سو 99 ریڈیو اسٹیشنوں کو خبریں مہیا کر رہا ہے۔ پوری دنیا میں اس ایجنسی کے ایک سو 77 مراکز ہیں، امریکا میں اس کے 96 اور امریکا سے باہر 578 دفاتر کام کرتے ہیں۔ 1245 ایڈیٹر اور سینکڑوں نامہ نگار اس سے وابستہ ہیں۔ یہ ادارہ روزانہ ایک کروڑ 80 لاکھ الفاظ دنیا میں بھیج رہا ہے۔

## فرانسیسی نیوز ایجنسی:

ویسے تو فرانس میں یہودیوں کی تعداد بہت کم ہے لیکن میڈیا پر 85 فیصد یہودی قابض ہیں۔ فرانسیسی نیوز ایجنسی بھی ان کے ہاتھ میں ہے جو 42 زبانوں میں خبریں نشر کرتی ہے۔ اس کے تحت 3 نیوز ایجنسیاں کام کر رہی ہیں اور یہ روزانہ 33442 الفاظ کی خبریں دنیا میں بھیجتی ہے۔

(مغربی میڈیا اور اس کے اثرات، ص: 113)

غرض اس وقت اکثر عالمی خبریں ہم تک یہودیوں کے ذریعے پہنچتی ہیں، دنیا بھر میں میڈیا

پر یہودی سرمایہ داروں کی اجارہ داری کا تناسب 90 فیصد تک ہے۔ بی بی سی (BBC) کو ابتداء میں قائم کرنے والے اگرچہ یہودی نہیں تھے، لیکن گزشتہ پچاس سال سے اس کے سربراہ مسلسل یہودی چلے آرہے ہیں۔ پچھلی ایک صدی میں جہاں بھی میڈیا کا کوئی مؤثر عالمی ادارہ قائم ہوا یہودیوں نے اسے اپنے قبضے میں لے لیا۔ لندن کا مشہور اخبار ''لندن ٹائمز'' 1780ء سے نکل رہا ہے لیکن 50 سال پہلے ایک یہودی سرمایہ دار نے اس کو خرید لیا۔ اسی طرح برطانیہ کے سنڈے ٹائم، ویک اینڈ، سٹی میگزین وغیرہ سب یہودیوں کے قبضے میں ہیں۔

امریکا میں بھی یہود نے پرنٹ اور الیکٹرانک میڈیا کے ہر مقبول ادارے کو خرید لیا ہے۔ اس مہم کا آغاز 1897ء ہی سے کر دیا گیا تھا۔ اس وقت امریکا کے چند مفکرین نے یہودیوں کے اس طرزِ عمل پر احتجاج کیا۔ مگر نتیجہ یہ نکلا کہ جس اخبار میں یہ احتجاجی بیان چھپا تھا، یہودیوں نے اس اخبار کو بند کرا دیا۔ چنانچہ امریکی میڈیا جس کی بنیاد سرمایہ دارانہ نظام پر ہے، گزشتہ پانچ چھ عشروں سے یہودیوں کا خاص آلۂ کار ہے۔

امریکی نشریاتی وخبر رساں اداروں کے مالکان کی کچھ خاص پالیسیاں ہیں۔ دنیا میں جو بھی واقعات رونما ہوں ان کو انہی پالیسوں کو سامنے رکھ کر ایک خاص انداز سے پیش کیا جاتا ہے۔ خواہ رائے عامہ ان کے حق میں ہو یا مخالف۔ ان خاص پالیسیوں میں تین باتیں بہت اہم ہیں:

(1) مسیحی اور یہودی اتحاد پر زد نہیں پڑنے دی جائے گی۔

(2) امریکی سیاست کی ہمیشہ باعظمت ترجمانی ہوتی رہے گی۔

(3) سرمایہ دارانہ اقتصادی نظام کی ہمیشہ وکالت ہوگی اور ہمیشہ سرمایہ داری کی حمایت کی جائیگی۔

امریکا اسلام کے خلاف یکدم کھڑا نہیں ہوا بلکہ اس کو یہودی میڈیا نے تدریجاً استعمال کیا ہے۔ ورلڈ ٹریڈ سینٹر پر حملے کے بعد اسی میڈیا نے دنیا کو مسلمانوں کے خلاف آگ بگولا کر دیا اور زہریلے پروپیگنڈے کے ذریعے دنیا میں یہ ثابت کر دیا کہ مسلمان دہشت گرد لوگ ہیں، اس طرح دیکھتے ہی دیکھتے لوگ کسی ثبوت کے بغیر طالبان اور القاعدہ کے خلاف ہو گئے۔

میڈیا پر اسی یہودی اجارہ داری کے سبب ہولوکاسٹ (Holocast) کو خواہی نہ خواہی سچ

منوایا جارہا ہے۔ ہولوکاسٹ سے مراد (یہودیوں کے دعوے کے مطابق) دوسری جنگ عظیم میں جرمنی میں 50 لاکھ یہودیوں کا قتل عام ہے لیکن تحقیق سے اس دعوے کی نفی ہوچکی ہے کیوں کہ اتنے یہودی تو جرمنی میں آباد ہی نہیں تھے۔ مگر یہودی ہولوکاسٹ کی تردید میں کوئی تحقیقی رپورٹ میڈیا پر نہیں آنے دیتے۔ کچھ ویب سائٹس نے اس جھوٹے پروپیگنڈے کا پردہ چاک کرنا چاہا تو اُن کو بند کروادیا گیا۔

فلسطین میں 60 یہودی ایک بم دھماکے میں ہلاک ہوئے تو ایک ہفتہ کے اندر اندر تمام عالمی ذرائع ابلاغ نے آسمان سر پر اٹھالیا لیکن انہی عالمی ذرائع ابلاغ نے اقوام متحدہ کی جانب سے عراق کو خوراک اور ادویات کی فراہمی پر پابندیوں کی وجہ سے سسک سسک کر جاں بحق ہونے والے 6 لاکھ عراقی بچوں پر کسی ردِعمل کا اظہار نہ کیا۔

## 6.2.4- میڈیا کا قیادت ساز کردار:

میڈیا پر قبضے کے بعد اسلام دشمن طاقتوں کے لیے یہ آسان ہوجاتا ہے کہ وہ اپنی من پسند قیادتوں کو کسی مملکت پر مسلط کرسکیں، میڈیا کے ذریعے وہ جس کو چاہیں قائد بنا کر پیش کریں اور جس کو چاہیں قیادت سے بدنام کر کے سیاسی منظرنامے سے ہٹادیں۔ اس کا نتیجہ یہ نکلتا ہے کہ مسلمانوں کے حقیقی، مخلص اور اہل نمائندے سیاسی میدان میں پیچھے رہ جاتے ہیں اور مصنوعی قائدین سامنے آجاتے ہیں۔

جیسے مصطفی کمال اتاترک جیسے جعلی قائد کو میڈیا ہی کے ذریعے دنیا بھر میں پذیرائی دلوائی گئی حتیٰ کہ ابوالکلام آزاد نے بھی اپنے رسالہ الہلال میں مغربی میڈیا سے متاثر ہو کر جگہ جگہ اس کی تعریف کی ہے، کیونکہ ان کے پاس پہنچنے والی معلومات کا ذریعہ غیر ملکی میڈیا ہی تھا۔ یہی مثال لبنان کے شیعہ لیڈر حسن نصراللہ کی ہے جسے مغربی میڈیا نے پوری دنیا میں عرب مسلمانوں کا لیڈر مشہور کردیا حالانکہ خود لبنان کے اہل سنت باشندے حسن نصراللہ سے سخت متنفر ہیں کیونکہ سنیوں پر حزب اللہ کے مظالم کسی سے ڈھکے چھپے نہیں۔ اسی طرح پاکستان میں طاہر القادری کو راتوں رات شہرت کے آسمان پر پہنچانے میں اصل کردار میڈیا ہی کا ہے۔

## 6.2.5- میڈیا کا سب سے گھناؤنا استعمال، آزادیٔ اظہارِ رائے کے نام پر توہین رسالت:

مغربی دنیا کے اخبارات اور ویب سائٹس پر حضور رحمت عالم ﷺ کے بارے میں توہین آمیز خاکوں کی اشاعت کے بعد جہاں پورے عالم اسلام میں شدید احتجاج ہو رہا ہے وہاں سنجیدہ اذہان یہ سوچنے پر مجبور ہیں کہ مغرب کو تو عالم اسلام میں اپنے استعماری، مشنری اور عالمگیریت کے منصوبوں کی تکمیل کے لیے مسلمانوں کی گہری خوابیدگی کی ضرورت ہے، پھر وہ بار بار نفرت کی چنگاریاں سلگا کر عالم اسلام میں ہلچل کیوں پیدا کر دیتا ہے؟ طاغوتی طاقتیں عالم اسلام سے متعلقہ اپنے مذموم مقاصد کی تکمیل اس کے بغیر بھی کر سکتی تھیں، ان کے مشنری ادارے عالم اسلام کے ہر شہر، قصبے اور دیہات میں کام کر کے بے شمار افراد کو مرتد بنا رہے ہیں۔ ان کا میڈیا اس ثقافت کو فروغ دے رہا ہے جو مادر پدر آزاد ہے اور مسلم ممالک میں اسے روز بروز نہ صرف مقبولیت حاصل ہو رہی ہے بلکہ اسلامی ممالک کا میڈیا بھی کم وبیش اسی ڈگر پر چل رہا ہے۔ جغرافیائی لحاظ سے اسلامی ممالک کی سرحدوں کا تقدس آئے دن مجروح ہوتا رہتا ہے۔ فلسطین، کشمیر اور افغانستان سمیت مسلم دنیا کے اہم ترین پوائنٹ مغربی طاقتوں یا ان کے حمایتیوں کے ہاتھوں میں ہیں۔ اس صورتحال میں بار بار اس قسم کی حرکات سے اسلامی دنیا کو کیوں برافروختہ کیا جاتا ہے؟ یہ صورتحال تو مغربی دنیا کے مقاصد کے بالکل خلاف اور ان کے منصوبوں پر پانی پھیرنے کے مترادف ہے۔

اس سوال کے جواب کے لیے ہم ڈنمارک کے دریدہ دہن اخبار جلینڈز پوسٹن کے ایڈیٹر فلیمنگ روز کی اس تحریر پر نظر ڈالتے ہیں جس میں اس نے اس ناپاک ترین فعل کی توجیہات پیش کی ہیں۔ ان اقتباسات سے نہ صرف ہم اندازہ لگا سکتے ہیں کہ اہل مغرب اسلام اور پیغمبر اسلام کے متعلق کیا نظریہ رکھتے ہیں بلکہ یہ بھی بخوبی ظاہر ہوتا ہے کہ وہ مسلمانوں کو اس بارے میں کس حد تک غیر حساس دیکھنا چاہتے ہیں۔ رسوائے زمانہ ایڈیٹر لکھتا ہے:

''کارٹون کی اشاعت کی اجازت دینے میں میرے پیش نظر اسلامی موضوعات پر اظہارِ خیال سے روکنے والا خوف تھا جو یورپ میں کئی مواقع پر سیلف سنسر کا سبب بن چکا ہے۔ میں اب

بھی یہ سمجھتا ہوں کہ ہم یورپ والوں کو اس صورتحال کا ڈٹ کر مقابلہ کرنا چاہئے اور اعتدال پسند مسلمانوں کو اکسانا چاہئے کہ وہ اس پر کھل کر اظہار خیال کریں۔''

مذکورہ اقتباس سے یہ بات بخوبی واضح ہوتی ہے کہ مغربی میڈیا حضور نبی کریم ﷺ سے متعلق موضوعات میں ادب واحترام کی لازمی حیثیت کو قبول کرنے کے لیے تیار نہیں، وہ اسے ایک خوف کے تحت رواج پانے والے ''سیلف سنسر'' کا نام دیتا ہے اور اس طرز کو تبدیل کرنے اور اسے ترک کرنے کا داعی ہے۔ گویا مغربی میڈیا یہ چاہتا ہے کہ اسلام اور پیغمبر اسلام کے خلاف دریدہ دہنی کی فضا اتنی عام ہو جائے کہ اس بارے میں کوئی کچھ بھی کہہ سکے، کسی پر کوئی روک ٹوک نہ ہو۔ کسی کو پوچھ گچھ کا خوف نہ ہو..... یہی نہیں بلکہ طاغوت کے یہ ایجنٹ یہ بھی چاہتے ہیں کہ آزادیٔ اظہار کے نام پر بے ادبی اور گستاخی کے یہ جراثیم مسلمانوں میں بھی منتقل کر دیئے جائے تاکہ وہ نام کے مسلمان بھی نہ رہیں بلکہ کھلے کافر، مرتد، زندیق اور گستاخ بن جائیں۔

ایڈیٹر اس حوالے سے بدبخت کارٹونسٹوں کا نقطۂ نظر بیان کرتے ہوئے لکھتا ہے:

''ہم آپ (یورپی مسلمانوں) کو طنز واستہزاء کی اس روایت میں شامل کر رہے ہیں کیونکہ آپ ہماری سوسائٹی کا حصہ ہیں، کوئی غیر نہیں۔''

اندازہ لگائیے کہ کس بے حیائی کے ساتھ یہ بد باطن خود مسلمانوں کو توہین رسالت کے بھیانک ترین جرم میں شرکت کی دعوت دے رہے ہیں اور اس بارے میں نرم گوشہ رکھنے والے افراد کو اعتدال پسند مسلمانوں کا نام دیا جا رہا ہے۔ توہین آمیز خاکوں کی اشاعت کے بعد بی بی سی سمیت مغربی میڈیا کے متعدد چینلز اور درجنوں اخبارات نے ''اعتدال پسند مسلمان دانشوروں'' کے طور پر ایسے لوگوں کو متعارف کرایا ہے جن کے عقائد ونظریات قطعاً ملحدانہ ہیں، جو سلمان رشدی اور تسلیمہ نسرین کے گروہ سے تعلق رکھتے ہیں۔ مغرب نے توہین رسالت کے اس واقعے کے بارے میں ان کے ایمان کش خیالات ونظریات کی خوب خوب تشہیر کی ہے جن میں کہا گیا ہے کہ مسلمانوں کو اس بات میں قطعاً جذبات سے کام نہیں لینا چاہئے بلکہ صبر وتحمل سے مغرب کے موقف پر غور کرنا چاہئے اور آزادیٔ اظہار کے عالمی دھارے میں شامل ہونا چاہئے۔

اس بات کا ثبوت کہ یہ خاکے باقاعدہ ایک منصوبے کے تحت شائع کئے گئے ہیں، خود گستاخ ایڈیٹر کے اپنے الفاظ ہیں۔ مذکورہ صورتحال کا ذکر کرنے کے بعد وہ لکھتا ہے:

''میں نے ڈینش کارٹونسٹوں کی ایسوسی ایشن کے ارکان کو دعوت دی کہ وہ اپنے تصورات کے مطابق حضرت محمد (ﷺ) کی تصویر کشی کریں۔''

ظاہر ہے کہ کارٹونسٹوں کو کسی کے کارٹون بنانے کی دعوت دینے کا مقصد اس کی توہین کے سوا بھلا اور کیا ہوسکتا ہے۔ گستاخ رسول ایڈیٹر کی خودسری ملاحظہ کریں کہ اس نے یہ ماننے کے باوجود کہ اس فعل سے مسلمانوں کو صدمہ پہنچا ہے، کہا ہے:

''ہم ایسا مواد بلکہ جارحانہ مواد شائع کرنے کا حق رکھتے ہیں اور اس پر قطعاً معذرت خواہ نہیں۔''

غرض مغربی میڈیا نے ہر قیمت پر یہ تہیہ کرلیا ہے کہ وہ اسلام اور پیغمبر اسلام ﷺ کے بارے میں ادب واحترام کی رائج فضا کو ختم کرنے کی مہم ترک نہیں کرے گا، اس کی بنیادی وجہ خود اس ایڈیٹر کے قلم سے یہ سامنے آئی ہے:

''سرد جنگ کا یہ سبق ہے کہ اگر آپ ایک بار مطلق العنانیت پر مبنی جذبات سے دب جائیں گے تو مطالبات بڑھتے جائیں گے، مغرب کو سرد جنگ میں غلبہ اس لیے حاصل ہوا کہ ہم اپنی بنیادی اقدار پر قائم رہے اور ہم نے مطلق العنان جابروں کو خوش کرنا گوارا نہ کیا۔''

کیا یہ تحریر یہ ظاہر نہیں کررہی کہ مغرب مسلمانوں کا چوطرفہ استحصال کرنے کے باوجود ان کی جانب سے صرف اپنے مذہبی حقوق کے تحفظ کی صدا کو بھی ''مطلق العنانیت'' سمجھتا ہے۔ اس کا صاف مطلب یہ ہے کہ مغربی طاقتیں مسلمانوں کو بالکل کیڑے مکوڑوں کی طرح بے حیثیت تصور کرتی ہیں، ان کا کوئی حق ان کی نظر میں کوئی حیثیت نہیں رکھتا، ان کی طرف سے بنیادی حقوق اور مذہبی اقدار کی خاطر بلند کی جانے والی آواز بھی اسی طرح مٹا دینے کے قابل ہے جس طرح کسی ظالم وجابر کی مطلق العنانیت۔ کیا ستم ہے کہ اس کھلے جبر واستبداد کے باوجود مغرب کو رواداری اور وسعت ظرفی کا دعویٰ ہے۔ کیا ہم اہلِ مغرب کے ''دانشور طبقے'' کی اس قدر پست ذہنیت کے بعد بھی ان سے کسی خیر کی توقع رکھ سکتے ہیں۔

بہر کیف یہ بات باعث اطمینان ہے کہ اس تمام تر شیطانی منصوبہ بندی کے باوجود مغرب مسلمانوں میں حضور نبی کریم ﷺ کے ادب واحترام کے جذبات کم نہیں کر سکا بلکہ اس چوٹ سے مسلمانوں میں حب رسول ﷺ کی تڑپ پہلے سے بڑھ گئی ہے۔ مسلمانوں نے دنیا بھر میں بھرپور احتجاج کر کے یہ ثابت کر دیا ہے کہ وہ مغرب کی اندھی نقالی کے باوجود ایسے بے راہ رو نہیں ہوئے کہ اپنے آقا کے نام کا ادب واحترام بھی فراموش کر دیں۔

ایک بے ادب، بے لگام، مردہ دل اور سیاہ باطن قلم کار اسے چاہے دانشوری کا نام دے یا اظہار آزادی کا، اسے اعتدال پسندی کہے یا روشن خیالی، اس پر سیلف سنسر کے خاتمے کا لیبل لگائے یا اسے غیر جانبدار رجحان کی حوصلہ افزائی سے تعبیر کرے مگر مسلمان چاہے کیسا ہی گیا گزرا ہو، کتنا ہی پاپی شرابی کبابی ہو، وہ اسے گستاخی ہی کہے گا، وہ اسے ایک لمحے کے لیے بھی برداشت نہیں کر سکتا۔ وہ اپنے آقا کی حرمت کے لیے اپنی جان ہتھیلی پر رکھ کر میدان میں آجاتا ہے۔ اسے احساس ہے کہ وہ گناہ گار ہے، بدکار ہے، روسیاہ ہے، اسے یہ بھی اندازہ ہے کہ وہ خدا کا مجرم ہے، اسے یہ بھی پتا ہے کہ اسے راہ سے ہٹانے والے شیطان کے ایجنٹ یہی مغربی میڈیا کے کرتا دھرتا ہیں۔ وہ یہ سب کچھ جانتے ہوئے بھی دن رات ان کے ہاتھوں لٹتا رہتا ہے، اسلامی صورت، شکل، لباس، سب کچھ ان کے لیے لٹا دیتا ہے..... مگر جب وہ یہ دیکھتا ہے کہ ان بدبختوں کا ہاتھ ناموس رسالت کی طرف بڑھ رہا ہے تو وہ برداشت نہیں کر سکتا۔ مغربی مے کا نشہ ایک لمحے میں ہرن ہو جاتا ہے، ایمان کی چنگاری جس پر کروڑوں گناہوں کی دھول جمی ہوتی ہے، ایمانی غیرت کے ایک جھونکے سے سلگنے لگتی ہے اور سلگ کر شعلۂ جوالہ بن جاتی ہے، پھر یورپی مصنوعات کوڑے کے ڈھیروں پر نظر آتی ہے، سڑکیں احتجاج کرنے والوں سے بھر جاتی ہیں، پھر بظاہر لبرل مسلمان بھی انتہا پسندوں کے ساتھ نظر آتے ہیں، مغرب کے ہرزہ سرا بدقماشوں کو کہنا پڑتا ہے:

''سارے مشرق وسطیٰ اور ایشیا میں جو المناک مظاہرے ہوئے ہیں، ہمیں ان کی توقع نہ تھی، نہ ہم ایسا چاہتے ہیں، ہمارے اخبار کو 104 دھمکیاں موصول ہو چکی ہیں، 10 افراد تراست میں ہیں، کارٹونسٹ قتل کی دھمکیاں ملنے کے باعث روپوش ہیں، جلیلینڈز پوسٹن کے ہیڈ

کوارٹر کو کئی بار بم دھماکوں کی دھمکیوں کے باعث خالی کرنا پڑا ہے۔ یہ وہ فضا نہیں کہ جس میں سنسر شپ کو نرم کیا جا سکے۔''

آخر ایسا کیوں نہ ہو، کون ہے جو کالی کملی والے کی عظمت کو دھبہ لگانے کی کوشش کرے اور پھر چین و آرام سے رہ سکے۔ چاند کا تھوکا خود اپنے منہ پر ہی آتا ہے۔

## 6.3- ذرائع معلومات، (الاعلام) (Knowledge):

اہل مغرب نے دنیا کو درکار معلومات کے راستوں پر اس طرح تسلط حاصل کر لیا ہے، ہر خبر اور ہر قابل دریافت چیز ان کے سانچے میں ڈھل کر اور ان کے مقاصد کے مطابق رہ کر آگے پہنچتی ہے۔ اہل مغرب نے اعلام یعنی معلومات کے ذرائع اپنے ہاتھ میں رکھے ہیں، کسی بھی موضوع پر تلاش کیا جانے والا مواد ہمیں عموماً مغربی مصنفین، مغربی کتب خانوں، مغربی انسائیکلو پیڈیاز اور انہی کی ویب سائٹوں سے ملتا ہے۔ اس مواد میں اس بات کا خاص خیال رکھا جاتا ہے کہ پڑھنے والے کا ذہن مادیت ہی میں اٹکا رہے اور کسی طرح بھی روحانیت، مذہب اور خالق کی طرف مائل نہ ہونے پائے۔

معلومات کا یہی سیلاب ذرائع ابلاغ یعنی الیکٹرانک اور پرنٹ میڈیا کے ذریعے بیک وقت کروڑوں افراد تک پہنچتا ہے۔ خود مذہبی لوگوں اور اسلام پسند افراد کو ایسی معلومات کی ضرورت پڑتی رہتی ہے۔ اس ضرورت کا فائدہ اٹھاتے ہوئے لادینیت کے داعی لوگوں کو کسی نہ کسی حد تک متاثر کرنے میں کامیاب ہو جاتے ہیں اور رفتہ رفتہ دیگر اہداف بھی حاصل کر لیتے ہیں۔ اتنا تو ضرور ہوتا ہے کہ لوگ بے دین مصنفین، صحافیوں اور محققین کی مہارتِ فن اور کارکردگی سے متاثر ہو جاتے ہیں اور بعد میں ان کے دیگر خیالات سے بھی اتفاق کرنے لگتے ہیں۔

میڈیا سے ملنے والا مواد مسلسل مرتب ہو کر نئی کتابوں، نئے تحقیقی مقالوں اور نئے انسائیکلو پیڈیاز کی شکل اختیار کر رہا ہے۔ انسانی معلومات کے یہ ذخائر کتابوں، لائبریریوں، سی ڈیوں اور ویب سائٹوں پر منتقل ہو کر سالہا سال تک لوگوں کے لیے محفوظ ہوتے جا رہے ہیں۔

یہی وجہ ہے کہ آج کوئی مسلمان صحافی یا محقق اگر کسی ایسے موضوع پر بھی کام کرنا چاہتا ہے

جس سے مغرب کا دوہرا کردار واضح ہوسکے تو اسے عموماً انہی ذخائرِ معلومات پر بھروسا کرنا پڑتا ہے جن میں جانبدارانہ معلومات دی گئی ہوتی ہیں۔ مغربی انسائیکلوپیڈیاز میں آج تک کشمیر کو بھارت کا حصہ دکھایا جاتا ہے اور اسرائیل کو ایک جائز مملکت کی حیثیت دی جاتی ہے۔

### 6.4- میدانِ سیاست (Politics):

سیاست کا میدان مغربی افکار واقدار کے فروغ کا بہت بڑا ذریعہ ہے۔ باطل قوتیں شروع سے مسلم خلفاء اور سلاطین کی شان وشوکت سے مرعوب چلی آتی تھیں۔ یورپ میں چرچ اور بادشاہ کی کشمکش سے بھی یہ ثابت ہوگیا تھا کہ حکومتی طاقت اور فیصلہ کن قوت کا مالک ایک شخص ہو تو کسی بھی مملکت میں اپنے نظریات کو رائج کرنا بہت مشکل ہوتا ہے۔ بادشاہوں اور خلفاء کی نسل در نسل چلی آنے والی مذہبی وابستگی عموماً کسی بھی نئے نظریے کی اشاعت اور آزاد خیالی کی راہ میں رکاوٹ بن جاتی تھی۔ اس لیے جمہوریت کے ذریعے عوامی نمائندوں کو سامنے لانے کا کھیل کھیلا گیا جس کا پہلا تجربہ فرانس میں ہوا۔ پھر یہ طرزِ حکومت برطانیہ اور دیگر یورپی دنیا میں بھی مقبول ہوگیا۔ جہاں جہاں جمہوریت کا تجربہ ہوا وہاں مذہب کی بساط لپیٹ دی گئی۔ ان کامیاب تجربات کے بعد مسلم ممالک کو بھی اس کی بھینٹ چڑھا دیا گیا اور اہل باطل کے لیے یہاں اپنے ایجنٹوں کو فعال کرنا اور ان کے ذریعے اپنے ایجنڈے مسلم عوام پر مسلط کرنا آسان ہوگیا۔

فی زمانہ مسلم دنیا کے اکثر سیاست دان اور کلیدی عہدوں پر فائز افراد وہی ہیں جو ملکی یا غیر ملکی ماڈرن وسیکولر درسگاہوں کے فارغ التحصیل ہیں۔ ہماری قیادتیں مغربی درسگاہوں سے تیار ہوکر ایک مخصوص ذہن اور نظریہ لے کر آتی ہیں اور پھر مغرب کی خواہشات کے مطابق فیصلے کرتی ہیں۔ تقریباً ایک صدی سے ہماری اعلیٰ ترین قیادت یورپ اور امریکا سے ڈگریاں لے کر آنے والوں پر ہی مشتمل رہی ہے۔ اگرچہ ان میں سے ڈاکٹر اقبال کی طرح چند ایک افراد ایسے بھی نظر آتے ہیں جنہوں نے ملت کی سربلندی کے لیے کام کیا مگر اس کی وجہ یہ تھی کہ یا تو ان کا خاندان مذہبی تھا یا ان کا علماء سے تعلق برقرار رہا تھا۔ اس دوران اسلامی دنیا میں ابھرنے والے اکثر سیاست دان مغرب کے وفادار اور سیکولرازم کے علمبردار ثابت ہوئے ہیں اور اس نظریے کے فروغ کے نتیجے

میں وہ تمام مفاسد جو انسانی محدود فکر و نظر سے جنم لیتے ہیں سامنے آ رہے ہیں۔

مغربی دنیا نے اپنے ہاں جمہوریت اس لیے رائج کی تا کہ کوئی مطلق العنان حکمران یا سخت گیر مذہبی رہنما معاشرے کی پسند میں حائل نہ ہو اور خوشحالی و ترقی کی راہ میں رکاوٹ نہ ڈال سکے۔ عوام کو حق دیا گیا کہ وہ ملک میں سیاسی تبدیلی لانے، قانون سازی کو آگے بڑھانے، مسائل کو حل کرنے اور نئے حکمرانوں کو منتخب کرنے کے لیے ووٹ کا حق استعمال کریں اور محدود مدت کے لیے اپنے نمائندوں کو حکومت دینے کی کوشش کریں۔ اس جمہوری نظام نے اہلِ مغرب کے بے دین معاشرے کو آمریت سے نجات دلائی اور اندرونی بغاوتوں، خانہ جنگیوں اور کشت و خون سے بڑی حد تک بچا کر خوشحالی کی راہ پر گامزن کر دیا مگر اس کے ساتھ ہی یہ نئی اور طاقتور حکومتیں بیرونی دنیا کے لیے زیادہ خطرناک ہو گئیں اور ان کی ساری توجہ بیرونی فتوحات پر مرکوز ہو گئی۔

جمہوریت کو جب اہلِ مغرب نے مشرق میں فروغ دیا تو ان کا مقصد ان ملکوں کو کمزور اور زیر دست رکھنا تھا۔ پس جمہوری سیاست جب اسلامی دنیا میں عام ہوئی تو یہاں اتحاد و اتفاق اور ترقی کے آثار پیدا نہ ہوئے بلکہ سیاسی ابتری مسلسل باقی رہی۔ یہاں کا جمہوری نظام دھاندلی، لوٹا کریسی، بدعنوانی اور ضمیر فروشی کا بازار بنا ہوا ہے۔ یہاں انتخابات کے دوران عوامی نمائندے اپنی کامیابی کے لیے خطیر سرمائے اور زبردست تشہیر کے محتاج رہتے ہیں، ایسے بہت سے سیاست دان بیرونی ممالک سے رابطے بڑھانے میں کامیاب ہو جاتے ہیں، یہ ممالک انہیں من مانی شرائط پر بھاری سرمایہ دیتے ہیں اور میڈیا میں ان کی تشہیر کراتے ہیں۔ سیاسی پارٹیاں انتخابی مہم کے دوران اپنے منشور، خوش کن وعدوں اور بہلاووں کے ذریعے عوام کا اعتماد حاصل کرنے کی کوشش کرتی ہیں اور جہاں جہاں ممکن ہو، الیکشن کے دن دھاندلی کر کے اپنی کامیابی یقینی بنانے کی پوری تگ و دو کرتی ہیں۔

اس دھینگا مشتی میں کامیاب ہونے والے سیاست دان عوامی نمائندوں کی حیثیت سے قانون ساز اداروں میں پہنچ جاتے ہیں جنہیں پارلیمنٹ (ایوانِ زیریں) اور سینٹ (ایوان بالا) کہا جاتا ہے۔ یہ ایوان ملک کا نظام چلانے کے لیے قانون سازی کے ذمہ دار ہیں مگر بہت کم

یہ ذمہ داری انجام دی جاتی ہے۔

مسلم دنیا کا سیاسی نظام پہلے بہت سادہ تھا جو شورائیت پر استوار اور خلافت سے منسلک تھا۔ جب اسے ختم کر کے کرپشن زدہ جمہوریت کو فروغ دیا گیا تو کتنے ہی مسلم ممالک میں غیر اسلامی قانون سازی عام بات بن گئی کیونکہ جمہوری فلسفہ قانون سازی کا حق بندوں کو تفویض کرتا ہے اور اس کے تحت انسانی معاشرہ آزادانہ طور پر اپنی خواہش کو سامنے رکھتے ہوئے اکثریتی رائے کی بنیاد پر کوئی بھی قانون طے کر سکتا ہے چاہے وہ تمام آسمانی مذاہب کی مسلمہ اقدار کے خلاف ہی کیوں نہ ہو۔

پاکستان کے آئین کے سرنامے قراردادِ مقاصد کی وجہ سے ملک میں اسلامی شعائر اور قوانین کو تحفظ ملا ہوا ہے جو اکابر علماء کی سرتوڑ محنت کا ثمر ہے ورنہ شام، اردن، مصر، تیونس اور دیگر کئی اسلامی ملکوں میں اسلامی شریعت کو مکمل خارج کیا جا چکا ہے۔

## 6.5- قانون (Law):

باطل نظریات وافکار کے فروغ کا چوتھا بڑا سرچشمہ غیر اسلامی قانون ہے۔ اسلام کی ساڑھے تیرہ سو سالہ تاریخ میں کوئی ایسا موقع نہیں آیا تھا کہ امت نے شریعت کے سوا کسی اور قانون کو قبول کیا ہو۔ شریعت کی بنیاد ﴿ اَلْحُكْمُ لِلّٰهِ ﴾ ہے۔ دنیائے اسلام میں ہمیشہ صرف اسلامی قانون ہی رائج رہا تھا اور تمام عدالتی فیصلے اسلامی قانون کے مطابق ہوا کرتے تھے۔ ارشادِ خداوندی ہے:

ترجمہ: ''تیرے رب کی قسم یہ لوگ اس وقت تک ایمان والے نہیں ہو سکتے جب تک کہ اپنے تنازعات میں آپ ﷺ کو منصف تسلیم نہ کریں اور پھر آپ کے فیصلے سے کوئی ناگواری محسوس نہ کریں۔'' (سورۃ النساء)

لہٰذا مسلمانوں کے لیے شریعت کے علاوہ کوئی اور قانون قابل قبول نہیں ہو سکتا، مگر اہل مغرب نے عالم اسلام میں سیاسی مداخلت کے ذریعے اپنے من پسند حکمرانوں کو مسلط کر رکھا ہے اور تمام قانون ساز اداروں میں اپنے ہم فکر لوگوں کو داخل کر دیا ہے۔ یہ عمل یکدم نہیں بلکہ تدریجاً ہوا ہے۔ پہلے اس کے لیے تعلیمی وسیاسی ماحول بنایا گیا، پھر افراد تیار کر کے قانون ساز اداروں میں پہنچائے گئے۔ ان اداروں میں وضع کیے جانے والے قوانین عدالتوں اور بیوروکریسی کے ذریعے نافذ ہو جاتے ہیں۔

عدالت وہ ادارہ ہے جہاں ملک میں رائج قوانین کے تحت مختلف تنازعات کے فیصلے کیے جاتے ہیں۔ ڈیڑھ صدی قبل تک پوری اسلامی دنیا کی عدالتوں میں صرف فقہ اسلامی کے تحت فیصلے ہوتے تھے مگر اب عدالتوں میں جو قوانین نافذ العمل ہیں وہ اکثر و بیشتر مغربی قوانین کا چربہ ہیں۔ ایک طویل عرصے سے اکثر مسلم ممالک میں فرنگیوں کا سیکولر قانون اور انہی کا عدالتی نظام نافذ ہے۔ عالم اسلام میں سرِ عام شریعت کی خلاف ورزیاں ہو رہی ہیں مگر اس پر کوئی روک ٹوک نہیں ہو سکتی کیوں کہ سیکولر اور لبرل قانون میں انہیں جرم نہیں سمجھا جاتا۔

اسلامی قانون کے تعطل سے فقہاء، مجتہدین، محدثین اور علماء کی ساڑھے تیرہ سو سالہ محنت برباد ہو کر رہ گئی ہے۔ اگرچہ دینی مدارس میں اسلامی قانون پڑھا اور پڑھایا جا رہا ہے مگر عملی طور پر چند عبادات کے سوا بقیہ احکام کا کہیں بھی اطلاق نظر نہیں آتا۔ سیاست، معاشرت اور معیشت کے زریں اسلامی اصول عملاً کہیں نظر نہیں آتے۔

### 6.5.1- بیوروکریسی:

عدلیہ ملکی قوانین کے مطابق جو فیصلے دیتی ہے، اسے نافذ کرنے کا کام بیوروکریسی (نوکرِ شاہی) انجام دیتی ہے۔ اس کا سلسلہ پولیس، ڈپٹی کمشنر اور گورنر سے لے کر صدر مملکت تک پہنچتا ہے۔ یہ ادارے قانون کے محافظ ادارے کہلاتے ہیں مگر معاشرے میں سیکولرازم کی اشاعت کے ساتھ ساتھ یہ ادارے بھی سیکولر اور لبرل نظام کے محافظ بنتے جا رہے ہیں۔ بیوروکریسی یا نوکر شاہی سرکاری مشین کے وہ پرزے ہیں جن کے ذریعے حکومت اور عدلیہ اپنے احکام نافذ کرتی ہے۔ پارلیمنٹ قانون بناتی ہے، عدلیہ اس کے مطابق فیصلہ دیتی ہے اور نوکرِ شاہی اسے نافذ کرتی ہے گویا عملاً ملک پر نوکرِ شاہی حکومت کرتی ہے۔ اس کے افسران کے لیے اعلیٰ تعلیم یافتہ، متعلقہ شعبے میں تخصیص اور غیر ملکی زبانوں کا ماہر ہونا ضروری ہوتا ہے۔ ان صفات کے حامل نوجوان عموماً ماڈرن درسگاہوں ہی کے تعلیم یافتہ ہوتے اور مغربی اثرات سے پوری طرح مرعوب ہوتے ہیں اس لیے انہیں ملک میں اسلام کے فروغ سے کوئی دلچسپی نہیں ہوتی بلکہ وہ لادینیت اور مغربیت کے نفاذ کے لیے پرجوش ہوتے ہیں۔ اسلامی تحریکوں کے خلاف کریک

ڈاؤن، مدارس کی بندش، علماء کی نگرانی، مسلم رہنماؤں کی گرفتاری اور پختہ فکر مسلمانوں کے گھروں پر چھاپوں جیسے اقدامات میں بیوروکریسی ہی سب سے زیادہ سرگرم ہوتی ہے جب کہ غیر ملکی طاقتوں کے ایجنٹوں کی منفی سرگرمیوں سے عموماً چشم پوشی کی جاتی ہے۔ اہل باطل حسبِ ضرورت انہیں مال ودولت، جلد ترقی اور عزت وشہرت کا لالچ دے کر اپنی خصوصی مہمات کے لیے استعمال کرنے میں بھی کامیاب رہتے ہیں۔

## 6.6- معیشت وتجارت:

معیشت وتجارت کا استحکام کسی بھی قوم کی ترقی اور استحکام کے لیے ریڑھ کی ہڈی کی حیثیت رکھتا ہے۔ اہل باطل نے معاشیات واقتصادیات کے دو نظام متعارف کرائے ہیں۔ سرمایہ دارانہ نظام اور اشتراکی نظام۔ اشتراکی محاذ تو کمزور ہو چکا ہے مگر سرمایہ دارانہ نظام اس وقت پوری دنیا کو اپنی لپیٹ میں لے رہا ہے۔ اس طرح عالم اسلام معاشی واقتصادی طور پر بری طرح دشمن کے بچھائے ہوئے جال میں پھنس چکا ہے۔ (اس موضوع کی تفصیل اقتصادی عالمگیریت (Globalization) کے تحت آچکی ہے)

## 6.7- رفاہی خدمات، این جی اوز:

دنیا بھر میں مغربی ممالک کے ہزاروں رفاہی ادارے کام کر رہے ہیں جو آفت زدہ علاقوں میں امداد پہنچاتے ہیں، ہسپتال اور دواخانوں کا انتظام کرتے ہیں۔ قیدیوں کو سہولیات فراہم کرتے ہیں۔ غریب ممالک کے مسائل کی نشان دہی کرتے ہیں۔ جگہ جگہ اسکول کھولتے ہیں، عورتوں اور بچوں کے حقوق کے لیے لڑتے ہیں اور مفلوک الحال مگر ذہین طلبہ کو اعلیٰ تعلیم میں مدد دیتے ہیں۔ ان اداروں میں ہزاروں این جی اوز، مشنری ادارے اور اقوام متحدہ کی ذیلی تنظیمیں شامل ہیں۔ ان سرگرمیوں کے ذریعے وہ مسلم ممالک کے پس ماندہ عوام کا اعتماد حاصل کرتے ہیں، ان میں اپنے وفادار پیدا کرتے ہیں اور اپنی ثقافت وتہذیب کو فروغ دیتے ہیں۔ انہی مصروفیات کے ذریعے مسلم ممالک میں بیرونی مداخلت کے راستے ہموار کیے جاتے ہیں۔ (اس موضوع کی تفصیل التنصیر کے ذیل میں گزر چکی ہے۔)

## 6.8- جدت پسند اسلامی مفکرین:

جدت پسند اسلامی مفکرین اہل باطل کے لیے کامیاب ترین آلۂ کار ثابت ہوتے ہیں۔ یہ وہ مسلم دانشور ہیں جو دینی مدارس اور سلوک واحسان کے مرکز سے برآمد ہونے والی خالص اسلامی روشنی کو نفرت کی نگاہ سے دیکھتے ہیں کیوں کہ مغرب کو اسلام کی اس اصل شکل سے تشویش لاحق ہے۔ یہ مغرب کو راضی کرنے کے لیے اسلام کے حرام کو حلال اور حلال کو حرام کرنے کے درپے رہتے ہیں۔ اسلامی شعائر کو مسخ کرنا، جہاد کو ساقط قرار دینا، اسلامی معاشرت کا مذاق اڑانا، مسلم معاشرے کی عمارت سیکولر مفکرین کے نظریاتی ستونوں پر کھڑا کرنا اور مغربی تہذیب کو اسلامی بنیادیں فراہم کرنا ان کا محبوب مشغلہ ہے۔

## 6.9- فنونِ لطیفہ:

فنونِ لطیفہ یعنی موسیقی، مصوری، مجسمہ سازی، رقص وسرود وغیرہ بھی اہل باطل کا بہت بڑا جال ہیں۔ یہ چیزیں انسانی نفس کو بہت بھاتی ہیں بلکہ ان پر نفس کی لذتوں کی انتہاء ہوجاتی ہے۔ نتیجہ یہ نکلتا ہے کہ وہ اپنے مقصدِ زندگی سے غافل ہوجاتا ہے۔ ایک مسلمان کو بے دین بنانے میں ان مسحور کن ہتھکنڈوں کا بہت بڑا حصہ ہے۔

اسلام کچھ حدود کے ساتھ ہر مفید فن اور ادب کی حوصلہ افزائی کرتا ہے مگر اہل باطل نے کسی حد کو ملحوظ رکھے بغیر مسلم دنیا میں ایسے فنون کو رواج دیا جن سے اسلامی روایات پامال ہوکر رہ گئیں۔ تصویر کشی اور مجسمہ سازی جیسے فنون جو ماضی میں بعض غریب غیر مسلموں کا ذریعہ معاش تھے، اب مسلمانوں کے شرفاء کا مشغلہ بن گئے۔

## 6.10- ادب (Literature):

ادب جس میں نظم ونثر دونوں شامل ہیں، گزشتہ دو اڑھائی سو سال سے اہل باطل کے نظریات کی اشاعت کا عالمگیر ذریعہ ہے۔

ادب کے نام پر نہ صرف عشقیہ اور فحش شاعری کو فروغ دیا گیا ہے بلکہ ملحدانہ کلام پر ایوارڈ دیے جاتے ہیں۔ شراب نوشی اور بدکاری کا ذکر ایسے لطیف انداز میں کیا جاتا ہے کہ لوگ غیر

شعوری طور پر انہیں ایک جائز اور معمولی شرارت سمجھنے لگتے ہیں۔ دین اور خدا کا تمسخر اڑانے والے ادیبوں اور شاعروں کی جسارت کو قابل داد ٹھہرایا جاتا ہے۔ اس طرح فن و ادب کے نام پر اسلامی نظریات، قانون، تمدن اور معاشرتی اخلاقیات کی دھجیاں اڑادی گئی ہیں۔

افسانے، ناول، غزلیں اور عشقیہ اشعار انسان کو صرف حیاتِ دنیوی کے رومانوی پہلو کا اسیر بنادیتے ہیں۔ اس سے بڑھ کر ان میں خدا، تقدیر اور آسمانی کتبِ ہدایت کا کھلا انکار جھلکتا ہے۔ برصغیر میں ترقی پسند مصنفین کی تحریک دراصل مذہب کے انکار پر مبنی تھی۔ اس تحریک سے وابستہ افراد نے الحادی لٹریچر کو گھر گھر پہنچا کر ان گنت لوگوں کو منکرِ دین بنادیا۔

جب مسلم مفکرین اور علماء نے ان چیزوں کی مخالفت کرتے ہیں تو جواب میں یہ پروپیگنڈا کیا جاتا ہے کہ اسلام کسی بھی آرٹ اور ادب و ثقافت کا سخت مخالف ہے، حالانکہ اسلام کسی ایسے فن کی مخالفت نہیں کرتا جس سے لوگوں کو نفع ہو اور وہ شرعی حدود و قیود کے اندر ہو۔ اسی طرح مثبت ادب، نثر نگاری اور شاعری پر بھی شرعاً کوئی قدغن نہیں ہے۔ مگر لادین عناصر کا پروپیگنڈا یہی ہے کہ اسلام لوگوں کو زندگی سے نفع اندوز نہیں ہونے دیتا لہٰذا اسے دنیا کے معاملات سے دور ہی رکھا جائے اور مذہب کو دور ہی سے سلام کر کے کنارہ کشی اختیار کی جائے۔

## 6.11- تفریح، سپورٹس:

تفریح اور کھیل کود کے میدان بھی اغیار کی تہذیبی یلغار کا ایک ذریعہ ہیں۔ بعض کھیل تو از روئے شرع جائز ہی نہیں، جن کا جواز ہے ان کا ماحول بھی ایسا ایمان کش ہے کہ کھیلوں کو اوڑھنا بچھونا بنانے والے نوجوان عموماً دین و مذہب سے بالکل بے گانہ ہوجاتے ہیں۔

## 6.12- ثقافتی ہیرو:

ثقافتی ہیرو وہ کھلاڑی، اداکار اور فن کار ہیں جو فی زمانہ معاشرے کے آئیڈیل افراد کی حیثیت اختیار کر گئے ہیں۔ رقاص اور مداری جو کل تک حقیر پیشہ ور سمجھے جاتے تھے اب ڈسکو ڈانسر اور کھلاڑی بن کر مذہبی رہنماؤں سے بھی زیادہ عزت و توقیر کے حق دار بن گئے۔ گلوکار اور اداکار جنہیں ماضی قریب میں میراثی، بھانڈ اور مسخرا کہا جاتا تھا اب قوم کے ہیرو اور فن کار بنا

دیے گئے۔ لوگ نہ صرف ان کے ہیر اسٹائل، لباس، تراش خراش، چلنے پھرنے کے انداز اور رہن سہن کے طور طریقوں کی اندھا دھند نقل کرتے ہیں بلکہ ان کے تمام خیالات کو بھی بلا سوچے سمجھے قبول کرتے چلے جاتے ہیں۔

ثقافتی ہیروز زندگی کے فلسفے اور سیاست سے لے کر مذہب اور شریعت تک ہر معاملے میں اپنی رائے جھاڑتے ہیں اور لوگ ان کے قول کو کسی عالم دین کے فتوے سے زیادہ اہمیت دیتے ہیں۔ الغرض اہل باطل اپنے افکار و نظریات کی تشہیر کے لیے ثقافتی ہیروز کا بھرپور استعمال کرتے ہیں۔

## 6.13- علاقائی تہذیب وثقافت:

علاقائی تہذیب وثقافت کا فروغ بھی اسلام کے خلاف استعمال کیا جانے والا ایک بڑا حربہ ہے۔ عالم اسلام کے قدیم مشترکہ تہذیب وتمدن کو متروک بنانے کی کوششیں جاری ہیں اور اس کی جگہ ہر ہر صوبے کو اس کی الگ تہذیب اور شناختوں سے روشناس کرایا جا رہا ہے۔

اسی تہذیبی تعصب نے اسلامی دنیا میں صوبائیت اور وطنیت پر استوار سیاسی پارٹیوں کو وجود بخشا۔ 1947ء میں عراق اور شام میں حزب البعث العربی نامی تنظیم نے جنم لیا جس کا بانی ایک عیسائی تھا اور اس کی بنیاد عرب قومیت پر تھی۔ 1909ء میں عرب میں ''الجمعیۃ القحطانیہ'' متعارف کروائی گئی۔ علاقائی تہذیب وتمدن اور رنگ ونسل کی بنیاد پر تعلیم وتحقیق کے لیے مستقل علمی ادارے بھی بنائے گئے جن میں سے ایک ''جامعہ دول العربیہ'' ہے۔

اس کے ساتھ ساتھ مغربی دنیا اربوں ڈالر خرچ کر کے اسلامی ممالک میں دبے ہوئے ہزاروں سال پرانے آثار اور زمانہ جہالت کے کھنڈرات سامنے لا رہی ہے تاکہ مسلمانوں کو ان کی اسلامی شناخت سے توڑ کر یہ یاد دلایا جائے کہ تم اصلاً ان کی اولاد تھے جو کہ بت پرست تھے۔ مغربی دنیا کو ٹیکسلا، ہڑپہ اور موئن جوڈرو سے اسی لیے دلچسپی ہے کہ انہیں زمانہ ماقبل از اسلام کی تہذیبوں کی یادگار سمجھا جاتا ہے۔

گزشتہ صدی کے آغاز میں جب آثارِ قدیمہ کی دریافت کا کام زوروں پر تھا تب ایک مستشرق نے لکھا تھا کہ اس انتہائی مہنگی مہم کے ثمرات اور فوائد فی الحال نظر نہیں آسکتے لیکن مستقبل

میں اس کے لامحدود اثرات سامنے آئیں گے۔

## 6.14- جاہلی عصبیت، قومی ووطنی عصبیت کا فروغ:

قومی اور وطنی عصبیتوں کا فروغ، عالمگیر اسلامی وحدت کو توڑ کر کئی چھوٹی چھوٹی وحدتیں پیدا کر دیتا ہے اور یوں لادینیت کی راہ ہموار ہو جاتی ہے۔

کسی گروہ، ملک یا نسل سے تعلق پر اس طرح فخر کرنا کہ جائز وناجائز، انصاف یا ظلم میں بہر صورت اس کا ساتھ دیا جائے، اور اس کے موقف کو بہر صورت حق سمجھا جائے، عصبیت ہے۔ اسی طرح اپنی قوم، ملک اور نسل کے بارے میں یہ اعتقاد رکھنا بھی عصبیت ہے کہ اسی کے افراد سب سے افضل اور لائق سیادت ہیں۔ یہی وہ جاہلی عصبیت جسے شریعت نے سخت ناپسند کیا ہے۔

اسلام نے دنیا کو عصبیت کی ان اکائیوں سے نکال کر ایک عالمگیر وحدت دی، جس کی چار بڑی بنیادیں ہیں:

① وحدۃ الایمان یعنی اللہ وحدہٗ لاشریک لہٗ پر خالص ایمان لانا۔

② وحدۃ الاصل یعنی یہ یقین رکھنا کہ تمام انسانوں کی اصل اور نسل ایک ہے۔ سب آدم کی اولاد ہیں۔

③ وحدۃ العبدیت یعنی یہ یقین رکھنا کہ سب انسان اللہ کے بندے ہیں، بندہ ہونے کی حیثیت سے برابر ہیں۔ کوئی اللہ کا رشتہ دار نہیں۔ قیامت میں سب اپنے اپنے ایمان اور اعمال کے لیے جوابدہ ہوں گے۔

④ معیار الفضیلۃ یعنی بندوں کے درمیان اگر افضلیت کا کوئی معیار ہے تو وہ تقویٰ ہے، رنگ ونسل یا وطن نہیں۔

﴿إِنَّ أَكْرَمَكُمْ عِندَ اللَّهِ أَتْقَاكُمْ﴾ (الحجرات: ۱۳)

''اللہ کے ہاں تم میں سے افضل وہی ہے جو زیادہ پرہیزگار ہے۔''

یہ وہ تعلیم ہے جس کی بناء پر اسلام نے بنی آدم کو ایک وحدت بنا دیا۔ وہ لوگ جن پر کوئی حکومت نہیں کر سکتا تھا، اسلام نے ان کو آپس میں اس طرح جوڑ دیا تاریخ عالم اس کی مثال پیش کرنے سے قاصر ہے۔

مگر اسلام دشمن طاقتوں نے اسلام کی اس انتہائی پرکشش تعلیم کو خود مسلمانوں ہی سے اوجھل کر دیا اور اس کی جگہ جاہلی عصبیت کو فروغ دے کر مسلمانوں کو لڑانے میں اس حد تک کامیاب ہو گئے کہ آج کوئی دو مسلمان ملک بھی کسی ایک بڑے مسئلے پر متفق نہیں ہو پاتے۔ نسلی بنیادوں پر کھڑی ہونے والی سیاسی پارٹیاں اس قومی عصبیت کو مزید فروغ دے رہی ہیں اور اس طرح وحدت اسلامی بالکل پارہ پارہ ہوئی جا رہی ہے۔

## 6.15- مسلمانوں کو صالح قیادت سے متنفر کرنا:

لادینی طاقتوں کی خواہش ہے کہ مسلمانوں کے پاس کوئی صالح قائد نہ رہے۔ ان کے قائد وہی لوگ بنیں جو سیکولر ہوں۔ اس مقصد کے لیے مسلمانوں میں ابھرنے والی ہر صالح قیادت کو بدنام کرنے میں کوئی کسر نہیں چھوڑی جاتی۔

عام طور پر جب معاشرے میں کسی صالح مسلم رہنما کا اثر و رسوخ بڑھنے لگتا ہے تو سب سے پہلے اندرونِ ملک سرگرم بے دین لابی اسے ڈرا دھمکا کر خاموش کرانے کی کوشش کرتی ہے۔ اگر وہ جرأت مند ثابت ہو تو پھر اسے خریدنے یعنی سنہرے پنجرے میں قید کرنے کا حربہ آزمایا جاتا ہے۔ اگر وہ براہِ راست بکنے کے لیے تیار نہ ہو تب بھی اسے ایسی آسائشیں اور سہولیات فراہم کرتے ہیں جن کو آسانی سے ٹھکرایا نہیں جا سکتا۔ اگر کوئی اس مرحلے سے بخیریت گزر جائے تو لوہے کا پنجرہ استعمال کرنے کی کوشش کی جاتی ہے۔ ایسے میں عموماً قید و بند کی صعوبتیں یا دیگر پابندیاں درپیش ہو سکتی ہیں۔ جو شخص ان تمام مراحل سے پار ہو جائے اسے بدنام کر کے اس کا اثر ختم کرنے کی کوشش کی جاتی ہے۔

دارالعلوم دیوبند سے تیار ہو کر نکلنے والے استعمار مخالف علماء کو انگریز نے وہابی کا نام دے کر بدنام کیا۔ مصر میں سید قطب کو اللہ کی صفات کا منکر مشہور کیا گیا۔ طالبان کی امارت اسلامیہ افغانستان کے بارے میں یہ منفی پروپیگنڈا کر کے کہ وہ عوام اور خصوصاً خواتین پر ظلم و تشدد کی انتہا کرتے ہیں، دنیا کو ان سے متنفر کیا گیا۔ دورِ حاضر میں چونکہ نشر و اشاعت کے وسائل میں بہت تیزی آ چکی ہے اس لیے اب کسی معزز شخص کو بدنام کرنا لمحوں کا کام ہے۔

## 6.16- آزادیٔ نسواں:

حدیث میں عورتوں کو شیطان کا جال کہا گیا ہے۔ مغرب اس جال کو پوری عیاری سے استعمال کر رہا ہے۔ آزادیٔ نسواں کا نعرہ لگا کر خود عورت کو گمراہ کیا گیا اور پھر عورتوں کو بازاری جنس بنا کر مردوں کے بہکنے کے انتظام میں کوئی کسر نہیں چھوڑی گئی۔ اس طرح اسلامی معاشرت کا جنازہ نکال دیا گیا۔

آزادی نسواں کی تحریک لادینی قوتوں کا سب سے خطرناک حربہ ہے۔ اس لیے اس موضوع پر تفصیل سے گفتگو کی جائے گی اور معاشرے میں پائی جانے والی غلط فہمیوں اور اسلام کے موقف پر کیے جانے والے اشکالات کا ازالہ بھی کیا جائے گا۔

اسلام دشمن عناصر کی پوری کوشش ہے کہ عورت کو آزادی کا جھانسا دے کر اسے اسلام سے دور کیا جائے اور پھر عورت کے ذریعے خاندان اور پورے معاشرے کو لادین بنا دیا جائے۔

اس مقصد کے لیے استعماری قوتوں نے گزشتہ صدی کے آغاز ہی میں آزادی نسواں کا نعرہ پوری شدت سے بلند کر دیا تھا۔ یہ نعرہ پہلے خود یورپ اور امریکا میں لگا تھا اور عورت کو گھر سے باہر نکال کر مردوں کے شانہ بشانہ مصروفِ کار رہنے کی حوصلہ افزائی کی گئی تھی۔ اس کی وجہ اس کے سوا اور کچھ نہیں تھی کہ مغربی مرد عورتوں سے زیادہ سے زیادہ لطف حاصل کرنا چاہتے تھے اور وہ بھی اس انداز میں کہ اُن پر شوہر اور باپ کی حیثیت سے عائد ہونے والی ذمہ داریاں کم سے کم ہو جائیں۔ اس لیے عورتوں کو گھروں سے نکال کر دفاتر میں لایا گیا، انہیں مختصر سے مختصر لباس پہنا کر ہر لحظہ اپنی نگاہوں کی ہوس پوری کرنے کا انتظام کیا گیا، عورت کو اس عریانیت پر فخر کرنا سکھایا گیا۔ عورتوں سے مصافحے اور معانقے کو تہذیب کا حصہ بنا دیا گیا۔ پارٹیوں میں اجنبی مردوں اور عورتوں کا مل کر رقص کرنا شرافت میں داخل کر دیا گیا۔ جنسی تعلقات کی حدود و قیود کو اتنا نرم کر دیا گیا باہمی رضامندی سے کی جانے والی زنا کاری کسی لحاظ سے بھی جرم نہ رہی۔ مگر عورت کے کھلم کھلا استعمال کے تمام دروازے کھول کر بھی عورتوں کو وہ درجہ نہیں دیا گیا جس سے ان کے حال اور مستقبل کا تحفظ ہوتا۔ فرق بس اتنا پڑا کہ وہ شوہر کی بلاشرکتِ غیرے رفیقہ کی بجائے ہر ایرے غیرے کی دسترس میں آ گئی۔ گھر کی محافظہ کی بجائے ہوٹل، ہسپتال، بازار اور دکان کی باندی بن گئی۔ برتن دھونے

اور عمارتوں کی صفائی سے لے کر کارواشنگ تک نچلے درجے کے سارے کام عورتوں کے ذمہ ہی رکھے گئے جبکہ اعلیٰ عہدے اکثر مردوں کے قبضے میں رہے۔ ہاں دنیا کے سامنے مساواتِ مرد و زن کی نمائش کے لیے چند ایک جگہ عورت کو کوئی بڑا عہدہ بھی دے دیا جاتا ہے۔

عورت کی اس آزادی سے سے یورپ و امریکا میں جو جنسی گرم بازاری پھیلی اس سے وہاں کا خاندانی نظام تیزی سے بکھرنے لگا۔ بے پردگی اور فحاشی کے ان بھیانک نتائج کو دیکھ کر اہل مغرب کو اپنی سوچ میں تبدیلی لانا چاہیے تھی مگر آسان جنسی تلذذ کے جو راستے اب کھل چکے تھے انہیں ہوس کے پجاری خود کہاں بند کر سکتے تھے۔ چناں چہ انہوں نے اپنے خاندانی نظام کی تباہی کو قبول کر لیا۔ مگر اس کے ساتھ ساتھ انہیں یہ گوارا نہیں تھا کہ مسلمانوں کے ہاں عورت کی عصمت و عظمت اور خاندانی نظام کی اہمیت باقی رہے۔ اس لیے انہوں نے اپنے ایجنٹوں کے ذریعے آزادی نسواں کا نعرہ مسلم اور مشرقی دنیا میں بھی بلند کروایا۔ اس نعرے کے پیچھے ان کے تین بڑے مقاصد تھے۔

### 6.16.1- اسلامی اخلاق و معاشرت کی بربادی:

اسلامی اعلیٰ اخلاق و اقدار اور معاشرتی خوبیاں اہل مغرب کے لیے حسد کا باعث بن گئی تھیں۔ چنانچہ انہوں نے سوچا کہ اگر وہ خود اپنی معاشرتی اقدار کو بہتر نہیں بنا سکتے تو کم از کم مسلمانوں کو بھی اس بہترین اور محفوظ خاندانی نظام سے محروم کر دیا جائے اور اپنی طرح ان کی معاشرت کو بھی تباہ کر دیا جائے۔

### 6.16.2- اسلامی معاشرہ کی جاذبِ توجہ خصوصیات کا خاتمہ:

مغربی دنیا نے یہ خطرہ بھی محسوس کر لیا تھا اگر اسلامی معاشرہ اپنی روایتی اعلیٰ صفات اور شریفانہ اقدار کا مالک رہا تو اپنے خاندانی نظام کی شکست و ریخت سے پریشان حال مغربی لوگ اسے رشک سے دیکھنے لگیں گے اور جب انہیں اپنے معاشرتی لاینحل مسائل کا حل صرف اسلام میں نظر آئے گا تو وہ اسلام کی طرف راغب ہونے لگیں گے۔ چنانچہ وہ مسلمانوں کے ہاں رائج عفت و عصمت کے شاندار اور مثالی نظام کو تہس نہس کرنے پر تل گئے تاکہ دنیا کو مسلمانوں اور غیر مسلموں میں کوئی خاص نظر نہ آئے اور اسلامی معاشرے کی طرف غیر مسلموں کے رجحان کا امکان نہ رہے۔

### 6.16.3- مسلمان عورتوں کو بازاری جنس بنادینے کی قدیم خواہش:

مسلمان عورتیں گزشتہ تیرہ صدیوں سے مستور تھیں۔غیر مسلموں کو کبھی یہ ہمت نہیں ہوتی تھی کہ وہ مسلمان عورتوں پر ہاتھ اٹھانا تو کجا انہیں بُری نظر سے دیکھ بھی سکیں۔اگر کوئی بدبخت ایسی جرأت کر بیٹھتا تو وہ عبرتناک انجام کا شکار ہوکر رہتا تھا۔یورپ اور امریکا کے عیاش اور ہوس پرست سرمایہ داروں کا دیرینہ خواب تھا کہ جس طرح وہ مغربی عورتوں کو چند پیسوں میں خرید کر اپنی خلوت گاہیں آراستہ کرتے ہیں اسی طرح مسلمان عورتوں کو بھی استعمال کرسکیں اور ان سے لطف اندوز ہوسکیں۔اگرچہ مسلمانوں کے سیاسی زوال کے بعد جنگ وجدل کے ذریعے مسلمان خواتین کو قیدی بنانے میں کوئی دقت نہیں تھی مگر یہ کسی طرح ممکن نہیں تھا کہ کوئی کلمہ گو عورت رضامند ہوکر اپنا حُسن ان پر ظاہر کرے، چہ جائے کہ ان کی بانہوں میں آکر ان کی جسمانی تسکین کا سامان بنے۔

اپنے اس ارمان کو پورا کرنے کے لیے انہوں نے خود مسلمان عورت کا ذہن تبدیل کردینے کی کوشش شروع کردی تاکہ وہ اپنی خوشی سے اپنا حسن بے نقاب کرے اور رفتہ رفتہ اس حد تک پست ہوجائے کہ اسے جائز اور ناجائز تعلقات کا فرق بھی یاد نہ رہے اور وہ خود ان کی جھولی میں آگرے۔

عالمگیریت (Globalization) کے بعد مسلم معاشرے کا بگاڑ اور عورت کی آزادی خود عالمگیریت (Globalization) کے لیے ناگزیر قرار پائی کیوں کہ اسلامی معاشرت، معاشرتی عالمگیریت (Globalization) کی تکمیل میں سب سے بڑی رکاوٹ بن سکتی تھی اس لیے اب عالمگیریت (Globalization) کی تحریک مسلم عورت کی مغربی بلکہ امریکی عورت کی طرح عفت وعصمت سے بے پروا کردینے میں سب سے بڑا کردار ادا کررہی ہے۔

### 6.16.4- آزادی نسواں کے لیے پروپیگنڈا مہم

آزادی نسواں کو فروغ دینے اور مسلم عورت کا ذہن بدلنے کے لیے اہل مغرب نے جو پروپیگنڈا مہم شروع کررکھی ہے، اس کا خلاصہ یہ نکلتا ہے کہ اسلام میں عورت مظلوم ہے۔مسلم معاشرے میں عورت کی کوئی حیثیت نہیں، اس کے ساتھ برابری کا سلوک نہیں کیا جاتا۔وہ ہر معاملہ میں مردوں کے رحم وکرم پر ہوتی ہے۔معاشرے کا سارا بوجھ اسی پر ہے اور اسی سے

سارے گھٹیا کام کاج کروائے جاتے ہیں۔غرض یہ کہ اسلام کو عورت کے بنیادی حقوق کا غاصب مذہب قرار دیا جاتا ہے۔(نعوذ باللہ)

اس سلسلے میں درج ذیل نکات خاص طور پر اٹھائے جاتے ہیں:

① اسلام میں عورت کو گھر کا قیدی بنا دیا گیا ہے۔اسے پردے پر مجبور کر کے اپنی خداداد صلاحیتوں اور عمدہ صفات کے اظہار سے محروم کر دیا گیا ہے۔اس کی خود کو دنیا سے منوانے کی فطری خواہش کا گلا گھونٹ دیا گیا ہے۔مغرب نے عورت کو اظہار ذات وصفات کا پورا موقع دیا ہے۔

② اسلام نے عورت کو خود کفیل ہونے اور کمائی کے لیے باہر نکلنے سے منع کیا ہے، اس طرح عورت کی معاشی اور معاشرتی حیثیت تباہ ہو جاتی ہے جبکہ یورپ میں عورت پوری طرح آزاد ہے۔وہ مردوں کی طرح نوکری کر سکتی ہے اور معاشی طور پر خود کفیل ہو چکی ہے۔

③ اسلام نے تو عورتوں کو ناقصات العقل قرار دیا ہے جو کہ بہت بڑی زیادتی ہے۔مغرب عورت کو پورا انسان مانتا ہے اور اسے کسی طرح مردوں سے کم تر نہیں سمجھتا۔

④ اسلام میں عورت کو بڑی حد تک میراث سے محروم کر کے زیادہ حصہ مردوں کو دے دیا جاتا ہے۔''مرد کا میراث میں دو عورتوں کے برابر حصہ ہونا'' ایک جانبدارانہ قانون ہے۔

⑤ اسلام میں طلاق کا حق صرف مردوں کو دیا گیا ہے۔یہ بھی عورت کے ساتھ زیادتی ہے۔یہ حق عورتوں کو بھی حاصل ہونا چاہیے۔

⑥ اسلام مردوں کو بیک وقت چار چار شادیوں کی اجازت دیتا ہے مگر عورت کو یہ اجازت نہیں۔وہ ایک ہی خاوند پر اکتفا کرنے کی پابند بنا دی گئی ہے۔

⑦ اسلامی معاشرے کی عدالت میں عورت کی گواہی نصف مانی جاتی ہے۔گویا اسے آدھا انسان قرار دیا گیا ہے۔

**جواب:**

اگرچہ ایسے گمراہ کن اشکالات کے مفصل جوابات دیے جا چکے ہیں اور یہاں ان تفاصیل

میں جانے کی گنجائش نہیں تاہم اس پروپیگنڈے کا مختصر جواب دیا جاتا ہے تاکہ طلبہ اور ناواقف قارئین کی تسلی ہو سکے کہ اسلام میں عورت پر ان پابندیوں کی وجہ کیا ہے۔

اصولاً کلمہ طیبہ پڑھنے کے بعد کسی فرد کو شرعی احکام پر معترض ہونے کا کوئی حق نہیں رہتا۔ جب ہم ایمان لا چکے ہیں کہ اسلام ایک مکمل ضابطہ حیات ہے جو انسان کی پوری زندگی کا احاطہ کیے ہوئے ہے اور ہم یہ بھی مانتے ہیں کہ اس نظام کا خالق اللہ تعالیٰ ہے جس کے ہر حکم میں بے شمار حکمتیں ہیں تو ہمیں کسی حکم کی تعمیل کی بجائے اس کی علتیں تلاش کرنے کی کوئی ضرورت نہیں رہتی۔ ایک مسلمان کا کام بے چوں و چرا احکام الٰہی کی تعمیل کرنا ہے نہ کہ حجت بازی کرنا۔

''اللہ حکیم وفعل الحکیم لا یخلو عن الحکمۃ.''

یقیناً اللہ تعالیٰ کا کوئی امر حکمت سے خالی نہیں ہوتا۔ اس خالق و مالک کے نظام اور شریعت کی ایک ایک چیز حکمتوں اور اسرار سے بھرپور ہے جن کو پوری طرح سمجھنا انسانی عقل کے بس میں نہیں۔ اہل ایمان کی سوچ یہی ہونی چاہیے تاہم تشکیک میں مبتلا اذہان کے اطمینان کے لیے اس پروپیگنڈے کے خلاف چند عقلی دلائل بھی دیے جاتے ہیں:

## عورت گھر کی قیدی ہے؟

اسلام میں عورت کا گھر سے باہر نکلنا مطلقاً منع نہیں ہے بلکہ اس کو ضرورت کے وقت شرعی پردے کے ساتھ باہر نکلنے کی اجازت دی گئی ہے۔ عورت اپنے ماں باپ اور رشتہ داروں کے ہاں جا سکتی ہے۔ مجبوری میں خرید و فروخت کے لیے بھی نکل سکتی ہے۔ طبیب وغیرہ کے پاس جانے کی بھی اجازت ہے۔ عورتیں حج پر بھی جاتی ہیں جو ایک طویل سفر ہوتا ہے، اس کے علاوہ نفیر عام کے وقت عورتیں جہاد میں بھی حصہ لیتی ہیں، رسول اللہ ﷺ ازواجِ مطہرات کو سفر میں اپنے ساتھ لے جایا کرتے تھے۔ لہٰذا یہ تاثر بالکل غلط ہے کہ اسلام نے عورت کو گھر کا قیدی بنا دیا ہے۔ وہ گھر کی قیدی نہیں گھر کی ملکہ ہے۔ اسے گھر پر رہنے کی تلقین اسی لیے کی جاتی ہے تاکہ وہ گھر کے کاروبار پر پوری توجہ دے سکے۔ باہر دھکے کھانے اور زمانے کے فتنوں سے محفوظ رہے۔

## عورت خود کفیل کیوں نہیں؟

اسلام عورت کو خود کفیل ہونے سے منع نہیں کرتا۔ اس کے حق ملکیت کو تسلیم کرتا ہے۔ اسلامی تاریخ میں بڑی بڑی مالدار عورتیں گزری ہیں۔ خود ام المؤمنین حضرت خدیجہ رضی اللہ عنہا مشہور تاجرہ تھیں۔ عورت جائیداد کی مالک بن سکتی ہے۔ اپنے مال سے صدقہ و خیرات کر سکتی ہے۔

البتہ اسلام نے عورت کو ایک اضافی سہولت یہ دی ہے کہ کنبے کی معاشی ذمہ داری کے بوجھ سے اسے آزاد کر دیا۔ معاش کا ذمہ دار مکمل طور پر مرد کو بنا دیا۔ عورت بیٹی ہو تو اس کے خرچ کا ذمہ دار باپ ہے، بیوی ہو تو یہ ذمہ داری شوہر پر ہے۔ اگر شوہر اور باپ نہ ہوں تو بھائی، بیٹوں اور دوسرے قریبی رشتہ دار اس کی کفالت کے ذمہ دار ہیں۔ اگر کوئی نہ ہو تب خود حکومت پر ذمہ داری عائد ہوتی ہے کہ وہ اس کا خرچہ اٹھائے۔ عورت کو دی گئی یہ مراعات اتنی بڑی ہیں کہ دنیا میں کوئی مرد اس کا تصور نہیں کر سکتا۔

ہاں اتنی بات ہے کہ اسی مالی کفالت کی ذمہ داری کی وجہ سے اللہ تعالیٰ نے مردوں کو گھر کا سربراہ بنایا ہے اور انہیں کچھ اختیارات زیادہ دیے ہیں۔

﴿ اَلرِّجَالُ قَوّٰمُوْنَ عَلَى النِّسَآءِ بِمَا فَضَّلَ اللّٰهُ بَعْضَهُمْ عَلٰى بَعْضٍ وَّ بِمَآ اَنْفَقُوْا مِنْ اَمْوَالِهِمْ ﴾ (النساء: ٣٤)

''مرد عورتوں پر حاکم ہیں اس لیے کہ اللہ نے بعضوں کو بعض پر فضیلت دی ہے اور اس لیے بھی کہ مرد اپنے مال خرچ کرتے ہیں۔''

دنیا میں بھی یہی قانون رائج ہے کسی ادارے میں جس پر جتنی ذمہ داری زیادہ ہوتی ہے اسی قدر اسے اختیار زیادہ ملتا ہے۔ یہ بھی تسلیم شدہ قاعدہ ہے کہ کسی بھی دکان، کارخانے یا ادارے میں اعلیٰ اختیار اسی فرد کے پاس ہوتا ہے جو سب کے اخراجات کا ذمہ دار ہوتا ہے۔ اسی کو دکان، کارخانے یا ادارے کا مالک مانا جاتا ہے۔ چونکہ گھر کی معاش کا ذمہ دار اللہ تعالیٰ نے مرد کو بنایا ہے، اس لیے گھریلو زندگی میں عورت کو اس کے ماتحت رکھا ہے مگر یہ ماتحتی غلاموں یا باندیوں جیسی نہیں بلکہ ایک حسین رشتے اور مقدس بندھن کی شکل میں ہے۔

عمومی حقوق میں اللہ تعالیٰ نے مرد اور عورت کو برابری دی ہے، اگر مرد آزاد ہے تو عورت بھی آزاد ہے، اسی طرح حصول علم، شرافت، پاکیزگی نفس اور سب سے بڑھ کر آخرت کے درجات میں دونوں کو از روئے شرع یکساں طور پر آگے بڑھنے کے مواقع حاصل ہیں۔

یہ بھی یاد رکھنا چاہیے کہ اسلام میں مرد اور عورت کے درمیان مساوات اس طرح کی نہیں جس کا نعرہ لگا کر مغرب نے عورتوں کو ان کی خلقی صفات اور صلاحیتوں کے مطابق کاموں سے ہٹا کر نامناسب کاموں میں جھونک دیا ہے۔

اسلام میں مردوں کو عورتوں پر ایک گونہ فضیلت دی گئی ہے۔ مگر حقوق دونوں کے اپنی اپنی جگہ محفوظ ہیں۔

﴿وَلَهُنَّ مِثْلُ الَّذِي عَلَيْهِنَّ بِالْمَعْرُوفِ ۖ وَلِلرِّجَالِ عَلَيْهِنَّ دَرَجَةٌ ۗ﴾ (البقرة: ۲۲۸)

''عورتوں کے لیے کچھ حقوق ہیں جیسا کہ از روئے شرع ان کے ذمے (مردوں کے) کچھ حقوق ہیں۔''

اس کے ساتھ ساتھ اس حقیقت کو اجاگر کیا گیا ہے کہ مرد و عورت میں سے ہر ایک جنس دوسری جنس کو مکمل کرتی ہے اور ایک دوسری کے بغیر ادھوری ہے۔

﴿هُنَّ لِبَاسٌ لَّكُمْ وَأَنتُمْ لِبَاسٌ لَّهُنَّ﴾ (البقرة: ۱۸۵)

''عورتیں تمہارے لیے تم ان کے لیے بمنزلہ لباس کے ہو۔''

دونوں کے اتحاد سے انسانی خصوصیات کا تکامل ہوتا ہے اور معاشرے کی تکمیل ہوتی ہے۔ جہاں تک صنفی خصوصیات کا تعلق ہے تو ہر ایک جنس کو اللہ تعالیٰ نے بعض امتیازی خصوصیات دی ہیں اور انہی خصوصیات کے لحاظ سے ان کے حقوق اور وظائف زندگی بھی الگ الگ ہیں۔

## ناقصات العقل؟

عورتوں کو بعض احادیث میں ناقصات العقل کہا گیا ہے مگر یہ طعنے کے طور پر نہیں بلکہ ان کی خلقت کی نزاکت اور بعض طبعی اور نفسیاتی خصوصیات کی بنا پر کہا گیا ہے جن کا انکار ممکن نہیں۔ یہی

طبعی اور نفسیاتی خصوصیات مرد اور عورت میں فرق پیدا کرتی ہیں۔

خود مغربی ماہرین اپنی تحقیقات میں عورت اور مرد کے درمیان اس قسم کے فرق کا اعتراف کر چکے ہیں جس کو وہ ''سائیکالوجیکل'' اور ''بایولوجیکل ڈِفرنس'' (نفسیاتی اور حیاتیاتی فرق) کا نام دیتے ہیں۔

## مسئلہ میراث:

عورت کو میراث سے مردوں کی بنسبت نصف حصہ کیوں دیا گیا؟ حقیقت یہ ہے کہ یہ اعتراض تب وارد ہوسکتا تھا جب عورتوں کی معاشی ذمہ داری مردوں پر نہ ڈالی گئی ہوتی۔ لیکن جب اسلامی معاشرے میں اللہ تعالیٰ کی دی ہوئی سہولت کے مطابق عورت کو کمانے کا مکلف نہیں بنایا جاتا بلکہ اس کی کفالت مردوں کے ذمے رہتی ہے تو ایسے میں عورت کو بیٹھے بٹھائے میراث میں سے مردوں کی بنسبت نصف حصہ کا مل جانا بھی اس کے لیے سراسر مفت کا نفع ہے۔ ظاہر ہے جس شخص کے ذمے پچاس ہزار کے لگ بھگ ماہانہ اخراجات ہوں، بیس تیس ہزار روپے مل جانے سے اس کی مالی حالت میں کوئی خاص ترقی نہیں ہوسکتی۔ مگر جس کے ذمے کوئی خرچہ نہ ہو اسے دس ہزار مل جانا بھی سراسر بچت ہے۔ اس لیے دیکھنے میں تو ایسا لگتا ہے کہ عورت کو کم دیا گیا لیکن حقیقت میں اسے اس کے حق سے بھی کچھ زیادہ ہی دیا گیا ہے۔

مردوں کو میراث کی ضرورت اس لیے ہے کہ مورث کے مرنے کے بعد وارث مرد کو آگے بہت سارے لوگوں کی کفالت کرنی ہوتی ہے۔ ماں، بہن، بھائی، بیٹے اور بعض اوقات بھتیجے بھتیجیاں وغیرہ سب کی کفالت اس کے کندھوں پر آجاتی ہے۔ اسے زیادہ وراثت ملنے میں ان سب کو فائدہ ہوگا جو اس کے زیر کفالت ہیں۔

یہ مرد ہی ہے جو اپنی زندگی بھر کی جمع پونجی لگا کر عورت کے لیے گھر بناتا اور زیور خریدتا ہے، اولاد کی کفالت کرتا ہے، ان کی تعلیم، شادی اور کاروبار تک ساتھ دیتا ہے۔ ان تمام کاموں کے لیے بڑی رقم کی ضرورت ہوتی ہے۔ اگر اسے عورت کے برابر حصہ ملے تو اتنے بڑے خرچوں کے لیے مناسب رقم کا انتظام ہونا مشکل ہوجائے۔

اس کے علاوہ فطری طور پر عورت کوئی بھی شے دیکھ کر مچل جاتی ہے، چاہے وہ بالکل غیر ضروری ہی کیوں نہ ہو۔ اس لیے خریدنے کے معاملے میں اس کا ہاتھ بہت کھلا ہوتا ہے۔ اگر اسے میراث میں سے زیادہ حصہ مل جائے تو خاندان کے قیمتی اثاثے غیر مفید اور غیر پیداواری مصارف میں خرچ ہو جائیں گے اور انجام کار وہ کنبہ مالی لحاظ سے مشکلات کا شکار ہو جائے گا۔

یہ بات بھی یاد رکھنی چاہیے کہ اسلام سے پہلے خود عورت کو مال میراث کی طرح ورثاء میں بانٹا جاتا تھا۔ سب سے پہلے اسلام نے یہ تعلیم دی کہ عورت میراث کا مال نہیں خود میراث کی مالک اور حصہ دار ہے۔ اسلام کے سوا دیگر مذاہب میں تو عورت کو میراث سے بالکل محروم رکھا گیا تھا۔ بعد میں مسلمانوں کی دیکھا دیکھی عیسائیوں اور ہندوؤں نے اپنے ہاں عورت کی میراث کے بارے میں قانون سازی کی۔

## حق طلاق:

شادی نباہ کرنے کے لیے کی جاتی ہے نہ کہ رشتہ توڑنے کے لیے۔ اس لیے اسلام کا نقطہ نظر یہ ہے کہ حق طلاق کو جتنا محدود رکھا جائے اتنا ہی بہتر ہے۔ مرد اور عورت دونوں کو حق طلاق دینے سے یہ دائرہ وسیع ہو جاتا اور بات بے بات طلاق کے امکانات بڑھ جاتے جیسا کہ مغربی دنیا میں طلاق کی بڑھتی ہوئی شرح سے ثابت ہے۔ لہٰذا زوجین میں سے یہ اختیار صرف اس ایک فرد کے حوالے کیا گیا جو گھر کا سربراہ ہے، فطری طور پر سخت جان ہے اور جس سے سوچ سمجھ کر ایسا فیصلہ کرنے کی زیادہ توقع ہے۔ اگر یہ حق عورت کو دیا جاتا تو اس کے جذبات اور نازک مزاجی کے باعث اس بات کا خطرہ تھا کہ رشتے بہت جلدی ٹوٹنے لگ جاتے اور شادی کے کچھ ہی عرصے کے بعد جدائی ہو جاتی جس سے معاشرے میں بگاڑ پیدا ہوتا۔

بہر کیف اگر عورت جدا ہونا ہی چاہتی ہے تو شریعت نے طلاق کے متبادل اس کو خلع کا اختیار دیا ہے، لہٰذا وہ اپنے اس حق کو استعمال کر کے جدا ہو سکتی ہے۔

## عورت کا بیک وقت متعدد شوہر نہ کر سکنا:

اس کا فساد بالکل ظاہر ہے۔ کیوں کہ اس طرح عورت سے پیدا ہونے والی اولاد کا نسب

ثابت ہونا ناممکن ہوجائے گا۔ کسی آدمی کا نسب مشکوک ہوجانا اس کے لیے عمر بھر کی لعنت اور شرمندگی بن جاتا ہے اور آنے والی نسلوں تک یہ مسئلہ ایک ناسور بن جاتا ہے۔ پھر عورت کا دوسرے مرد سے تعلق فطری غیرت کے بھی خلاف ہے۔ اس لیے اسلام نے عورت کو بیک وقت ایک سے زیادہ شادیوں کی اجازت نہیں دی۔ دیگر مذاہب کے پیروکار بھی اس حقیقت کو مانتے ہیں اور ان کے ہاں بھی یہ ناجائز ہے مگر لادین طبقہ عورت کے حوالے سے صرف اسلام کو ہدف تنقید بنانے کے لیے ایسے غیر معقول اعتراضات اٹھاتا ہے۔

## نصف گواہی کیوں؟

عورت کی گواہی نصف اس لیے ہے کہ تاکہ اسے عدالتی بکھیڑوں میں نہ گھسیٹا جائے اور اگر کبھی ایسی نوبت آ ہی جائے تو وہ اکیلی نہ رہے، اسے ایک خاتون ساتھی کے ذریعے حوصلہ رہے۔ اس بات کا امکان ہے کہ وہ طبعی نزاکت کی وجہ سے گھبرا جائے اور صحیح طریقے سے گواہی نہ دے سکے۔

یہاں ایک طبی اور نفسیاتی مسئلہ بھی ہے، وہ یہ کہ عورت کے بارے میں جدید تحقیق بتاتی ہے کہ اس کا ذہن مرکب اور متنوع مناظر کی طرف بیک وقت متوجہ ہونے اور انہیں یاد رکھنے میں زیادہ فعال ہوتا ہے۔ ان کا ذہن کسی چیز کی طرف متوجہ ہوتا ہے تو اس کی شعاعیں پھیل جاتی ہیں۔

جبکہ مردوں کا ذہن ایک خاص واقعے اور خاص موضوع کو زیادہ گہرائی سے دیکھنے، سوچنے اور یاد رکھنے میں زیادہ تیز ہوتا ہے۔ ان کے ذہن کی مثال محدب عدسے جیسی ہے جو شعاع کو ایک نقطے پر مرکوز کر دیتا ہے۔

یہی وجہ ہے کہ عورتوں کو اکثر واقعات کی جزئیات تک یاد ہوتی ہیں اور اسی بناء پر وہ نقش ونگار بنانے میں زیادہ بہتر ثابت ہوتی ہیں۔ ان کا حافظہ جزئیات کو یاد رکھنے کے زیادہ کام آتا ہے۔ جبکہ مردوں کا ذہن جزئیات کو نظرانداز کر کے ایک خاص موضوع سے متعلق گہرائی میں چلے جاتا ہے۔

ممکن ہے عورت کی گواہی نصف ہونے میں یہ حکمت بھی پوشیدہ ہو کہ اس خاص واقعے کو بیان کرتے ہوئے عورت اپنی طبعی عادت کے مطابق اصل نکتے کو نظرانداز کر کے دوسری

جزئیات بتانے میں مصروف نہ ہو جائے۔ اس لیے دوسری عورت کا ساتھ ہونا ضروری ہے جیسا کہ خود قرآن مجید میں ہے:

﴿فَاِنْ لَّمْ یَكُوْنَا رَجُلَیْنِ فَرَجُلٌ وَّ امْرَاَتٰنِ مِمَّنْ تَرْضَوْنَ مِنَ الشُّهَدَآءِ اَنْ تَضِلَّ اِحْدٰىهُمَا فَتُذَكِّرَ اِحْدٰىهُمَا الْاُخْرٰى﴾ (البقرۃ: ۲۸۵)

یعنی اگر ایک عورت کو اپنی گواہی میں مغالطہ لگ جائے تو دوسری اسے یاد دلا دے۔

آخر میں یہ بات ذہن نشین کر لینا بہتر ہے کہ عورت کے جو حقوق ہیں وہ مستقل ایک حقیقت ہیں اور مرد کے حقوق ایک الگ حقیقت ہیں۔ حقوق کی یہ تقسیم دونوں کی خلقت اور ساخت کے لحاظ سے مختلف ہے۔ ایک کو کچھ امتیازی حقوق ملنے کا یہ مطلب نہیں کہ دوسرے پر زیادتی ہو گئی۔ اس کی مثال یوں سمجھیں کہ دو بچے دسویں کا امتحان دیتے ہیں، ایک آرٹس کا طالب علم ہے اور دوسرا سائنس کا۔ دونوں کے بعض مضامین مشترک ہیں اور بعض الگ الگ۔ اب اس پر احتجاج کرنا حماقت ہی ہوگا کہ ایک کو فزکس کے پرچے میں بیٹھنے دیا گیا ہے اور دوسرے کو کیوں نہیں اور یہ واویلا کرنا تو پاگل پن ہی ہوگا کہ آرٹس والوں کو کیمسٹری پڑھنے کی اجازت کیوں نہیں اور سائنس والوں کو تاریخ اسلام کے مضمون سے کیوں آزاد رکھا گیا ہے۔

جب دونوں کے شعبے الگ الگ ہیں تو مضامین اور امتحان بھی الگ ہوگا۔ اصل چیز یہ ہے کہ دونوں اپنے اپنے شعبے میں اچھے نمبروں سے کامیاب ہوں۔ انہیں اسکول میں بھی عزت ملے گی اور گھر میں بھی۔ اور دونوں ہی معاشرے کے لیے مفید ثابت ہوں گے۔

یہی معاملہ مرد اور عورت کے حقوق و فرائض میں ہے۔ اپنی خلقت اور وضع کے لحاظ سے ان کو الگ الگ اہداف دیے گئے ہیں اور یہ قانون پوری دنیا میں رائج ہے جو انسان جس کام کا اہل ہوتا ہے اس کے ذمے وہی کام لگایا جاتا ہے، لہٰذا یہاں بھی اللہ تعالیٰ نے عین انصاف کے تقاضوں کے مطابق دونوں کو اپنا اپنا دائرہ کار دیا ہے۔ دونوں شریعت کے مطابق چلیں اور اپنی ذمہ داریوں کو نباہنے میں اچھی کارکردگی دکھائیں تو دنیا میں بھی کامیاب ہوں گے اور آخرت میں بھی۔

مستشرقین کے گھڑے ہوئے ان اعتراضات کا پرچار کر کے مسلمان عورت کو خالص اسلامی اقدار سے برگشتہ کرنے کا کام تقریباً ڈیڑھ صدی سے جاری ہے۔ استعماری، استشراقی اور صلیبی طاقتیں اس ہدف کے لیے پوری طرح سرگرم رہیں۔ برطانوی، اطالوی اور فرانسیسی استعماری افواج جہاں بھی اتریں وہاں یورپ کی بے پردہ میمیں اور جسم فروش عورتیں بھی ساتھ ساتھ آئیں جنہوں نے اسلامی ملکوں کے ماحول کو خراب کیا۔ ان عورتوں میں افسران کی بیگمات کے علاوہ صحافی خواتین اور معلمات بھی ہوا کرتی تھیں۔ استعمار کے مقبوضہ ملکوں کے نئے تعلیمی نظام میں بھی ماحول کو یورپی تہذیب کے قریب تر کرنے والی چیزوں کو فروغ دیا گیا۔ مستشرقین اور ان کے شاگردوں نے عورت کی آزادی کے مسئلے کو بڑی شدت سے اٹھایا اور اس پر ان گنت مضامین، مقالے، کتابیں اور رسائل تحریر کیے۔

مستشرقین کے پروردہ یہ اسکالرز عورت کو تسلی دینے کے لیے اسلامی احکام کی غلط تاویلات کرتے ہیں اور اسے یہ بتاتے ہیں کہ جن اقدار کو مسلم معاشرے کی اقدار مانا جاتا رہا ہے ان کا اسلام سے کوئی تعلق نہیں، یہ صرف مولویوں کی بنائی ہوئی باتیں ہیں۔ اصل اسلامی تعلیمات تو مغربی طرزِ حیات کی تائید کرتی ہیں جن میں عورت کے لیے پردے اور حجاب کی کوئی قید نہیں۔ اسلام میں کھانے کمانے کے لیے مردوں کے شانہ بشانہ کام کر سکتی ہے۔ عقل، ذہانت اور حافظے سمیت تمام صلاحیتوں میں وہ مرد کے برابر ہے۔ اس کی گواہی بھی پوری ہے۔ میراث میں اس کا حصہ پورا ہے۔ پارلیمنٹ کو مجتہد کا مقام تفویض کر کے اس کے ذریعے مسلم عورت کو مغربی عورت کی طرح طلاق کا حق بھی دینا چاہیے۔ (ممکن ہے کل کلاں یہ اسکالرز یہاں تک کہہ دیں کہ اگر پارلیمنٹ منظوری دے دے تو اسے چار مردوں سے تعلقات کی اجازت بھی ملنی چاہیے)

ان اسکالرز میں ایک بڑا نام مصر کے قاسم امین کا ہے، جس نے 1912ء میں ''تحریر المرأۃ'' کے نام سے ایک کتاب لکھی، کچھ مدت بعد ''المرأۃ الجدیدۃ'' کے نام سے اس کی دوسری تصنیف سامنے آئی۔ ان کتب میں اس نے لکھا کہ مسلمانوں میں جو پردہ رائج ہے اس کا اسلام سے کوئی تعلق نہیں۔''

ایک جگہ یہ لکھا: ''مجھے کسی نص قرآنی سے پردہ کے متعلق کوئی آیت نہیں ملی۔''

نیز وہ لکھتا ہے: ''نبی اکرم ﷺ کے زمانے میں عربوں کی معاشرت ایسی تھی کہ وہاں پردہ کیا جاتا تھا، بس اسی لیے عورتیں پردہ کرتی تھیں، حالانکہ قرآن وحدیث میں اس کا کوئی ذکر نہیں ہے۔''

جبکہ حقیقت اس کے برعکس ہے۔ اسلام اور قرآن وحدیث سے واقف ایک عام طالب علم بھی جانتا ہے کہ شریعت میں پردے کی کتنی تاکید آئی ہے۔ قرآن وحدیث میں اس کے متعلق صراحت کے ساتھ نصوص موجود ہیں۔ سورۃ المؤمنون میں ہے:

﴿قُلْ لِّلْمُؤْمِنِيْنَ يَغُضُّوْا مِنْ اَبْصَارِهِمْ﴾

سورۃ النور میں ہے:

﴿ وَلَا يَضْرِبْنَ بِاَرْجُلِهِنَّ﴾

اس کے علاوہ احادیث میں بھی بڑی صراحت کے ساتھ پردے کے ضروری ہونے کا ذکر موجود ہے۔ اس کے علاوہ ایک عام سوجھ بوجھ والا ہر شخص جو عورت کی عزت وناموس کی قدر وقیمت جانتا ہے، اس چیز کو بدیہی طور پر سمجھ سکتا ہے کہ پردہ مسلمان عورت ہی کی نہیں بلکہ ہر خاتون کی عزت وناموس کے تحفظ کے لیے ضروری ہے۔ اسے عربوں کا رواج کہنا فریب کاری کی انتہاء ہے۔ مگر مغربی شیاطین کے تنخواہ دار، یہ نام نہاد اسکالرز حقائق کو قدموں تلے روند کر خواتین کو اسلام کے صریح احکام کی خلاف ورزی پر اس انداز سے راغب کرتے ہیں کہ ان کے دلوں سے احساسِ گناہ بھی جاتا رہتا ہے۔

پردے کے خاتمے اور اسلامی معاشرے کے بگاڑ کے لیے ان اسلام دشمنوں نے اپنی کوششیں جاری رکھیں۔ اسکولوں، کالجوں اور یونیورسٹیوں کو بے پردگی اور آزاد تعلقات کے ورک شاپ بنا دیا گیا۔ بچوں اور بچیوں کی مخلوط تعلیم کا انتظام کر کے ان کے ذہنوں میں یہ بات بٹھا دی گئی کہ پردہ کرنا دقیانوسیت اور پرانے خیالات کی عکاسی ہے۔

1913ء میں ایک باقاعدہ سازش کے تحت ایسی جدت پسند مسلمان عورتوں کو سامنے لایا گیا جنہوں نے سرِ عام نقاب اتارے اور برقع وچادر کو اٹھا کر پھینک دیا۔ مصر میں ھدیٰ شعراوی پہلی عورت تھی جس نے پردے کے خلاف آواز اٹھائی۔ ایسی خواتین زیادہ تر وہ تھیں جن کے والدین

یا شوہر انگریزوں اور دوسری استعماری طاقتوں کے ہاں نہایت وفادار خادم کے طور پر مشہور تھے اور ان کی تعلیم وتربیت مغربی ماحول میں کی گئی تھی۔

1923ء ''مؤتمر النساء'' کے نام سے اٹلی کے شہر روم میں خواتین کی عالمی کانفرنس منعقد ہوئی جس میں تمام عالم اسلام سے مغرب زدہ خواتین کو مدعو کیا گیا۔ کانفرنس کا ایجنڈا تھا کہ عورتوں کو آزادی دی جائے اور ان پر وہ ظلم وستم بند کیا جائے جو مسلم معاشرے میں مروج ہے۔

اس کانفرنس میں ھدیٰ شعراوی نے برقع اتار کر اپنے پاؤں کے نیچے رکھا اور اسے مسل کر اعلان کیا: ''آج کے بعد پردے کا رواج ختم۔ جو عورت جس طرح کا چاہے لباس پہنے۔''

کچھ مدت بعد اسلامی دنیا میں ایسی تقاریب منعقد کی گئیں جن میں پردے کا مذاق اڑایا گیا۔ دریائے نیل کے کنارے ایک محفل آراستہ ہوئی اور فرنگی ماحول میں پلنے بڑھنے والی عورتوں نے یہاں اپنے برقعے اتار کر دریائے نیل کی مٹی اور کیچڑ میں رگڑے اور اعلان کیا کہ اب عورتیں آزاد ہیں۔ 1934ء میں مصطفی کمال اتاترک کے جدید ترکی میں عورتوں کو رائے دہی کا حق دیا گیا، اس کے بعد عورتوں کو پارلیمنٹ میں بھی نمائندگی دی گئی جس کے بعد عورتوں کے لیے سیاست میں حصہ لینے کا دروازہ بھی کھل گیا۔

❀❀❀

آزادی نسواں کے نقیب بے پردگی کی دعوت پانچ مراحل میں دیتے ہیں:

### 6.16.5- پہلا مرحلہ: مردوں کے سامنے چادر اُتارنا، نقاب کھولنا (الغاء الحجاب):

پہلا مرحلہ نقاب کھولنا یا برقعے کو اتارنا ہے، عورتوں کو اس پر آمادہ کرنے کے لیے قرآن پاک کی آیات اور احادیث کی غلط تاویلات کر کے کہا جاتا ہے کہ اسلام میں چہرے کا پردہ ہے ہی نہیں۔ یہ بھی دعویٰ کیا جاتا ہے کہ صحابیات حتیٰ کہ امہات المؤمنین بھی چہرے کا پردہ نہیں کرتی تھیں۔

### 6.16.6- دوسرا مرحلہ: غیر محرم مردوں سے میل ملاپ (الاختلاط بالرجال):

نقاب اتارنے والی خواتین کو سمجھایا جاتا ہے اب انہیں گھر میں آنے والے مردوں کے

ساتھ ملنا جلنا چاہیے اور مخلوط تقاریب میں جانا چاہیے۔اس طرح مردوں اور عورتوں کے درمیان سے فطری حیا کو اٹھا دیا جاتا ہے اور اس کو فطرت کی تکمیل کا نام دیا جاتا ہے۔اس کے لیے دلائل کے انبار لگائے جاتے ہیں مثلاً مصر کے سیکولر مفکر قاسم امین کا کہنا تھا کہ جب تک عورتوں اور مردوں کا اختلاط نہ ہو، وہ مکمل نہیں ہو سکتے، ایک دوسرے کے مزاج کو نہیں سمجھ سکتے۔اگر زوجین نکاح سے پہلے ایک دوسرے کو جان نہ سکیں تو بعد میں گھٹن کا ماحول پیدا ہوتا ہے۔

مرد وزن کے اختلاط کی تربیت کی باقاعدہ ابتدا نرسری اسکولوں سے شروع ہو جاتی ہے۔ بچے اور بچیاں ابتدا سے اکھٹے بیٹھتے ہیں تو رفتہ رفتہ ان کی صنف مخالف سے فطری جھجک دور ہو جاتی ہے اور مخلوط ماحول میں رہنا ان کی عادت بن جاتا ہے۔چوں کہ جنس مخالف میں فطری کشش ہوتی ہے، اس لیے سن شعور کو پہنچ کر لڑکے اور لڑکیاں پڑھائی میں کم اور دوستانہ تعلقات میں زیادہ وقت گزارتے ہیں جس کے مفاسد آئے دن سامنے آتے رہتے ہیں۔

### 6.16.7- تیسرا مرحلہ: چہار دیواری کی قید سے آزادی (الخروج من البیت):

پردہ کی عادت ختم کرا دینے کے بعد دعوت دی جاتی ہے کہ گھروں میں چھپ کر دقیانوسیت کا مظاہرہ نہ کریں بلکہ گھر سے باہر قدم رکھ کر دنیا کا نظارہ کریں۔اس کے لیے پیش کردہ دلائل میں کہا جاتا ہے کہ خیر القرون کی خواتین بھی باہر نکلا کرتی تھیں، جنگوں میں شریک ہوتی تھیں۔

اس کے علاوہ مسلمان قائدین کی بیگمات کو نمونہ بنا کر پیش کیا جاتا ہے ہیں، مثلاً محمد علی جناح کی ہمشیرہ فاطمہ جناح، پاکستان کے پہلے وزیر اعظم لیاقت علی خان کی اہلیہ بیگم رعنا لیاقت علی خان، بیگم خلیق الزمان، مسز نصرت بھٹو، بے نظیر بھٹو۔ان میں سے کسی نے بھی پردہ نہیں کیا، سب گھر سے باہر نکل کر قوم کی خدمت کرتی رہیں۔یہ دلائل خاصے موثر ثابت ہوتے ہیں۔اس کے علاوہ خود میڈیا پر نظر آنے والے مناظر خواتین کو گھر سے نکلنے اور نقاب الٹنے پر آسانی سے مائل کر دیتے ہیں۔

### 6.16.8- چوتھا مرحلہ: مردوں کے شانہ بشانہ کام کاج (الخروج للعمل):

اگلا مرحلہ عورت کو باقاعدہ عملی میدان میں لانا ہوتا ہے۔کہا جاتا ہے کہ ہر شعبۂ زندگی میں عورت کے دم سے رونق ہے لہٰذا اسے ہر شعبے کو اپنی دلکشی سے حصہ دینا چاہیے اور معقول آمدن کی

شکل میں اپنی صلاحیتوں کی قیمت وصول کر کے خود کفیل بننا چاہیے، تب ہی وہ مردوں کی اجارہ داری سے صحیح معنوں میں آزاد ہو سکتی ہے۔

برقع اتار دینے والی اور مخلوط ماحول میں وقت گزارنے والی جدید عورت کے لیے یہ پیش کش بڑی دل پذیر ثابت ہوتی ہے۔ وہ مردوں کے شانہ بشانہ کام کے لیے بہت جلد تیار ہو جاتی ہے اور تعلیم، تجارت اور ٹرانسپورٹ سے لے کر فوج پولیس اور سیاست تک مردوں کے سنگ کام کرتی ہے۔ اسلامی ممالک کی اسمبلیوں میں عورتوں کے لیے باقاعدہ سیٹیں مختص کی گئی ہیں۔ ہر بڑے ادارے کے آفس میں صاحب کی سیکرٹری کوئی لڑکی ہوتی ہے جو چند ہزار روپوں کے عوض اس کے ناز ونخرے برداشت کرتی ہے، حتیٰ کہ بعض اوقات اسے اپنی عزت سے بھی ہاتھ دھونے پڑتے ہیں۔

### 6.16.9- پانچواں مرحلہ: فن وثقافت میں عورت کی آمد:

پانچویں مرحلے میں عورتوں کو سمجھایا جاتا ہے کہ سیلز گرل، سیکرٹری یا ایر ہوسٹس بن جانے سے کہیں زیادہ منافع بخش کام یہ ہے کہ وہ اپنے حُسن کو استعمال کر کے تھوڑے وقت میں لامحدود آمدن اور زبردست شہرت حاصل کریں۔ اس مقصد کے لیے شوبز کے دروازے ہر اس جوان عورت پر کھول دیے گئے ہیں جس کے پاس تھوڑا بہت حسن ہو اور وہ اپنی طبعی شرم وحیا کو پوری طرح مار دینے کے لیے تیار ہو۔ ایسی عورتوں کو ماڈل، اداکارہ، رقاصہ اور کال گرل بنا کر اس کے جسم اور روح کی ہر ہر صلاحیت اور خوبی کو دنیا جہان کے مردوں کے لیے عام کر دیا جاتا ہے۔ ایسی عورتوں سے جو اخلاقی بے راہ روی پھیل رہی ہے وہ محتاجِ بیان نہیں۔ یوں ہمارا معاشرہ تباہی کے دھانے پر پہنچ چکا ہے اور اس بارے میں لادینی طاقتوں کی ڈیڑھ سو سالہ جدوجہد تقریباً پایہ تکمیل کو پہنچ رہی ہے۔

### 6.16.10- اسلام کی معاشرتی اقدار اور نظام عصمت:

اسلام کی معاشرتی اقدار کے بارے میں کچھ بنیادی باتیں اچھی طرح ذہن نشین کر لینی چاہئیں۔ ان سے اسلامی احکام کی حکمتیں سمجھنے اور بہت سی غلط فہمیاں دور کرنے میں بہت مدد ملے گی۔

عورت کے لیے اسلام اور مغرب کے نقطۂ نگاہ میں بنیادی فرق ہے۔ مغرب اس کے جسم و روح کو مردوں کے لیے زیادہ سے زیادہ مسخر کرنا چاہتا ہے۔ مغربی مرد ایسا ماحول پیدا کرنا چاہتا

ہے جس کے ذریعے نفسانی خواہشات اور لذتوں کو زیادہ سے زیادہ حاصل کیا جا سکے اور اس کے راستے میں کوئی قید نہ ہو۔

اسلام مردوں اور عورتوں دونوں کو ایسا مناسب اور پاکیزہ ماحول مہیا کرنا چاہتا ہے جو دنیاوی کاموں کے لیے بھی سازگار ہو اور ان کی روحانی ترقی میں بھی مددگار ہو۔ اسی لیے اللہ تعالیٰ نے اپنی بندیوں کے لیے عفت و عصمت کا جامع نظام وضع کر کے اسے شریعت کا حصہ بنا دیا ہے۔

یہ وہ نظام ہے جس کے اندر عورتوں کی عصمت محفوظ ہے اور مسلمان مرد بھی فتنے سے مامون ہیں۔ اسلام کا اخلاقی نظام ایسا ماحول پیدا کرنا چاہتا ہے جس میں انسان کو سکونِ قلب بھی میسر ہو اور سکونِ بدن بھی۔ روحانیت کے ساتھ ساتھ اس کے جسمانی اور شہوانی تقاضے کسی مسئلے کا سبب بنے بغیر پورے ہوتے رہیں۔ جب انسان کی شہوانی ضروریات مناسب انداز میں پوری ہوتی رہیں تو معاشرے میں فساد برپا نہیں ہوتا۔

علامہ ابن جوزی رحمہ اللہ نے اس مسئلے کو ''صید الخاطر'' میں بہت عمدہ انداز میں لکھا ہے جس کا خلاصہ یہ ہے کہ جس طرح اللہ تعالیٰ نے انسان میں بھوک رکھی ہے، اس طرح اس میں شہوت کا بھی تقاضا رکھا ہے اور دونوں تقاضوں کے پیچھے ایک مقصد کارفرما ہے۔ بھوک کے پیچھے یہ مقصد ہے کہ انسان کا جسم برقرار رہے (جدید سائنس بتاتی ہے کہ انسان کا جسم ہر لمحے بنتا اور ٹوٹ پھوٹ کا شکار ہوتا رہتا ہے) لہٰذا اللہ تعالیٰ نے اس کمی کو پورا کرنے کے لیے غذا کا انتظام فرمایا ہے، ساتھ ہی انسان کے لیے غذا کے استعمال میں لذت بھی رکھ دی کیونکہ لذت کے بغیر کھانا بے حد مشکل ثابت ہو سکتا تھا اور انسان اچھی طرح نہ کھاتا تو جسمانی طور پر کمزور ہو جاتا، لہٰذا اللہ تعالیٰ نے انسان میں بھوک کا تقاضا اور کھانے میں ذائقہ رکھ دیا جس کی وجہ سے انسان رغبت سے اپنی جسمانی ضرورت کو پورا کرتا ہے۔

انسان میں شہوت بھی ایک مصلحت کے تحت رکھی گئی ہے وہ یہ ہے کہ انسان کی نسل چلتی رہے۔ بھوک کی طرح شہوت کے تقاضے کی تکمیل کو بھی اللہ تعالیٰ نے لذیذ بنایا۔ اگر اس میں لذت نہ ہوتی تو اکثر انسان شرم و حیا کی وجہ سے صحبت نہ کرتے، نیز بہت سے لوگ اولاد کے بوجھ سے

بچنے کے لیے صحبت سے باز رہتے مگر شہوت کی وجہ سے انسان اس عمل سے رک نہیں سکتا بلکہ لذت کی وجہ سے جنسی عمل کو بخوشی بلکہ اضطراری انداز میں پورے جوش سے انجام دیتا ہے۔ اس طرح نسل انسانی کی افزائش کا مقصد پورا ہوتا رہتا ہے۔

اب جس طرح اللہ تعالیٰ نے کھانے پینے میں حلال وحرام کی حدود وقیود رکھی ہیں اسی طرح شہوت میں بھی کچھ پابندیاں رکھی گئی ہیں۔ کھانے پینے میں اگر انسان شرعی واخلاقی پابندیاں توڑ کر خوراک حاصل کرے تو بدنامی ہوتی ہے اور جس کا مال چھینا یا چرایا گیا ہے اس کا مالی نقصان ہوتا ہے مگر شہوت پوری کرنے میں بدنامی کہیں زیادہ ہے اور نقصان بھی مال سے کہیں بڑھ کر عزت کا ہے۔

وجہ یہ ہے کہ شہوت پوری کرنے کے لیے انسان کو ایک اور جیتا جاگتا انسان درکار ہوتا ہے اور یہ دونوں انسان معاشرے کا حصہ اور اپنے اپنے خاندان کا جزو ہوتے ہیں۔ اگر وہ شرعی واخلاقی حدود توڑ کر شہوت پوری کریں تو اس سے نہ صرف ان کے کردار پر اَن مٹ داغ لگ جائے گا بلکہ دونوں کے خاندان بھی شرمسار ہوں گے اور عمر بھر کی محنت سے حاصل کی گئی عزت خاک میں مل جائے گی۔

پھر ان کا یہ فعل جو وقتی طور پر تسکین شہوت کے لیے ہوگا، اگر غیر فطری محل میں ہو رہا ہے تو نسل انسانی کے مادہ ضائع کرنے کے مترادف ہونے کی وجہ سے ظلم عظیم ہے..... اور اگر یہ تسکین شہوت فطری محل میں کی جا رہی ہے تو یہ ایک اور انسان کے جنم کا باعث بن سکتی ہے جس کا حق ہے کہ دنیا میں آنے سے پہلے اسے ماں باپ کا قانونی سایہ، محبت کرنے والا خاندان اور ایک شریف سلسلۂ نسب میسر ہو۔ اگر یہاں شرعی قوانین کی خلاف ورزی کی گئی تو ایک پوری نسل کی حق تلفی ہوگی اور آنے والے اَن گنت انسانوں کی گردنوں میں شرمساری کا طوق پڑ جائے گا۔

ان تمام پہلوؤں کو سامنے رکھتے ہوئے شہوت پوری کرنے کے لیے جو پابندیاں لگائی گئی ہیں وہ کھانے پینے کے معاملات سے زیادہ محتاط، سخت اور بے لچک ہیں۔

یہاں سب سے پہلے رشتے متعین کر دیے گئے کہ فلاں فلاں رشتے حلال ہیں اور فلاں فلاں رشتے حرام۔ کن سے شہوت پوری کرنے کی اجازت ہے اور کن سے ممانعت۔ جن سے نکاح

حلال نہیں وہ محرم قرار دیے گئے۔ جن سے نکاح جائز ہے انہیں غیر محرم قرار دیا گیا اور ان سے تعلقات پر پابندی لگا دی گئی تاکہ فتنے کا دروازہ نہ کھلے۔ مردوں کو نگاہ جھکانے اور عورتوں کو پردے اور حجاب کا پابند بنایا گیا۔

اسلام نے عورت کو ماں بہن، بیٹی اور بیوی کے روپ میں جو مقام دیا ہے اس کا مغرب میں تصور بھی نہیں کیا جاسکتا۔ نیز پردے اور شرعی پابندیوں کے اہتمام کے ساتھ مسلم خواتین نے وہ کارنامے انجام دیے ہیں جن کے احاطے کے لیے ایک دفتر درکار ہے جیسا کہ ام المؤمنین حضرت عائشہ صدیقہ رضی اللہ عنہا نے پردے میں رہ کر امت کو ہزاروں احادیث پہنچائیں اور فقہی مسائل میں ان کی رہنمائی کی۔ اسلامی تاریخ بڑی بڑی فقیہ، محدث، ادیب اور شاعر خواتین کے تذکروں سے مملوء ہے۔ وہ اَن گنت نیک اور عابد خواتین ان کے علاوہ ہیں جن کی آغوش میں محمد بن قاسم، طارق بن زیاد، محمود غزنوی اور محمد فاتح جیسے سپوت پلے بڑھے مگر انہوں نے خود گمنام رہنا پسند کیا۔ اولاد کی نیک تربیت کر کے عورت معاشرے کی اصلاح میں جو کردار ادا کرتی ہے، وہ لاکھوں کارناموں پر بھاری ہے اور اس فرض میں کوتاہی سے جو بگڑی ہوئی نسل جنم لیتی ہے، کوئی ملازمت اور کوئی ترقی اس کا مداوا نہیں کرسکتی۔

پردے کی پابندی کی اہمیت سمجھنے کے لیے یہ بات بھی ملحوظ رکھنا ہوگی کہ اسلام نے جہاں برائی کے خاص محرکات سے منع کیا ہے وہاں کئی معاملات میں دور دراز کے اسباب (اسبابِ بعیدہ) پر بھی پابندی عائد کردی ہے۔ مرد وزن کے تعلقات کا باب بھی ایسا ہی محتاط مقام ہے جہاں برائی کے اسباب بعیدہ سے بھی روک دیا گیا ہے۔ درحقیقت یہ غایت درجہ کی احتیاط ہے، اس لیے کہ انسان، مرد ہو خواہ عورت، اللہ رب العزت کے ہاں بہت قیمتی ہے۔ دنیا میں بھی اگر کوئی چیز بہت قیمتی ہو تو اس کا ہر لحاظ سے تحفظ کیا جاتا ہے۔ صرافہ بازار میں دو مسلح محافظ رکھنا کافی سمجھا جاتا ہے مگر کوہ نور ہیرے کو جس عجائب گھر میں رکھا گیا ہے وہاں قدم قدم پر پہرہ ہے، کیوں کہ اس قدر قیمتی چیز کے تلف ہونے کا ایک فیصد رِسک بھی نہیں لیا جاسکتا۔

اللہ تعالیٰ کے ہاں ہر بندے اور بندی کی عزت کوہِ نور ہیرے سے زیادہ قیمتی ہے۔ اسے

محفوظ رکھنے کے لیے نہ صرف بدن بلکہ خیال کی پاکیزگی کا بھی پورا اہتمام کیا ہے۔ خیال کو پاک رکھنے کے لیے نگاہ، سماعت، شامہ (سونگھنے کی قوت) کو بھی غیر محرم کے تعلق سے حتی الامکان بچانے کی تاکید کی گئی ہے۔ کیوں کہ اس معاملے میں ایک فی صد رسک لینے کی گنجائش بھی نہیں۔

اسبابِ بعیدہ سے روکنے کے علاوہ نکاح کے لیے لڑکی کے سرپرستوں کی اجازت، ایجاب وقبول اور گواہوں کی موجودگی لازم کر کے اس سلسلے کو ہر طرح کا قانونی و معاشرتی تحفظ دے دیا گیا ہے۔ ہاں بندے خود ہی ان پابندیوں کو توڑ ڈالیں تو پھر پیش آمدہ مفاسد اور معاشرتی بگاڑ کی ذمہ داری انہی پر عائد ہوگی۔

## 6.16.11- بے پردگی کے مفاسد:

بے پردگی کے بے شمار مفاسد ہیں جن میں سے چند ایک یہ ہیں:

(1) عصمت اور عفت انسان کا سب سے قیمتی اثاثہ ہے۔ عصمت انسانی تعلقات کی بنیاد، خانگی رشتوں کا محور اور انسانی نسب کی مہر ہوتی ہے۔ پردہ عصمت کا محافظ ہے۔ اگر عصمت لٹ جائے تو سب کچھ ختم ہو جاتا ہے۔

(2) انسان کی تربیت میں محبت کا جذبہ سب سے بڑا کردار ادا کرتا ہے مگر جس گھر میں ماں باپ کا باہمی اعتماد ٹوٹ جائے وہاں ہر لحہ نفرتیں ظاہر ہوتی ہیں، محبت کا نام ونشان نظر نہیں آتا۔ محبت سے محروم ہو کر اولاد آوارہ ہو جاتی ہے، اس کی اچھی تربیت نہیں ہو سکتی، اس طرح گھر بھی تباہ ہو جاتا ہے اور اولاد بھی۔

(3) بے پردگی سے میاں بیوی میں بداعتمادی پیدا ہو جاتی ہے۔ دلی ہم آہنگی نہیں رہتی۔ گھر کے اندر سکون نہیں رہتا۔

(4) خاندان معاشرے کی بنیادی اکائی ہے، لہٰذا جب خاندان بگڑتے ہیں تو پورا معاشرہ برباد ہو جاتا ہے۔

(5) انسان ہر لمحے سکون کا متلاشی ہے، دنیا میں ہر انسان خواہ کسی بھی حیثیت کا مالک ہو، وہ سکون کی تلاش میں رہتا ہے۔ مگر حقیقی سکون اس وقت تک میسر نہیں آسکتا جب اس کو روحانی خوشی

بھی میسر ہو اور اس کے جسمانی و جنسی تعلقات بھی پر اعتماد ہوں۔ ایسے پر اعتماد تعلقات صرف بیوی کے قانونی رشتے سے نصیب ہوتے ہیں۔ اس رشتے کو مضبوط کرنے میں پردے اور عفتِ نگاہ کا بنیادی کردار ہے۔ بے پردگی اور آوارگی نگاہ اس رشتے کو کمزور کر کے انسان کو سکون سے مستقل طور پر محروم کر دیتی ہے۔

⑥ بے پردہ ماحول اور عصمت سے نا آشنا معاشرے میں خاندانی نظام ختم ہو جاتا ہے۔ رشتہ داریاں مٹ جاتی ہیں۔ فقط شہوت پوری کرنا ہر رشتے کی ابتداء ہوتا ہے جس کی انتہاء کبھی چند ہفتوں اور کبھی چند گھنٹوں میں ہو جاتی ہے۔

## 6.16.12- مغرب میں عورت کو کیا ملا؟

مغرب میں آزادی نسواں کے کھوکھلے نعرے کی حقیقت عیاں ہو چکی ہے۔ مغربی عورتیں اب بھی شوہروں کے تشدد کا شکار ہیں۔ زنا کی قانوناً اجازت کے باوجود ہر سال ہزاروں کی تعداد میں زنا بالجبر کے کیس رجسٹرڈ ہوتے ہیں۔ اسکول میں پڑھنے والی بچیوں کے ماں بننے کے واقعات اتنے بڑھ چکے ہیں کہ کم سن ماؤں کے الگ اسکول بن چکے ہیں جہاں، دس دس سالہ لڑکیاں اپنے بچوں کو گود میں لیے ہوئے تعلیم حاصل کرتی ہیں۔ امریکا کی کم سن ماؤں نے اپنی ایک الگ تنظیم بنا رکھی ہے جو جنسی آزادی کی شدت سے مخالفت کرتی ہے۔ وہاں عورتیں اب محض شوپیس ہیں جنہیں جوانی ڈھلتے ہی کوڑا کرکٹ سمجھ کر کنارے پر ڈال دیا جاتا ہے۔ ان کی آخری منزل اولڈ ہاؤس ہوتی ہے جہاں وہ بقیہ عمر شدید احساس محرومی میں گزار دیتی ہیں۔ خاندانی نظام کی تباہی نے خالہ، پھوپھی، ماموں، چچا، دادا، دادی اور نانا، نانی جیسے رشتوں کا خاتمہ کر دیا ہے۔ لاکھوں میں سے کوئی ایک فرد ہوتا ہے جسے اپنے دادا یا دادی کا نام یاد ہو۔ بے نسب بچوں کی کثرت نے وہاں ایک طوفان برپا کر دیا ہے۔

یورپ و امریکا میں 20 اور 25 سال کی عمر کے اکثر لوگ بغیر شادی کے جنسی عمل کرتے ہیں اور اس زندگی کو پسند کرتے ہیں۔ شمالی یورپ میں ایسے لوگوں کا تناسب 90 تک فیصد ہے، یعنی ایک ہزار میں صرف 36 افراد شادی کرتے ہیں۔ 1996ء کے اعداد و شمار سے معلوم ہوتا ہے کہ

75 فیصد غیر شادی شدہ لڑکیاں اسقاطِ حمل کراتی ہیں۔ حکومت 2 لاکھ قانونی اسقاط کرنے والیوں پر 55 ملین ڈالر خرچ کرتی ہیں، 75 فیصد شادی شدہ عورتیں اسقاطِ حمل کراتی ہیں۔ دو تہائی سفید فارم عورتیں اسقاطِ حمل کراتی ہیں، ان میں دو تہائی کی عمر 15 سے 24 سال کے درمیان ہوتی ہے۔ (مغربی میڈیا اور اس کے اثرات، ص: 35)

ان مفاسد کو دیکھنے کے بعد یورپ میں یہ تحریک شروع ہو چکی ہے کہ آزاد عورت کو دوبارہ گھریلو عورت بنایا جائے تاکہ خاندان کا تصور دوبارہ فروغ پا سکے۔ بڑے بڑے دانشور اور سیاست دان اس کام کے لیے کوششیں کر رہے ہیں۔ روس کے سابق صدر گورباچوف نے اپنی ایک کتاب میں لکھا ہے کہ اب وقت آ گیا ہے کہ عورت کو واپس گھر لایا جائے تاکہ وہ گھریلو سکون دوبارہ مل سکے جو کسی زمانے میں نظر آتا تھا۔

(نوٹ: الغزو الفکری کے مذکورہ ہتھیاروں میں سے اکثر کے بارے میں تفصیلی تبصرے الاستعمار، التنصیر اور العولمۃ کے تحت کیے گئے ہیں۔ ان پر ایک نظر ڈال لی جائے۔ البتہ تعلیم، میڈیا، جمہوری سیاست اور آزادیٔ نسواں کے بارے میں یہاں تفصیل اور دیگر مقامات پر اختصار سے کام لیا گیا ہے۔)

# مراجع


- الغزو الفکری (دراسات فی الثقافۃ الاسلامیۃ، لجنۃ المناہج)
- اسالیب الغزو الفکری۔ علی محمد جریشہ، محمد شریف الزبیق
- سقوط الحضارۃ الغربیۃ: احمد منصور
- الاسلام بین الشرق والغرب: ڈاکٹر علی عزت بیجوفیتش
- المسلم بین الہویۃ الاسلامیۃ وبین الہویۃ الجاہلیۃ: شیخ علی بن نایف الشحود
- مغربی میڈیا اور اس کے اثرات: مولانا نذر الحفیظ ندوی
- دورِ فتن اور نجات کے قرینے: حافظ ابن حذیفہ

ساتواں باب

7

# ہم الغزو الفکری کا مقابلہ کیسے کریں؟

# كيف نقاوم الغزو الفكرى

# How do you Resist Ideological Invasion

# 7.1- جنگ لڑنے سے پہلے کیا دیکھا جاتا ہے!!

- ہمارا مقابلہ کس سے ہے؟ دشمن کون ہے؟
- دشمن کا حملہ کس سمت سے ہو رہا ہے؟
- اس کے اہداف کیا ہیں؟
- مقابلے کا میدان کونسا ہے، کیسا ہے؟
- جنگ کے ہتھیار کیا کیا ہیں؟
- ہماری پوزیشن کیسی ہے؟ یعنی ہماری قوتیں کیا ہیں جن سے ہم کام لے سکتے ہیں اور کمزوریاں کونسی ہیں جن سے ہمیں بچنا ہے۔
- دشمن کی پوزیشن کیا ہے؟ یعنی اس کی قوتیں کیا ہیں، اور کمزور پوائنٹ کونسے ہیں جن پر ہم کارگر حملہ کر سکتے ہیں؟

ایک بھرپور جنگ جس میں کامیابی کی امید کی جا سکے، تب ہی لڑی جا سکتی ہے جب پہلے سے مذکورہ نکات کا جواب ہمارے پاس ہو۔

- گزشتہ چھ ابواب کی گفتگو میں ہم نے یہ دیکھا ہے کہ ہمارا دشمن کون ہے؟ اس کا حملہ کس طرف سے ہے؟ اس کے اہداف کیا کیا ہیں؟ جنگ کے میدان کون سے ہیں اور لڑائی کے وسائل کیا ہیں؟
- اس باب میں ہم دشمن کے خلاف مزاحمت کے طریقوں اور جوابی کارروائی کے لائحہ عمل پر گفتگو کریں گے مگر اس سے پہلے دو سوالات کے جوابات حاصل کرنا باقی ہیں۔
- ہماری قوتیں کیا ہیں اور کمزوریاں کیا؟
- دشمن کی کمزوریاں کون کون سی ہیں؟ اس کے بعد اپنی حکمتِ عملی کا ذکر ہوگا انشاء اللہ۔

## 7.2- ہماری کمزوریاں:

اس جنگ میں ہماری بارہ بڑی کمزوریاں ہیں جن سے عیار دشمن پورا فائدہ اٹھا رہا ہے۔

| | |
|---|---|
| (1) ایمانی کمزوری | (2) اعمال کی کمزوری |
| (3) علم دین کی کمزوری | (4) علم دنیا کی کمزوری |
| (5) صحت کی کمزوری اور امراض | (6) اقتصادی کمزوری اور سودی معیشت |
| (7) میڈیا وار میں ہماری کمزوری | (8) سیاسی ابتری |
| (9) مخلص اور اہل قائدین کا انحطاط | (10) غربت |
| (11) جمود اور تعطل | (12) نظم وضبط کی کمی |

آیئے ان کمزوریوں پر ایک نظر ڈالنے کیساتھ ساتھ یہ بھی دیکھتے ہیں کہ انہیں دور کیسے کیا جائے؟

### 7.2.1- ایمانی کمزوری:

ہماری ایمانی کمزوری کا یہ حال ہے کہ ہم حالات کے شدید تھپیڑے کھا کر بھی اللہ کی طرف رجوع کے لیے تیار نہیں ہیں۔ نہ اس کی وعیدوں سے ایسا ڈرتے ہیں جیسا کہ ڈرنے کا حق ہے، نہ اس کے وعدوں پر ایسا یقین ہے جیسا اپنے مالک کے وعدوں پر ہونا چاہیے۔ ہم کسی معاملے میں اللہ پر بھروسہ نہیں کرتے۔

اس کا علاج پختہ ایمان والوں یعنی اہل اللہ کے پاس اٹھنا بیٹھنا، اللہ کو کثرت سے یاد کرنا اور اس کی رضا کی جستجو میں لگ جانا ہے۔ اللہ کی رضا فرائض اور واجبات کی ادائیگی، منکرات سے اجتناب، نفل عبادات میں رغبت، دین کے لیے قربانی دینے اور جہاد کرنے سے حاصل ہوتی ہے، یہ ایمان کی مضبوطی کے ذرائع ہیں۔

### 7.2.2- اعمال کی کمزوری:

ہماری اعمال کی کمزوری کا یہ عالم ہے کہ ہماری اکثریت دین کے سب سے اہم رکن نماز ہی کو ضایع کر دیتی ہے، بقیہ اعمال روزے، زکوٰۃ، حج، صدقہ وخیرات وغیرہ کا تو پوچھنا ہی کیا۔

اعمال کی کمزوری دور کرنے کا طریقہ بھی نیک لوگوں کی صحبت اختیار کرنا ہے۔ اس کے لیے

خود کو مساجد کے ماحول کا عادی بنانا، آج کل تبلیغی جماعت میں وقت لگانا اور مشائخ صوفیہ سے اصلاحی تعلق رکھنا بہت مفید ہے۔

### 7.2.3- علم دین کی کمزوری:

علم دین میں کمزوری کی حالت یہاں تک پہنچ چکی ہے کہ ایک طرف اب تک ایسے لوگ ہیں جنہیں کلمہ طیبہ تک صحیح نہیں آتا، دوسری طرف ہر وقت میڈیا سے منسلک رہنے اور ٹی وی چینل آن رکھنے والے مسلمان یہ تک نہیں جانتے کہ کن باتوں سے ایمان رخصت ہو جاتا ہے اور کن سے نماز فاسد ہو جاتی ہے۔

علم دین کی کمزوری دور کرنے کے لیے مسلمان بچوں کو دینی مدارس میں داخل کرایا جائے۔ خود تبلیغی جماعت میں چار ماہ لگا کر دین کے بنیادی اصول سیکھے جائیں، درسِ قرآن کے حلقوں اور دینی مسائل کی محفلوں میں شرکت کی جائے، علماء کرام سے مسلسل رابطہ رکھا جائے، ہر شعبے کے لوگ اپنے متعلقہ مسائل شریعت کے ماہرین سے پوچھ کر حل کریں۔

### 7.2.4- علم دنیا کی کمزوری:

علم دنیا کے دعوے تو بہت ہیں مگر ہمارا تعلیمی نظام ڈیڑھ صدی سے سرکاری ملازم اور کلرک پیدا کر رہا ہے۔ ماہرینِ فن اور محققین ڈھونڈے نہیں ملتے۔ جو افراد ذاتی محنت اور کوشش سے مہارتِ فن پیدا کر لیتے ہیں وہ مغربی علمیت کے فلسفے اور بے دین ماحول سے متاثر ہو کر اس مقام تک پہنچتے پہنچتے دین سے بے گانہ ہو جاتے ہیں، اغیار انہیں اچک لیتے ہیں اور ہمارے قابل افراد کی قابلیت اُنہی کے کام آتی ہے۔

اس کا علاج یہ ہے کہ عصری علوم کی معیاری درسگاہیں قائم کی جائیں جہاں ضروری دینی تعلیم بھی دی جائے۔ سائنس اور آرٹس کے پیچھے کارفرما ملحدانہ مغربی فلسفے کی نفی کرتے ہوئے تمام علوم وفنون پر وحی کی بالادستی ثابت کی جائے۔ ماضی کے مسلم حکماء کی طرح جدید علوم کو ایک ہنر اور تیکنیک کے طور پر انسانوں کی خدمت کے لیے سیکھا جائے اور مسلم معاشرے کو تیکنیکی لحاظ سے مغرب پر بالادست کرنے کے جذبۂ خیر سے طب، انجینئرنگ اور دیگر شعبوں

میں تحقیقات کی جائیں۔

اعلیٰ تعلیم کے لیے بیرونی ممالک پر انحصار کا سلسلہ ختم کیا جائے اور جب تک ہم خود کفیل نہیں ہوتے اس وقت تک صرف ایسے افراد کو وہاں اعلیٰ تعلیم کے لیے بھیجا جائے جن کا ذہن مذہبی اور قومی لحاظ سے پختہ ہو اور وہ اغیار سے متاثر ہونے والے نہ ہوں۔ جو افراد کردار کے کمزور ہوں ان کا باہر جا کر تعلیم حاصل کرنا عبث ہی ثابت ہوگا۔ باکردار نوجوان ہی واپس آ کر اغیار کی جدید ترین ٹیکنالوجی مسلم دنیا کو منتقل کر سکتے ہیں اور ہم مشرق و مغرب میں ٹیکنالوجی کے فاصلے دور کر سکتے ہیں۔ جدید ٹیکنالوجی سے آراستہ ہنرمند نوجوان بہتر انداز سے قوم کی خدمت اور اسلام کی عظمت و سربلندی کے لیے تازہ وسائل مہیا کرنے کا کام کر سکتے ہیں۔ اس خلاء کو پر کرنے کے لیے غیر معمولی طور پر پرعزم اور باحوصلہ نوجوانوں کی ضرورت ہے۔

## 7.2.5- صحت کی کمزوری اور امراض:

مشہور مقولہ ہے: صحت مند جسم میں صحت مند دماغ ہوتا ہے۔ اس وقت امت مسلمہ کے نوجوانوں کی اکثریت جسمانی و ذہنی لحاظ سے بہتر نہیں۔ پچاس ساٹھ سال پہلے کے افراد سے اپنا موازنہ کر کے یہ فرق دیکھا جا سکتا ہے۔ مسلم معاشرے میں بہت سے امراض مشینوں سے پیدا شدہ تن آسان زندگی، مرغن غذاؤں اور اخلاقی گناہوں کی وجہ سے پھیل چکے ہیں اور بہت سے مہلک امراض غیر ملکی ایجنٹ مصنوعی غذاؤں، فاسٹ فوڈز اور جعلی دواؤں کے ذریعے پھیلا رہے ہیں۔ اس طرح نسل نو کو ذہنی و جسمانی طور پر ناکارہ بنایا جا رہا ہے۔

ہمیں ان امراض سے بچنا اور اپنی صحتوں کو بہتر بنانا ہوگا۔ صحت کو بہتر بنانا مہنگی دواؤں اور ڈاکٹر کی بھاری فیسوں پر منحصر نہیں۔ بلکہ اس کا اصل طریقہ روزانہ ورزش کرنا، سادہ غذا استعمال کرنا، دل کو پاک رکھنا اور بے جا تفکرات سے بچنا ہے۔

ہمارے ہاں اوّل تو دین کے لیے کام کرنے والے کم ہیں اور جو قیمتی افراد دین کی محنت میں لگے ہوئے ہیں وہ اپنی صحت کا قطعاً خیال نہیں رکھتے۔ خصوصاً علماء اور طلبہ اس طرف بہت کم دھیان دیتے ہیں۔ اس طرح عموماً پچاس ساٹھ سال کی عمر کو پہنچتے پہنچتے وہ کام سے معذور ہونے

لگتے ہیں۔ دین دار طبقے کی بنسبت ایک سیکولر اور ماڈرن انسان اپنے جسم کا زیادہ خیال رکھتا ہے۔ لازم ہے کہ ہم اپنی صحت کو اللہ کی دی ہوئی امانت سمجھیں اور اس کی خوب حفاظت کریں۔ اپنی مصروفیات میں سے کچھ وقت ورزش یا کم از کم چہل قدمی کے لیے ضرور نکالیں۔

## 7.2.6- اقتصادی کمزوری اور سودی معیشت:

معدنی دولت کے لحاظ سے عالم اسلام بانجھ نہیں مگر اس کے باوجود عالمگیریت (Globalization) کے تحت کیے جانے والے اقتصادی محاصرے، سودی معیشت اور کرپشن نے ہمارا دیوالیہ نکال دیا ہے۔

اس صورتحال سے نکلنے کے لیے مسلمانوں کو تمام باطل معاشی نظاموں سے دست کش ہونا، سودی نظام کا خاتمہ کرنا اور اسلام کے معاشی نظام کو اپنانا ہوگا جو سود، سٹے کے بازار، کرپشن، جوئے اور ناجائز آمدن کے دوسرے ذرائع کی روک تھام کرتا ہے اور زکوٰۃ، صدقات اور خیرات کے ذریعے مال کی تقسیم کا صحیح راستہ کھلا رکھتا ہے۔ ہمیں اس عادلانہ اقتصادی نظام کی نہ صرف خود پیروی کرنا ہوگی بلکہ اسے ایک آئیڈیل نظام کے طور پر دنیا کے سامنے لانا ہوگا۔ اسلامی دنیا میں مدفون معدنی دولت کو اغیار کے ہاتھوں میں جانے سے بچانے اور اسے خود نکال کر صحیح طور پر استعمال کرنے کے لیے ٹھوس لائحہ عمل مرتب کرنا ہوگا۔ اس کے لیے ضروری ہوگا کہ مسلم ممالک میں غیر ملکی تجارتی اور خدماتی کمپنیوں کا کردار محدود کیا جائے، مقامی مصنوعات کو ترجیح دی جائے اور ہر کام کے لیے مقامی ماہرین تیار کیے جائیں۔ حبِّ دنیا کی حوصلہ شکنی کی جائے، خوفِ الٰہی اور فکرِ آخرت پیدا کرنے کی کوشش کی جائے تاکہ کرپشن اور بدعنوانی کی جڑیں ختم ہوں اور مسلم دنیا معاشی طور پر سنبھل سکے۔

## 7.2.7- میڈیا وار میں ہماری کمزوری:

مسلم ادارے اور جماعتیں میڈیا وار میں بہت پیچھے ہیں۔ بلاشبہ مسلم دنیا کے لبرل شہری سینکڑوں اخبار، رسائل اور جرائد نکال رہے ہیں۔ سرکاری اور نجی ریڈیو اور ٹی وی چینلز کی بھی کمی نہیں مگر ان سے اسلام کو کوئی فائدہ پہنچ سکتا ہے نہ ملک و ملت کو۔ صحیح الفکر مسلمان اس میدان میں

بہت پیچھے ہیں۔اس کی تلافی کے لیے میڈیا میں اپنا کردار بڑھائے بغیر چارہ نہیں۔

## 7.2.8- سیاسی ابتری:

ہماری سیاسی ابتری ہمارے لیے وبالِ جان ہے،اس کی وجہ سے کسی اسلامی ملک میں اصل مسائل پر توجہ نہیں دی جاسکتی اور ایک کے بعد دوسرا سیاسی بحران عوام وحکام کی تمام توجہات اور صلاحیتیں ضایع کرتا رہتا ہے۔

سیاسی بحران کا خاتمہ اسلامی نظام کے نفاذ ہی کے ذریعے ہوسکتا ہے۔مگر اسلامی انقلاب یک دم نہیں آسکتا۔اس کے لیے زمین تیار کرنا ہوگی۔جمہوری نظام کا یک طرفہ بائیکاٹ کرنے سے بھی کچھ فائدہ نہیں کیوں کہ اس طرح قانون ساز اداروں میں سوفی صد بے دین افراد کی اجارہ داری ہوجائے گی اور خلافِ اسلام قوانین کی منظوری کی رفتار تیز تر ہوجائے گی۔ہمیں انقلاب کی تیاری تک جمہوری نظام کا محتاط انداز میں ساتھ دینا ہوگا،مگر یہ ضروری ہے کہ جمہوریت کی حقیقت قوم سے چھپائی نہ جائے بلکہ اس کی خرابیاں واضح کردی جائیں اور اس کا کردار بتدریج محدود کیا جائے۔کوشش کی جائے کہ رفتہ رفتہ ہم اس نظام سے چھٹکارا پالیں۔ابتدائی درجے میں یہ تو کیا جاسکتا ہے کہ دینی جماعتیں اپنی تنظیم وتشکیل سے جمہوریت کو نکال دیں اور سنت کے مطابق حقیقی شورائیت کو اپنائیں۔

## 7.2.9- مخلص اور اہل قائدین کا انحطاط:

قابل اور مخلص قائدین کا نہ ہونا ہماری بڑی بدقسمتی ہے۔دینی اور سیاسی دونوں میدانوں میں قیادت کا بہت بڑا خلا موجود ہے۔قائدین کسی درسگاہ میں نہیں بنائے جاتے، وہ کچھ امتیازی خصوصیات لے کر پیدا ہوتے ہیں۔امید ہے جب ہم پہلے کی آٹھ کمزوریوں کو دور کرلیں گے تو ہماری زمین بانجھ نہیں رہے گی اور صالح قیادت نشوونما پاکر اللہ کی مشیت کے مطابق بوقتِ ضرورت سامنے آجائے گی۔

## 7.2.10- مالی وسائل کی کمی،غربت:

مالی وسائل کی اہمیت اپنی جگہ مسلم ہے،ان کی کمی ظاہری اسباب کے لحاظ سے ہمیں پست

حوصلہ کر دیتی ہے اور کام کرنے والوں کے پاؤں کی زنجیر بن جاتی ہے۔

فی نفسہٖ غربت کو دور کرنا کوئی ایسا مقصد نہیں جسے ہم زیادہ اہمیت دیں اور خود کو مال دار بنانے کے لیے جٹ جائیں کیوں کہ غربت وفقر اور سادگی ہمارے آقا ﷺ کا پسندیدہ طرزِ زندگی ہے۔ اگر ہم دینی اصول اپنالیں تو غربت کی وہ شکل خود ہی ختم ہو جائے گی جو کسی بھی شخص کے لیے ناقابلِ برداشت اور معاشرے کے لیے شرمناک ہے۔ ہر شخص اپنے پڑوسی کا خیال کرنے کی حدیثوں پر عمل کرلے تو کبھی بھی کسی شخص کے بھوکا مرنے یا مفلسی کی وجہ سے خودکشی کرنے کا سانحہ رونما نہیں ہوسکتا۔ اگر سب مالدار زکوٰۃ ادا کرنے لگیں تو معاشرے میں کوئی شخص مفلوک الحال نہیں رہ سکتا۔ اسی طرح یتیم کی کفالت کرنے، صدقہ وخیرات نکالنے، صلہ رحمی اپنانے اور کھانا کھلانے کی سنتوں پر عمل کرنے سے معاشرہ سادہ اور بظاہر کم وسائل کا مالک ہونے کے باوجود جنت کا نمونہ بن سکتا ہے جیسا کہ مدینہ طیبہ کا معاشرہ عمومی طور پر سادہ اور غریب تھا مگر وہاں محبت، خلوص، ایثار اور قربانی کے ماحول نے جو مسرتیں بکھیر رکھی تھیں کسی قارونی معاشرے میں اس کا تصور تک نہیں کیا جاسکتا۔

تاہم دینی اور قومی منصوبوں کے لیے اموال کی کمی ایک اہم مسئلہ ہے۔ اگر مسلم حکمران ان مسائل کے لیے سنجیدگی اختیار کرکے اپنے ذاتی اخراجات کم کردیں اور سرکاری خزانے کا صحیح استعمال کریں تو یہ مسائل پیدا ہی نہ ہوں مگر فی الحال اکثر مسلم حکمرانوں کا رویہ مایوس کن ہے۔ اس لیے اس کا حل بھی خواہانِ قوم کو خود نکالنا ہوگا۔

سرِ دست یہ کیا جاسکتا ہے کہ دینی اور رفاہی ادارے اپنے اموال کا ایک حصہ تجارت، زراعت اور دوسرے پیداواری شعبوں میں لگائیں، فقط چندے پر انحصار نہ کریں۔ اس کے ساتھ ہر شخص اپنے ذاتی اخراجات اور معیارِ زندگی میں کچھ کمی لائے اور بچت کو دینی وقومی مقاصد کے لیے خرچ کرے۔ ہر انسان اپنی عمر بھر کی تمام بچت کا اکثر حصہ گھر کی تعمیر اور بچوں کی شادیوں پر لگا دیتا ہے۔ اگر اس بارے میں اپنے ارمانوں کو پچاس فی صد کم کرلیا جائے، سادہ شادیوں اور سادہ رہائش پر اکتفا کرکے بقیہ رقم دینی وخیراتی مقاصد میں لگائی جائے تو شاید ہی خیر

کا کوئی ضروری منصوبہ ادھورا رہ سکے۔

علاوہ ازیں دینی کارکنان کم سے کم وسائل میں کام کرنے اور سادہ ترین زندگی گزارنے کی عادت ڈالیں۔ اس وقت ہمارے بس میں اس سے زیادہ کچھ نہیں، اس لیے جو ہم نہیں کر سکتے وہ اللہ پر چھوڑ دیا جائے۔ اللہ تعالیٰ اپنے غیب کے خزانوں سے ہماری ذاتی ضرورتیں پوری کرنے پر بھی قادر ہے اور دینی وقومی منصوبوں کے اخراجات بھی۔

### 7.2.11- جمود، تعطل اور مایوسی:

ہماری بہت بڑی تعداد قومی مسائل پر بحث کرتی اور دین کی بربادی کا رونا روتی ہے مگر عملاً سب پر بے حسی طاری ہے۔ جمود اور تعطل کا ایسا عالَم ہے جس میں ہر شخص مستقبل سے مایوس اور کچھ کرنے سے گریزاں نظر آتا ہے۔

اس کے تدارک کے لیے قومی و دینی جوش ابھارنا ہوگا، لوگوں کو حوصلہ دینا ہوگا۔ ہمارے داعی، خطیب، مقررین، ائمۂ مساجد، شعراء، ادباء اور صحافی خلوص، حکمت اور دردِ دل کے ساتھ صحیح خطوط پر کام کریں تو یہ جمود دور کیا جاسکتا ہے۔ اس کے لیے یہ ضروری ہے کہ ہر دعوت اور تقریر کے بعد لوگوں کو راہِ عمل دکھائی جائے، ایسی ترتیب بتائی جائے کہ انہیں کچھ کرنے کو ملے۔ اس سلسلے میں تبلیغی جماعت کی ترتیب پر غور کرنے کی ضرورت ہے جو معاشرے کے معمولی لوگوں سے بھی سات سمندر پار دین کی دعوت کا کام لے کر دکھا رہی ہے۔

یہ بھی ضروری ہے کہ خود دعوت دینے والوں کا عمل ان کے قول کے مطابق ہو۔ وہ خود اسلام کی چلتی پھرتی تصویر اور قربانی دینے کا نمونہ ہوں۔ ورنہ نتیجہ الٹ نکل سکتا ہے۔

### 7.2.12- نظم وضبط کی کمی:

نظم وضبط کی کمی ہماری سرشت بن چکی ہے، یہ ہماری بہت سی توانائیوں کو ضایع اور عزائم کو ملیامیٹ کر دیتی ہے۔ ہم قیام خلافت اور نفاذِ شریعت جیسے بڑے بڑے اہداف تو سامنے رکھ لیتے ہیں مگر یا تو کام شروع ہی نہیں کرتے یا اندھا دھند ٹوٹ پڑتے ہیں۔ اکثر کام بغیر منصوبہ بندی کے ہوتے ہیں۔ جو لوگ اس بارے میں سوچتے بھی ہیں تو زیادہ سے زیادہ چار پانچ سال میں

منزل کو اپنے قدموں میں دیکھتے ہیں اور اسی حساب سے دوڑ لگا دیتے ہیں، حالانکہ کوئی بھی بڑا کام بہترین تنظیم، گہری منصوبہ بندی اور صبر و تحمل کے بغیر نہیں ہو سکتا۔

نظم وضبط کے لیے سب سے پہلی چیز مشورہ ہے۔ ہر چھوٹے بڑے کام سے قبل کھلے اور آزادانہ ماحول میں بار بار مشورہ کیا جائے۔ ہر ہر پہلو پر غور کر کے ترجیحات طے کی جائیں۔

دوسری چیز اطاعتِ امیر ہے۔ اس بارے میں ان احادیث کا مطالعہ کیا جائے جن میں اطاعتِ امیر کی تاکید کی گئی ہے۔ ہر کارکن کے لیے ضروری ہے کہ وہ خود رائی اور من مانی سے گریز کرے۔ بڑوں کا کہنا مانے۔ جب تک امیر کسی خلافِ شرع کام کا حکم نہ دے، اس کے حکم کی تعمیل کرے۔

تنظیمِ اوقات اور تنظیمِ کارکافن اب مغربی درسگاہوں میں داخل ہے۔ اس میں شامل مغربیت اور مادّیت کا زہر نکال کر اس کے فائدہ مند پہلوؤں سے کام لینا بھی نظم وضبط بہتر کرنے میں مدد دے گا۔

## 7.3- ہماری قوتیں:

اس جنگ میں ہماری قوتیں کچھ کم نہیں، انہیں صحیح طور پر استعمال کیا جائے تو چند برسوں میں حالات کا رخ پھیرا جا سکتا ہے۔ ہماری اہم ترین قوتیں درج ذیل ہیں:

### 7.3.1- ہمارا برحق ہونا:

ہمارا حق پر ہونا، ایمان واسلام پر قائم رہنا اور مسلمان ہونا ہماری سب سے پہلی اور سب سے بڑی طاقت ہے۔ کیوں کہ فتح حق ہی کی ہوتی ہے۔

﴿وَقُلْ جَآءَ الْحَقُّ وَزَهَقَ الْبَاطِلُ ۚ إِنَّ الْبَاطِلَ كَانَ زَهُوقًا ۝﴾ (بنی اسرائیل)

''آپ فرما دیجیے، حق آ گیا اور باطل نابود ہو گیا، بیشک باطل نابود ہونے والا ہے۔''

### 7.3.2- اللہ کی معیت ونصرت:

حق پر ہونے کی وجہ سے اللہ کی معیت اور اس کی مدد اہل ایمان کے لیے خاص ہے۔

﴿وَاللَّهُ مَعَكُمْ﴾ (سورۂ محمد: ۳۵)

''اللہ تمہارے ساتھ ہے۔''

﴿وَ كَانَ حَقًّا عَلَيْنَا نَصْرُ الْمُؤْمِنِيْنَ۝﴾ (سورۃ الروم)

''اہل ایمان کی مدد کرنا ہمارے ذمے ہے۔''

چونکہ اللہ سے بڑی کوئی طاقت نہیں، لہٰذا اس کی معیت ونصرت کامیابی کا یقینی ذریعہ اور فتح کا مؤثر ترین ہتھیار ہے۔

### 7.3.3- حوصلہ بڑھانے والے وعدے:

اللہ اور اس کے رسول ﷺ نے ہم سے حتمی فتح کے وعدے کیے ہیں، ان سے زیادہ سچے وعدے کوئی نہیں ہو سکتے۔

﴿وَ اِنَّ جُنْدَنَا لَهُمُ الْغٰلِبُوْنَ۝﴾ (سورۂ صٓ)

''بے شک ہمارا لشکر ہی غالب آئے گا۔''

﴿وَ لَا تَهِنُوْا وَ لَا تَحْزَنُوْا وَ اَنْتُمُ الْاَعْلَوْنَ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ۝﴾ (آل عمران)

''کم ہمت نہ بنو اور غم نہ کرو، تمہی غالب رہو گے اگر تم ایمان والے ہو۔''

﴿وَاللّٰهُ مُتِمُّ نُوْرِهٖ وَ لَوْ كَرِهَ الْكٰفِرُوْنَ۝﴾ (سورۃ الصف)

''اللہ اپنے نور کی تکمیل کر کے رہے گا اگرچہ کافروں کو ناگوار ہو۔''

﴿لِيُظْهِرَهٗ عَلَى الدِّيْنِ كُلِّهٖ وَ لَوْ كَرِهَ الْمُشْرِكُوْنَ۝﴾ (سورۃ الصف)

''تاکہ اللہ اس (سچے دین) کو تمام ادیان پر غالب کر دے اگرچہ مشرکوں کو ناپسند ہو۔''

یہ وعدے ہمارا حوصلہ بڑھاتے ہیں اور جنگ میں حوصلہ ہی سب سے زیادہ کام آتا ہے۔

### 7.3.4- فتنوں کی پیش گوئیاں اور آنے والے امتحانات کی خبریں:

صرف اُمتِ محمدیہ ہی کو یہ سہولت حاصل ہے کہ اس کے پاس احادیثِ فتن وملاحم کی شکل میں مستقبل کے خطرات اور حالات کا ایک واضح نقشہ موجود ہے جسے دیکھ کر ہم پہلے سے لڑائی کی منصوبہ بندی کر سکتے ہیں۔ یہ نعمت ہمارے دشمنوں کو ہرگز میسر نہیں۔

### 7.3.5- دلوں کو مسخر کرنے کی حقیقی طاقت:

دلائل کے میدان میں جب بھی کوئی غیر جانبداری سے تجزیہ کرے گا اسے صدق دل سے

ہمارے موقف کی صحت کا یقین ہو جائے گا۔ اس لیے دلوں کو مسخر کرنے کی یہ حقیقی طاقت اللہ کے فضل سے صرف ہمارے پاس ہے۔

### 7.3.6- محفوظ شریعت:

صرف اہل اسلام کے پاس قرآن مجید، حدیث اور ان کی فقہی تشریحات کی شکل میں محفوظ شریعت موجود ہے، جو کسی ملک، حکومت اور معاشرے کے پورے نظام کو چلانے کے لیے نہ صرف کافی ہے بلکہ بارہ سو سال تک اس کا کامیاب تجربہ بھی کیا گیا ہے۔ اغیار کے پاس صرف نظریات ہیں جن میں سے جن کو نافذ بھی کیا گیا تو نتائج بھیانک ہی نکلے۔ سوویت یونین کی شکستگی اور یورپ کی اخلاق باختگی اس کی جیتی جاگتی مثالیں ہیں۔

### 7.3.7- افرادی قوت:

ہماری افرادی قوت ہماری بہت بڑی ڈھال اور بہت بڑا ہتھیار ہے، الحمدللہ! اس قوت میں مسلسل اضافہ ہوتا چلا جا رہا ہے۔ پوری دنیا میں مسلم معاشرے میں بچوں کی شرح پیدائش بھی سب سے زیادہ ہے اور اس کے ساتھ ساتھ گزشتہ دس برسوں میں غیر مسلموں کے مشرف باسلام ہونے کی رفتار بھی خاصی تیز ہوئی ہے۔ خود مغربی ماہرین آبادی کا اندازہ یہ ہے کہ نصف صدی میں مسلمان پوری دنیا کا ساٹھ فی صد ہوں گے اور یورپی ممالک میں مسلم آبادی تیس سے چالیس فی صد تک پہنچ جائے گی۔

### 7.3.8- جغرافیائی حیثیت:

مسلم ممالک ایک زنجیر کی طرح بحر اوقیانوس کے ساحل سے لے کر بحر الکاہل تک پھیلے ہوئے ہیں۔ انہیں دنیا کے وسط میں بالکل چوراہے پر جگہ ملی ہے۔ تمام اہم بحری و بری راستے ان سے گزرتے ہیں۔ ہم صرف اپنی جغرافیائی حیثیت کو صحیح طور پر استعمال کر کے مغرب کا ناطقہ بند کر سکتے ہیں۔

### 7.3.9- معدنی دولت:

مسلم دنیا معدنی دولت سے مالا مال ہے۔ یہ وہ معدنی وسائل ہیں جو زمین میں محفوظ ہیں

اور اگلی کئی صدیوں تک کارآمد ہیں۔ افغانستان میں لیتھیم کے سب سے بڑے ذخائر ہیں، پاکستان کی زمین میں سونے کے ساتویں بڑے ذخائر موجود ہیں، اتنا کوئلہ مدفون ہے کہ ہم صدیوں تک پورے ملک کو مفت بجلی فراہم کر سکتے ہیں۔ جبکہ مغرب اپنی معدنی دولت کو بے تحاشا خرچ کر کے ایک صدی کے اندر اندر دیوالیہ ہونے کو ہے۔

## 7.4- دشمن کے کمزور پہلو: (Weak Points of Enemy)

اپنی طاقت کا اندازہ کرنے اور اپنے ہتھیاروں کا جائزہ لینے کے بعد دشمن کے کمزور پہلوؤں کو تاڑنا بہت ضروری ہے تاکہ ہم انہی کو نشانہ بنا کر اسے یقینی طور پر پچھاڑ سکیں۔ یہی انفرادی اور اجتماعی جنگ کا اصول ہے۔

ہمارے حریف کے کمزور پہلو یہ ہیں:

1. باطل عقیدہ ونظریہ
2. بے چین روح اور مضطرب ذہن
3. کھوکھلا معاشرہ، کمزور خاندانی نظام
4. موت کا خوف، حبِ دنیا
5. غرور ونخوت، غیظ وغضب، انتقامی جنون اور عجلت پسندی
6. تباہ ہوتی معیشت
7. افرادی قلت
8. اندرونی انتشار

### 7.4.1- باطل عقیدہ ونظریہ:

باطل عقائد ونظریات کا حامل ہونا دشمنانِ اسلام کی سب سے بڑی کمزوری ہے کیوں کہ باطل عقیدے کے ساتھ اللہ کی مدد کا سوال ہی پیدا نہیں ہوتا، بلکہ ایسے نظریات اللہ کی ناراضگی اور پکڑ کا باعث ہوتے ہیں۔ ان کی وقتی کامیابیاں اللہ کی طرف سے مہلت اور ڈھیل کے سوا کچھ نہیں ہوتیں۔ عاد وثمود سے لے کر نازی ازم اور کمیونزم تک اس کی ان گنت مثالیں موجود ہیں۔

### 7.4.2- بے چین روح اور مضطرب ذہن:

باطل عقائد ونظریات اور شیطانی اعمال سے نفس تو بہل جاتا ہے مگر قلب وروح کو کسی طرح تسکین نہیں ملتی۔ اسی لیے مغربی معاشرے کا عمومی تشخص ایک بے چین روح اور مضطرب ذہن کی شکل اختیار کر چکا ہے۔ اس بے چینی کو سگرٹ نوشی، مے خواری، رقص وسرود اور شیطانی کھیل تماشوں کے ذریعے دور کرنے کی تمام کوششیں ناکام ہو چکی ہیں۔ مغربی معاشرہ اپنے اس کمزور پہلو کی وجہ سے کسی ایسی دعوت کا زیادہ دیر مقابلہ نہیں کر سکتا جس میں تسکین قلب وروح کا حقیقی سامان موجود ہو۔

### 7.4.3- کھوکھلا معاشرہ، کمزور خاندانی نظام:

مغربی معاشرے کا خاندانی نظام بکھر چکا ہے۔ وہاں اکثریت اکیلے رہنے کو ترجیح دیتی ہے۔ چوں کہ جنسی تقاضے پورے کرنا اتنا ہی آسان ہے جتنا ہمارے ہاں ہوٹل سے چائے پینا، اس لیے بہت کم لوگ باقاعدہ شادی کی ذمہ داری قبول کرتے ہیں۔ بہت کم بچوں کو ماں باپ کی توجہ نصیب ہوتی ہے۔ اکثریت نرسنگ ہومز میں پلتی ہے۔ بہت کم بچے اپنے دادا، دادی کا نام جانتے ہیں۔ جوانیاں دفتروں، مارکیٹوں، ہوٹلوں، کلبوں، جوا خانوں اور قحبہ خانوں کی نذر ہو جاتی ہیں اور بڑھاپے میں اولڈ ہومز آخری پناہ گاہ ثابت ہوتے ہیں۔ خاندانی نظام کو بچانے کے تمام حربے ناکام ہو چکے ہیں اور اس تباہی نے معاشرے کو کھوکھلا کر دیا ہے۔ اسلام ہی مغرب کو محبت بھرے خاندانوں کی نعمت دوبارہ دے سکتا ہے، اور یہ ضمانت مغرب کے دل ودماغ کو فتح کر سکتی ہے۔

### 7.4.4- موت کا خوف، حبِ دنیا:

چوں کہ مغرب نے دنیا ہی کو سب کچھ سمجھ لیا ہے اور آخرت پر یقین نہیں رکھتا اس لیے مغربی معاشرہ دنیا کا عاشق اور اس کا پجاری ہے۔ مغربی انسان کسی بھی طرح ہمیشہ ہمیشہ دنیا میں رہنا چاہتا ہے، ہزاروں سائنس دان موت سے نجات پانے کے لیے تحقیقات میں جٹے ہیں، مغرب کا بہادر سے بہادر سمجھا جانے والا فرد بھی درحقیقت موت سے بے حد ڈرتا ہے۔ یہی وجہ ہے کہ امریکا، برطانیہ، فرانس، ڈنمارک اور درجنوں ملکوں کے سورما جو جدید ترین اسلحے سے لیس ہیں،

مجاہدین کے مقابلے میں جگہ جگہ پسپا ہوتے آرہے ہیں۔

## 7.4.5- غرور ونخوت، غیظ وغضب، انتقامی جنون اور عجلت پسندی:

غرور ونخوت میں مبتلا ہونا درحقیقت عقل وفہم پر پردہ پڑ جانے کے مترادف ہے۔اس طرح غیظ وغضب بھی حقائق کے ادراک سے مانع بن جاتے ہیں۔جس طرح غصے میں تپا ہوا کھلاڑی اپنی توانائیاں ضایع کر بیٹھتا ہے اسی طرح جنگ میں شریک کسی فریق کے لیے بھی یہ حالت مہلک ہے۔غصہ صبر چھین لیتا ہے اور عجلت پسندی پر ابھارتا ہے۔

کھیل ہو یا لڑائی، دونوں میں جیتنے کے لیے ٹھنڈے دل ودماغ اور گرم ہاتھ پیروں کی ضرورت ہوتی ہے۔مغربی ممالک خصوصاً امریکا اور اس میں سرگرم صہیونی لابی اس وقت بظاہر کامیابیوں کی انتہاء پر ہیں مگر اس کے باوجود وہ اسلام کو مٹا نہیں پائے بلکہ اسلام عسکری اور نظریاتی دونوں محاذوں پر انہیں لوہے کے چنے چبوا رہا ہے۔

امریکی اور صہیونی لابی کے متعدد اقدامات اور بیانات سے یہ ظاہر ہوتا ہے کہ ان کا حوصلہ جواب دے رہا ہے اور وہ مزید انتظار نہیں کرنا چاہتے۔اسلام کے خلاف ''آخری فیصلہ کن معرکے'' میں فتح حاصل کرنے کے لیے وہ بڑی عجلت پسندی کا شکار ہیں مگر یہ آخری معرکہ حضرت عیسیٰ علیہ السلام اور دجال کے ظہور کے بعد ہی لڑا جائے گا۔باطل قوتوں کو ڈر ہے کہ انہیں اپنے آخری نجات دہندہ کی آمد سے پہلے ہی آخری شکست نہ ہو جائے۔تب تک اپنی قوم کو حوصلہ دلانے کے لیے مغربی میڈیا ''آرمیجڈون'' اور ''2012ء'' جیسی فلمیں ریلیز کر رہا ہے جو یہ ظاہر کرتی ہیں آخر میں امریکا ہی سب سے بڑی طاقت اور تمام انسانوں کی پناہ گاہ ثابت ہوگا۔مگر ان اقدامات سے یہودیوں اور امریکیوں کا خوف اور جلد بازی بھی عیاں ہوتی ہے۔چوں کہ فکری اور عسکری محاذوں پر اسلام کی مسلسل مزاحمت غرور وپندار میں مبتلا باطل کے لیے غیر متوقع ہے اس لیے وہ آگ بگولا ہو کر حد درجے اوچھی حرکات پر اتر آیا ہے۔

حضور نبی اکرم ﷺ کی شان میں گستاخانہ خاکے اور فلمیں شایع کرنا، قرآن مجید کو نذر آتش کرنا، فرانس اور دوسرے بعض یورپی ملکوں میں حجاب پر پابندی لگانا، اسپین میں نمازیوں کی

کثرت کی وجہ سے مساجد کو مقفل کر دینا اور سوئٹزرلینڈ میں مساجد کے میناروں کو ممنوع قرار دینا اسی مخبوط الحواسی کی علامات ہیں۔

ایسی کوششوں سے مغرب کی طاقت نہیں اس کا کمزور ترین پہلو ابھر کر سامنے آرہا ہے۔اس کا صاف مطلب یہ ہے کہ اس کا دماغ گرم ہو چکا ہے اور وہ مردانہ وار لڑنے کا حوصلہ کھوتا جارہا ہے۔اس کا بلڈ پریشر ہائی ہو چکا ہے اور فالج کے خطرات ہو چکے ہیں۔پس عنقریب مغرب کے ہاتھ پاؤں شل ہونے کو ہیں، تب تک ہمیں ہمت وحوصلے اور ٹھنڈے دماغ کے ساتھ میدان میں جمے رہنا ہوگا۔

## 7.4.5- تباہ ہوتی معیشت:

امریکا اور یورپ کی اقتصادی حالت بھی روبہ زوال ہے۔سرمایہ دارانہ نظام ساری دنیا کو لپیٹ میں لینے کے بعد اب، خود اپنے آپ کو نوچ رہا ہے۔بڑے بڑے بینک دیوالیہ ہو رہے ہیں۔معدنی ذخائر کم پڑتے جارہے ہیں۔سرمایہ داری کے مرکز امریکا میں لاکھوں افراد جو کل تک خوشحال تھے، بے روزگار اور مفلوک الحال ہو کر خیموں میں زندگی بسر کرنے لگے ہیں۔مغرب اس حالت میں دنیا کو زیادہ عرصے تک غلام نہیں بنا سکتا۔خود سی آئی اے کی ایک رپورٹ میں پیش گوئی کی گئی ہے کہ اگلے پچیس برسوں میں مغرب کی دولت مشرق میں منتقل ہو جائے گی۔

## 7.4.6- افرادی قلت:

مغربی دنیا کے لیے ایک بھیانک خطرہ افرادی قلت ہے۔وہاں شرح پیدائش مسلسل کم ہو رہی ہے، اُدھر بہترین علاج معالجے اور دیگر سہولیات کے باعث بوڑھوں کی شرحِ اموات بھی گھٹ گئی ہے اور اوسط عمریں 70 سے 80 سال تک پہنچ گئی ہیں۔نئی نسل کی کمی اور پرانی نسل کی برقراری کی وجہ سے مغربی معاشرے میں نوجوان نسل کی کمی اور بوڑھوں کی کثرت ہوتی جارہی ہے۔کئی یورپی ممالک میں اب حکومتی سطح پر ''اب بچے دو ہی اچھے'' کی جگہ پرکشش مالی پیکجز کے ساتھ زیادہ سے زیادہ اولاد کی ترغیب دی جارہی ہے مگر مادر پدر آزاد معاشرے میں کوئی ماں بننا پسند کرتا ہے نہ باپ۔اس لیے ان کوششوں کا کوئی خاص نتیجہ نہیں نکل رہا۔افرادی قوت کی کمی کا بھیانک خطرہ محسوس کر کے مغربی سائنسدان کلوننگ اور روبوٹ سازی پر بھرپور کام کر رہے

ہیں مگر کلوننگ جیسے گراں بار پروگراموں کے ذریعے وہ مسلمانوں کی قدرتی شرح پیدائش کا مقابلہ نہیں کر سکتے۔ اسی طرح روبوٹ بہر حال انسان کا نعم البدل نہیں بن سکتے۔

### 7.4.7- اندورنی انتشار:

اسلام دشمن طاقتیں بظاہر مسلمانوں کے خلاف متحد ہیں اور ان کا اتحاد بڑا مضبوط دکھائی دیتا ہے مگر حقیقت میں وہ زبردست اندورنی انتشار اور افتراق کا شکار ہیں۔ صرف شیطان کے دکھائے ہوئے سبز باغوں اور خواہشات و اغراض نے انہیں یکجا کیا ہوا ہے ورنہ دوستی، خلوص اور رحم سے عاری یہ قومیں جو اپنے ماں باپ کو اولڈ ہاؤسز میں دھکیل کر پھر ان کی خیر خبر تک لینا گوارا نہیں کرتیں، بھلا آپس میں کہاں صاف دل ہو سکتی ہیں۔ ان کا بس چلے تو ایک دوسرے کو کچا چبا جانے سے بھی دریغ نہ کریں۔ مگر جب تک ایک صف میں کھڑے ہونے سے ہوسِ مال وجاہ پوری ہونے کی امید ہوتی ہے یہ متحد نظر آتی ہیں۔ جوں ہی نفع کی توقع کم ہوتی ہے وہیں ان کی دوستی میں دراڑیں پڑنے لگتی ہیں۔

﴿ بَأْسُهُمْ بَيْنَهُمْ شَدِيدٌ ۚ تَحْسَبُهُمْ جَمِيعًا وَقُلُوبُهُمْ شَتَّىٰ ۚ ﴾ (سورۃ الحشر:۱۷)

''ان کی باہمی لڑائی شدید ہے، تم انہیں یکجا سمجھتے ہو جب کہ ان کے دل متفرق ہیں۔''

### 7.5- کام کے طریقے:

اپنی اور اپنے حریف کی قوتوں اور کمزوریوں کو سمجھنے کے بعد ہمیں کام کا آغاز کرنا ہے۔ اس سلسلے میں ہم درج ذیل باتیں سمجھیں گے:

- ہمارے اہداف کیا ہوں گے؟
- کن اوصاف کے ساتھ کام کرنا ہے؟
- کن پر کام کیا جائے گا؟
- کن میدانوں پر تسلط حاصل کرنا ہوگا؟
- ہتھیار کیا ہوں گے؟
- کن مراکز سے توانائی لی جائے گی؟

### 7.6- ہمارے اہداف کیا ہوں گے؟

الغزو الفکری کے لیے ہمارے اہداف درج ذیل ہوں گے:

① اللہ کی خوشنودی

(2) بندوں کا اللہ کی طرف رجوع
(3) اپنی ان تمام کمزوریوں کو دور کرنا جو باطل کو پنپنے کا موقع دیتی ہیں
(4) استعمار، استشراق، التنصیر اور عالمگیریت کے خطرات کا مقابلہ
(5) اسلام کے خلاف کی جانے والی سازشوں کا تدارک
(6) خلافتِ اسلامیہ کے لیے اذہان کو ہموار کرنا
(7) غیر مسلموں کو اسلام کی دعوت
(8) شریعت کا نفاذ اور ایک آئیڈیل اسلامی معاشرے کی تشکیل
(9) پوری دنیا میں اسلام کا فکری و نظریاتی غلبہ

## 7.7- کام کرنے کے لیے لازمی اوصاف

کام کرنے کے لازمی اوصاف درج ذیل ہیں:

(1) ایمان محکم
(2) خلوصِ نیت
(3) ذکر اللہ کی کثرت
(4) کسبِ حلال اور صدقہ و خیرات
(5) زہد و قناعت، سادہ زندگی
(6) ادائیگی واجبات اور ترکِ منکرات
(7) حقوق العباد کی ادائیگی
(8) ضروری علم دین
(9) امت کی فکر
(10) حالاتِ حاضرہ اور تاریخ سے آگاہی
(11) استقامت

### 7.7.1- ایمان محکم:

ایمان محکم ہماری اساس ہے۔ اسی کے بل بوتے پر ہم کھڑے ہوں گے، یہی ہماری دعوت کا حرفِ اوّل ہے۔ اسی کی بنیاد پر ہم آگے بڑھیں گے۔ اسی سے ہم نصرتِ خداوندی کے حق دار بنیں گے۔

### 7.7.2- خلوصِ نیت:

ہماری نیت صرف اللہ کی رضا ہونی چاہیے۔ اسی کو راضی کرنے کے لیے ہم اسلام کو سربلند اور

امت کو سرخرو کرنا چاہتے ہیں۔ ہماری کاوشوں کا مقصد ذاتی اغراض کا حصول مثلاً دولت وشہرت نہیں ہونا چاہیے تب ہی غیبی نصرت ساتھ ہوگی۔ بصورتِ دیگر ہم ملک وقوم کے خادم تو مشہور ہو سکتے ہیں، دین کے حقیقی خادم نہیں بن سکتے، ہمارے کام میں برکت شامل نہیں ہوسکتی اور آخرت کے اجر وثواب سے حصہ نہیں مل سکتا۔

### 7.7.3- ذکر اللہ کی کثرت:

اللہ کے ذکر کی کثرت لازم ہے تاکہ تعلق مع اللہ حاصل رہے۔ تلاوت، درود شریف اور مختلف مواقع کی مسنون دعائیں وردِ زباں رہنا چاہئیں۔ روزانہ تنہائی میں دعا کے لیے کچھ وقت نکالنا ضروری ہے۔

### 7.7.4- رزقِ حلال اور صدقہ وخیرات:

رزق حلال کما کر خود کفالت کی زندگی اختیار کی جائے، حرام سے بالکل اجتناب کیا جائے۔ اللہ کے دیے ہوئے میں سے صدقہ وخیرات میں کوئی کمی نہ جائے۔

### 7.7.5- زہد وقناعت، سادہ زندگی:

دینی کاموں میں بڑھ چڑھ کر خرچ کیا جائے مگر ذاتی زندگی میں زیادہ سے زیادہ زہد وقناعت اختیار کرنے کی کوشش کی جائے۔ رہائش، لباس، غذا اور سواری میں اوسط درجے پر اکتفا کیا جائے۔

### 7.7.6- ادائیگی فرائض وواجبات اور ترکِ منکرات:

تمام فرائض وواجبات بروقت ادا کیے جائیں خصوصاً نماز باجماعت، روزوں، حج اور زکوٰۃ میں ذرا بھی سُستی نہ برتی جائے۔ کبیرہ گناہوں سے مکمل اجتناب کیا جائے۔

### 7.7.7- حقوق العباد کی ادائیگی:

کسی بندے کا کوئی جانی ومالی حق اپنے ذمہ نہ رہنے دیا جائے۔ قرض ادا کرنے کی کوشش کی جائے۔ امانات میں پوری احتیاط کی جائے۔ نرم گفتاری اور عمدہ اخلاق اپنائے جائیں۔ بدکلامی، جھوٹ، چغلی، غیبت، بدگمانی اور دھوکہ دہی کر کے کسی بندے کی حق تلفی نہ جائے۔ ملازموں اور مزدوروں کو اجرت اور ضروری مراعات دینے میں بخل نہ کیا جائے۔ دفاتر میں پورا وقت

دیا جائے اور اپنے ذمہ لگائے گئے کام کو خوش اسلوبی سے انجام دیا جائے۔

### 7.7.8- ضروری علم دین:

فرائض وواجبات اور حلال وحرام کے مسائل جلد از جلد سیکھ لیے جائیں۔ اس کے بعد بھی علم دین مسلسل حاصل کرتے رہیں۔ ہر شخص کم از کم دس چھوٹی سورتیں، پچاس آیاتِ قرآنیہ اور سو، ڈیڑھ سو احادیث ضرور یاد کرے۔

### 7.7.9- امت کی فکر:

امت کی فکر ہمارے رگ وپے میں بس جانی چاہیے، ہماری سوچ ذاتیات سے بلند ہو کر امت کے نفع اور نقصان سے وابستہ رہے۔

### 7.7.10- حالاتِ حاضرہ، تاریخ اور فتن سے آگاہی:

حالاتِ حاضرہ سے باخبر رہا جائے، دشمن کی سازشوں پر نظر رکھی جائے۔ مغربی میڈیا کی خبروں کی بجائے باوثوق ذرائع سے خبریں لی جائیں۔ تاریخ کا مطالعہ کر کے اپنی فکر ونظر کو وسعت دی جائے۔ احادیثِ فتن کو اچھی طرح سمجھا جائے تاکہ آنے والے وقت کی تیاری کی جا سکے۔

### 7.7.11- استقامت:

جب دین کے لیے اخلاص کے ساتھ کام کیا جاتا ہے تو معاشرے میں پیدا ہونے والی تبدیلیاں باطل کو چونکا دیتی ہیں اور تب آزمائش وابتلاء کا دور شروع ہو جاتا ہے۔ ایسے موقع پر مؤمن استقامت کا دامن تھام کر ثابت قدم رہتے ہیں۔ یہ وہ صفت ہے جو آخر کار اہل ایمان کو سرخرو کرتی ہے۔

## 7.8- کن پر کام کرنا ہے؟

الغزو الفکری میں دشمن کا مقابلہ کرنے کے لیے ہمارے مخاطب کون ہوں گے؟ ہماری محنت کا محور کون ہوں گے:

① اپنی ذات
② گھر کے افراد، اہل وعیال
③ برادری، محلہ
④ غریب طبقات
⑤ اصحابِ ثروت
⑥ طلبہ

⑦ خواتین ⑧ بچے

⑨ رول ماڈلز ⑩ حکام

### 7.8.1- اپنی ذات:

کسی بھی پائیدار کام کا آغاز اپنی ذات میں مثبت تبدیلیاں لانے سے ہوتا ہے۔اس لیے اپنے آپ کو اسلام کے سانچے میں ڈھالنے کی پوری کوشش کی جائے، وہ صفات پیدا کی جائیں جو الغزوالفکری کے غازیوں کے لیے پہلے ذکر کی گئی ہیں۔

### 7.8.2- گھر کے افراد:

جس طرح حضور اکرم ﷺ نے سب سے پہلے اپنی شریکِ حیات کو دعوت دی اسی طرح ہمیں بھی معاشرے میں تبدیلی لانے کا کام اپنے اہل خانہ سے شروع کرنا ہوگا۔اپنی بیوی اور بچوں کو علم دین سکھانا ہوگا، انہیں فیشن، گانے بجانے اور دوسرے فتنوں سے بچانا ہوگا۔اس کے لیے ڈانٹ ڈپٹ کی بجائے حسن اخلاق سے کام لینا کارگر ہوگا۔

### 7.8.3- برادری، محلہ:

سنت طریقہ یہی ہے کہ اہل محلہ اور برادری کی اصلاح سے ابتداء کی جائے، کیوں کہ وہ ہمارے کردار سے واقف ہیں اس لیے ان کو ہم نسبتاً زیادہ آسانی سے متاثر کر سکتے ہیں۔ضروری ہے ان کے سامنے اچھے کردار کا نمونہ پیش کیا جائے، تب ہماری دعوت موثر ہوگی۔

### 7.8.4- غریب طبقات:

غریب طبقات کو اپنی کوششوں کا اوّلین محور بنایا جائے، یہی لوگ انبیائے کرام کی دعوت کو پہلے قبول کرتے ہیں۔اس وقت بھی دین کا کام کرنے والے علماء ومبلغین میں اکثریت غریب طبقے کی نظر آئے گی۔غرباء خصوصاً دیہاتیوں پر اس لیے بھی توجہ کی ضرورت ہے کہ این جی اوز اور مشنری اداروں نے زیادہ تر انہی پر دھاوا بول رکھا ہے۔

### 7.8.5- اصحابِ ثروت اور ماڈرن طبقہ:

اصحابِ ثروت اور ماڈرن طبقے کو بھی نظر انداز نہ کیا جائے، بلکہ اس وقت یہی لوگ اصلاح

احوال کے سب سے زیادہ محتاج اور دشمن کے الغزو الفکری سے سب سے زیادہ متاثر ہیں۔ان کا ذہن بدلنے کے لیے بہت سوچ سمجھ کر حکمت عملی اختیار کرنا ہوگی، مناسب اسلوب اور جاذبِ توجہ انداز اختیار کرنا ہوگا، ان کی ضروریات کا حل اسلام کی تعلیمات میں دکھانا ہوگا۔یہ لوگ میڈیا کے سحر میں گرفتار ہیں اس لیے انہیں میڈیا کی ہر جائز شکل میں اپنی دعوت پہنچائی جائے اور غیر جانبدارانہ تجزیوں کے ذریعے انہیں دشمن کی سازشوں سے آگاہ کیا جائے۔

### 7.8.6- طلبہ:

طلبہ سے مراد عصری درسگاہوں کے بالغ طلبہ وطالبات ہیں۔ان کو دشمن کے نظریاتی حملوں سے بچانے کی سخت ضرورت ہے۔اس کے لیے عصری درسگاہوں میں ایسے طلبہ اور اساتذہ کی موجودگی لازمی ہے جو اسلام کے پختہ فکر داعی ہوں۔ان کے ذریعے زیرِ تعلیم طلبہ وطالبات پر بھرپور محنت کی جائے۔مگر یہ سرگرمیاں خاموشی کے ساتھ ہوں، شور شرابے اور لاف زنی سے کام بگڑ جائے گا۔طلبہ کی کسی سیاسی تنظیم سے جھگڑا مول لینا حماقت ہوگا۔تعلیم گاہوں میں فرداً فرداً کام ہی ہماری کامیابی کا راستہ ہے۔اجتماعی ترتیبات باہر بنائی جائیں۔

### 7.8.7- خواتین:

خواتین امت کی نصف آبادی پر مشتمل ہیں اور معاشرے کا انتہائی مؤثر طبقہ ہیں۔ان پر خصوصی محنت کی ضرورت ہے، اس سلسلے میں وعظ ونصیحت، چھپا ہوا مواد، کتابیں، رسائل، کیسٹز اور سی ڈیوں سمیت تمام ممکنہ ذرائع بروئے کار لائے جائیں۔خواتین میں کام کی باگ مردوں کے ہاتھ میں ہونا ضروری ہے مگر ان کو دعوت دینے یا پیغام پہنچانے میں عورتوں کو ذریعہ بنایا جائے۔ اس میں مردوں کا کردار محدود تر ہونا چاہیے۔

### 7.8.8- بچے:

قوم کے بچے اس کا سب سے قیمتی سرمایہ ہوتے ہیں، ان کی بے راہروی قوم کی تباہی کی علامت ہے اور ان کی صحیح تعلیم وتربیت قوم کا مستقبل بدل سکتی ہے۔بچوں کے بننے یا بگڑنے کے مقامات تین ہیں:

① گھر

② تعلیم گاہ

③ کھیل اور تفریح

ہمیں ان تینوں میدانوں میں بچوں کو سنبھالنا ہوگا۔ گھر میں عورتوں پر محنت کر کے نسلِ نو کو ایسی گود مہیا کی جائے جہاں وہ ایمان اور اسلام سیکھے۔ جہاں تک تعلیم گاہوں کا تعلق ہے اس سلسلے میں اسکولوں اور کالجوں کے منتظمین سے مل جل کر انہیں دینی ماحول سے قریب لانا بہت مفید ہوگا۔ اس کے ساتھ ساتھ عمدہ تربیت مہیا کرنے والی مثالی عصری تعلیم گاہیں خود بھی قائم کرنا ہوں گی۔ تب ہم بچوں کو تعلیم کے میدان میں سنبھال سکیں گے۔

کھیل اور تفریح کے میدان میں بھی بچوں کو تنہا نہیں چھوڑا جائے گا۔ انہیں مفید کھیلوں مثلاً فٹ بال، دوڑ، سائیکل سواری، تیراکی، نشانہ بازی، والی بال، ٹینس وغیرہ کا ماحول فراہم کرنا ہماری ذمہ داری ہے۔ اسی طرح مفید تفریحات مثلاً اسلامی، دینی و معلوماتی مواد پر مشتمل دلچسپ کتب، رسائل اور ڈیجیٹل مواد مہیا کرنا بھی اہم ہے ورنہ بچے تفریح کے غلط مواقع پر جا کر تباہ ہو جائیں گے۔

### 7.8.9- رول ماڈلز:

عموماً فن کار، سیاست دان، دانشور اور کھلاڑی معاشرے کے رول ماڈل بن جاتے ہیں۔ لوگ ان کی تقلید کرتے اور ان کی رائے کو معتبر سمجھتے ہیں۔ رول ماڈلز قسم کے لوگوں کو متاثر کرنا بہت مشکل ہوتا ہے تاہم انہیں بھی اپنا پیغام پہنچانے اور راہِ راست پر لانے کی کوشش کرنا ضروری ہے، کیوں کہ ایسا ایک فرد بہت سے لوگوں کی تبدیلی کا ذریعہ بن جاتا ہے۔

### 7.8.10- حکام:

حکام اور اعلیٰ سرکاری عہدے داروں کا ذہن تبدیل کرنا سب سے زیادہ مشکل ہوتا ہے کیوں کہ عموماً تکبر اور دنیاوی مال وجاہ انہیں سچائی کی طرف متوجہ نہیں ہونے دیتا۔ مگر انہیں بھی دعوت کا مخاطب بنانا بہت اہم ہے۔ یہ دعوت دنیاوی مفادات سے مکمل استغناء کے ساتھ دی

جائے۔ بالغ نظری اور حکمت کے ساتھ دین کی دعوت دینے میں کامیابی کا امکان موجود ہے، تاریخ میں اس کے نظائر بھی ہیں جب کسی حکمران کے راہِ ہدایت پر آجانے سے پوری قوم کا رخ بدل گیا۔

## 7.9- ہمارے کام کے میدان:

وہ میدان جن میں ہمیں دخیل ہو کر الغزو الفکری کے معرکے لڑنا ہیں، درج ذیل ہیں:

### 7.9.1- مسلمانوں کو ایمان کامل اور اعمال صالحہ کی دعوت:

یہ ہمارے تمام کاموں کی بنیاد ہے کیونکہ باقی تمام شعبوں کے لیے افراد اسی دعوت سے میسر آئیں گے۔

### 7.9.2- سیاست:

ہمارے لیے سیاست میں حصہ لینا بھی ضروری ہے۔ ہماری مذہبی سیاسی جماعتیں کئی عشروں سے میدانِ سیاست میں سرگرم ہیں۔ اگرچہ اسمبلیوں میں ان کی موجودگی کی وجہ سے اسلام کے خلاف قانون سازی کی رفتار ضرور کم ہے مگر ملک میں کوئی بڑی تبدیلی نہیں آسکی۔ اس لیے ہمیں اپنی سیاسی کارکردگی بہتر بنانا ہوگی اور اس کے لیے دوررس اقدامات کرنا ہوں گے۔ ہمیں بستیوں میں رفاہی کام کر کے عوام کی خدمت کرنا ہوگی، عوام کا اعتماد جیتنا ہوگا۔ جب ایک مدت تک زمین ہموار اور بنیاد مضبوط کی جائے گی تو پھر نتائج بہتر نکلیں گے۔ صرف انتخابات کے مواقع پر ووٹ لینے کے لیے مہم چلا دینے سے عموماً مایوس کن نتائج نکلتے ہیں۔

### 7.9.3- غیر مسلموں میں اسلام کی تبلیغ:

غیر مسلموں میں اسلام کی اشاعت بھی وقت کی اہم ضرورت اور الغزو الفکری کا بہت بڑا میدان ہے۔ اس کی ابتداء مسلم ممالک میں آباد اقلیتوں سے کی جائے، پھر پوری دنیا میں اس کا دائرہ پھیلا دیا جائے۔

### 7.9.4- دینی مدارس کا قیام اور ترقی، ان کے معیار کی بہتری:

دینی مدارس ہمارے تمام کاموں کے لیے ریڑھ کی حیثیت رکھتے ہیں، اس لیے مغربی دنیا ان سے خوفزدہ ہے۔ ہمیں ان مدارس کو ترقی دینا ہوگی اور ان کے معیار کو بہتر بنانا ہوگا تاکہ راسخ

العقیدہ اور ماہرِ شریعت علماء ہر جگہ میسر ہوں۔

### 7.9.5- دینی ماحول کی حامل عصری علوم کی معیاری درسگاہوں کا قیام:

جب تک عصری تعلیمی ادارے ہمارے ہاتھ میں نہیں آجائے، ہم کوئی انقلاب نہیں لا سکتے۔ اس ہدف کے لیے ایسے افراد کو کمر کسنا ہوگی جو دینی مزاج میں پختہ ہوں، عصری علوم پر اچھی دسترس رکھتے ہوں اور غیر معمولی انتظامی صلاحیتوں کے حامل ہوں، کیوں کہ عصری علوم پڑھانے، اس کے مضر اثرات سے بچنے اور دینی ماحول کو قائم رکھنے کا کام بہت سوجھ بوجھ کا متقاضی ہے۔

### 7.9.6- عصری تعلیم گاہوں کا رخ درست کرنا اور ان کے طلبہ، اساتذہ و انتظامیہ کو دین کے قریب لانا:

قائم شدہ عصری سرکاری و غیر سرکاری درسگاہوں میں اسلامی اثرات کا فروغ بہت اہم ہدف ہے۔ اس کے لیے سب سے پہلے عصری اور دینی تعلیم گاہوں کے درمیان میں حائل منافرت کی خلیج کم کرنا ضروری ہے۔ جس کے لیے برسہا برس محنت کرنا ہوگی۔ فاصلے دور کرنے کے کئی طریقے ہو سکتے ہیں، مثلاً:

- دینی درسگاہوں میں اسلامی علوم کے دو سالہ یا چار سالہ کورسز رکھے جائیں جن میں عصری تعلیم یافتہ نوجوان دورانِ تعلیم یا تعلیم کے بعد حسبِ فرصت شرکت کر سکیں۔
- ایسے مدرسے بنائے جائیں جہاں میٹرک تک دینی و عصری دونوں تعلیمات ساتھ ساتھ ہوں۔ یہاں سے فارغ ہونے والے اپنی پسند کے مطابق بعد میں دینی یا عصری اعلیٰ تعلیمی اداروں میں چلے جائیں۔
- شہری آبادی میں واقع مدارس میں اسلامی علوم کی نائٹ کلاسز کا آغاز کیا جائے۔
- عصری تعلیم گاہوں کی تعطیلات کے دوران خوبصورت اور دلکش عنوانات سے کورسز شروع کرائیں مثلاً سمر کورس، فہم دین کورس، کامیابی کورس، وغیرہ۔
- درسِ قرآن و درسِ حدیث کے عنوان سے اسکولوں، کالجوں کے طلبہ کو اپنے ماحول میں شریک کیا جا سکتا ہے۔

- عصری درسگاہوں کے اساتذہ و منتظمین کو دینی مدارس کی تقاریب میں خاص طور پر مدعو کیا جائے۔
- اپنے محلے یا برادری میں عصری علوم کے طلبہ و اساتذہ کو دین کی دعوت دینا اور اسلامی لٹریچر فراہم کرنا بھی بہت مفید ہوگا۔

## 7.9.7- میڈیا:

میڈیا کے بارے میں سابقہ ابواب کے مختلف تبصروں سے عیاں ہو چکا ہے کہ میڈیا وار میں بھرپور انداز میں شرکت کرنا ناگزیر ہے، اس لیے اس میدان میں کام کرنے کی اہمیت پر مزید کچھ کہنے کی ضرورت نہیں۔

مگر یاد رہے کہ میڈیا میں داخل ہونے کی سفارش کا یہ مقصد ہرگز نہیں کہ ہم حرام ذرائع کو استعمال کرنے میں جرأت دکھائیں۔ حرام کے ساتھ اللہ کی مدد نہیں ہوسکتی اس لیے ہماری ہر کاوش دائرۂ شریعت کے اندر ہونی چاہیے۔ میڈیا میں بھی جائز اور حلال ذرائع موجود ہیں۔ بلکہ اس وقت میڈیا کے جو ذرائع دنیا میں مروج ہیں، اسلامی شریعت کی رو سے ان میں سے بہت سے ذرائع جائز ہیں، ہاں بعض کو فی نفسہ جائز ہونے کے باوجود کسی دوسری علت کی وجہ سے ممنوع کہہ دیا جاتا ہے۔ ایک علت میڈیا پر شر کا غلبہ بھی ہے جس کی وجہ سے بعض جائز ذرائع سے احتیاط ہی کرنا بہتر ہے۔ بعض ذرائع کے جواز یا عدم جواز کے بارے میں علماء میں اختلاف بھی ہے۔

بہرکیف ہماری حالت تو یہ ہے کہ جو ذرائع متفقہ طور پر جائز ہیں، ہم ان میں بھی ابتدائی سیڑھی پر ہیں۔ ہمارے اپنے اخبار گنے چنے ہیں۔ ہمارے مدارس کے ماہنامے صرف مخصوص گھروں تک ہی پہنچتے ہیں۔ ہمارا کوئی ریڈیو اسٹیشن تک نہیں۔ ہمیں اس صورتحال کا تدارک کر کے آگے بڑھنا ہوگا۔ جن ذرائع کے جواز پر اتفاق ہے یعنی اخبار و جرائد، رسائل، ریڈیو چینل، ویب سائٹس وغیرہ..... ان کے استعمال سے دریغ نہ کیا جائے۔

یہاں ایک اور اہم بات سمجھ لی جائے۔ وہ یہ کہ جو افراد الغزو الفکری یا اسلامی صحافت کے محاذ پر کام کرنا چاہتے ہیں ان کے لیے میڈیا سے رابطہ رکھے اور میڈیا سے کام لیے بغیر چارہ نہیں۔ مگر

اس کا یہ مطلب نہیں کہ عام مسلمانوں کو میڈیا کی فضیلتیں سنائی جائیں اور اگر ان کے دلوں میں فلموں اور ڈراموں جیسی چیزوں کی تھوڑی بہت برائی ہے تو اسے زائل کر دیا جائے۔ حقیقت یہ ہے کہ اس وقت ذرائع ابلاغ عمومی طور پر فحاشی اور بے دینی کے سب سے بڑے آلۂ کار ہیں، اس لیے عام مسلمانوں کو ان سے جس قدر ہو سکے اجتناب کرانا چاہیے، ایمان کی سلامتی اسی میں ہے۔ ہمارے نمائندوں کا میڈیا پر ہونا اس لیے ضروری ہے کہ کم از کم کوئی جواب دینے والے موجود ہوں اور جو لوگ میڈیا سے چپکے رہنے کی قسم کھا چکے ہیں ان کے سامنے تصویر کا دوسرا رخ بھی آتا رہے۔

### 7.9.8- تجارت و معیشت:

تجارت و معیشت کو اسلامی اصولوں پر چلانے کے لیے سب سے پہلے ہمیں فقہ المعاملات کے اسلامی ماہرین تیار کرنا ہوں گے۔ اس کے بعد معاشرے کو سودی نظام سے نجات دلانا ہوگی۔ مسلمان تاجروں کو مارکیٹ میں ناجائز منافع کی رائج تمام شکلوں کو ختم کرنے پر آمادہ کرنا ہوگا۔

### 7.9.9- رفاہی خدمات:

عوام و خواص کا اعتماد حاصل کر کے رفاہی خدمات کو اس حد تک لے جانا ہوگا کہ دنیا بھر میں کوئی مسلمان اپنے کسی دکھ درد کے لیے کسی غیر مسلم این جی او کا محتاج نہ ہو۔

### 7.9.10- کھیل کود، تفریح، دلچسپ معلوماتی سرگرمیاں:

آج کل کے نوجوانوں کا ناجائز تفریحات میں خرچ ہونے والا وقت اسی وقت صحیح طرح استعمال کیا جا سکتا ہے جب جائز تفریحات کی شکلیں موجود ہوں۔ ہمارے ہاں اس میدان میں بھی کام نہ ہونے کے برابر ہے۔ ضرورت ہے کہ مسلمان بچوں اور نوجوانوں کے لیے مناسب، جائز اور مفید تفریحات اختراع کی جائیں۔ ذہین اور زرخیز دماغ والے نوجوانوں کو اسے چیلنج سمجھ کر قبول کرنا چاہیے۔

## 7.10- ہمارے ہتھیار کیا ہوں گے؟

گزشتہ اوراق سے واضح ہو گیا کہ اس جنگ میں ہمارے بہت سے ہتھیار وہی ہوں گے جو دشمن استعمال کر رہا ہے اور جن کا ذکر چھٹے باب یعنی ''وسائل الغزو الفکری'' میں گزر چکا ہے۔

یعنی ہم نظام تعلیم، میڈیا، معلومات کے ذرائع، میدانِ سیاست، قانون ساز اداروں اور عدلیہ میں اپنے افراد داخل کریں گے۔ معیشت وتجارت کے میدان میں چھانے کی کوشش کریں گے۔ رفاہی ادارے اور این جی اوز قائم کریں گے۔ جائز حدود میں رہتے ہوئے فنون لطیفہ، شعر وادب، کھیل کود اور تفریح کو بھی دینی ذہن سازی کے لیے استعمال کریں گے۔

اس کے ساتھ ''ہمارے اوصاف'' اور ''ہماری قوتیں'' کے تحت ذکر کی جانے والی چیزیں ہمارے لیے معاون ثابت ہوں گی۔

### 7.10.1- جدید ٹیکنالوجی:

ان سب کے ساتھ الغزوالفکری میں جدید ٹیکنالوجی سے استفادہ ناگزیر ہے۔ تعلیم، دعوت اور میڈیا وار کے لیے جو بھی بہتر سے بہتر ٹیکنالوجی دستیاب ہو اسے استعمال کر کے وقت اور افرادی توانائی بچانا ہمارے کام کی رفتار تیز کر دے گا۔ ہمیں انفارمیشن ٹیکنالوجی کے علاوہ طب، انجینئرنگ، فلکیات اور جدید اسلحہ سازی سمیت ٹیکنالوجی کے جملہ شعبوں کے لیے ماہرین کار پیدا کرنے کی حوصلہ افزائی بھی کرنا ہوگی۔ اگرچہ ان شعبوں کا الغزوالفکری سے براہِ راست کوئی تعلق نہیں مگر قوم کی ترقی کے لیے نسل نو کو ان شعبوں میں آگے بڑھانا ناگزیر ہے۔ الغزوالفکری کا مقصد بھی مسلم قوم کی سربلندی ہے۔ اس لیے ان شعبوں کی حوصلہ افزائی ہمارے لیے اہم ہونی چاہیے۔

### 7.10.2- ہماری توانائی کے ذرائع: (ہمارے مراکز):

ہماری توانائی کے ذرائع تین ہیں:

① مسجد

② مدرسہ

③ خانقاہ

یہی ہمارے تین بنیادی مراکز ہیں۔ تمام کاموں میں ان مراکز سے دم بدم رابطہ ضروری ہے۔

### 7.10.3- مسجد:

مسجد مسلمانوں کا پہلا دینی مرکز ہے، ہماری تمام تر جدوجہد کی کامیابی اس وقت نمایاں ہوگی

جب مساجد آباد ہونے لگیں گی۔ اس لیے ہمیں سب سے پہلے مساجد کو آباد کرنا ہوگا۔ ہماری دینی مصروفیات ہمیں نماز باجماعت سے غافل نہ کرنے پائیں۔ ہماری دینی کوششوں کا مقامی مرکز مسجد ہی کو ہونا چاہیے۔ اگر کسی مصلحت کے باعث یہ مشکل ہو تب بھی نماز، ذکر و تلاوت وغیرہ کے ذریعے مساجد کو آباد رکھنے میں ضرور حصہ لیا جائے۔

### 7.10.4- مدرسہ:

دینی مدارس تمام دینی کاموں اور اسلامی شعبوں کا سرچشمہ ہیں۔ ان کے ساتھ ہر ممکن تعاون کرنا چاہیے۔ اپنے خاندان کے منتخب اور ذی استعداد بچوں کو مدارس میں داخل کر کے حافظِ قرآن اور عالم دین بنانا چاہیے۔ اس کے علاوہ تمام بچوں کی تعلیمی زندگی کا ایک حصہ دینی مدارس میں ضرور گزرنا چاہیے۔

ہمیں ہر مسئلے اور ہر نئی صورتحال کا شرعی پہلو معلوم کرنے کے لیے بار بار دینی مدارس اور مفتیانِ کرام سے رجوع کرنا ہوگا، انہی کی رائے اور فتوی ہمارے لیے حرفِ آخر ہوگا، اس کی جگہ اگر خود رائی اختیار کی گئی تو خطرہ ہے کہ نئے فتنوں کا دروازہ کھل جائے۔

### 7.10.5- خانقاہ:

ہمیں اپنے دل کی صفائی، اخلاقی عیوب کے ازالے اور نفس کی اصلاح کے لیے خانقاہوں سے تعلق رکھنا ہوگا، خانقاہیں ہی تزکیۂ نفس کی تربیت گاہیں ہیں۔ اپنی خامیوں کی اصلاح اور کام میں برکت کے لیے بھی اکابر و مشائخ کی سرپرستی اور دعائیں ناگزیر ہیں۔

## 7.11- آخری بات:

الغزو الفکری کو پڑھنے اور اسے اہمیت دینے کا مقصد الغزو العسکری یعنی جہاد فی سبیل اللہ کی اہمیت کم کرنا ہرگز نہیں..... یہ دونوں ایک دوسرے کے لیے لازم و ملزوم اور باہم مددگار ہیں۔ الغزو الفکری، سے جہاد کے مقصد یعنی اعلائے کلمۃ اللہ کی تکمیل ہوتی ہے کیونکہ اذہان کو مسخر کر کے ہی کسی قوم کو حقیقت میں فتح کیا جاسکتا ہے۔ اسی طرح جہاد سے، الغزو الفکری کو مدد ملتی ہے کیوں کہ مسلح طاقت ہی علمی و فکری محاذ پر کام کرنے والوں کو سرحدی و علاقائی تحفظ اور پرامن ماحول بخشتی ہے۔

جس طرح دشمن کے فکری حملہ آور اور مسلح لشکر دونوں اسلام کے مقابلے میں یکجا اور متفق ہیں اسی طرح الغزوالفکری کے کارکن اور جہاد کے علمبردار بھی مقصد کے لحاظ سے متحد اور متفق ہیں، لہٰذا ہمیں اپنی سرگرمیوں کے دوران کسی بھی لحاظ سے جہاد کی اہمیت کو کم کر کے دکھانا زیب نہیں دیتا۔ جہاں بھی شرعی اصولوں کے مطابق جہاد ہو، اسے ہماری حمایت حاصل ہونی چاہیے۔

## 7.12- تمام باطل طاقتیں اسلام کے خلاف مجتمع کیوں؟

آخر میں ایک اہم سوال کا جواب: سوال یہ ہے کہ آخر یہود و نصاریٰ اور ہنود و ملاحدہ، یہ سب ایک دوسرے کے خلاف اتنی شدت سے کبھی نہیں لڑتے مگر اسلام کے خلاف وہ بہت جلد متحد ہو جاتے ہیں۔ ماضی میں بھی اس کی مثالیں کم نہیں اور حال میں تو تمام تر منظر نامہ اس کی عکاسی کر رہا ہے۔ ایسا کیوں ہے؟ کیا اسلام کی بنیاد میں کوئی ایسا ڈائنامیٹ نصب ہے جس سے تمام اقوام خوفزدہ چلی آتی ہیں۔ آخر ان سب کو اسلام سے کیا خطرہ ہے؟ ان کے اسلام کے خلاف اتحاد کی کیا وجہ ہے؟

اس سوال کا جواب یہ ہے کہ انہیں اصل خطرہ اسلام کے بے عیب نظام، دل پذیر دعوت اور اس کے ناقابلِ شکست اصولوں سے ہے۔ یہ اسلام کی کمزوریاں نہیں خوبیاں ہیں جن سے وہ خوفزدہ ہیں۔ ان کی مسلمانوں کے خلاف مشترکہ صف بندی اسلام کی سچائی اور حقانیت کی دلیل ہے۔ روشنی کی کرن سے اندھیرے ہی خوفزدہ ہو سکتے ہیں اور گھروں کے محافظ کے خلاف چور ہی متحد ہو سکتے ہیں۔

اسلام نے صدیوں تک اقوام عالم کی حفاظت کی ذمہ داری انجام دی ہے۔ تاریخ میں اقوام عالم کی بڑی بڑی غیر متعصب شخصیات کی گواہیاں موجود ہیں کہ ایک مذہب اور ایک نظام حیات کی حیثیت سے اسلام ہر عیب، کمزوری اور خرابی سے پاک ہے۔ اس کی وجہ صرف یہ ہے کہ اسے انسانوں نے نہیں خالق کائنات نے تشکیل دیا ہے۔ خالق کا علم لامحدود ہے اور اس میں خطا کا کوئی امکان نہیں۔

اسلامی اصولوں اور احکام کا بنیادی ماخذ قرآن مجید انسانی کاوش نہیں خالق کا کلام ہے۔ یہی

وجہ ہے کہ اسلام چودہ صدیوں سے اپنی بنیاد اور اصولوں پر قائم ہے۔ کسی مصلح یا پیشوا کو کبھی اس کی ضرورت نہیں پڑی کہ وہ اسلام کی بنیادوں کو کھود کر اس کی تجدید (Reformation) کرے۔ اپنے اسی سدا بہار اور پائندہ و تابندہ تشخص کی وجہ سے اسلام کو کبھی باطل نظریات سے سمجھوتہ کرنے کی ضرورت بھی نہیں پڑی۔

اس کے برخلاف دنیا کے تمام مذاہب ونظریات کی سرشت میں بہت سی کمزوریاں اور خامیاں موجود ہیں، کیوں کہ وہ خالص آسمانی تعلیمات پر مبنی نہیں۔ انہیں انسانوں نے تشکیل دیا ہے، جن کا علم بہر حال محدود ہے۔ ان مذاہب کے بنیادی مآخذ بھی انسانوں کے تیار کردہ اور اغلاط و تحریفات کا مجموعہ ہیں۔ ان نظریات ومذاہب کے قائدین کے سامنے یہ کمزوریاں اور خرابیاں آتی رہتی ہیں اور اسی وجہ سے وہ بار بار اپنے مذاہب میں بنیادی تغیرات پر مجبور ہوتے ہیں۔

اپنے نظام اور ہیئت ترکیبی میں مضمر ایسی کمزوریوں کی وجہ سے، اکثر اوقات کچھ باطل نظریات دوسرے باطل نظریات کے ساتھ لین دین پر تیار ہوجاتے ہیں۔ یہ لین دین کبھی اصول (بنیادی باتوں) میں ایک دوسرے سے اشتراک کی صورت اختیار کرتا ہے اور کبھی فروع (ضمنی چیزوں) میں تبادلے کی شکل میں سامنے آتا ہے۔ کبھی اس میں صرف ایک دوسرے کو قابل قبول ماننے کا اظہار کیا جاتا ہے اور دوسرے کے نظریے کے بطلان کو جانتے ہوئے بھی اس کی ہاں میں ہاں ملائی جاتی ہے جیسا کہ غزوہ احزاب سے پہلے مشرکین مکہ اور یہود کے درمیان گفت و شنید میں یہود نے قریش کی بت پرستی کی تعریف کی اور اسے بجا قرار دیا تھا۔

اس طرح دو باطل نظریے اپنی اپنی کمزوریوں کو محسوس کرنے کے باوجود ایک دوسرے کو شاباش دے کر اُس نظریے کے خلاف متحد ہوجاتے ہیں جس کے خمیر میں باطل سے اشتراک کا مادہ نہیں ہے، جس میں جھوٹ کا کوئی گزر نہیں ہے اور جو حقیقت وصداقت کے خلاف جانے سے عاجز ہے۔ ظاہر ہے کہ ایسا دین اور نظریہ ہی اپنا خالص پن (Purity) باقی رکھ سکتا ہے۔ اس حقیقت سے کوئی انکار نہیں کرسکتا کہ یہ خاصیت صرف اسلام کی ہے۔

چونکہ اللہ تعالیٰ کا سچا اور خالص دین اسلام، مخلوق کے بنائے ہوئے کسی نظام حیات اور

نظریے سے صلح پر آمادہ نہیں ہوسکتا اس لیے سارے باطل نظریات سے، صرف اسی کا مقابلہ ہوتا ہے اور باطل کی تمام فکری، سیاسی، اقتصادی اور عسکری طاقتیں صرف اسی سے برسر پیکار ہوتی ہیں اور اسی سے مقابلے کے لیے باہم متحد ہوتی جاتی ہیں۔

جب باطل نظریات کا باہم اشتراک یا اہل باطل کا اتحاد ہوتا ہے تو اسے دنیا کے سامنے ''جیو اور جینے دو'' کی پالیسی یا ''انسان دوستی'' جیسا کوئی پرکشش نام دے دیا جاتا ہے۔ اسی اشتراک اور لین دین کی وجہ سے ان نظریات کے پیشوا سیاسی، عسکری اور اقتصادی محاذوں پر بھی صحیح اور خالص نظریے کے خلاف اتحاد قائم کر لیتے ہیں۔ یہ اتحاد اتنا ہی مضبوط ہوتا ہے جتنا کہ اس سے وابستہ منافع کی توقعات۔ اگر خوش کن امیدیں روبہ ترقی ہوں تو اشتراک کی گرہ مضبوط ہوتی جاتی ہے اور اگر مفادات پر ضرب پڑ رہی ہو اور توقعات دم توڑ رہی ہوں تو اتحاد و اتفاق بھی پارہ پارہ ہونے لگتا ہے۔

فی زمانہ باطل طاقتوں کو اسلام کے خلاف فکری اور عسکری جنگ میں کامیابیاں مل رہی ہیں اور عالم اسلام پر جمی ان کی حریصانہ نگاہیں بتا رہی ہیں کہ ان کی توقعات ابھی باقی ہیں اس لیے ان کا اتحاد بھی برقرار ہے۔ اس حالت میں بھی اسلام کا اپنا مسلسل دفاع کرنا اور باطل کے قلب میں بسنے والوں میں اپنی حقانیت کے گواہ تلاش کر لینا اس کے سچے اور آفاقی دین ہونے کا کافی ثبوت ہے۔

## 7.13- اسلامی نظریہ کیوں غالب آئے گا؟

یہ بات طے ہے کہ حق و باطل کی اس کشمکش میں اسلامی نظریہ ہی غالب آئے گا، اس لیے کہ اسلام ہی انسان کی اس خالص فطرت کی ترجمانی کرتا ہے جس کے مطابق خالق نے اسے پیدا کیا ہے۔ ذیل میں اجمالی طور پر نظریات و کردار میں اسلام اور اہل باطل کا ایک تقابلی جائزہ پیش کیا جا رہا ہے:

☆ اسلام..... انسانوں پر انسانوں کی بالادستی کا انکار کرتا ہے۔

❁ مغرب..... دنیا پر چند سرمایہ داروں کی بالادستی کے درپے ہے۔

☆ اسلام..... انسان کو بندہ بنانا چاہتا ہے جو اللہ پر ایمان رکھے اور اس کے رسولوں کی پیروی کرے۔

❁ مغرب..... بندگی کا قائل نہیں۔ وہ خدا اور خدا کے رسولوں کے نظام کا منکر ہے۔

☆ اسلام..... چاہتا ہے کہ انسان دنیا و آخرت کی فلاح پائے۔

❁ مغرب..... کے نزدیک منتہائے نظر دنیا ہی ہے، آخرت یا تو ہے ہی نہیں یا ہے تو کوئی ایسی چیز نہیں جس کے لیے عملی طور پر کچھ کیا جائے۔

☆ اسلام..... رنگ، نسل، قبیلے، زبان، وطن یا کسی اور امتیاز کے اعتبار سے تعصب، فخر اور بڑائی جتانے کی شدید مخالفت کرتا ہے۔

❁ مغرب..... رنگ، نسل، وطن اور دوسری امتیازی خصوصیات کی بناء پر تعصب اور تفاخر کا عادی ہے۔

☆ اسلام..... ایک پاکیزہ زندگی کا داعی ہے جو خاندانی نظام کو تحفظ دیتی اور اسے مضبوط بنیادیں فراہم کرتی ہے۔

❁ مغرب..... کسی پاکیزگی کا قائل نہیں، بے حیائی اور فحاشی کا داعی ہے۔ خاندانی نظام کی حد بندیوں سے آزادی چاہتا ہے، تاکہ مرد و زن کو آزادانہ اختلاط کے زیادہ سے زیادہ مواقع میسر آئیں۔

☆ اسلام..... بندے کو خالق اور مخلوق، دونوں کے حقوق کی ادائیگی میں سہولت دیتا ہے۔

❁ مغرب..... خالق کے حقوق کو ایک مذاق سمجھتا ہے اور مخلوق کے حقوق کو اتنی وسعت دیتا ہے کہ جائز و ناجائز کا فرق بھی بھول گیا ہے، اس کے ہاں رذیل ترین خواہش پوری کرنا اور پست ترین لذت حاصل کرنا بھی انسان کا حق ہے۔

☆ اسلام..... خلوص اور بے غرضی کی قدر کرتا ہے، نیک کام کا اجر و ثواب اللہ سے لینے کی حوصلہ افزائی کرتا ہے۔

❁ مغرب..... صرف مفاد کا پجاری ہے۔ وہ مثبت کاموں کو بھی مالی مفاد ملنے پر منحصر رکھتا ہے۔

☆ اسلام..... باہمی رضامندی کے تحت قوموں اور ملکوں کے درمیان خیر کے معاہدات کی حوصلہ افزائی کرتا ہے اور دھوکہ دہی، عہد شکنی اور بلیک میلنگ کی پرزور مخالفت کرتا ہے۔ اسلامی تاریخ میں ایسی مثالیں ڈھونڈنا مشکل ہے جب مسلمانوں نے کسی غیر مسلم طاقت

سے عہد شکنی کی ہو۔

❁ مغرب.....قوموں کو لوٹنے اور کمزور اقوام کو پامال کرنے کے لیے شر کے معاہدوں کی حوصلہ افزائی کرتا ہے، مغرب دھوکہ دہی اور فریب کا عادی ہے۔اس کی تاریخ میں مسلمان ملکوں اور کمزور قوموں سے کیے گئے معاہدوں کی مستقل پابندی کی شاید ہی کوئی مثال ملے۔

☆ اسلام..... بتاتا ہے کہ اصل جوہر ذاتی کردار ہے۔اسلام میں کسی انسان کو کسی دوسرے پر تقویٰ کے سوا کوئی برتری نہیں مل سکتی۔

❁ مغرب.....میں عزت وشرافت کے پیمانے دولت، شہرت اور کسی فن میں مہارت ہیں۔کوئی شخص ذاتی زندگی میں چاہے زانی اور شرابی یا ہم جنس پرست ہی کیوں نہ ہو، وہ سرمایے، شہرت اور خصوصی مہارتوں کی وجہ سے بڑا آدمی مانا جاتا ہے۔

☆ اسلام..... مذہب اور رنگ ونسل کے امتیاز کے بغیر انسانی جانوں کی حفاظت کا ضامن ہے قرآنِ مجید میں ہے:

''جو شخص کسی کو (ناحق) قتل کرے گا، بغیر اس کے کہ کسی جان کا بدلہ لیا جائے یا زمین میں خرابی پھیلانے کی سزا دی جائے، تو اس نے گویا تمام انسانوں کو قتل کیا اور جس نے کسی کی زندگی بچائی، اس نے گویا تمام انسانوں کو زندگی بخش دی۔'' (سورۃ المائدہ 32)

❁ مغرب..... نے یونانی اور رومی دور سے لے کر تا حال انسانی جان ومال کی حرمت کا کبھی لحاظ نہیں کیا۔جاپان پر ایٹمی حملہ، عراق وافغانستان پر چڑھائی اور فلسطین میں خونِ مسلم کی ارزانی اس کی چند دیکھی بھالی مثالیں ہیں۔

☆ اسلام..... کے لفظ میں عالمگیر سلامتی کا پیغام ہے، اس میں امن، محبت، بندگی اور خالق کائنات کی واحد ذات پر غیر متزلزل ایمان کا اظہار ہے۔

❁ مغرب.....ان شرافتوں سے تہی دامن ہے۔

یہ ہے اخلاقی وآفاقی اقدار کا وہ فرق جو اسلامی نظریے کو مغربی یا مادہ پرستانہ نظریے پر واضح برتری دلاتا ہے۔

## 7.14- کل اور آج:

آج اسلام اور مغرب کے مابین نظریاتی جنگ اس عالم میں لڑی جارہی ہے کہ مغرب سائنس، ٹیکنالوجی، معیشت اور عسکری میدانوں میں ہر لحاظ سے بالاتر ہے۔ اسلام اور مغرب کی یہ لڑائی ماضی سے بالکل الگ نوعیت کی ہے۔ ماضی میں مشرق و مغرب کی سب سے بڑی کشمکش قرونِ وسطیٰ کی صلیبی جنگوں کی شکل میں ابھری تھی مگر وہ جنگیں ہتھیاروں کی تھیں جو ایک خاص علاقے میں لڑی گئی تھیں۔ آج کی جنگ نظریات وافکار کی ہے جو پوری دنیا میں پھیل چکی ہے۔ وسائل کے لحاظ سے بھی اس میدان میں مغرب بالادست ہے۔ اس کے باوجود اسلام کے داعی اور فکری ونظریاتی غازی یہاں بھی قلیل تعداد اور محدود وسائل کے باوجود اپنا فریضہ انجام دیے جارہے ہیں جس کے اثرات آہستہ آہستہ ظاہر ہورہے ہیں۔ نامور مفکر جناب شفیق الاسلام فاروقی کا کہنا بالکل بجا ہے کہ:

''مادہ پرستی کے اس دور میں دنیا کا کونسا گوشہ ہے جہاں لوگ مادہ پرستی کو چھوڑ کر بڑی خاموشی کے ساتھ اسلام قبول نہیں کررہے ہیں۔ مغرب میں انسانوں کا یہی وہ بڑھتا رجحان ہے جس سے صلیب کے علمبردار بری طرح پریشان ہیں۔'' (ہلال وصلیب کا معرکہ)

﴿يُرِيْدُوْنَ لِيُطْفِـُٔوْا نُوْرَ اللّٰهِ بِاَفْوَاهِهِمْ وَاللّٰهُ مُتِمُّ نُوْرِهٖ وَلَوْ كَرِهَ الْكٰفِرُوْنَ۝﴾

(سورۃ الصف)

''کفار چاہتے ہیں کہ اللہ کی روشنی کو اپنی پھونکوں سے بجھادیں اور اللہ اپنی روشنی کو پھیلا کر رہے گا اگرچہ کافر ناپسند ہی کیوں نہ کریں۔''

ان صفحات کو اسی خیال سے پیش کیا گیا ہے کہ ہمارے نوجوان نظریات وافکار کی جنگ میں مسلح ہوکر میدان میں اتریں تاکہ مزید بہتر نتائج سامنے آسکیں۔

الحمدللہ الغزوالفکری کا یہ کام بروز منگل شعبان کی پندرہویں شب 1431ھ (27 جولائی 2010ء) ساڑھے بارہ بجے کو کراچی میں مکمل ہوا۔ اس کے بعد بعض وجوہ سے اس کی اشاعت وطباعت میں تاخیر ہوتی چلی گئی۔ آخر کار کمپوزنگ کی تصحیح اور نظر ثانی کا کام آج شب ساڑھے

سات بجے بروزِ جمعرات 6 محرم 1436ھ (30 اکتوبر 2014ء) کو نور آباد تحصیل حسن ابدال
مکمل ہوا۔ اللہ تعالیٰ اسے قبول و منظور فرمائے اور اُمت کے لیے نافع بنائے۔

وَصَلَّى اللهُ عَلَى حَبِيْبِه وَآلِه وَاصحابه أجمعين

فقط

محمد اسماعیل ریحان

نور آباد، تحصیل حسن ابد